

जै न सि

147

द्धा

न्त मा ला



प्रबोधक—

जैन-विद्याकर प्रसिद्धयका पंडित
मुनि श्री चौधमलजी महाराज

प्रकाशक—

दो शब्द



“जैन सिद्धान्त माहा” की विशेषता दिखाने के लिए भूमिका लिखने की मुझे कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है । क्योंकि यह स्वयं विशिष्ट है । इस के प्रकाशित करने का मुख्य ध्येय यही है, कि स्वाध्यायियों के लिए यह पुस्तक कुछ अनुपमबन्ध-सी हो रही है । भक्तपुर प्रातःस्मरणीय पूज्य श्री बुधमीचन्द जी म० के पादानुपाट शास्त्र विशारद बाबू महेश्वरी पूज्य श्री मन्नाखाख जी महाराज के पद्मधिकारी शास्त्रज्ञ ज्ञेयवाम् जैनाचार्य पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज के सम्प्रदायानुयायी कविवर सरस्व स्वनाथी पंडित मुनि श्री हीराप्ताक्षजी म० के सुशिष्य ज्ञा दृढम जैन दिवाकर प्रसिद्ध बप्प पंडित मुनि श्री चौधमल जी महाराज के सन्तोष से मैं इस पुस्तक को प्रकाशित करके स्वाध्याय प्रेमियों की सेवा में सादर भेंट करता हूँ । प्रारंभ-संशोधन में पूरी २ सावधानी से काम लिया गया है । किंतु फिर भी मनुष्य त्रुटियों का पात्र है । अतः दृष्टि-दोष से कोई अशुद्धि रह गई हो तो क्षमा है, कि कुछ पाठक शुद्ध करके पढ़ने की कृपा करेंगे ।

११ श्रीराप्तामा देहती
विजया दशमी सं० १९२६



भयशंय—
रितबचद जैन

प्रकाशक—

मांगीराम रिजवचन्द्र चौहरी
१२६, बीराप्राणा, देहली ।

यह संस्करण १०००

अमूल्य में

दो शब्द



“जैन मिहान्त मासा की विग्रहता दिग्गजक सिध मूमिका सिन्धने की मुये काइ काव-पक्ता प्रताग नहीं होती है । क्योंकि यह स्वय विगिष्ट है । इस क प्रकृति करन का मुमय ध्येय यही है, कि म्वाप्पाविषों क लिण यह पुम्नक कुछ अनुपसृप-सी हो रही है । अतएव प्राण-भरणीय पूम्न श्री दुर्गमाचन्द्र जी म० क पाठानुसार शाम्भ विगारक बास ब्रह्मचारा पूम्न श्री महासास श्री महागज क पञ्चपिकारा शास्त्रज धयकाज जैनाचार्य पूम्न श्री गुरुचन्द्र जी महागज क सम्प्रदायानुयायी कविबर सरस स्वमाका पंडित मुनि श्री हीरान्तासजी म० क मुशिष्य जग दूहन जैन-दिवाकर प्रसिद्ध बाध पंडित मुनि श्री बीरमस जी महाराज क मद्बाध म मैं हूय पुम्नक का प्रकृति करक म्वाप्पाय प्रसिधों की म्वा में मादर भेंट करता हूँ । अरु-मुग्राधन में पूरी २ आचपानी मे काम किया गया है । किन्तु फिर भी मनुष्य श्रुतियों का पाप है । अत एहि-दोष मे काई अशुधि रह गई हा ना आया है, कि मुन पाठक शुद्ध करक पढ़ने की हवा करेंग ।

१२० बीरगाथा दहरी
विजया ण्यमा सं० १९१४



मयदीप—
गिखचन्द्र जैन

प्रकाशक

मंगीबास दिस

११५, बीराय

जैन सिद्धांत माला

॥ दशवैकालिक सूत्रम् ॥

॥ दुमपुष्पिया मदम अज्जकयणं ॥

- धम्मो मगलमुक्कटं, अहिंसा सलमो तथो ।
 देवा धि व नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥
- जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।
 ए य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेई अप्पय ॥२॥
- एमेए समणा मुत्ता, जे लोए सति साहुणो ।
 विहंगमा ध पुप्फेसु, दाणभत्तेसणा रया ॥३॥
- यय ध वित्ति लब्भामो, ए य कोइ उयहम्मई ।
 अहागहेसु रीर्यते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥४॥
- मट्टगारसमा बुद्धा, जे भवति अण्णस्सिया ।
 नाण्णापिहरया वता, तेण्य बुद्धंति साहुणो ॥ छि वेमि ॥५॥
- इति दुमपुष्पियानाम पढममज्जकयणं समच्च ॥ १ ॥

॥ अहं स्वर्गद्वारायारकहा तद्वय अजम्भयण ॥

| | | |
|-----------------------|-------------------------|------|
| सममे सुद्विअप्पाणं, | विप्पमुक्ताण ताइण । | |
| तेसिमेयमणाइण, | निगत्थाण महेसिण | ॥१॥ |
| उदेसियं कीयगढं, | नियागमभिह्वणि य । | |
| राइमत्ते सिणायो य, | गधमल्लो य बीयणे | ॥२॥ |
| संनिही गिहीमत्ते य, | रायपिंढ किमिच्छए । | |
| सयाइणा दंतपहोयणा य, | संपुच्छणा वेहपत्तोयणा य | ॥३॥ |
| अट्टाघए य नालीए, | छत्तरस य धारणट्टाए । | |
| तेगिच्छ पाणहापाए, | समारस च ओइणो | ॥४॥ |
| सेज्जायरपिंढ च, | आसदीपलियकए । | |
| गिहंवरनिसेज्जा य | गायसुब्बट्टणाणि य | ॥५॥ |
| गिह्णिओ वेआयडियं, | जा य आजीयमत्तिया । | |
| सत्तानिब्बुडमोइत्त, | आठरस्सरणाणि य | ॥६॥ |
| मूलए सिंगवेरे य, | सच्छुस्संढे अनिठ्ठुडे । | |
| कवे मूले य सच्चित्ते, | फत्ते बीए य आमए | ॥७॥ |
| सोययले सिधवे सोणे | रोमालोणे य आमए । | |
| सामुदे पंसुआरे य, | कालालोणे य आमए | ॥८॥ |
| धूयणे त्ति यमणे य, | वत्थीप्पम्मयिरेयणे । | |
| अमणे दसमणे य, | गायन्भगविमूसणे | ॥९॥ |
| सत्त्वमेयमणाइण, | निगत्थाण महेसिण । | |
| संसमग्नि अ जुत्ताणं, | साहुभूयविहारिण | ॥१०॥ |
| पचासपपरिणाय्या, | विगुत्ता छसु सजया । | |
| पचनिगदया धीरा, | निगत्था सज्जुदंसिणो | ॥११॥ |

॥ अह सामयणपुण्वय दुइअ अज्झयण ॥

- कह नु कुज्जा सामयण, जो कामे न निवारण ।
 पए पए विसीयतो, सकप्पस्स वसं गच्छो ॥१॥
- वत्थगघमलकार, इत्थीओ सयणाणिय थ ।
 अच्छदा जे न मुज्जति, न से चाह सि बुद्धि ॥२॥
- जे य कते पिए भोए, लखे विपिट्ठि कुण्वई ।
 माहीणे चयइ भोए, से दु "चाइ" ति बुद्धि ॥३॥
- समाण पंहाण परिब्बयतो, सिया मणो निस्सरई वहिद्धा ।
 'न सा महं नोयि अह पि सीसे' इथेव ताओ विणएल्ल रागं ॥४॥
- आयावयाहा ! चय सोगमल्ल, कामे कमाही कमियं खु दुक्ख ।
 द्विदाहि दाम विणएल्ल रागं एव सुही दोहिसि संपराए ॥५॥
- पक्खं जलियं जोइं, धूमफेठ दुरासयं ।
 नन्दति यमय भासु पुत्त जाया अगणणे ॥६॥
- धरथ न अमावामा जा सं जीवियकारणा ।
 यंत इण्डमि आउउ राय तं मरण भये ॥७॥
- अट न भागगयस्म तं यउमि अंधगयण्हणो ।
 मा कल गगगा हासा गममं निदुओ थर ॥८॥
- सइ न वादिमि भाव जा जा दिण्डमि नारिओ ।
 वायाइउा इव ददा अट्ठिअणा भविममि ॥९॥
- न ए मा वयनं माया मज्जयाए सुमानियं ।
 अरएण जहा तागा धम्म मगाइवाइया ॥१०॥
- इ वरति मज्झा पंडिया पविपयणा ।
 इ लवइति न गमु जगं ये पुग्गिमुग्गमा न नि यमि ॥११॥
- इ न गमवणपुण्वयं जम अज्जवणं मममं ॥१२॥

॥ अहं सुहृद्यायारकहा तस्य अज्मयस्य ॥

| | | |
|----------------------|-----------------------|------|
| सजमे सुट्टिअप्पाण, | विप्पमुक्काण ताहणं । | |
| तेसिमेयमणाइण, | निर्गत्थाण महेसिण | ॥१॥ |
| सहेसियं कीयगड, | नियागमभिहसाणि य । | |
| राइमत्ते सिणाणे य, | गभमल्ले य वीयणे | ॥२॥ |
| संनिही गिहीमत्ते य, | रायपिंड किमिच्छए । | |
| संवाहणा वतपहोयणा य, | संपुच्छणा वेहपलोयणा य | ॥३॥ |
| अट्टाषए य नालीए, | छत्तरस य धारणट्टाए । | |
| तेगिच्छ पाणहापाए, | समारभं च जोइणो | ॥४॥ |
| सेज्जायरपिंड च, | आसवीपलियंकए । | |
| गिहंतरनिसेज्जा य, | गायस्मुन्वहणाणि य | ॥५॥ |
| गिहिणो वेआयडिय, | जा य आजीषवत्तिया । | |
| तत्तानिब्बुडभोइत्तं, | आठरस्सरणाणि य | ॥६॥ |
| मूलए सिंगवेरे य, | सच्छुसंडे अनिब्बुडे । | |
| फंदे मूले य सधित्ते, | फले वीए य आमए | ॥७॥ |
| सोयचले सिंधव लोणे | रोमालोणे य आमए । | |
| सामुदे पंसुआर य, | कालालोणे य आमए | ॥८॥ |
| धूयणे त्ति यमणे म, | वत्थीकम्मविरेयणे । | |
| अमणे इतथणे य, | गायम्भंगविभूसणे | ॥९॥ |
| सम्भमेयमणाइण, | निमायाण महेसिण । | |
| संममम्मि अ जुत्ताणं, | लह्मभूयविहारिण | ॥१०॥ |
| पचासपपरिणयाया, | तिगुत्ता छसु सजया । | |
| पचनिगादया पीरा, | निर्गथा उग्गुदंमिणे | ॥११॥ |

॥ अह सामयणपुण्यय दुइअ अजम्भयख ॥

कह न कुजा सामयण, जो कामे न निवारण ।
 पण पण विसीयतो, संकप्पस्स वस गच्छो ॥१॥
 यत्थगघमल्लकारं, इत्थीओ समयणायिय य ।
 अच्छदा जे न मुंजंति, न से चाहंति पुच्छं ॥२॥
 जे य कते पिए भोए, लखे विपिट्ठि कुच्छं ।
 माहीणे चयइ भोए, से हु "चाइ" ति पुच्छं ॥३॥
 समाण पेहाण परिव्ययतो सिया मणो निस्सरइ पहिइया ।
 'न सा महं नोयि अह पि तीसे' इत्थेय ताओ विणएज्ज रागं ॥४॥
 आयावयाण 'गय सोगमल्ल, कामे कमाही कमियं खु दुक्ख ।
 दिदंति नाम विणएज्ज रागं एय सुदी होदिसि संपराए ॥५॥
 पक्खं जलियं ओइ, धूमफेट्ठ दुगसय ।
 नन्दनि वंनय भासु कुत्ते जाया अगंधणे ॥६॥
 धियं मउत्तमाकामी जा सं जीवियकारणा ।
 वंन इन्दमि आवउं रोयं त गरण मय ॥७॥
 अहं व भागरायस्म, त चउमि अंधगयविहणे ।
 मा कुल गधणा दामो गज्जं निद्रुआ वर ॥८॥
 राइ न वार्त्तिगि माय जा ता दिन्दमि तारिओ ।
 वापाइदा इव इहो अट्ठिअणा भविगमि ॥९॥
 भाए मा वयणं गाथा, गंधपाए मुभानियं ।
 अंधुएण अदा नागा धम्म गंधाइपाइआ ॥१०॥
 एवं वरेनि गंधदा पहिआ पविगणणा ।
 विस्मियइनि भागु जहा से पुग्गिभमा इ नि वणि ॥११॥
 इति सामयणपुण्यय माय अजम्भयं गमभं ॥ २ ॥

अहायरे चत्त्ये भन्ते । महव्वए मेहुणाओ वेरमण ।
सव्य भन्ते । मेहुणं पक्खमामि । से विठ्व वा, माणुस वा,
तिरिक्खजोणिय वा, नेव सय मेहुणं सेविञ्चा, नेयन्नेहिं
मेहुणं सेवाविञ्चा, मेहुणं सेवन्ते वि अन्ने न समणुज्जाणेरजा ।
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न क-
रेमि न कारवमि करंतपि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स
भन्ते । पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण धोसिरामि ।
चत्त्ये भन्ते । महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ
वेरमण ॥ ४ ॥

अहायरे पच्चमे भन्ते । महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं ।
सव्यं भन्ते । परिग्गहं पक्खमामि । से अर्पं वा, यहु वा,
अणुं वा थलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा । नेव सयं
परिग्गहं परिगिण्हिञ्चा, नेयन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हविञ्चा,
परिग्गहं परिगिण्हन्ते वि अन्ने न समणुज्जाणिञ्चा । जावज्जी-
वाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न
कारवमि करंतपि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स भन्ते । पडि-
क्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण धोसिरामि । पच्चमे भन्ते ।
महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहायरे छट्ठे भन्ते । एए राइमोअणाओ वेरमणं । सव्यं
भन्ते । राइमोयणं पक्खमामि । से अमणं वा पाणं वा
एाइमं वा साइमं वा । नेव सयं राइं नुंजिञ्चा नयन्नेहिं
राइं नुंजाचिञ्चा । राइं भुजंतोऽपि अन्ने न समणुज्जाणेरजा । जाव-
ज्जीवाए, तिविहं तिविहणं मणेण वायाए काएणं न करेमि
न कारवमि करंतपि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्मिं भन्ते

याचिञ्जा, पाणे अइयायन्तेऽपि अग्ने न समणुजाणेञ्जा,
जावञ्जीवाए तिबिहं तिबिहेण मणेण वायाए काएण न करेमि
न कारवेमि करतपि अग्ने न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ।
पटिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि । पढमे
भन्ते । महउवए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ
वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दुब्बे भन्ते । महउवए मुसावायाओ वेरमण ।
मव्व भन्ते । मुसावाय पवक्कमामि । से कोहा वा, लोहा
वा भया वा, हासा वा नेव सय मुसं वइञ्जा नेवज्जनेहि
मुस वायाचिञ्जा मुस वयन्ते वि अग्ने न समणुजाणेञ्जा
जावञ्जीवाए, तिबिहं तिबिहेण मणेण वायाए काएण न
करेमि न कारवेमि करतपि अग्ने न समणुजाणामि । तस्स
भन्ते । पटिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि ।
दुब्बे भन्त । महउवए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ
वेरमण ॥ २ ॥

अहावरं तण्णे भन्ते । महउवए ? अदिन्नादाणाओ वेरमण ।
मव्व भन्त । अदिन्नादाण पवक्कमामि । से गामे वा, नगरे
वा रणे वा, अर्णं वा, बहू वा, अणुं वा थलं वा चित्तमत
वा अचित्तमत वा, नेव सय अदिग्गं गिण्हइञ्जा नेवज्जनेहि
अदिग्गं गिण्हइञ्जा अदिग्गं गिण्हइत्तं वि अग्ने न समणु-
जाणाणा जावाञ्जायाण तिबिहं तिबिहेणं मणेणं वायाए काएण
न करेमि न कारवमि करतपि अग्ने न समणुजाणामि । तस्स
भन्त पटिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि
तथ भन्त महउवए उवट्ठिओमि मव्वाओ अदिन्नादाणाओ
वेरमण ॥ ३ ॥

अहावरे चत्थे भन्ते । महव्यप मेहुणाओ वेरमण ।
सब्ब भन्ते । मेहुणं पक्खामि । से विव्वं वा, माणुस वा,
तिरिक्खजोणिय वा, नेव सय मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं
मेहुणं सेषाधिज्जा, मेहुणं सेवन्ते वि अन्ते न समणुजाणेष्जा ।
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न क-
रेमि न कारवेमि करत्तपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स
भन्ते । पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।
चत्थे भन्ते । महव्यप उवट्ठिओमि सब्बाओ मेहुणाओ
वेरमण ॥ ४ ॥

अहावरे पच्चमे भन्ते । महव्यप परिमाहाओ वरमण ।
सब्बं भन्ते । परिगाह पक्खामि । से अप्प वा, धहु वा,
अणुं वा धूल वा चित्तमत्तं वा अचित्तमत्तं वा । नेव सयं
परिमाहं परिगिण्हज्जा, नेवन्नेहिं परिगाहं परिगिण्हविज्जा,
परिगाहं परिगिण्हन्ते वि अन्ते न समणुजाणेष्जा । जावज्जी
वाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करमि न
कारवेमि करत्तपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते । पडि-
क्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोमिरामि । पच्चमे भन्ते ।
महव्यप उवट्ठिओमि सब्बाओ परिमाहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भन्ते । एए राइमोअणायो वरमणं । सब्बं
भन्ते । राइमोयणं पक्खामि । से अमण वा पाण वा
राइमं वा साइम वा । नेव मयं राइं मुज्जिज्जा नेवन्नेहिं
राइं मुज्जाधिज्जा राइं मुज्जतिज्जि अन्ते न समणुजाणेष्जा । जाव
ज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करमि
न कारवेमि करत्तपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते

पश्चिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण बोसिरामि । छट्ठे मत्ते ।
 वए उषट्ठिओमि सव्वाओ राइभोअण्णाओ वरमण्णं ॥ ६ ॥
 इच्छेयाइ पण मइव्वयाइ राइभोअण्णवेरमण्णद्धाइ अत्तहियट्ठियाए
 उवसंपज्जित्ता एं भिहरामि ॥

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजयपिरयपश्चिहयपण
 क्खायपावकस्से दिआ वा राओ वा एगओ वा परिस्तागओ
 वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से पुढविं वा भित्ति वा सिलं वा
 जेलु वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण
 वा कट्ठेण वा किलिंभेण वा अंगुलियाए वा सिलागए वा
 सिलागहत्थेण वा न आलिहिआ, न विलिहिआ, न घट्ठिआ,
 न भिदिआ अन्नं न आलिहाविआ न विलिहाविआ न
 घट्ठाविजा न भिदाविआ । अन्नं आलिहंतं वा, विलिहंतं वा,
 घट्टंतं वा भिदंतं वा न समणुजाणिआ । जावज्जीवाए तिविहं
 तिविहणं मणेण वायोए काएण न करमि न कारवेमि फरत
 पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भत्ते । पश्चिक्कमामि निन्दामि
 गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥ १ ॥

से भिक्खु वा, भिक्खुणी वा संजयपिरयपश्चिहयपण
 क्खायपावदम्म दिआ वा, राओ वा, एगओ वा परि-
 मागआ वा, मत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओम
 वा हिम वा मत्थिय वा करग वा हरित्तणुग वा सुखोदगं
 वा उउउल्ल वा काय उउउल्लं वा यत्थ, मसिणिद्धं वा कायं
 मामागद्ध वा यत्थ न आमुमिआ न मफुसिआ, न आत्थी
 निआ न पथांनिआ न अक्खादिआ न पक्खोदिआ,
 न आयाविजा न पयाविजा, अन्नं न आमुमाविजा, न

संपुस्ताविज्जा, न आशीलाविज्जा, न पवीलाविज्जा, न अक्खोहाविज्जा, न पक्खोहाविज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं आमुसंतं वा, संपुसंतं वा, आविलत्तं वा, पवीलत्तं वा, अक्खोहत्तं वा, पक्खोहत्तं वा, आयावत्तं वा, पयावत्तं वा न समणुजाणिज्जा, जावग्गीयाण, तिविह तिविहण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत्तं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते । पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ २ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजयधिरयपडिहयपवाक्खायपापक्ख्मे, दिक्खा वा, राक्खो वा, एगक्खो वा, परिमागक्खो वा, मुत्ते वा, जागरमाणे वा से अगणि वा इगल वा, मुम्मुर वा, अशि वा, जालं वा, अलायं वा, मुद्धागणि वा, उक्खं वा, न उज्जिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिदिज्जा, न उज्जालिज्जा, न पग्गालिज्जा, न निब्बाविज्जा, अन्नं न उज्जाविज्जा, न घट्टाविज्जा न भिन्नाविज्जा न उज्जालाविज्जा, न पग्गालाविज्जा, न निब्बाविन्ना, अन्नं उज्जन्तं वा, घट्टत्तं वा, भिदत्तं वा, उज्जालत्तं वा, पग्गालत्तं वा, निब्बावत्तं वा न समणुजाणिज्जा जावग्गीयाए तिविह तिविहण मणेण वायाए काएणं न करमि न कारवमि करत्तं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भन्ते । पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ २ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा मज्जयधिरयपडिहयपवाक्खायपापक्ख्मे, दिक्खा वा राक्खो वा, एगक्खो वा, परिमागक्खो वा, मुत्ते वा, जागरमाणे वा, से मिण्ण वा, जिट्ठण्ण वा, वामिपटेण वा, पत्तेण वा, पत्तमणेण वा, सादाए वा, सादामणेण

वा, पिद्दुणेण वा, पिद्दुणहत्थेण वा, चेत्तेण वा, चेत्तकन्नेण वा,
 हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय, बाहिरं वा वि पुमार्तं
 न फुमिस्सा न वीपस्सा, अन्नं न फुमाधिज्जा, न वीप्पाधिज्जा
 अन्नं फुमत्त वा, वीप्पत्तं वा न समणुज्जाणिज्जा जावज्जीवाए,
 तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि
 करंतपि अन्नं न समणुज्जाणामि । वस्स भन्ते । पडिक्कमामि
 निन्दामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥४॥

से भिक्खु वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्च
 क्खायपावकम्मे, विष्ठा वा, राब्धो वा, एगब्धो वा, परिसागब्धो
 वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से वीएसु वा, वीयपइहेसु वा,
 रुहेसु वा, रुडपइहेसु वा, जाएसु वा, जायपइहेसु वा, हरिएसु
 वा, हरियपइहेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइहेसु वा, सचित्तेसु
 वा, सचित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न
 निसीइज्जा, न तुम्मट्ठिज्जा, अन्नं न गच्छाविज्जा न चिट्ठाविज्जा,
 न निसीआविज्जा, न तुम्महाविज्जा, अन्नं गच्छत्तं वा चिट्ठत्तं
 वा, निसीअत्तं वा, तुयइत्तं वा न समणुज्जाणिज्जा जावज्जीवाए
 तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि
 करंतपि अन्नं न समणुज्जाणामि । वस्स भन्ते । पडिक्कमामि
 निन्दामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥ ५ ॥

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्च
 क्खायपावकम्मे, दिष्ठा वा, राब्धो वा, एगब्धो वा, परिसागब्धो
 वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से वीइ वा, पर्यगं वा बुधु वा
 पिपीलियं वा, हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा, उरुंसि वा
 उदरंसि वा सीसंसि वा, वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कप्पसंसि
 वा, पायपुच्छणंसि वा रयइरणंसि वा, गुग्गगंसि वा, उंउगंसि

वा दृढगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेवजंसि वा, संघार
गंसि वा, अन्नयरसि वा तद्वृत्तगारे सवगरणजाए तन्नो संजयामेव
पडिलेहिय पडिलेहिय पमग्गिअ पमग्गिअ एगतमवणिग्जा, नो
ए संघायमावग्गिअ ॥६॥

अजयं चरमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वधइ पावय कम्म त से होइ कहुअ फल ॥१॥

अजयं चिद्धमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वधइ पावयं कम्म त से होइ कहुअ फल ॥२॥

अजय आसमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वधइ पावयं कम्म, त से होइ कहुअ फल ॥३॥

अजय सयमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वधइ पावय कम्म, त से होइ कहुअ फल ॥४॥

अजय मुंजमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वधइ पावयं कम्म, त से होइ कहुअ फल ॥५॥

अजय भासमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वधइ पावय कम्म, त से होइ कहुअ फल ॥६॥

कह घरे कह चिट्ठे, कहमासे कह सए ।
कह मुंजन्तो भासन्तो, पायकम्म न वधइ ॥७॥

जय चर जय चिट्ठे, जयमासे जय सए ।
जय मुंजन्तो भासन्तो, पायकम्म न वधइ ॥८॥

सव्यभयप्पभूयस्म, सम्म भूयाइ पासओ ।
पिहिआसयस्स दवस्म, पायकम्म न वधइ ॥९॥

पढमं नारं तन्नो दया, एव चिट्ठइ सव्यसंजए ।
अभाणी किं फाही, किंघा, नाही य सेयपायगं ॥१०॥

| | |
|--|------|
| સોષા જાણાઈ કલ્લાણ, સોષા જાણાઈ પાવગ । | |
| તમચ પિ જાણાઈ સોષા જ સેચંત સમાચર | ॥૧૧॥ |
| જો જીવે થિ ન યાણાઈ અજીવે થિ ન યાણાઈ । | |
| જીવાજીવે અયાણસો, કહું સો નાહીઠ સંજમ | ॥૧૨॥ |
| જો જીવે થિ ચિચાણાઈ, અજીવે થિ ચિચાણાઈ । | |
| જીવાજીવે ચિચાણાંતો, સો હુ નાહીઠ સંજમ | ॥૧૩॥ |
| જયા જીવમજીવે ચ શોધિ ઇય ચિચાણાઈ । | |
| તયા ગઈ બહુવિહ સંખ્યજીવાણ આણાઈ | ॥૧૪॥ |
| જયા ગઈ બહુવિહ સંખ્યજીવાણ આણાઈ । | |
| તયા પુણ્યં ચ પાપં ચ, બંધં મુક્ત્યં ચ જાણાઈ | ॥૧૫॥ |
| જયા પુણ્યં ચ પાપં ચ, બંધં મુક્ત્યં ચ જાણાઈ । | |
| તયા નિન્વિદય ભોણ, જે વિઘ્ને જે ચ માણુસે | ॥૧૬॥ |
| જયા નિન્વિદય ભોણ જે વિઘ્ન જે ચ માણુસે । | |
| તયા ધચઈ સંજોગં, સંમિમ્તરં વાહિર | ॥૧૭॥ |
| જયા ધચઈ સંજોગ, સંમિમ્તર વાહિરં । | |
| તયા મુઢે મધિષ્તાણ, પઠ્ઠાઈય અણગારિય | ॥૧૮॥ |
| જયા મુઢે મધિષ્તાણં પઠ્ઠાઈય અણગારિય । | |
| તયા સધરમુદ્ધિઠ ધમ્મ વાસે અણુતરં | ॥૧૯॥ |
| જયા સંધરમુદ્ધિઠ ધમ્મ વાસે અણુતર । | |
| તયા ધુણાઈ કમ્મરચ અયોહિફલુસંકટં | ॥૨૦॥ |
| જયા ધુણાઈ કમ્મરચ અયોહિફલુસંકટ । | |
| તયા સમ્પત્તગં નાણ દસણ વામિગચ્છઈ | ॥૨૧॥ |
| જયા સંપત્તગ નાણ, દસણ વામિગચ્છઈ । | |
| તયા સોગમજોગં ચ, જિરો નાણાઈ કયમી | ॥૨૨॥ |

| | |
|---|------|
| पचवन्ते व से तत्थ, पक्खसत्ते य सज्जए । | |
| हिंसेज्ज पाणभूयाइं, तसे अट्ठव थायरे | ॥५॥ |
| तन्हा तेण न गच्छिज्जा, संजए सुसमाहिण । | |
| सइ अण्णेण मग्गेण, जयमेव परक्खमे | ॥६॥ |
| इगालं छारिय रासिं, तुसरसिं च गोमय । | |
| ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्खमे | ॥७॥ |
| न चरेज्ज वासे वासते, महियाए व पढंसिए । | |
| महावाए व वायते, विरिच्छसंपाइमेसु वा | ॥८॥ |
| न चरेज्ज वेससामंते, बभचेरवसाणए । | |
| बंभयारिस्स वंत्तस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिआ | ॥९॥ |
| अणाययणे चरंतस्स, संसमीए अभिक्खण । | |
| होज्ज वयाणं पीला, सामयणम्मि अससओ | ॥१०॥ |
| तन्हा एअं विआणित्ता वोस पुमाइयइइण । | |
| वरजए वेससामन्त मुणी एगंतमस्सिए | ॥११॥ |
| साणं सूइअं गाविं, वित्त गोणं हयं गभं । | |
| सद्धिम्म फलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए | ॥१२॥ |
| अणुअए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले । | |
| इंदिआइं जहाभार्ग, वमइत्ता मुणी चरे | ॥१३॥ |
| वयइवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो अ गोअरे । | |
| हसन्तो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उवायय सया | ॥१४॥ |
| आलोअं धिगालं दारं, सपिद्गभवणाणि अ । | |
| परन्तो न विणिग्ग्मए संकट्ठाणं विथग्गए | ॥१५॥ |
| रओ गिइवइण च गइस्सारप्पिययाणि य । | |
| सक्किंसज्जरं ठाणं दूरआ परियग्गए | ॥१६॥ |

| | |
|---|------|
| जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली । | |
| सया जोगे निरुमिन्ता, सेलेसिं पडिषज्जइ | ॥२३॥ |
| जया जोगे निरुमिन्ता, सेलेसिं पडिषज्जइ । | |
| तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ | ॥२४॥ |
| जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ । | |
| सया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ | ॥२५॥ |
| मुहसायगस्स समणस्स, सायावल्लगस्स निगामसाइस्स । | |
| उच्छोलाणापहोअस्स, वुल्लहा सुगइ चारिसगस्स | ॥२६॥ |
| तयोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ खन्तिंसज्जमरयस्स । | |
| परीसहे जिणवस्स सुल्लहा सुगइ चारिसगस्स | ॥२७॥ |
| पच्छा पि ते पयाया, खिप्पं गच्छति अमरभवणाइ । | |
| उंसिं पिओ तवो सज्जमो अ, खति अ वमचेर च | ॥२८॥ |
| इच्छेय छज्जावणिअ, सम्महिदी सया जण । | |
| दुल्लह लहित्तु सामणं कम्मुणा न विराहिज्जासि त्तिवेमि ॥ ६॥ | |
| इति छज्जीवणिआ णाम चउत्थं अरम्भणं समत्त ॥४॥ | |

॥ अइ पिउंसणा णाम पचमज्ज्मण ॥

| | |
|--|-----|
| सपत्ते भिक्खकालम्मि, असमतो अमुच्छिओ । | |
| इमेण कम्मजोगेण, भत्तपाणं गवेसण | ॥१॥ |
| उे गामे वा नगर वा, गोअरग्गओ मुणी । | |
| परे मदमणुज्विगो, अरुवत्तिस्सेण चेअसा | ॥ ॥ |
| पुरओ जुगमायाण, पेहमाणो महि पर । | |
| वज्जतो यीअहरियाइ, पाणे अ दगमट्ठिअ | ॥३॥ |
| ओपाय विमम खाणु, यिज्जल परिषज्जण । | |
| संक्रमेण न गच्छिज्जवा, पिज्जमाणे परफमे | ॥४॥ |

| | |
|---|------|
| पचडते य से वत्थ, पक्खलंत घ सज्ज । | |
| हिंसेज्ज पाणुमूयाइ, वसे अदुब थायरे | ॥५॥ |
| तम्हा तेण न गच्छिज्जा, संजण मुसमाहिण । | |
| सइ अण्णोण मग्गेण, जयमेय परक्खमे | ॥६॥ |
| इगाळं छारिय रासिं, तुसरसिं च गोमय । | |
| ससरक्खेहिं पाण्हि, संजज्जो वं नइक्खमे | ॥७॥ |
| न चरंज्ज वासे वासति, महियाण घ पडंतिण । | |
| महावाण घ वायते, तिरिच्छसंपाइमेसु धा | ॥८॥ |
| न चरेज्ज वेससामति, बभवेरयसाणुण । | |
| बभयारिस्स वत्तस्स होज्जा वत्थ विसोत्तिआ | ॥९॥ |
| अणाययणे चरंतस्स, संमगीण अभिक्खण । | |
| हाज्ज वयाणं पीला, सामण्यन्नि असंसज्जो | ॥१०॥ |
| तम्हा एअ विआणित्ता वोस दुग्गाइवइवण । | |
| वज्जण वेससामन्त, मुणी एगंतमरिसण | ॥११॥ |
| साणं सुइअ गाधिं, वित्त गोणं इयं गयं । | |
| सद्धिअ कलई जुळं दूरज्जो परिषज्जण | ॥१२॥ |
| अणुअण नावणण, अप्पहिट्ठे अयावळे । | |
| इदिआइ जहाभार्ग, वमइत्ता मुणी चरे | ॥१३॥ |
| दवत्तस्स न गच्छेज्जा भासमाणो अ गोअरे । | |
| हसन्तो नाभिगच्छेज्जा कुलं उवापर्यं सया | ॥१४॥ |
| आलोअं धिमालं दारं, संधिवग्गभणायि अ । | |
| चरन्तो न विणिग्गमण, संकट्ठणं विवज्जण | ॥१५॥ |
| रत्ता गिहवइण च रहस्सारक्खियाणि य । | |
| सकिलसकर ठण दूरज्जो परिषज्जण | ॥१६॥ |

| | |
|---|------|
| पथिकृष्ट कुलं न पथिसे, मामग परिवञ्जए । | |
| अथियत्त कुलं न पथिसे, चियत्त पथिसे कुल | ॥१७॥ |
| साणीपावरपिहिअ, अण्णणा नावर्पगुरे । | |
| कवाहं नो पणुक्किञ्जा, उमाहसि अञ्जाइआ | ॥१८॥ |
| गोअरमापथिद्वो अ, वससुत्तं न धारए । | |
| ओगासं फसुअ नआ, अणुअथिय वोसिरे | ॥१९॥ |
| नीय दुवार वमसं, कृष्टग परिवञ्जए । | |
| अवप्पुविसओ जत्य, पाणा दुप्पडिलेहगा | ॥२०॥ |
| जत्य पुप्फाई वीआई, विप्पइआई कोट्टए । | |
| अहुणोयलित्तं वल्लं वट्ठूणं परिवञ्जए | ॥२१॥ |
| एलंगं वारंगं साणं, वच्छगं वा वि कोट्टए । | |
| वल्लंघिआ न पथिसे विवहिताण व संजए | ॥२२॥ |
| असंसत्तं पलोइञ्जा, नाइदूरावलोअए । | |
| उप्पुल्लं न विनिग्गए, नियट्ठिञ्ज अयपिरो | ॥२३॥ |
| अइभूमिं न गच्छेञ्जा, गोअरगगओ मुणी । | |
| कुलस्त भूमिं जाणित्ता, मिअं भूमिं पराहमे | ॥२४॥ |
| तत्थेव पडिलेहिञ्जा, भूमिभागविअक्खणो । | |
| सिणाणस्त य वयस्त, सलोग परिवञ्जए | ॥२५॥ |
| दगमट्ठिअआयाणे, ओआणि हरियाणि अ । | |
| परियञ्जतो पिट्ठिञ्जा, सन्धिदिअ समाहिए | ॥२६॥ |
| तत्थ से पिट्ठमाणस्त, आहार पाणभोअणं । | |
| अफप्पिअं न इच्छिञ्जा, पडिगाहिउञ्ज फप्पिअं | ॥२७॥ |
| आहारन्ती सिआ तत्थ परिमाडिञ्ज भोअण । | |
| दिवियं पडिआइप्पे, न मे फप्पइ तारिस | ॥२८॥ |

समदमाणा पाणाणि, धीमाणि, हरिमाणि च ।

असज्जमपरि नगा, तारिसि परिवग्गण ॥२६॥

साहट्ठं निक्खिमाणि, सच्चित्तं पट्ठिताणि य ।

सहेव समणद्धाए, उदगं संपणुत्तिया ॥२७॥

ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहार पाणभोच्चर्यं ।

दित्थियं पडिआइवस्से, न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

पुरेकस्सेण हत्थेण, वव्धीए भायणेण वा ।

दित्थियं पडिआइवस्से, न मे कप्पइ तारिसं ॥२९॥

एव उदक्खे ससिणिद्धे, ससरवस्से महिमाऊसे ।

हरिआलं हिगुलुप, मणोसित्ता अज्जये लोणे ॥३०॥

गेअमं वाअमं खेहिअं सोरट्ठमपिट्ठकुकुसकप अ ।

उक्खिट्ठममंसट्ठे, ससट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥३१॥

असंसट्ठेण हत्थेण, वव्धीए भायणेण वा ।

विज्जमाणं न इच्छिअज्जा पच्छा कम्मज्जहि भवे ॥३२॥

ससट्ठेणय हत्थेण वव्धीए भायणेण वा ।

विज्जमाणं पडिच्छिअज्जा ज्ञं तत्थेसणियं भवे ॥३३॥

दुण्हं तु भुजमाणायं एगे तत्थं निमत्तए ।

विज्जमाणं न इच्छिअज्जा ज्ञं से पडिलेहए ॥३४॥

दुण्हं तु भुजमाणायं दो वि तत्थं निमत्तए ।

विज्जमाणं पडिच्छिअज्जा, ज्ञं तत्थेसणियं भवे ॥३५॥

गुम्बिणीए उक्खणत्थं विविह पाणभोच्चर्यं ।

भुजमाणं विवग्गिअज्जा भत्तसेसं पडिच्छए ॥३६॥

सिआ य समणद्धाए, गुम्बिणी फालमासिणी ।

उहिआ वा निसीइअजा, निसिआ वा पुण्ड्रए ॥३७॥

| | |
|---|-------|
| त भवे भक्षपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दित्तिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस | ॥४१॥ |
| यणग पिअमाणी, वारगं वा कुमारिअ । त निक्खिअत्ति रोअसं, आहारे पाणभोयण | ॥४२॥ |
| त भवे भक्षपाणं तु, संजयाणं अकप्पिय । दित्तिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं | ॥४३॥ |
| अ भवे भक्षपाण तु, कप्पाकप्पम्मि सकिय । दित्तिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं | ॥४४॥ |
| वगयारेण पिहिअ, नीसाए पीढएण वा । लोढेण वा बिलेवेण, सिलेसेण वा केणइ | ॥४५॥ |
| त च उर्निभदिआ विअा, समणट्ठाए व वावए । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं | ॥४६॥ |
| असण पाणग वायि, खाइम साइम तहा । अ जाणिअा सुणिअा वा, वाणट्ठा पगडं इमं | ॥४७॥ |
| त भवे भक्षपाण तु, संजयाणं अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस | ॥ ४८॥ |
| असण पाणगं वायि, खाइमं साइमं तहा । अ जाणिअा सुणिअा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं | ॥४९॥ |
| तं भवे भक्षपाणं तु, सजयाण अकप्पिअ । दित्तिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं | ॥५०॥ |
| असण पाणगं वायि, खाइम साइमं तहा । अ जाणिअा सुणिअा वा, यणिमट्ठा पगडं इमं | ॥५१॥ |
| तं भवे भक्षपाण तु, सजयाण अकप्पिअं । दित्तिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं | ॥५२॥ |

दुष्काशो मुहादाइ, मुहाजीवीधि दुष्का ।

मुहादाइ मुहाजीवी, दो पि गच्छति मुगई ॥ ति वेमि ॥ १०० ॥

॥ इति पिडेसणाए पढमो उद्देशो समप्तो ॥

पढिमाहं सलिहिताण, लवमायाइ संजए ।

दुगंध वा सुगंध वा, सव्व भुंजे न छड्डए

॥१॥

सेव्वा निसीहियाए, समायभो अ गोअर ।

अयावयट्ठा मुखाण, जइ तेणं न सथरे

॥२॥

तभो कारणसमुपण्णो भत्तपाणं गवेसए ।

बिहिया पुळ्वउत्तेण, इमेणं उत्तरेण य

॥३॥

कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पबिलेहसि ।

अकालं च विवज्जिता काले काल समायरे

॥४॥

अकाले अरसि भिक्खू काल न पबिलेहसि ।

अप्पाणं च किल्लामेसि सन्निवेसं च गरिहसि

॥५॥

सइ काले अरे भिक्खू, कुञ्जा पुरिसकारिअं ।

अत्ताभोत्ति न सोइउज्जा तवो प्तिअहियासए

॥६॥

तहेमुखावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया ।

तं उजुअं न गच्छिउज्जा, अयमेष परक्कमे

॥७॥

गोअरमापमिट्ठो अ न निसीइउज्जा कस्थई ।

कइ च न पबंभिउज्जा, थिट्ठताण य संजए

॥८॥

अमाल फलिहं वारं कयाड वा भि संजए ।

अपलंपिआ न थिट्ठिउज्जा, गोअरगगभो मुणी

| | |
|---|------|
| समण माहण वाधि, कियण वा वणीमग । | |
| उवसकमत भत्तहा, पाण्डाण व सज्जण | ॥१०॥ |
| तमइकमित्तु न पविसे, न चिट्ठे वक्खुगोअर । | |
| एगसमवकमित्ता सत्थ चिट्ठिअ सज्जण | ॥११॥ |
| वणीमगस्स वा तस्स, वायगस्सुभयस्स वा । | |
| अप्पत्तिअ सिया दुज्जा, लहुत्तं पययणस्स वा | ॥१२॥ |
| पडिसेहिए व दिअे वा, तअो तम्मि नियत्तिए । | |
| सयसंकमिअ भत्तहा, पाण्डाण व सज्जण | ॥१३॥ |
| उप्पलं पउम वा मि, कुमुअ वा मगदतिअ । | |
| अन्न वा पुप्फसच्चित्तं, त व सलुच्चिआ दए | ॥१४॥ |
| त भवे भत्तपाणं तु, सज्जयाण अकप्पिअ । | |
| दिविअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ सारिसं | ॥१५॥ |
| उप्पलं पउम वाधि, कुमुअ वा मगदतिअ । | |
| अन्न वा पुप्फसच्चित्तं, त व सम्महिआ दए | ॥१६॥ |
| त भवे भत्तपाणं तु, सज्जयाण अकप्पिअ । | |
| दिविअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ सारिसं | ॥१७॥ |
| सालिअ वा विरालियं, कुमुअ उप्पलनालिय । | |
| मुणालिअ सासयनालिअ उच्छुस्वइ अनिव्वइ | ॥१८॥ |
| तरुणग वा पघालं रुक्खस्स तण्णगस्स वा । | |
| अनस्स वा पि हरिअस्स आमग परियअण | ॥१९॥ |
| तरुणिअ वा द्वियादिं, आमिअ भजिअ सय । | |
| दिविअ पडिआइक्खे, न न कप्पइ सारिसं | ॥२०॥ |
| तहा कोलनणुस्सिअ, वलुअ फासयनालिअ । | |
| विमपण्णग नोम, आमग परियअण | ॥२१॥ |

- तद्वय चावलं विट्, विचित्रं वा तत्तन्निष्ठयुद्धं ।
विलपिट् पृष्टपिन्नाग, आमग परियज्ज ॥२२॥
- कविट् मावर्णिगं च, मूलगं मूलगच्छिभ ।
आम असत्यपरिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
- तदेव फलमथूणि वीचमंथणि जाणिष्ठा ।
विहंसग पियासं च, आमग परियज्जए ॥२४॥
- समुज्जाण चरे भिक्खू कुलमुच्चाययं सया ।
नीय कुलमइक्खम ऊसइ नाभिधारए ॥२५॥
- अदीणो वित्तिमेसिज्जा न विसीएत्थ पडिप ।
अमुच्छिभो भोअणम्मि मायण्यो एसणारए ॥२६॥
- बहु परपरे अत्थि विविह स्याइमसाइमं ।
न तत्थ पडिभो कुप्पे, इच्छा दिक्क परो न वा ॥२७॥
- सयणासणवत्थं वा, भत्त पाण च सजए ।
अदितस्त न कुप्पिज्जा, पक्कनसे वि अ विसभो ॥२८॥
- इत्थिअं पुरिसं बावि, इहर वा महस्सग ।
वंदमाणं न जाइज्जा, नो अ यं फलसंवए ॥२९॥
- जे न वंदे न से कुप्पे वदिभो न समुज्जसे ।
एवमन्नेसमाणस्त सामण्यमणुजिह्वइ ॥३०॥
- मिआ एगइभो लउं, लोमेण विणिगुहइ ।
मामेय दाइयं संतं दउठ्ठणं सयमायए ॥३१॥
- अत्तठा गरुभो जुठो बहुपायं पकुट्थइ ।
दुत्तोसभो अ से होइ, निज्जाणं च न गण्णइ ॥३२॥
- सिआ एगइभो लउं, विविहं पाणमोअण ।
मरगं मरगं मुआ, विविन्न विरसमाहरे

| | |
|--|------|
| जाणतु ता इमे समणा आययद्दी अय मुणी । | |
| संतुट्ठो सेवण पत्त, लूहयिन्ती सुतोसओ | ॥३४॥ |
| पूयणट्ठा जसोक्कामी माणसम्माणकामण । | |
| वहु पसवइ पार्व मायासल्ल च कुट्ठइ | ॥३५॥ |
| सुरं वा मेरग वाधि, अन्न वा मज्जगं रसं । | |
| ससक्ख न पिबे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो | ॥३६॥ |
| पियण एगओ तेणो, न मे कोइ विआणइ । | |
| तस्स पस्सइ दोसारं, नियडि च सुणेइ मे | ॥३७॥ |
| वहुइ सुंढिआ तस्स, मायामोस च भिक्खुणो । | |
| अयसो अ अनिब्बाणं, सययं च असाहुआ | ॥३८॥ |
| निच्चुब्धिगो जहा तेणो, अत्तफम्मोहिं दुम्मइ । | |
| वारिसो मरणते वि, न आराहेइ सवरं | ॥३९॥ |
| आयरिण नाराहेइ, समणे आधि वारिसो । | |
| गिहत्था पि ए गरहति जेण जाणवि वारिसं | ॥४०॥ |
| एवं तु अगुणप्पेही, गुणाण च विवज्जण । | |
| वारिसो मरणते वि, ए आराहेइ सवर | ॥४१॥ |
| तवं कुञ्चइ मेहायी, पणीअ वज्जण रस । | |
| मज्जप्पमाययिरओ, तयस्सी अइउक्खस्सो | ॥४२॥ |
| तस्स पस्सइ वज्जाण, अणोगसाहुपइमं । | |
| पिउल्ल अत्थसजुत्तं, फिच्चइस्सं सुणेइ मे | ॥४३॥ |
| एव तु गुणप्पेही, अगुणाण च विवज्जण । | |
| वारिसो मरणत वि, आराहेइ संवर | ॥४४॥ |
| आयरिण आराहेइ समणे आधि वारिसो । | |
| गिहत्था पि ए पूचति, जेण जाणवि वारिस | ॥४५॥ |

तयतणे धयतणे, हयतेणे अ जे नर ।

आयारभावतणे अ, कुज्यइ दयकिज्यस ॥४६॥

लद्धुण पि वेधत्त, उययमो दयकिज्यसे ।

तत्थायि से न याणाइ, किं मे पिआ इम फलं ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताणं, सत्तभइ एलमूअग ।

नरगं विरिक्खजोणिं पा, योही जत्थ सुवुल्लाहा ॥४८॥

एअ च दोस वट्ठुणं, नायपुत्तेण भासिअं ।

अणुमाय पि मेहावि, मायामोसं विवरत्तए ॥४९॥

सिक्खिअण्ण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे ।

तत्थ भिक्ख सुप्पाणिहिंविण, सिक्खलअज्जगुणध विहरिअसि

॥ चि वेमि ॥५०॥

॥ इति पिंडेसणाए बीओ वहेसो ॥

इति पिंडेसणाए पंचममअकयणं समत्तं ॥५१॥

॥ अइ छट्ठ धम्मत्यकामअकयण ॥

नाणदमणसपन्नं, संजमे अ तवे रथं ।

गणिमागमसपन्नं उज्जाणम्मि समोसहं ॥५२॥

रायाणां रायमवा य माहणा अबुव खत्तिआ ।

पुच्छति निहुअप्पाणो, फहं मे आयारगोयरो ॥५३॥

तेसिं सो निहुओ वंतो सत्त्वमूअसुहायहो ।

सिक्खाए सुसमावत्तो आयअसाइ विअअसणो ॥५४॥

इहि धम्मत्यकामाणं निग्गधाणं सुणेह मे ।

आयारगोअर भीम, सयलं दुरहिंदुअं

| | |
|--|------|
| नमस्त्य परिसं युक्तं ज लोए परमदुर्जरं । | |
| विच्छेदगुणभाइस्त, न भूम्भं न भविस्तइ | ॥५॥ |
| सक्षुद्रगविअत्ताणं, बाहिआणं च जे गुणा । | |
| अक्खंइफुडिआ कायव्या, तं सुणेह जहा तथा | ॥६॥ |
| वस अट्ट य ठाणाई, जाई घालोऽवरम्भइ । | |
| वत्थ अन्नयरे ठाणे, निर्गंयत्ताओ भस्सइ | ॥७॥ |
| षयद्धकं कायद्धकं, अकप्पो गिहिभायणं । | |
| पत्तिर्यकनिसिज्जा य, सिणाणं सोहवञ्जणं | ॥८॥ |
| वत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण वेसिअं । | |
| अहिंसा निब्बणा विट्ठा, सव्व भूएसु संजमो | ॥९॥ |
| जावन्ति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा । | |
| ते जाणमजाणं वा, न ह्ये एो वि घायए | ॥१०॥ |
| सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीवितं न मरिज्जिअ । | |
| तन्हा पाणियहं घोरं, निर्गंथा यञ्जयसि णं | ॥११॥ |
| अप्पण्ठा परट्ठा वा, कोहा वा अइ वा मया । | |
| हिंसगं न मुत्तं यूआ, नोयि अन्न ययावए | ॥१२॥ |
| मुसायाओ य लोगम्मि सव्वसाइहि गरिहिओ । | |
| अयिस्तासो य भूआण, तन्हा मोसं वियञ्जए | ॥१३॥ |
| चित्तमतमपिअ वा, अप्पं वा जइ वा धहुं । | |
| वत्तसोहणमित्तं पि, उग्गहसि अजाइया | ॥१४॥ |
| त अप्पणा न गिण्हंसि, नो यि गिण्हवए परं । | |
| अन्न या गियहमाणं पि, नाणुजाणति सजया | ॥१५॥ |
| अवभपरिअ घोरं पमाय दुरहिट्ठिअं । | |
| नायरंति नुणी सोए, भेआययणयगिज्जणो | ॥१६॥ |

| | |
|--|------|
| वयतणे वयतणे, मयतणे अ जे नर । | |
| आयारभायतणे अ, कुज्यइ वयकिन्विसं | ॥४६॥ |
| लढूण यि वयत्त, उयधमो वयकिन्वियसे । | |
| सत्याधि से न याणाइ, किं मे फिषा इम फलं | ॥४७॥ |
| तत्तो यि से चइत्ताणं, लब्धइ एजमूधग । | |
| नरगं तिरिफसजोणिं घा, योही जत्थ सुदुज्जहा | ॥४८॥ |
| एअ च वोस वट्ठूणं, नायपुत्तेण भासिअं । | |
| अणुमाय पि मेहावि, मायामोसं विषवज्जए | ॥४९॥ |
| सिक्खिअण्ण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे । | |
| तत्थ भिक्ख सुप्पाणिहिंविण, तिव्वलज्जगुणं विहरिज्जासि | |
| ॥ चि वेमि ॥५०॥ | |

॥ इति पिंडेसणाए वीओ वरेसो ॥

इति पिंडेसणाए पंचममग्गयणं समत्तं ॥५॥

॥ अइ छट्ठ धम्मत्यकामग्गयण ॥

| | |
|---|-----|
| नाणवसणसपन्नं, संजमे अ तवे रयं । | |
| गणिमागमसपन्नं वज्जाणम्मि समोसहं | |
| रायाणो रायमवा य माइया अहुय सत्तिआ । | ॥१॥ |
| पुच्छति निहुअप्पाणो, क्हं भे आयारगोयरो | |
| तेसिं सो निहुओ वतो सव्यभूअसुहावहो । | ॥२॥ |
| सिक्काए सुसमाठत्तो आयवसाइ विअमसणो | |
| इंदि धम्मत्यकामाणं, निम्मावाणं सुणेइ मे । | ॥३॥ |
| आयारगोअर भीम, सयलं दुरहिंठिअं | ॥४॥ |

| | |
|---|------|
| पच्छाकम्म पुरेकम्म, सिञ्चा तत्थ न कप्पइ । | |
| एषमट्ठ न मुञ्चति, निग्गथा गिहिभायणे | ॥५३॥ |
| आसंवीपलिअंकेसु, मंचमासालएसु वा । | |
| अणायरिअमत्थाण, आसइत्तु सइत्तु वा | ॥५४॥ |
| नासंवीपलिअंकेसु न निसिञ्जा न पीढए । | |
| निग्गंथा पडिलेहाए, पुद्धवुत्तमहिट्ठगा | ॥५५॥ |
| गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा । | |
| आसवी पलिअंको अ, एयमट्ठ विवग्गिआ | ॥५६॥ |
| गोअरगपविट्ठस्स, निसिञ्जा जस्स कप्पइ । | |
| इमेरिसमणायारं, आधवज्जइ अदोहिअ | ॥५७॥ |
| विवत्ती वमचेरस्स, पाणाण च वहं वहो । | |
| वणीमगपडिग्घाओ, पांडकोहो अगारिण | ॥५८॥ |
| अगुत्ती वमचेरस्स, इत्थीओ वा वि सकण । | |
| कुसीलवट्ठण ठाण, दूरओ परिववज्जए | ॥५९॥ |
| विएहमन्नयरागस्स, निसिञ्जा जस्स कप्पइ । | |
| जराए अमिमूअस्स, याहिअस्स तवस्सिणो | ॥६०॥ |
| याहिओ वा अरागी वा, सिणार्णं जो उ पत्थए । | |
| युक्खो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो , | ॥६१॥ |
| संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु अ । | |
| जे अ भिक्खू सिणायतो, विअडेणुप्पिलावए | ॥६२॥ |
| वम्हा ते न सिणायति, सीएण वसिणेण या । | |
| जायग्गीव वय घोरे, असिणायमहिट्ठगा | ॥६३॥ |
| सिणाय अदुया फफ, लद्ध पउमगाणि अ । | |
| गायस्सुअट्ठणट्ठाए, नायरति फयाइ वि | ॥६४॥ |

| | |
|---|------|
| यणस्सइ न हिमति, मणसा ययसा कायसा । | |
| विविहेण करणपाणण, संजया सुसमादिआ | ॥४१॥ |
| यणस्सइ विहिससा हिंसइ उ तयस्सिण् । | |
| तसे अ विविह पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे | ॥४२॥ |
| तम्हा एय चियाणिता, दोस दुग्गाइयकूणं । | |
| यणस्सइसमारंभं, जायज्जीवाए वज्जए | ॥४३॥ |
| तसकार्यं न हिंसंति मणसा ययसा कायसा । | |
| विविहेण करणजोपण सजया सुसमादिया | ॥४४॥ |
| तसकार्यं विहिसंतो हिंसइ उ तयस्सिए । | |
| तसे अ विविह पाणे चक्खुसे अ अचक्खुसे | ॥४५॥ |
| तम्हा एअं विआणिता, दोस दुग्गाइयकूण । | |
| तसकार्यसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए | ॥४६॥ |
| जाइ चत्तारि मुब्बाइ, इसियाहारमाइणि । | |
| ताइ विवज्जतो, संजम अणुपात्तए | ॥४७॥ |
| पिढं सिब्बं अ बस्यं च, चत्थं पायमेव य । | |
| अकप्पिअं न इच्छिआ पडिगाहिअ कप्पिअं | ॥४८॥ |
| जे नियगं ममारंति कीअमुहेसिआहणं । | |
| यइ ते ममणुआणवि इइ कुत्तं महेसिणा | ॥४९॥ |
| तम्हा असणपाणाइं कीयमुहेसिआहणं । | |
| वज्जयति ठिअप्पाणो निग्गथा धम्मजीविणो | ॥५०॥ |
| कंससु कंसपाणसु, कुडमोणसु वा पुणो । | |
| मुज्जतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ | ॥५१॥ |
| सीओदगममारंभे, मत्तपोअणअणुयो । | |
| जाइ ढनति भूआइं विट्ठो तस्य असजमो | ॥५२॥ |

- पच्छाकम्भं पुरेकम्भं, सिञ्चा तत्थ न कप्पइ ।
 एभमट्ठ न भुज्जति, निमाथा गिहिभायणे ॥५३॥
- आसंदीपलिअंकेसु, मंचमासालएसु वा ।
 अणायरिअमब्बाण, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥
- नत्संदीपलिअंकेसु, न निसिञ्जा न पीढए ।
 निगंथा पडिलेहाए, बुद्धवत्तमहिट्ठगा ॥५५॥
- गंभीरविजया एए, पाणा तुप्पडिलेइगा ।
 आसंदी पलिअंको अ, एयमट्ठं विवज्जिआ ॥५६॥
- गोअरमापविट्ठस्स, निसिञ्जा जस्स कप्पइ ।
 इमेरिसमणायारं आवज्जइ अमोहिअं ॥५७॥
- विवत्ती वभचेरस्स, पाणाण च बहं बहो ।
 वणीमगपडिग्घाओ, पांडकोहो अगारिण ॥५८॥
- अगुत्ती वभचेरस्स, इत्थीओ वा वि सक्कणं ।
 कुसीलवड्डण ठाण, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥
- विण्हमन्नयरागस्स, निसिञ्जा जस्स कप्पइ ।
 जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो ॥६०॥
- वाहिओ वा अरोगी वा, सिणायं ओ उ पत्थए ।
 युक्कंतो होइ आयारो, जहो हवइ सजमो , ॥६१॥
- संविमे सुट्ठमा पाणा, घसासु भित्तगासु अ ।
 जे अ भिक्खू सिणायतो, विअडेणुप्पिन्नावए ॥६२॥
- सम्हा ते न सिणायति, सीएण उसिण्णेण वा ।
 आवज्जीव धय घोर, असिणायमहिट्ठगा ॥६३॥
- सिणाय अट्ठया कफ, लद्ध पठमगाणि अ ।
 गायस्सुन्वट्ठए, नायरसि फयाइ वि ॥६४॥

| | |
|--|------|
| यणस्तइ न हिंसति, मणसा वयसा कायसा । | |
| तिविहेण करणजोणण, संजया मुसमादिआ | ॥४१॥ |
| वणस्तइ विहिंसतो, हिंसइ उ तयस्सिए । | |
| तसे अ यिविहे पाणे, वक्खुसे अ अचक्खुसे | ॥४२॥ |
| तन्हा एय वियाणिता, दोसं दुग्गाइवइण । | |
| वणस्तइसमारंभं, जायजीवाए वज्जए | ॥४३॥ |
| तसकायं न हिंसति मणसा वयसा कायसा । | |
| तिविहेण करणजोएण संजया मुसमादिया | ॥४४॥ |
| तसकायं विहिंसतो, हिंसइ उ तयस्सिए । | |
| तसे अ यिविहे पाणे वक्खुसे अ अचक्खुसे | ॥४५॥ |
| तन्हा एअं विआणिता, दोसं दुग्गाइवइण । | |
| तसकायसमारंभं, जायजीवाए वज्जए | ॥४६॥ |
| आई वत्तारि मुज्जाइ, इसियाहारमाइण्यि । | |
| ताइ तु विवक्खतो, संजम अणुपात्तए | ॥४७॥ |
| पिड सिज्जं च वत्थं च, वत्थं पायमेव य । | |
| अकप्पिअं न इच्छिआ पडिगाइवअ कप्पिअं | ॥४८॥ |
| जे निमागं ममायंति, कीयमुदेसिआइव । | |
| वह ते समणुजायांति इइ बुत्तं मइसिया | ॥४९॥ |
| तन्हा असणपाणाइ कीयमुदेसिआइव । | |
| वज्जयति ठिअप्पाणो, निग्गथा धम्मजीविणो | ॥५०॥ |
| कंसेसु कंसपाएसु, कुडमोएसु वा पुणो । | |
| मुज्जतो असणपाणाइ, आभारा परिभस्सइ | ॥५१॥ |
| सीओवगसमारंभे, मत्तधोअणवइण्ये । | |
| आई व्वंति मूआइ, विट्ठो तत्थ असजमो | ॥५२॥ |

- पञ्चाङ्गम् पुरेङ्गम्, सिद्धा तत्थ न कप्पइ ।
 एअमद्व न मुज्जति, निग्गथा गिहिभायणे ॥५३॥
- आसंवीपलिअंकेसु, मंचमासालणसु वा ।
 अणायरिअमज्जाण, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥
- नासंवीपलिअंकेसु न निसिञ्जा न पीठए ।
 निग्गथा पडिलेहाए, बुद्धुत्तमहिट्ठगा ॥५५॥
- गंभीरविज्जा एए, पाणा तुप्पडिलेहा ।
 आसंवी पलिअंको अ, एअमद्व विवच्चिअ ॥५६॥
- गोअरगपविट्ठस्स, निसिञ्जा जस्स कप्पइ ।
 इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अवोहिअं ॥५७॥
- विवत्ती वमचेरस्स, पाणाण थ पहे व्हो ।
 अणीमगपडिग्घाओ, पाडिओहो अगारिण ॥५८॥
- अगुत्ती वमचेरस्स, इत्थीओ वा पि संकण ।
 दुसीसवड्ढण ठाण, वूरओ परिवज्जए ॥५९॥
- तिण्हमन्नयरागस्स, निसिञ्जा जस्स कप्पइ ।
 जराए अभिमूअस्स, वाहिअस्स ठवस्सिणो ॥६०॥
- वाहिओ वा अरोगी वा, सिणायं ओ उ पत्थए ।
 पुक्कसो होइ आचारो, जवो हवइ संजमो ॥६१॥
- संतिमे सुहुमा पाणा, धसासु भिलगासु अ ।
 ओ अ भिक्खू मिणायसो, पिअयेणुप्पिलावए ॥६२॥
- उम्हा ते न सिणायसि, सीपण वसिण्येण वा ।
 जायग्गीव वय घोरे, असिणायमहिट्ठगा ॥६३॥
- सिणाय अदुया कप्प, लद्ध पठमगाणि अ ।
 गायस्तुब्बट्ठणट्ठाए, नायरसि फयाइ पि ॥६४॥

नगिणस्त यापि मुंढस्त, वीहरोमनहसिणो ।
 मेहुणाओ उवसंतस्त, किं विभूसाय कारिअ ॥६५॥
 विभूसावत्तिअ भिक्ख, कम्मं यधइ विफलं ।
 ससारसायरे घोरे, जेणं पइइ दुरुत्तरे ॥६६॥
 विभूसावत्तिअं चेअं, बुद्धा मज्जंति वारिसं ।
 सायवज यहुलं चेअं, नेयं ताईहिं सेविअं ॥६७॥
 खवति अप्पाणममोहवसिणो, तवे रया स जम अजवेगुणे ।
 धुणति पावाइं पुरेफडाइ, नयाइं पावाइ न ते करति ॥६८॥
 सओवसंता अममा अकिंचया, सविग्गविग्गाणुगया असंसिखो ।
 उठप्पसंने विमलो व चदिमा, सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइखो ॥
 ॥ ति बेमि ॥६९॥

॥ इति कहु धम्मस्य कामकम्पयण समर्थ ॥ ६ ॥

अइ सुवकसुदी याम सत्तम अकम्पयण.

चउण्ह खलु भासाणं, परिसंस्साय पन्नवं ।
 दुण्हं तु विणयं सिक्खे वो न भासिअ सक्खसो ॥ १ ॥
 जा अ सबा अवत्तव्वा, सबाओसा अ जा मुसा ।
 जा अ बुद्धेहिं नाइआ न तं भासिअ पन्नवं ॥ २ ॥
 असबमोसं सर्वं च अणवज्जमककसं ।
 समुप्पेहमसंविद्ध, गिरं भासिअ पन्नवं ॥ ३ ॥
 एय च अट्टमजं वा जं तु नामेइ सासयं ।
 स भासं सबमोसं च पि रं पि धीरो विबज्जप ॥ ४ ॥
 वितहं पि ठहामुत्ति, जं गिरं भासप नरो ।
 तम्हा सो पुठो पावेण, किं पुण जो मुसं वप ॥ ५ ॥
 तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा यो भविस्सइ ।
 अहं वाणं करिस्सामि, एसो वाणं करिस्सइ

| | |
|---|------|
| एवमाई उ आ भासा, एसकालम्मि सकिया । | |
| संपयाइअमट्टे वा, स पि धीरो विवञ्जए | ॥५॥ |
| अईअम्मि य कालम्मि, पबुप्पणमणागए । | |
| अमट्टं तु न जाणिञ्जा, एवमेअं तु नो वए | ॥८॥ |
| अईअम्मि य कालम्मि, पबुप्पणमणागए । | |
| अत्य संका भवे स तु, एवमेय तु नो वए | ॥९॥ |
| अईअम्मि य कालम्मि, पबुप्पणमणागए । | |
| निस्तंक्रिय भवे ज तु, एवमेअं तु निदिसे | ॥१०॥ |
| तदेव फट्ठा भासा, गुरुमूओवचाइणी । | |
| सवा वि सा न वत्तव्वा अओ पावस्स आगमो | ॥११॥ |
| तदेव काण 'काणे' ति, पडगं पडगे ति वा । | |
| वाहिअं वा वि रोगि ति, तेण ओरे ति नो वए | ॥१२॥ |
| एएणन्नेण अट्टेण, परो ओणुवहम्मइ । | |
| आयारभावदोसन्नू, न तं भासिअ पण्यव | ॥१३॥ |
| तदेव होले गोलि ति, साणे वा वसुले ति य । | |
| दमए दुहए वा वि, न त भासिअ पण्यव | ॥१४॥ |
| अखिए पखिए वावि अम्मो भाठस्सिअ ति य । | |
| पितस्सिए भायणिअ ति, धूए यत्तुणिअति य | ॥१५॥ |
| हले हलेति अन्नेति भट्टे सामिणि गोमिणि । | |
| होले गोले वसुले ति, इत्थियं नेयमालवे | ॥१६॥ |
| यामधिञ्जेण य यूआ इत्थीगुत्तेण वा पुणो । | |
| जहारिअमभिगिअम् अलधिअ लधिअ वा | ॥१७॥ |
| अअए पअए वा वि, वप्पो बुद्धपित ति य । | |
| माउत्तो भाइणिअ ति, पुत्ते यत्तुणिअति य | ॥१८॥ |

ह हो ? हस्तिस्ति अभिस्ति, भट्टा सामिय गोमिय ।

होल गोल वसुलिस्ति, पुरिसं नेवमालव

॥१६॥

नामधिग्जेण ए यूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो ।

जहारिहमभिगिम्भ, आत्तयिज्ज जयिज्ज वा

॥१७॥

पंचिवियाण पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं ।

जाव ए न विजाणियञ्जा, ताव जाइ त्ति आत्तवे

॥१८॥

तदेव मणुस पसु पक्खिं वावि, सरीसिर्व ।

यूले पमेइले वग्गे पाइमिस्ति य नो वप

॥१९॥

परिवुडु त्ति यं यूया यूया उयचिए त्ति य ।

संजाए पीणिए वावि, महाकाय त्ति आयवे

॥२०॥

तदेव गाओ दुग्गमाओ वग्गा गोरहग त्ति य ।

वाहिमा रइओमा त्ति नेवं आसिज्ज पणणव

॥२१॥

जुव गवि त्ति यं यूया धेणु रसवय त्ति य ।

रइस्से महइए वा वि, वप सवहणि त्ति य

॥२२॥

तदेव गतुमुज्जाणं, पळ्वयाणि जयाणि य ।

रुक्खा महइ पेहाए, नेवं आसिज्ज पणणव

॥२३॥

अलं पासायखंभाणं, सोरखाणि गिहाणि य ।

फलिहमालनावाण, अलं उवगवोणियां

॥२४॥

पीठए पंगवेरे य, नंगले मइय सिया ।

अंतसट्ठी व नाभी वा, गंडिया य अलं सिया

॥२५॥

आसणं सयणं जाणं हुग्गा वा किंभुवस्तए ।

भओवपाइणि भासं, नेव आसिज्ज पणणव

॥२६॥

- तदेव गंतुमुत्थायं पञ्चयाणि वयाणि य ।
रुक्खा महकल पेहाए, एवं भासिञ्च पण्णव ॥३०॥
- जाइमंता इमे रुक्खा, वीहवट्ठा महालया ।
पयायसाला विडिमा, वए वरिसणि चि य ॥३१॥
- तहा फलाइं पक्काइं, पायसज्जइ नो वए ।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइ चि नो वए ॥३२॥
- असथवा इमे अंवा, बहुनिव्वट्ठिमा फला ।
वइज्ज बहुसंभूया, भूयसूच चि वा पुणो ॥३३॥
- तदेवोसहीओ पक्काओ, नीलिमाओ छवी इ य ।
लाइमा भज्जिमाउ चि, पिहुसज्ज चि नो वए ॥३४॥
- रुदा बहुसंभूया, यिरा ओसठा चि य ।
गन्धिमाओ पसूमाओ, संसारउ चि आलवे ॥३५॥
- तदेव संखडिं नथा, किञ्च कज्ज चि नो वए ।
तेण्णं वायि वग्गि चि, सुवित्थि चि य आवगा ॥३६॥
- संखडिं संखडिं वूया, पण्यट्ठ चि तेण्णं ।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाण वियागरे ॥३७॥
- तहा नईओ पुण्णओ, कायत्तिञ्च चि नो वए ।
नायाहिं वारिमाउ चि, पाणिपिज्ज चि नो वए ॥३८॥
- बहुवाहवा अगाहा, बहुसल्लिणुप्पिलोदगा ।
यहुचित्थोदगा यायि, एवं भासिञ्च पण्णव ॥३९॥
- तदेव सावज्जं जोगं, परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
कीरमाणं चि वा नथा, सायज्जं न लवे मुणी ॥४०॥
- सुफडि चि सुपडि चि, सुच्छिजे सुहजे मजे ।
सुनिट्ठिए सुलट्ठिचि, सावज्जं यउअए मुणी ॥४१॥

हे हो ? हसित्ति अमिप्ति, मट्टा सामिय गोमिय ।

होत्त गोत्त वसुत्तिप्ति, पुरिसं नेवमात्तव ॥१६॥

नामधिब्जेण णं भूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुण्णो ।

अहारिहमभिगिग्ग, आत्तविज्ज जियिज्ज वा ॥१७॥

पंक्खिदियण पाणाण एस इत्थी अयं पुमं ।

आव ण न विज्जाणिज्जा, ताव जाइ त्ति आत्तवे ॥१८॥

तद्देव मणुसं पसु, पक्खिं वावि, सरीसिबं ।

यूले पमेइले वग्गे, पाइमिप्ति य नो वए ॥१९॥

परिषुह त्ति णं वूया, बूया उवविप्ति य ।

संजाए पीणिए वावि, महाकाय त्ति आत्तवे ॥२०॥

तद्देव गाओ दुब्बमओ, वग्गा गोरहग त्ति य ।

वाहिमा रहओमा त्ति, नेवं भासिज्ज पण्णव ॥२१॥

जुध गवि त्ति णं बूया वेसु रसवय त्ति य ।

रहस्से महत्तए वा वि, वए सवहणि त्ति य ॥२२॥

तद्देव गतुमुज्जाणं, पण्वयाणि वयाणि य ।

रक्ख्वा महत्त पेहाए, नेवं भासिज्ज पण्णव ॥२३॥

अत्तं पासायखंभाणं, सोरणाणि गिहाणि य ।

फलिहमालनावाण, अत्तं उवगवोणियां ॥२४॥

पीठए पंगवेरे य, नंगले महय सिया ।

जंतलट्ठी व नाभी वा, गब्बिया व अत्तं सिया ॥२५॥

आसणं सयणं जाणं हुज्जा वा किंभुवस्सए ।

भओवपाइणि भासं, नेव भासिज्ज पण्णव ॥२६॥

| | |
|--|------|
| तद्देव गंतुमुज्जाय पथ्याणि वणाणि य । | |
| रुक्खा मइरुत्त पेहाए, एधं भासिञ्च पण्णर्घं | ॥३०॥ |
| आइमंवा इमे रुक्खा, वीदधद्वा महालया । | |
| पयायसात्ता बिद्धिमा, वए वरिसणि त्ति य | ॥३१॥ |
| तहा फलाई पक्काई, पायसज्जइ नो वए । | |
| वेसोइयाई टालाई, वेदिमाइ त्ति नो वए | ॥३२॥ |
| असथडा इमे अंघा, बहुनिब्बट्टिमा फला । | |
| वइज्ज बहुसंभूया, भूयस्स त्ति वा पुणो | ॥३३॥ |
| तद्देवोसहीओ पक्काओ, नीलियाओ छवी इ य । | |
| लाइमा भज्जिमाउ त्ति, पिहुसज्ज त्ति नो वए | ॥३४॥ |
| रुद्धा बहुसंभूया, यिरा ओसडा वि य । | |
| गदिमयाओ पसूयाओ, संसाराउ त्ति आलवे | ॥३५॥ |
| तद्देव सस्सडिं नद्या, फिच्च कज्ज त्ति नो वए । | |
| तेण्णं घावि वग्गि त्ति, सुविस्सि त्ति य आवगा | ॥३६॥ |
| संस्सडिं संस्सडिं वूया, पणियट्ट त्ति तेण्णं । | |
| बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाए वियागरे | ॥३७॥ |
| तहा नईओ पुण्णाओ, कायत्तिज्ज त्ति नो वए । | |
| नावाहिं वारिमाउ त्ति, पाणिपिण्ड त्ति नो वए | ॥३८॥ |
| बहुवाहडा अगाहा, बहुसल्लिज्जुप्पिलोदगा । | |
| बहुवित्थडोदगा यापि, एव भासिज्ज पण्णर्घं | ॥३९॥ |
| तद्देव साधज्जं ओगं, परस्सट्ठाए निट्ठियं । | |
| फीरमाणं त्ति या नद्या, साधज्जं न लवे मुणी | ॥४०॥ |
| सुकडि त्ति सुपाक्कि त्ति, सुच्छिज्जे सुहडे मडे । | |
| सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति, साधज्जं वज्जए मुणी | ॥४१॥ |

| | |
|---|------|
| हे हो ? दक्षिण अभित्ति, भट्टा सामिय गोमिय । | |
| होस्त गोस्त यस्तुलित्ति, पुरिसं नेवमालवे | ॥१६॥ |
| नामधिरजेण थं धूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो । | |
| जहारिहमभिगिन्ध, आस्तधित्त लधिरज वा | ॥१७॥ |
| पंधिदियण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं । | |
| जाव ए न विजाणिज्जा, ताव जाइ त्ति आस्तवे | ॥१८॥ |
| तदेव मणुस पसु पक्खिं धावि, सरीसिर्ब । | |
| थूले पमेइले वग्गे, पाइमित्ति य नो धए | ॥१९॥ |
| परिवुट्ठ त्ति ए वूया, वूया उवधिए त्ति य । | |
| संजाए पीणिध धावि, महाफाय त्ति आयवे | ॥२०॥ |
| तदेव गाओ दुग्गमओ वग्गा गोरहग त्ति य । | |
| धादिमा रइजोगा त्ति नेव भासिग्ग पण्णव | ॥२१॥ |
| जुव गवि त्ति थं वूया धेखु रसवय त्ति य । | |
| रइस्से महइए वा वि, वए सवइणि त्ति य | ॥२२॥ |
| तदेव गंतुमुज्जाणं, पन्वयाणि वणाणि य । | |
| एव्वा महइ वेहाए, नेव भासिग्ग पण्णव | ॥२३॥ |
| अलं पासायसंमाणं, सोरणाणि गिहाणि य । | |
| फलिहमालनावाण, अलं उदगदोण्णिणं | ॥२४॥ |
| पीठए पंगवेरे य, नंगले मइय सिया । | |
| जंतलट्ठी व नाभी वा, गंठिया व अलं सिया | ॥२५॥ |
| आसरणं समयणं जाणं दुग्गा वा किंचुधस्सए । | |
| भओयपाइणि भासं, नव भासिग्ग पण्णव | ॥२६॥ |

तद्वै सावञ्जणुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोवघाण्णी ।
 से कोहोह मय साव माणवो, न हासमाणो वि गिर वञ्ज ॥१४॥
 सुवक्कसुद्धि समुपेहिा मुणी, गिर च दुट्ठं परिवञ्जए सया ।
 मियं अवुट्ठ अणुवीह भासए, सयाण मञ्जे लहई पससण ॥१५॥
 भासाए दोसे य गुणे य जाणिया, तीसे अ दुट्ठे परिवञ्जए सया ।
 छसु संजए सामणिए सया जण, वञ्ज दुट्ठे हियमाणुलोमिया ॥१६॥
 परिक्खमासी सुसमाहिहिए, चक्कसायावगए अणिस्सिए ।
 स निदुणे भुत्तमल पुरेकं, आराहए लोगमिया तहा पर ॥१७॥
 वि वेमि ॥ इति सुवक्कसुद्धीनाम सत्तम अज्जकयण समच्च ॥७॥

॥ अह आचारपणिही अहममज्जकयण ॥

आचारपणिहिं लब्धुं, जहा कायव भिक्खुणा ।
 तं मे उवाहरिस्सामि आणुपुट्ठि सुणेह मे ॥१॥
 पुढविदगअगणिमादय तणदक्खस्स वीयगा ।
 तसा य पाणा जीय त्ति, इह वृत्त महेसिणा ॥२॥
 तेसिं अण्णजोएण, निव होयव्वय सिया ।
 मणसा कायवक्केण, एव हवइ संजए ॥३॥
 पुढविं भित्तिं सिलं लेलु, नेय भिदं न संलिह ।
 विविहण करणजोएण, संजए सुसमाहिण ॥४॥
 सुदपुढवीं न निसीए, ससरक्खम्मि य आसणे ।
 पमज्जितु निसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गाहं ॥५॥
 सीओदगं न सेविज्जा, सिलापुट्ठं हिमाणि य ।
 वसिणोवगं तत्तफासुयं, पडिगाहिज्ज सजए ॥६॥
 चदुत्तलं अप्पणोफायं नेय पुळे न संलिह ।
 समुपेह तहामूयं, नो एं संघट्टए मुणी ॥७॥

- पयत्तपक्किं त्ति य पक्कमालावे, पयत्तद्धिअं त्ति य ध्दिअमालावे ।
 पयत्तत्तद्धित्ति य कम्महेत्तयं, पहारगाढं त्ति य गाढमालावे ॥४२॥
- सब्बुक्कस परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं ।
 अविक्कियमवत्तब्बं, अचियत्तं चेष नो वए ॥४३॥
- सब्बमेअं वइस्सामि, सब्बमेअं त्ति नो वए ।
 अण्णुयीइ सब्बं सब्बत्थं, पथ मासिअज्ज पण्णयं ॥४४॥
- सुक्कीयं वा सुविक्कीअ, अकिअज्ज फिअज्जमेव वा ।
 इमं गिण्ह इमं मुंच, पणियं नो वियागरे ॥४५॥
- अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा चिकए वि वा ।
 पणियद्वे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे ॥४६॥
- तद्देवासंजय धीरो, आस एहि करेहि वा ।
 सयं चिट्ठ वयाहित्ति, नेअं मासिअज्ज पण्णयं ॥४७॥
- वहवे इमे असाहु लोए वुअ्वंति साहुणो ।
 न तवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥४८॥
- नाणवंसणसंपन्नं, संजमे य तवे रयं ।
 एअ गुणसमाउत्तं संजय साहुमालावे । ॥४९॥
- वेधाय मण्णुयाणं च तिरियाण च वुआदे ।
 अमुगाण अओ होउ, मा वा होउत्ति नो वए ॥५०॥
- वाओ वुट्ठं च सीउण्हं, खेम भाय सिअं ति वा ।
 कया एउ हुअ एआणि, मा वा होउत्ति नो वए ॥५१॥
- तइय मेहं च नह च माणयं न देवदेव त्ति गिरं वइअजा ।
 समुच्छिअ उअए वा पओए, वइअ वा धुद्वे यत्ताइए त्ति ॥५२॥
- अंतलिअ त्ति एं वूआ, गुग्गाणु चरिय त्ति य ।
 रिद्धिमत्तं नर दिस्स, रिद्धिमत्तं ति आलव ॥५३॥

| | |
|--|------|
| बहु सुणेइ करणेहिं, बहु अक्कीहिं पिच्छइ । | |
| न य विट्ठं सुयं सव्यं, भिक्खू अक्खाठमरिहइ | ॥२०॥ |
| सुय वा जइ वा विट्ठ, न लविज्जोवधाइय । | |
| न य केण वधाएणं गिहजोग समायरे | ॥२१॥ |
| निहाणं रसनिब्बुड, भइग पावग ति वा । | |
| पुट्ठो वाधि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निहिसे | ॥२२॥ |
| न य भोयणम्मि गिहो, चरे वंछ अयपिरो | |
| अप्पसुयं न मुंजिउजा, कीयंभुरेसियाहइ | ॥२३॥ |
| सन्निहिं च न कुव्विउजा, अणुमाय पि संलए । | |
| मुहाजीवी असंभजे, हविज्ज जगनिस्सिए | ॥२४॥ |
| लूहविप्पी सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिया । | |
| आसुरत्तं न गच्छिउजा, सुवा र्णं जिणसासणं | ॥२५॥ |
| कण्णसुक्खेहिं सदेहिं, पेम नाभिनिवेसए । | |
| दादणं ककस फसं, काएण अहियासए | ॥२६॥ |
| खुहं पिमास दुस्सिउज्ज, सीउण्हं अरइ भय । | |
| अहियासे अव्वहिओ, वेह दुक्खं महाफलं | ॥२७॥ |
| अत्थगयम्मि आइएणे पुरत्या य अणुमाए । | |
| आहारमाइय सव्य, मणसा वि ण पत्थए | ॥२८॥ |
| अतिविणे अचचले, अप्पभासी मियासणे । | |
| हविज्ज उयर वंते, योव लब्धु न खिसए | ॥२९॥ |
| न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुज्जसे । | |
| सुयत्तामे न मज्जिउजा अवा वषसि धुअिए | ॥३०॥ |
| से जाणमजाण वा, कट्ट आहम्मियं पय । | |
| संवर सिप्पमप्पाण, वीय तं न समायर | ॥३१॥ |

| | |
|---|------|
| શંગલં અગણિં અર્ષિં, અલાય ધા સજોશ્ય । | |
| ન સજિશ્ચા ન ષટ્ઠિશ્ચા, નો ણં નિન્વાયણ મુણી | ॥૮॥ |
| તાન્નિચંટેણ પત્તેણ, સાહ્યાણ વિદુયણેણ વા । | |
| ન ધીશ્ચ અપ્પણો કાર્યં, વાહિરં વા વિ પુગલં | ॥૯॥ |
| તણ્ણસ્સ ન ઈવિશ્ચા, ફલ મૂલં વ કસ્સઈ । | |
| આમગ વિચિહં ધીયં, મણસા વિ ણ પથ્થય | ॥૧૦॥ |
| ગહયેસુ ન ચિટ્ઠિશ્ચા, ધીણસુ હરિણસુ વા । | |
| સદગમ્મિ તહા નિશ્ચં, ઇત્તિગપણગેસુ વા | ॥૧૧॥ |
| તસે પાણે ન હિંસિશ્ચા, ઘાયા અદુષ કન્નુણા । | |
| સવરખો સઠ્ઠમ્મણસુ, પાસેશ્ચ વિચિહ અગં | ॥૧૨॥ |
| અઠ્ઠ સુહુમાઈ પેહાણ, આઈ જાણિત્તુ સંજણ । | |
| વયાહિગારી મૂણસુ, આસ ચિટ્ઠ સપ્પહિ વા | ॥૧૩॥ |
| ક્યયઈ અઠ્ઠસુહુમાઈ, આઈ પુચ્છિશ્ચ સંજણ । | |
| શમાઈ વાઈ મેહાધી, આહક્કિશ્ચ વિચ્છક્કણો | ॥૧૪॥ |
| સિણઈ પુપ્પસુહુમં વ, પાણ્ણિત્તિગં તદ્દેવ ય । | |
| પણગં ધીઅ હરિચં વ, અંકસુહુમં વ અઠ્ઠમ | ॥૧૫॥ |
| પવમેયાણિ જાણિત્તા, સઠ્ઠમાયેણ સંજણ । | |
| અપ્પમત્તો જણ નિશ્ચં સઠ્ઠિવિયસમાહિણ | ॥૧૬॥ |
| ધવં વ પહિલેહિત્તા, જોગસા પાયકંયલ્લ । | |
| સિગ્ગામુચ્ચારમૂમિં વ, સંધારં અતુવાસણ | ॥૧૭॥ |
| અધારં પાસયણં, સેલં સિપાણજલ્લિય । | |
| પાસુયં પહિલેહિત્તા, પરિટ્ઠાવિશ્ચ સંજણ | ॥૧૮॥ |
| પમિસિત્તુ પરાગારં, પાણદ્ધા ભોયણસ્સ વા । | |
| જય પિટ્ઠે મિયં માષે, ન ય રુથેસુ મણં કર | ॥૧૯॥ |

| | |
|--|------|
| जोग च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुव । | |
| जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तर | ॥४३॥ |
| इहलोगपारत्तहिय, जेणं गच्छइ सुग्गइ । | |
| बहुसुय पळुवासिज्जा, पुच्छिअत्थविणिच्छय | ॥४४॥ |
| हत्थं पायं च कायं च, पण्हिय जिईविण । | |
| अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो सुणी | ॥४५॥ |
| न पक्खओ न पुरओ, नेव किंवाण पिट्ठओ । | |
| न य ऊरु समासिज्जा विट्ठिज्जा गुरुणविण | ॥४६॥ |
| अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाएस्स अंतरा । | |
| पिट्ठिमंसं न ख्वाइज्जा, मायामोस विषज्जए | ॥४७॥ |
| अप्पत्तिय जेण सिया, आसु कुप्पिज्ज वा परो । | |
| सव्वसो त न भासिज्जा, भास अहियगामिणिं | ॥४८॥ |
| दिट्ठ मिय असविद्ध, पळिपुज्ज विअ जिय । | |
| अयपिरमणुच्चिग्ग, भास निसिरे अत्तव | ॥४९॥ |
| आयारपन्नत्तिघर, विट्ठिवायमहिज्जग । | |
| धयविकसलिय नवा, न त उवहसे सुणी | ॥५०॥ |
| नक्खत्त सुमिण जोग, निमित्त मतभेसजं । | |
| गिहिणो त न आइक्खे, भूयाहिगरण पय | ॥५१॥ |
| अअट्ठं पगह जयण, मइज्ज सयणासण । | |
| उत्थारभूमिसपन, इत्थीपसुविषन्जिय | ॥५२॥ |
| विपित्ता य भवे सिज्जा, नारीण न लये कह । | |
| गिहिसंधय न कुज्जा, कुज्जा सावूहिं सथवं | ॥५३॥ |
| जहा कुप्फुडपोयस्स, निषं कुललओ भयं | |
| एष खु धमयारिस्स, इत्थीधिमाहओ भयं | ॥५४॥ |

अणायार परस्मिन् नैव गूहे न निष्कृते ।

सूर्य सया वियवभावे, अससत्ते जिह्विण्ण ॥३२॥

अमोहं वयण कुञ्जा, आयरियस्स महप्पणो ।

तं परिगिम्ह धायाप, कम्मुणा उववायप ॥३३॥

अधुवं जिविअ नत्ता सिद्धिमगं वियाणिया ।

विशियट्ठिअ भोगेसु, आरं परिमियमप्पणो ॥३४॥

बलं वामं च पेहाए, सद्धामाकमामप्पणो ।

खेत्तं कालं च विजाय, सहप्पाणं नि जुंजए ॥३५॥

जरा जाव न पीलेइ, वाही खाव न बडुइ ।

आविदिआ न हायंति, छाव धम्मं समायरे ॥३६॥

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववडुणं ।

धमे चत्तारि दोस्से उ, इच्छंते द्वियमप्पणो ॥३७॥

कोहो पीइ पणासेइ, माणो विणमनासणो ।

माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविद्यासणो ॥३८॥

उवसमेण हणो कोहं, मायं महवया जिणे ।

मायमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥

कोहो य माणो य अणिमाहीआ, माया य लोभो च पवडुमाणा ।

चत्तारि एए कसिणा कसाया सिंघंति मूलाइ पुण्ड्रमवस्स ॥४०॥

उयणिएसु विणयं पवजे धुवसीलथं सययं न हावइआ ।

कुम्भो एव अरुलीणपत्तीणमुत्तो, परस्मिआ उवसजमम्मि ॥४१॥

निहं च न बहु मभिआ सप्पहारं वियज्जए ।

मिहो क्कहादिं न रमे सग्गयग्गि रओ सया ॥४२॥

जे यावि मंवि त्ति गुरु विइत्ता, उहरे इमे अप्पसुए त्ति नया ।
 हीलंति मिच्छं पडिषब्बमाणा, करंति आसायणं ते गुरूणं ॥२॥
 पगईए मदा वि मवति एगे, उहरा वि य जे सुअबुद्धोपवेष्सा ।
 आमारमंता गुणसुद्धिअप्पा, जे हीलिया सिहिरिष भास कुज्जा ॥३॥
 जे आवि नागं उहर ति नया, आसायए से अहियाय होइ ।
 एषायरियं पि हु हीलयतो, नियच्छई जाइपईं सु मंदो ॥४॥
 आसीविसो वावि परं सुरुद्धो, किं जीवनासाध परं नु कुज्जा ? ।
 आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो ॥५॥
 जो पावगं अस्त्रियमवच्छमिज्जा, आसीविस वा वि हु कोवइज्जा ।
 जो वा विस खायइ जीवियट्ठी, एसोवमासायणया गुरूणं ॥६॥
 सिया हु से पावय नो उहइज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
 सिया विसं हातहतं न मारे, न यावि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥७॥
 जो पक्खयं सिरसा मित्तुमिच्छे, सुत्त व सीहं पडिबोहइज्जा ।
 जो वा दए सत्तिअग्गे पहार, एसोवमासायणया गुरूणं ॥८॥
 सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
 सिया न भिंदिअग्ग व सत्तिअग्गां, न यावि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥९॥
 आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो ।
 वन्हा अणायहसुद्धाभिक्खी, गुरुप्पसायाभिमुद्धो रमिज्जा ॥१०॥
 जहाहिअग्गी अल्लणं नमसे, नाणाहुइमंतपयाभिसिधं ।
 एषायरिय उवचिदुइज्जा अणुत्तनाणोपगग्गो वि संतो ॥११॥
 अस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे, वस्संतिए वेणइयं पंचजे ।
 सफारए सिरसा पजलीओ फायगिरा भो मणसा य निध ॥१२॥
 लज्जा दया संनमयंभवेरं, फल्लणभागिस्त विसोहिठायं ।
 जे मे गुरु समयमणुसासरंति, तेहिं गुरु समयं पूययामि ॥१३॥

- चित्तमिच्छि न निग्मप, नारिं या सुअसंक्षिय ।
 भयस्वरं पि य वद्व्या, विद्धि पडिसमाहर ॥५५॥
- हस्यपायपडिच्छिन्नं, फण्णनासविगप्पिय ।
 अवि वाससय नारिं, वभयारी विवग्गप ॥५६॥
- विभूसा इरियससमी, पणीयं रसभोयणं ।
 नरस्सत्तावेसिस्स, विसं तात्तउडं जहा ॥५७॥
- अगपल्लवगसंठणं चारुवियपेहिय ।
 इत्थीण तं न निग्मप, कामरागविषकूय ॥५८॥
- विसण्णसु मण्णणोसु, पेम नाभिनिवेसप ।
 अण्णि तेसी विण्णाय परिणामं पोमालाण य ॥५९॥
- पोमालाण परिणाम तेसिं नवा जहा तहा ।
 विणीयविण्हो विहारे, सीईमूण्य अण्णया ॥६०॥
- जाइ सदाइ निक्कलंते परियायद्वण्णमुत्तमं
 तमेव अण्णपालिज्जा, गुणे आवरियसमप ॥६१॥
- तवं चिमं सजमजोगय च, सक्कन्नयजोगं च सया अहिट्ठप ।
 सूरे व सेणाइ समत्तमाच्छे अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६२॥
- सक्कन्नयसुक्कन्नयस्स छाइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स ।
 विसुग्गई जं सि मलं पुरेफडं, समीरियं रुप्पमलं च ओइणा ॥६३॥
- से तारिसे वुक्कससहे जिईविप, सुएण जुत्ते अममे अक्किण्णो ।
 विरायइ कम्मपणम्मि अवगप, कसियन्मपुडावगमे व चविम ॥६४॥
- त्ति वेमि ॥ इति आचारपणिहीणामं अट्ठममग्गयणसमत्तं ॥८॥

अह विणायसमाही णाम नवममग्गयणं

धभा य कोहा य मयप्पमाया, गुरुस्सगाथे विणयं न सिक्खे ।
 सा चय उ तस्स अभूइभाषो, पक्षं य कीयस्स बहाय होइ ॥१॥

જે યાચિ મંદિ સ્તિ ગુરુ વિદ્વા, હરે રૂમે અપ્પસુણ સ્તિ નચા ।
 હીલંસિ મિચ્છં પહિવન્નમાણા, કરંસિ આસાયણં તે ગુરુણ ॥૨૦॥
 પગાપ મદા વિ મથતિ ઇગે, હરેરા વિ ચ જે સુખધુદ્ધોભવેઆ ।
 આયારમંતા ગુણસુદ્ધિઅપ્પા, જે હીલિયા સિહિરિવ ભાસ કુઝ્ઝા ॥૨૧॥
 જે આવિ નાગ હરં તિ નચા, આસાયણ સે અહિયાય હોદ ।
 ઇધારિયં પિ હુ હીલયતો, નિચન્છં જાપહં સુ મદો ॥૨૨॥
 આસીધિસો ધાવિ પરં સુરુદ્ધો, ફિં જીવનાસાદ પરં નુ કુઝ્ઝા ? ।
 આચરિયપાયા પુણ અપ્પસન્ના, અધોહિઆસાયણ નત્થિ મુક્કો ॥૨૩॥
 જો પાવગં જલિયમવક્કમિઝ્ઝા, આસીધિસં ધા વિ હુ કોષદ્ધજ્ઞા ।
 જો ધા ધિસ આપદ્ધ જીવિયદ્ધી, ઇસોભમાસાયણયા ગુરુણ ॥૨૪॥
 સિયા હુ સે પાવય નો હહિવ્જ્ઞા, આસીધિસો ધા કુવિઓ ન મક્કલે ।
 સિયા ધિસં હાલ્લહલ ન માર, ન યાચિ મુક્કો ગુરુહીલણાપ ॥૨૫॥
 જો પઘ્વયં સિરસા મિત્તુમિચ્છે, સુત્ત ધ સીહં પહિવોહદ્ધજ્ઞા ।
 જો ધા વપ સત્તિઅમ્મો પહારં, ઇસોભમાસાયણયા ગુરુણ ॥૨૬॥
 સિયા હુ સીસેણ ગિરિં પિ મિંદે, સિયા હુ સીહો કુવિઓ ન મક્કલે ।
 સિયા ન મિંદિવ્જ્ઞ ધ સત્તિઅમ્મં, ન યાચિ મુક્કો ગુરુહીલણાપ ॥૨૭॥
 આચરિયપાયા પુણ અપ્પસન્ના, અધોહિઆસાયણ નત્થિ મુક્કો ।
 તન્હા અણાવાહસુહામિક્કલી, ગુરુપ્પસાયામિમુહો રમિવ્જ્ઞા ॥૨૮॥
 જહાહિઅગ્ગી જલ્લણં નમસે, નાણાદુદ્ધમવપયામિસિત્ત ।
 ઇધારિયં ઠવચ્ચિટ્ટદ્ધપ્પા અણંતનાણોષગઓ વિ સંતો ॥૨૯॥
 જસ્સંતિપ ધમ્મપયાદ્ધ સિક્કલે, સસ્સંતિપ મેણદ્ધયં પવંજે ।
 સપ્પારણ સિરસા પંજલીઓ, ધાયગિરા મો મણસા ચ નિધ ॥૩૦॥
 સન્નદા વયા સંજમથમચેરં, કલ્લાણભાગિસ્સ યિસોહિઠાણં ।
 જે ને ગુરુ સયયમણુસાસયંતિ, તેહિં ગુરુ સયયં પૂચયામિ ॥૩૧॥

जहा निसंते तवणबिभाली, पभासइ केवलं भारहं तु ।
 पषायरिओ मुयसीलवुद्धिए, विरायइ सुरमज्जे ष ईदो ॥१४॥
 जहाससी कोमुइजोगजुत्तो, नक्खत्तवारागणपरिपुञ्जपा ।
 खे सोहइ विमले अम्ममुक्के, पयं गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥१५॥
 महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगे मुयसीलवुद्धिए ।
 सपाविठकामे अणुत्तराई, आराहए सोसइ धम्मकामी ॥१६॥
 सुभा ए मेहावी सुभासियाई, सुत्तुसए आयरियप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणोणे, से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥ त्ति वेमि ॥१७॥
 ॥ इति विषयसमाहिष्मज्जणे पढमो चहेसो समत्तो ॥

मूलाठ खंधप्पमओ तुमस्स, खंवाउ पच्छा समुच्चित्ति साहा ।
 साहप्पसाहा विरुद्धि पत्ता, तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥१॥
 एव धमस्स विणओ मूलं परमो से मुक्खो ।
 जण कित्तिं सुयं सिग्घं, नीसेसं आभिगच्छई ॥२॥
 जे य चंडे निप थदो, तुब्बाई नियडी सडे ।
 धुम्मइ से अविणीयप्पा, कटु सोयगयं जहा ॥३॥
 विणयंपि ओ उवापणं, चोइओ कुप्पई नरो ।
 दिव्वं सो सिरिमिज्जति, दंडेण पडिसेइए ॥४॥
 तहय अविणीयप्पा, उवधम्मइ हया गया ।
 दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुषट्ठिषा ॥५॥
 तहेय सुविणीयप्पा, उवधम्मइ हया गया ।
 दीसंति मुहमेहंता, इइ पत्ता महायसा ॥६॥
 तहय अविणायप्पा, लागंसि नरनारिओ ।
 दामंसि दुहमहता, छाया न विगलिविआ ॥७॥
 दहसंधपरिजुआ अमम्मधयणेहि य ।
 कलुणा विधम्मदंदा, म्हापिथामा एपरिगया ॥८॥

| | |
|--|------|
| तद्देव सुविणीयप्पा, लोर्गंसि नरनारिओ । | |
| वीसति सुहमेहंता, इहिं पत्ता महायसा | ॥६॥ |
| तद्देव अधिणीयप्पा, वेवा अक्खा य गुम्फणा । | |
| वीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुषट्ठिया | ॥१०॥ |
| तद्देव सुविणीयप्पा, वेवा जक्खा य गुम्फणा । | |
| वीसति सुहमेहंता, इहिं पत्ता महायसा | ॥११॥ |
| जे आयरियउवग्गयाण, सुसूसावयण करा । | |
| तेसि सिक्खा पवडंति, जलसित्ता इव पायवा | ॥१२॥ |
| अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा येउणियाण य । | |
| गिहिया उवभोगट्ठा, इहल्लोगस्स कारणा | ॥१३॥ |
| जेण धधं वहं घोरं, परियार्वं च दादण । | |
| रुक्खमाणा नियच्छति, जुत्ता ते सल्लिइयिया | ॥१४॥ |
| ते वि त गुरुं पूरंति तस्स सिप्पस्स कारणा । | |
| सक्कारति नमसति, तुट्ठा निदेसवत्तिणो | ॥१५॥ |
| किं पुण जे सुयभाही, अणुवहियकामप । | |
| आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तप | ॥१६॥ |
| नीजं सिज्ज गइ ठण, नीय च आसणाणि य । | |
| नीय च पाप यंविज्जा नीय कुब्जा य अजलिं | ॥१७॥ |
| संघट्टइत्ता काएण, सहा उयहियामवि । | |
| समेह अवराह मे, वइज्ज न पुणु प्ति य | ॥१८॥ |
| दुग्गओ वा पओपण ओइओ वइइ रहं । | |
| एवं दुवुद्धि फिणायं, वुत्तो दुत्तो पकुब्बइ | ॥१९॥ |
| आल्लहे लवते वा, न निसिज्जाए पडिस्सुणे । | |
| मुत्तणं आसण धीरो सुसूसाए पडिस्सुणे | ॥२०॥ |

कार्त्तं क्षंदोययारं च, पञ्चिनेहिच्छाण हेरुहिं ।

तेण तेण चवाएण, सं स संपञ्चिवायप

॥२१॥

विषत्ती अधिणीयस्स, सपत्ती विणिण्यस्स य ।

अस्सेयं दुहम्मो नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ

॥२२॥

जे यावि चंडे मइइडिगारवे, पिसुणे नरे साइसहीणपेसणे ।

अविट्ठघम्मे विणए अफोषिण, असंविभागी न तु तस्स मुक्खो ॥

निहेसवत्ती पुण जे गुरूण सुयत्थघम्मा विणयम्मि कोविया

वरित्तु ते ओपमियां वुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइमुत्तम गय ॥त्ति वेमि॥

इति विणयसमाहिणामग्गमण्यो वीओ वदेसो समत्तो ॥

आयरियगिमिवाहिअमी, सुत्तसुसमाणो पञ्चिआगरिआ ।

आलोइयं इणियमेव नआ, ओ अं वमाराइयई स पुज्जो

॥१॥

आयारमट्ठा विणयं पचंजे, सुत्तसुसमाणो परिगिम्म वक्कं ।

अहोवइहं अभिक्खमाणो, गुरुं तु नासायई स पुज्जो

॥२॥

रायणिएसु विखयं पचंजे, उहुरा वि य जे परियायविट्ठा ।

नीयत्तणे वट्ठइ सब्भाई, ओघायव वक्ककरे स पुज्जो

॥३॥

अन्नायवज्ज चरई विसुद्धं अवयाट्ठया समुयाणं च निक्खं ।

अलद्धयं नां परिदेवइआ लद्धं न विक्कत्थयई स पुज्जो

॥४॥

सधारसिग्घासणभत्तपाणे, अपिच्छया अइत्तामे वि सत्ति ।

जो एवमपाणभित्तोसइआ, संतोसपाहन्नरण स पुज्जो

॥५॥

मक्का महत्तं आमाइ कंटया, अओमया उच्छइया नरेण ।

अणामण जो उ महिअ कंटए, वईमए कम्मसरे स पुज्जो

॥६॥

मुहुत्तदुक्कया उ हयंमि कटया, अओमया ते वि तओ सुब्बरा ।

वायादुरुत्ताणि दुरुद्धगणि, धराणुयंधीणि महम्मयाणि

॥७॥

समावयता वयणाभिधाया, कर्त्तव्या दुस्मणिय जणति ।
 धम्मु त्ति किंवा परममासूरे, जिह्दिण जो सहई स पुज्जो ॥८॥
 अवयणधार्यं च परम्मुहस्त, पक्खस्सओ पडिणीयं च भासं ।
 ओहारिणि अप्पियकारिणि च, भास न भासिच्च सया स पुज्जो ॥
 अतोक्षुए अक्खुहए अमाई, अपिसुणे यावि अवीणविप्पी ।
 नो मावए नो वि य भाविप्या, अकोच्छस्ते य सया स पुज्जो ॥९॥
 गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण सुंअऽसाहू ।
 वियाणिआ अप्पगमप्पण, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥१०॥
 तद्देव इहरं च महत्तुं वा इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
 नो हीत्तए नो वि य क्षिसइज्जा, र्थमं च कोहं च वए स पुज्जो ॥११॥
 जे माणिया सयय माणयति, जत्तेण कन्नं व निवेसयति ।
 ते माणए माणरिहे ववस्सी, जिह्दिण सव्वए स पुज्जो ॥१२॥
 तेहिं गुरूण गुणसायरणं, सुवाण मेहावी सुभासियाइ ।
 चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो, चवक्खसायावगए स पुज्जो ॥१३॥
 गुरुमिह सयय पडियरिय मुणी, जिणवयनिच्छे अभिगमकुसले ।
 धुणिय रयमत्तं पुरेकडं, भासुरमवलं गइं गय ॥ त्ति वेमि ॥
 ॥ इति विणयसमाहीए तइओ उहेसो समत्तो ॥

सुयं मे आठसं । तेणं भगवया एवमक्खसाय । इह खलु
 थेरेहि भगवतेहि चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता । कयरे
 खलु ते थेरेहिं भगवतेहि चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ।
 इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
 पन्नत्ता । तं जहा-विणयसमाही सुयसमाही, ववसमाही,
 आयारसमाही ।

मिणय सुए य तवे, आयारे निव पडिया ।

अभिरामयति अप्पाण, जे भवति जिह्दिआ ॥१॥

કાલ દેશાગારં ધર્મજનહિમાન દરદિ ।

નમ ભમ ઉપાગ્ન, સંત સંવિદિયાગ

॥૧૧॥

વિવશા અપિર્ણીયમ્, સવશા વિગિયમ્ મ ।

ઝસોયં દુદ્ધા નામ, સિતમ સે અભિગમ્

॥૧૨॥

જે યાવિ પહે મદ્દિગારયે, પિમુળ નર સાદસહીણપેસણે ।

અદિદૃષ્ટમ્ વિણ અપોવિણ, અસવિભાગ ન દુ વસ્ત મુસ્તો ॥

નિરેમયતા પુણ જે ગુમ્પણ મુવત્પદમ્મા વિણયમ્મિ કોવિયા

તરિત્તુ ત ઓપમિણં દુરુત્તરં, રાવિત્તુ કમ્મં ગદ્દમુત્તમ ગય ॥તિ વેમિા॥

इति विणयसमाहिषामज्जयणे वीओ वहेसो समत्तो ॥

આયરિયમિમિવાદિઅમ્મી, મુસ્સૂસમાણો પદિઝાગરિઝા ।

આલોહ્યં ઇગિયમેય નથા જો છવમારાહયઈ સ પુઝો

॥૧॥

આચારમદ્દા વિણયં પઠંજે, મુસ્સૂસમાણો પરિગિમ્મ વક્કં ।

ઝહોવદ્દહં અભિફસમાણો, ગુરં તુ નાસાયઈ સ પુઝો

॥૨॥

રાયણિયસુ વિણયં પઠંજે, ઝહરા યિ ય જે પરિયાવજિદ્દા ।

નીયત્તણે યદ્દઈ સવધાઈ, ઓવાયવં વક્કરે સ પુઝો

॥૩॥

અન્નાયવક્કં વરઈ વિસુદ્ધં, ઝવણદ્દયા સમુવાણં વ નિરુપ્પં ।

અલદ્ધુયં નો પરિવેષઈઝા લદ્ધુ ન વિક્કત્થયઈ સ પુઝો

॥૪॥

સધારસિઝાસણમત્તપાણે, અપિચ્છયા અહલાભે વિ સંતે ।

જો વ્થમપ્પાણભિતોસઈઝા, સંતોસપાહન્નરણ સ પુઝો

॥૫॥

સક્કા સહેઠ આસાઈ કંટયા, અઓમયા વક્કહયા નરેણ ।

અણાસણ જો ઠ સહિજ કંટણ, વઈમણ કમસરે સ પુઝો

॥૬॥

મુદ્દુત્તદુક્કા ઠ હવંતિ કંટયા, અઓમયા તે વિ વઓ મુદ્દર ।

વાયાવુરુત્થાણિ દુરુદ્ધરાણિ, વેરાણુવંધીણિ મહમ્મયાણિ

॥૭॥

अभिगम वरुणो समाहिष्णो, सुविसुद्धो सुसमाहियप्पणो ।
 चित्तलहियं सुहायहं पुणो, कुब्बइ य सो पयस्सेममप्पणो ॥६॥
 जाइमरणाओ मुक्कइ, इत्यत्य च चयइ सक्कसो ।
 सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिस्सिए ॥ त्ति वेमि ॥७॥
 इति विणयसमाही नाम अट्ठथो सहेसो ॥ नवममज्झयणं समत्तां ॥८॥

॥ अह भिक्खू नाम दसममज्झयणं ॥

निक्खम्ममणा य बुद्धवयणे, निब्बं चित्तसमाहिष्णो हविज्जा ।
 इत्थीण वसं न याचि गच्छे, वतं नो पडियायइ जे स भिक्खू ॥९॥
 पुढविं न झणे न सणावए, सीओदग न पिए न पियावए ।
 अगणि सत्थज्झा सुनिसिय, त न जले न जल्लावए जे स भिक्खू ॥
 अनिलेण न धीए न धीयावए, हरियाणि न छिंदे न छिंदावए ।
 वीआणि सया विषज्जयतो, सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥१॥
 वहण तसथावराण होइ, पुढवितणकटुनिस्सिआण ।
 तन्हा छहेसिअ न मुंजे नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ॥२॥
 रोइय नायपुत्तवयणे, अत्तसमे मन्निवज्ज ज्जप्पि काए ।
 पच्च य पच्चे महम्मयाइ, पचासवसवरे जे स भिक्खू ॥३॥
 चत्तारि वसे सया कसाए, धुयभोगी य हविज्ज बुद्धवयणे ।
 अहणे निग्गायकवरयए, गिहिलोर्गं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥४॥
 सन्मविट्ठी सया अमूढ, अत्थि हु नाणे छवे सजमे य ।
 तयसा धुणइ पुराणपावगं, मणवयकायसुसंखुडे जे स भिक्खू ॥५॥
 तहेव असण पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
 होही अट्ठो सुए परे वा, तं न तिहे न निहावए जे स भिक्खू ॥६॥
 छहेव असण पाणगं वा विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
 छदिअ साहम्मियाण मुंजे, मुखा सम्मयए जे स भिक्खू ॥७॥

पञ्चम्याहा गल विगुणममाही भवइ तं जहा-सुगुणागित्ता
मसुगइ । मगमं मगमहिद्विज्जा । नगमाराइ । न य भवइ
असमंयगादिप । अर्थ पय भवइ । भवइ य इत्य गित्ताग ॥

५६३ दिगाणुमामणं, मुम्भूमइ मं य पुणा अदिष्टिप ।
न य माणमण मज्झ, विगुणममादिआयगदिष्टिप ॥२॥

पञ्चम्याहा गल मुम्भूममाही भवइ । तं जहा-सुम्भूम म भविस्मइ
सि अगमइअव्य भवइ । गगमागित्ता भविस्मासि सि अगमइ
यव्य भवइ । अप्पाण टायइस्सामि सि अगमइयव्य भवइ ।
ठिम्मो पर टायइस्सामि सि अगमइयव्य भवइ । अर्थ पयं
भवइ । भवइ अ इत्य सिलागा ॥

नाणमगगाधित्तो अ, ठिम्मो अ टायइ पर ।
मुम्भाणि अ अहिज्जिता, रम्मो मुम्भसमादिप ॥३॥

पञ्चम्याहा गल तवसमाही भवइ । तं जहा-नो इहलोग
ट्टयाप तवमहिद्विज्जा नो परलोगट्टयाप तवमहिद्विज्जा, नो
कित्तिवन्नसइसिलोगट्टयाप तवमहिद्विज्जा, नमत्थ निग्वर
ट्टयाप तवमहिद्विज्जा । अर्थ पयं भवइ । भवइ अ इत्य सिलोगो ॥
विबिहगुणतवोरपय निबं भवइ निरासप निग्वरट्टिप ।

तवसा धुणइपुराणपाषाणं, जुत्तोसया तवसमादिप ॥४॥

पञ्चम्याहा गल आयारसमाही भवइ । तं जहा-नो इह-
लोगट्टयाप आयारमहिद्विज्जा, नो परलोगट्टयाप आयारमहि
द्विज्जा, नो कित्तिवन्नसइसिलोगट्टयाप आयारमहिद्विज्जा न
मत्थ आरइतेहि हेअहि आयारमहिद्विज्जा । अर्थ पयं भवइ
भवइ अ इत्य सिलोगो ।

अणवयणरप अरिस्सियो, पडिपुआययमाययट्टिप ।

आयारसमाहिसंघुडे भवइ अ वृत्ते भावसपय ॥५॥

शमो सिद्धार्थ

श्री उत्तराध्ययन सूत्रम्

॥ विणयसुर्यं पदम अजम्कयर्थ ॥

- संज्ञोगा विष्णुमुक्तस्त, अणुगारस्त भिष्णुणो ।
विणय पाठकरिस्सामि, आणुपूर्वि सुणेह मे ॥१॥
- आणानिहेसकरे, गुरुणामुववायकारण ।
इगियागारसपन्ने, सेविणीए त्ति बुद्धि ॥२॥
- आणानिहेसकरे, गुरुणमणुववायकारण ।
पडिणीए असबुद्धे, अविणीए त्ति बुद्धि ॥३॥
- वहा सुणी पूइकपणी, निक्कसिग्गई सव्वसो ।
एध दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिग्गई ॥४॥
- कणकुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठ मुंजइ सुयरे ।
एवं सील चइत्ताणं, दुस्सीले रमई मिए ॥५॥
- सुणिया भावं साणस्स, सुयरस्स नेरस्स य ।
विणए ठवेअ अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥६॥
- तम्हा विणयमेसिग्गजा, सीलं पडिलमेअओ ।
पुट्ठपुत्त नियागट्ठी, न निक्कसिअइ कण्डुई ॥७॥
- निसन्ते सियामुहरी, बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिप्पिअजा, निरट्ठाणि उ यच्चप ॥८॥
- अणुसासिओ न कुप्पिअजा, संति सेविअ पण्डप ।
सुबुद्धिं सह ससग्गि, हासं कीड प यच्चप ॥९॥

न य पृथग्विषय कर्तुं कश्चिद्भज्जा, न य कुलं निदुःखं पश्येत् ।
 मंगलमंगलमंगलमुच्यते उपसंग अपरद्वयं च स भिक्षुः ॥१०॥
 ॥ गदह दृ गामकटप अकामगदहगगगामो ग ।
 भगभगभगभगभगहाथ, सममुदुपमासाद य च ॥ भिक्षुः ॥११॥
 पश्चिम पश्चिमपश्चिमा मसाले, ना भीगप भवभट्याई रिस्म ।
 विविहगगगगगगग य निर्ण, न सरीर पाभिकंनद च स भिक्षुः ॥
 अमद वासिदृपत्तवद, अकुद्वे य हप य लूस्तिप वा ।
 पठपिमम मुणी हविग्जा, अनिमाले अठोअदन्ता जे स भिक्षुः ॥
 अभिभूय फाण्ण परीसदाई, समुद्वरे जाइपहाउ अण्णयं ।
 विइत्त नाइमरण महभय, तव रण सामणिए जे स भिक्षुः ॥१२॥
 हत्थमज्जण पायसंजण, पायसंजण सज्जइदिण ।
 अग्गपरण सुसमादियप्पा, सुत्तत्थं च पियाणइ जे स भिक्षुः ॥१३॥
 उवहिम्मि अमुच्चिअ अगिखे, अभायवर्द्धं पुल्लनिप्पुलाए ।
 फयधिकयसन्निहिधो विरय, सव्यसंगावगणय जे स भिक्षुः ॥१४॥
 अलालो भिक्षु न रसेसु गिम्मे, रंछ चर औवियनामिकंली ।
 इहिं च सक्कारण पुण्यं च अप ठियप्पा अण्हि जे स भिक्षुः ॥१५॥
 न परं वइज्जासि अयं कुसीले, जेय च कुप्पिअ न त वइज्जा ।
 जाणिय पत्तेयं पुअपाव, अत्ताणं न समुक्खे जे स भिक्षुः ॥१६॥
 न जाइमत्ते न य रुवमत्ते, न जाममत्ते न सुण्ण मत्ते ।
 मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता धम्मसग्गमणरण जे स भिक्षुः ॥१७॥
 पवेअए अज्जपयं महामुणी, धम्मे ठिणो ठावयई परंपि ।
 निक्खम्म वज्जिअज्ज कुसीलसिगं नयावि हास वुहए जे स भिक्षुः
 रं वेहवासं असुई असासर्य, सया चए निवदियद्वियप्पा ।
 विवित्तु जाईमरणस्स वधणं, उवेइ भिक्षु अपुयागमं गइ ॥ ति वेमि
 इति भिक्षु नामं वसममग्गयन समत्तं ॥
 इति वसवैआसिअं मुत्तं समत्तं ॥

| | |
|--|------|
| एवं विणयजुस्तस्त, सुत्त अत्य च तदुभय । | |
| पुच्छमाणस्त सीसस्त, वागरिञ्च जहा सुय | ॥२३॥ |
| मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणि वप । | |
| भासावोसं परिहरे, माय च वज्जए सया | ॥२४॥ |
| न लवेञ्च पुट्ठो सावज्जं, न निरुद्धं न भम्भयं । | |
| अप्पणद्धा परद्धा वा उभयस्तन्तरेण वा | ॥२५॥ |
| समरेसु अगारेसु, सघीसु य महापहे । | |
| एगो एगत्थिए सद्धिं, नेष चिट्ठे न संसवे | ॥२६॥ |
| ज मे बुद्धाणुसासन्ति, सीपण फरसेण वा । | |
| मम लाभो न्ति पेहाए, पयम्भो त पडिस्तुणे | ॥२७॥ |
| अणुसासणमोवायं दुक्कडस्तयय बोयणं । | |
| हियं त मएणई पयणो, वेसं होइ असावुणो | ॥२८॥ |
| हिय विगयमया बुद्धा, फरुसं पि अणुसासणं । | |
| वेसं त होइ मूढाणं, खन्तिसोड्डिकर पयं | ॥२९॥ |
| आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुवे अकुए थिरे । | |
| अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीपज्जप्पकुए कुए | ॥३०॥ |
| कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्खमे । | |
| अकालं च विवखित्ता, काले काल समायरे | ॥३१॥ |
| परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसण चरे । | |
| पडिरुवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए | ॥३२॥ |
| नाइदूरमणासन्ने, नन्नेसिं चक्खुफसम्भो । | |
| एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा, लघित्ता त नइक्खमे | ॥३३॥ |
| नाइउवे य नीए वा, नासन्ने नाइदूरम्भो । | |
| फासुयं परफडं पियड, पडिगाहज्ज सजए | ॥३४॥ |

- मा ग वल्लभानि कर्माणि, यद्वग मा ग भ्राता ।
 कान्तं य अदिगिज्ञा, तस्मा भ्राता न भ्राता ॥१०॥
- आद्य पण्डितानि कर्तुं न विद्वानि कर्माणि ।
 कष्ट कष्टं न भाषेता, अकष्टं ना कष्टं न ॥११॥
- मा गल्लियस्सय कमे, ययणमिन्दे पुणा पुणा ।
 कमे य वट्ट माइल्ले, पापमं परियाज्ज ॥१२॥
- अणामया भूजपया कुसीला, मिउं पि चट्ठं पठ्ठं पठ्ठं सासा ।
 पिप्पारुया लहु वस्सोयया, पसायप तं ह दुरासयं पि ॥१३॥
- नापुट्टा। यागर किंचि, पुट्टा या नालियं य ॥
 फाहं असच्चं कुल्लेजा, धारजा पियमणिय ॥१४॥
- अप्पा चेव वसेयन्थो, अप्पा ह सल्लु दुइमो ।
 अप्पा दन्तो मुही होइ अस्सि लोप परस्थ य ॥१५॥
- यरं मे अप्पा दन्तो, संजमण वरण य ।
 माहं परहि वम्मंसो, वघयेहिं पइहि य ॥१६॥
- पडिणीय च बुद्धाय, वाया अदुव कम्मणा ।
 आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥
- न पक्खओ न पुरओ, नेव किष्वाण पिहओ ।
 न जुंजे ऊरुया ऊरु, सयणे नो प्रविस्सुणे ॥१८॥
- नेव पइत्थिय कुज्जा, पक्खपियं च सज्ज ॥
 पाप पसारिय वावि, न चिट्ठे गुरुणन्ति ॥१९॥
- आयरिपहिं वाहिणो, सुसिणीओ न कयाइ वि ।
 पसायपेही नियोगट्ठी, चवचिट्ठे गुरु सया ॥२०॥
- आनवन्ते सवन्ते वा, न निसीपण कयाइ वि ।
 चइ ऊणमासणं पीरो, जओ जुं पडिस्सुणे ॥२१॥
- आसणगओ न पक्खेज्जा, नेव सेज्जागओ कयाइ वि ।
 आगम्मकुओ सन्तो, पुच्छिज्जा पंजलीसो ॥२२॥

स पुब्रसस्ये सुविणीयससप, मणोरुई विद्वइ कम्मसपया ।
 तवोसमायारिसमाहिसंबुडे, महन्जुइ पच वयाइ पालिया ॥४७॥
 स देवगधव्वमणुस्सपूइए, अइत्तु वेह मलपंकपुब्बयं ।
 सिद्धे या हवइ सासए, देवे या अप्परए महिइए ॥४८॥
 ॥त्ति वेमि ॥ इति विणयसुय नाम पढम अज्जन्यण समस ॥१॥

॥ अइ दुइय परिसहज्जयण ॥

सुय मे आवस तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु वा
 यीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया ।
 जे भिक्खु सोळा नळा जिळा अभिभूय भिक्खायरियाए
 परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा । कयरे ते खलु यावीसं
 परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया जे
 भिक्खु सोळा नळा जिळा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो
 पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ? इमे ते खलु यावीसं परीसहा समणेण
 भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खु सोळा नळा
 जिळा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विनि-
 हन्नेज्जा, तं जहा विगिद्धापरीसहे १ पिपासापरीसह सीय
 परीसहे ३ तसिण परिमहे ४ वंसमसयपरीसह ५ अचेलपरीसहे
 ६ अरइपरीसहे ७ इत्योपरीसह ८ चरियापरीसह ९ निसीहिया
 परीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अफोसपरीसह १२ वदपरीसहे
 १३ जायणापरीसहे १४ अलामपरीसहे १५ रोगपरीसह १६
 तण्णसपरीसह १७ जह्मपरीसहे १८ सफारपुरफारपरीसहे
 १९ पन्नापरीसहे २० अज्जाणपरीसह २१ वंसणपरीसह २२ ॥
 परीसहाण पविमत्ती कासवेण पवेइया ।

त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुब्बि सुणेह मे

| | |
|--|------|
| अप्यपान्तात्प्राचीनमिह, पश्चिज्जममिह मपुङ्गव । | |
| सगयं मज्जप पुङ्गे, जय अपरिमाद्वयं | ॥३४॥ |
| सकविधि गुपद्विधि मुचिज्जन्ना मुरद्ध मज्ज । | |
| मुणिद्विप मुलविधि, सायम्भं यम्माप मुग्ग | ॥३५॥ |
| रमप पण्डप सासं, हय भरं य यादप | |
| पालं सम्मइ सासंथो, गज्जियस्मं य यादप | ॥३६॥ |
| जद्धुया मे चवहा म अफोसा य यदा य म । | |
| कहाणमणुसासन्तो, पापविद्विप्ति गन्तइ | ॥३७॥ |
| पुत्तो म भाय नाइ त्ति, साइ कहाण मज्जइ । | |
| पायविद्वि उ अप्पाणं, सास दासि त्ति मज्जइ | ॥३८॥ |
| न फोयप आयरियं, अप्पाणं पि न फोयप । | |
| मुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्तगवेसप | ॥३९॥ |
| आयरिय कुयिय नबा, पत्तिपण पसायप । | |
| विग्मवेज्ज पजलीउड्ढो, यएज्ज न पुणु त्ति य | ॥४०॥ |
| धम्मज्जियं च ववहारं, मुद्धोवायरिय सया । | |
| तमायरन्तो ववहारं, गरह नाभिगच्छइ | ॥४१॥ |
| मणोगयं धक्कगय जाणिप्तायरियस्स च । | |
| त परिगिग्म वायाप, कम्मुणा धववायप | ॥४२॥ |
| वित्ते अचोइप निबो, स्मिण्णं हवइ सुचोइप । | |
| जहोवइठ सुकयं किशाइ कुट्ठवाई सया | ॥४३॥ |
| नबा नमइ मेहावी लोप किप्ती से जायप । | |
| इवाई किप्पाण सरणं, भूयाणं जगई जहा | ॥४४॥ |
| पुग्गा अस्स पमीयन्ति, संवुद्धा पुब्बसथुया । | |
| पसन्ना लाभइस्संति, विचला अहिय सुयं | ॥४५॥ |

स पुञ्जसत्ये सुविणीयससप, मणोरुई चिद्वइ कम्मसपया ।
 सवोसमायारिसमाहिसंबुठे, महज्जुई पच वयाइ पालिया ॥४७॥
 स देवगघठवमणुत्सपूष, चइत्तु देह मलपंकपुठवयं ।
 सिद्धे वा हवइ सासप, देवे वा अप्परप महिहिण ॥४८॥
 ॥त्ति वेमि ॥ इति विणयसुय नाम पठम अचमयण समत्त ॥१॥

॥ अइ दुइय परिसइअकयण ॥

सुयं मे आउसं तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु वा-
 षीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइया ।
 जे भिक्खू सोळा नळा जिळा अभिभूय भिक्खायरियाए
 परिब्बयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा । कयरे ते खलु वाषीसं
 परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइया जे
 भिक्खू सोळा नळा जिळा अभिभूय भिक्खायरियाए परिब्बयतो
 पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ? इमे ते खलु वाषीसं परिसहा समणेण
 भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोळा नळा
 जिळा अभिभूय भिक्खायरियाए परिब्बयन्तो पुट्ठो नो विनि
 हन्नेज्जा, तं जहा विगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे सीय
 परीसहे २ उसिण परीसहे ४ वंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे
 ६ अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीदिया
 परीसहे १० सेग्जापरीसहे ११ अफोसपरीसहे १२ यहपरीसहे
 १३ जायणापरीसहे १४ अत्तामपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६
 तणपयसपरीसहे १७ जह्मपरीसहे १८ सफारपुरफारपरीसहे
 १९ पन्नापरीसहे २० अभाणपरीसहे २१ वंसणपरीसहे २२ ॥
 परीसहाण पविमत्ती कासवेणं पवेइया ।
 त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुण्णि सुणेह मे ॥१॥

- दिगिज्ञानमिह, गणना भिन्न धामर्ष ।
 नद्विह न द्विषाण न ह्यन पमाय ॥२॥
- कालीपद गगनकाण, द्विषे धमगिसंतप ।
 मायन्ने अमणपाणस्य, अराणमण्णमा पर ॥३॥
- सच्चो पुट्टा पियामाण, रागखी लज्जसत्तप ।
 सीघ्रोदगं न उयिग्गा वियहस्सेमण चर ॥४॥
- द्विभाषाणसु पधेसु, आउर मपिजासिप ।
 परिसुणमुहादीणे, ते तितिसरे परोसहं ॥५॥
- चरंत विरयं लूहं, सीय फसइ पगया ।
 नाह्वेलं मुणी गच्छे साव्याण जिणसासणं ॥६॥
- न मे निवारणं अत्थि द्वयिच्छाणं न विम्भइ ।
 अहं तु अग्निं खेयामि, इह भिक्खु न विसप ॥७॥
- उसिण परियावेणं, परिदाहण तग्निप ।
 भिसु वा परियावणं, सायं नो परिववप ॥८॥
- उण्हाहितत्तो मेहावी, सिखाण नो वि पत्थप ।
 गाय नो परिसिंघेज्जा, न धीपज्जा य अण्णय ॥९॥
- पुट्टो य वसमसण्हि, समरे व महामुणी ।
 नागो सगामसीसे वा, सूरु अभिहणे परं ॥१०॥
- न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पणोसप ।
 उवेह न हणे पाणे भुंजते मंससोणिय ॥११॥
- परिसुणणेहिं वत्थेहिं, होन्सामि तिअवेत्तप ।
 अदुवा सचेले होन्सामि, इह भिक्खु न विसप ॥१२॥
- पगयाऽवेत्तप होह, सचेले आवि पगया ।
 परं धम्मद्विधं नचा, नाणी नो परिववप ॥१३॥

| | |
|---|------|
| गामाणुगाम रीयंत, अणुगार अकिचण । | |
| अरई अणुप्पवेसेञ्जा, त वित्तिकस्से परीसह | ॥१४॥ |
| अरइ पिट्ठओ किञ्चा, विरए आयरक्खिए । | |
| धम्मारामे निरारम्भे, एवसन्ते मुणी चरे | ॥१५॥ |
| सङ्गो एस मणुसारणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ । | |
| जस्त पया परिभाया, सुकळ तस्त सामण | ॥१६॥ |
| पयमादाय मेहावी, पङ्कम्याउ इत्थिओ । | |
| नो ताहिं विणिहन्नेञ्जा, चरेस्वत्तगवेसए | ॥१७॥ |
| एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे । | |
| गामे वा नगरे वाधि, निगमे वा रायहाणिए | ॥१८॥ |
| असमाणे चरे भिक्खू, नेघ कुञ्जा परिमार्ह । | |
| असंसत्ते गिहत्येहिं, अणिएओ परिब्बए | ॥१९॥ |
| सुसाये सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ । | |
| अकुक्कुओ निसीएञ्जा, न य वित्तासए परं | ॥२०॥ |
| एतय से चिट्ठमाणस्त, एवसग्गाभिधारए । | |
| सकाभीओ न गच्छेञ्जा, उट्ठित्ता अन्नमासण | ॥२१॥ |
| एवाययाहिं सेञ्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामव । | |
| नाइवल विहन्निञ्जा, पावविट्ठी विहन्नइ | ॥२२॥ |
| पइरिक्खुवस्सरं लद्ध, कल्लणमदुव पावय । | |
| किमेगराई करिस्तइ, एव तत्थइहियासए | ॥२३॥ |
| अकोसेञ्जा परे भिक्खू, न तेसिं पढिसजले । | |
| सरिसो होइ यालाण, सम्हा भिक्खू न सज्जले | ॥२४॥ |
| सोधाणं फरुसा भासा दाक्खणा गामकण्टगा । | |
| तुसिणीओ उवेहेञ्जा, न ताओ मणसीकर | ॥२५॥ |

| | |
|--|------|
| दिगिज्ञापयिष्ये नृह, तपस्या भिन्नं धामनं । | |
| नक्षिद न जिज्ञास्य न पप न तपस्या | ॥२॥ |
| कालीपदभगमंकाय, चिद्य भमगिसतप । | |
| मायन भमगुपाणुस्य, अदीगुमगुमा पर | ॥३॥ |
| तन्मा पुष्टा पिशागाय शोगज्जल सज्जसज्जप । | |
| सीओदगं न रोषिज्जल विपदस्येमण पर | ॥४॥ |
| द्विन्नायापमु पथेमु, आउर सपियासिप । | |
| परिमुष्मुहादीणे, तं तितिकस्ये परीसहं | ॥५॥ |
| चरंतं विरयं लूह सीय फसइ पगया । | |
| नाइवेलं मुणी गच्छे, सोत्तपाण जिणसासण | ॥६॥ |
| न म निवारणं अत्थि छविच्छाण न विरज्जइ । | |
| अह तु अग्निं सेवामि, इह भिक्खू न पितप | ॥७॥ |
| उसिण परियावेणं, परिदाहण तग्निप । | |
| घिसु धा परिआवणं, सायं नो परिद्वयप | ॥८॥ |
| अह्माहित्तो मेहायी, सिणाण नो पि पत्थप । | |
| गायं नो परिसिचेज्जा, न वीपज्जा य अण्णय | ॥९॥ |
| पुट्ठो य वंसमसण्हिं, समर य महामुणी । | |
| नागो संगामसीसे वा, सूरु अमिहणो पर | ॥१०॥ |
| न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसप । | |
| उवेइ न हणो पाणो, भुंजते मससोणिय | ॥११॥ |
| परिजुण्णोहिं वत्थेहिं, होन्तामि तिअचेतप । | |
| अतुवा सचेतं होन्तामि, इह भिक्खू न पितप | ॥१२॥ |
| प्पायाऽचेतप होइ, सचेते आवि पगया । | |
| एयं भम्मदियं नवा, नाणी नो परिदेवप | ॥१३॥ |

| | |
|---|------|
| अभिषायणमच्युद्धार्य, सामी कुञ्जा निमतण । | |
| जे ताई पडिसेवन्ति, न तेसिं पीइए मुणी | ॥३८॥ |
| अणुफसाई अप्पिच्छे, अभाएसी अत्तोसुए । | |
| रसेसु नाणुगिज्जेब्जा, नाणुतप्पेवज पन्नव | ॥३९॥ |
| से नूण मएपुब्बं, कम्माऽण्णाणफला कडा । | |
| जेणाहं नामिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई | ॥४०॥ |
| अह पच्छा वइच्चन्ति, कम्माणाणफला कडा । | |
| एवमत्तासि अप्पाण, नत्ता कम्मविवागय | ॥४१॥ |
| निरट्ठगम्मि विरब्भो, मेहुणाब्भो सुसुब्भो । | |
| जो सक्खं नामिजाणामि, धम्म कन्ताणपावर्ग | ॥४२॥ |
| तथोवहाणमावाय, पडिम पडिवच्चब्भो । | |
| एवं पि विहरब्भो मे, छत्तमं न नियट्ठई | ॥४३॥ |
| नत्थि नूण परेलोए इड्ढो यावी तवस्सिणो । | |
| अदुवा वचिब्भो मि त्ति, इइ भिक्खू न चितए | ॥४४॥ |
| अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सइ । | |
| मुसं ते एवमाहसु, इइ भिक्खू न चितए | ॥४५॥ |
| एए परिसहा सव्वे, कासवेण पवेइमा । | |
| जे भिक्खू न विहम्मेल्ला, पुट्ठो केणइ कण्हुइ | ॥४६॥ |

॥ चि वेमि ॥ इति युइअ परिसहम्मयणं समर्थ ॥

॥ अह तइअ चाउरगिज्ज अज्झयण ॥

चत्तारि परमगाणि, दुद्धाणीह जन्तुणो ।
माणुसत्त सुइ सदा, संपमम्मि य धीरियं ॥१॥

- दृष्टो न सजल भिस्सु, मणं पि न पचामए ।
 तित्तिस्सं परमं नञ्चा, भिस्सु धम्मं समायर ॥२६॥
- समण सजय वत, हण्डिग्गा षोइ फरुइ ।
 नत्थि जीयस्म नामु त्ति, एय पेइग्ग संजए ॥२७॥
- दुक्करं खलु भो निष्प, अणुगारस्स भिक्खुणो ।
 सव्य खे नाइय होइ, नत्थि किंचि अजाइय ॥२८॥
- गोयरगापयिट्ठस्स, पाणो नो सुप्पसारए ।
 खम्भो अगारवासु त्ति, इइ भिक्खू न पितए
 परसु घासमसेग्गा, भोयणे परिणिट्ठिए ।
 लद्धे पिएहे अलद्धे वा, नाणुतप्पेग्ग पडिए ॥२९॥
- अग्गेवाह न लब्भामि, अविस्रामो सुप सिया ।
 जो एव पडिसंचिक्खे, अलाभो सं न वप्पए ॥३०॥
- नञ्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्ठिए ।
 अदीणो यायए पनं पुट्ठो तत्थहियासए ॥३१॥
- तेगिच्छ नाभिनेव्वा सच्चिक्खत्तगवेसए ।
 एव सु वस्स सामण्यं जं न कुब्जा न कारवे ॥३२॥
- अपेलगस्स लूहस्स, संजयस्स ववस्सिणो ।
 तण्णसु सयमाणस्स हुब्बा गाययिराहणा ॥३३॥
- आमघस्स निवाएण अउला इयइ वेयणा ।
 एव नञ्चा न सेवसि, तसुजं तण्णतब्जिया ॥३४॥
- किंल्लिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रणण वा ।
 पिसु वा परियावेण, सायं नो परिवेवए ॥३५॥
- वेएग्ग निक्खरापेही आरियं धम्मणुत्तर ।
 माध सरीरभेरुत्ति, जल्लं कायण धारए ॥३६॥

| | |
|---|------|
| अभिषायणमच्युद्वाणं, सामी कुब्जा निमतण । | |
| जे साई पडिसेवन्ति, न तेसिं पीहण मुणी | ॥३८॥ |
| अणुक्कसाई अप्पिच्छे, अभाएसी अलोणुए । | |
| रसेसु नाणुगिस्सेव्वा, नाणुतप्पेस्स पभवं | ॥३९॥ |
| से नूण मएपुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा । | |
| जेणहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्डुई | ॥४०॥ |
| अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माणाणफला कडा । | |
| एवमस्सासि अप्पाण, नत्ता कम्मविचागय | ॥४१॥ |
| निरुद्दगस्मि विरब्भो, मेहुणाब्भो सुउवुडो । | |
| जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्म कल्लाणपावणं | ॥४२॥ |
| तथोवहाणमावाय, पडिम पडिबज्जब्भो । | |
| एवं पि विहरब्भो मे, छत्तम न नियट्ठई | ॥४३॥ |
| नत्थि नूण परेलोए इट्ठी यावी तथस्तिणो । | |
| अवुवा वेचिब्भो मि त्ति, इइ भिक्खू न चित्तए | ॥४४॥ |
| अभू जिणा अत्थि जिणा, अवुवायि भविस्सइ । | |
| मुत्त ते एवमाहसु, इइ भिक्खू न चित्तए | ॥४५॥ |
| एए परिसहा सव्वे, कासवेण पवेइया । | |
| जे भिक्खू न विहम्मेव्वा, पुट्ठो केणइ कण्डुइ | ॥४६॥ |

॥ त्ति वेमि ॥ इति बुद्धश्च परिसह मयणं समप्तं ॥

॥ अह तइअं आउरंगिज्ज अज्जमयण ॥

| | |
|--|-----|
| षत्तारि परमगाणि, बुद्धहाणीह जन्तुणो । | |
| माणुसत्तं सुइ सद्धा, सज्जमस्मि य धीरिय | ॥१॥ |

| | |
|--|------|
| समायन्नाण मगार नाणागात्ताम जाइम । | |
| कम्मा नाणा ॥ १६ ॥ कन्दु, पुत्रा विस्मभया पया | ॥२॥ |
| एगया दयत्ताण्णु नग्गम् वि एगया । | |
| एगया आमरं फाय, आहाकम्मदि गच्छद | ॥३॥ |
| एगया त्यत्तिआ दाइ, तच्चो चण्डाज्जयकमो । | |
| तच्चा फोडपयगो य, तच्चा पुत्थुपिपालिया | ॥४॥ |
| एयमायट्टजालीम, पाणिणो कम्मडिडिसा । | |
| न निविज्जन्ति मंसार, सक्खट्टेसु य सत्तिया | ॥५॥ |
| कम्ममगेहिं सम्मूढा, दुप्पिस्सया यहुवयणा । | |
| अमाणुमासु जोणीसु, विणिहम्मन्ति पाणिणो | ॥६॥ |
| कम्माण तु पहाणप, आणुपुब्बी कयाइ उ । | |
| जीया सोहिमणुप्पत्ता आययत्ति मणुस्तथ | ॥७॥ |
| माणुस्स विमाह लद्ध, सुइ धम्मस्स दुल्लहा । | |
| जं सोबा पडिवग्गन्ति, तथ सत्तिमहिसय | ॥८॥ |
| आहव सवण लद्धं सद्धा परमदुल्लहा । | |
| सोबा नेआवय मग्गं बहवे परिभस्सई | ॥९॥ |
| सइ च लद्धं सद्धं च, वीरय पुण दुल्लहा । | |
| बहव रोयमाणा वि नो य यं पडिवग्गप | ॥१०॥ |
| मणुसत्तम्मि आयाओ, जो घम्मं सोब सइहे । | |
| तवस्सी वीरिय ठावुं सवुडे निदुणो रयं | ॥११॥ |
| सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स विट्ठई । | |
| निष्कार्यं परम जाइ, पयसित्तव्य पाणप | ॥१२॥ |
| विगिण्ण कम्मुणो वेणं असं संनिणु सत्तिप । | |
| सरीरं पाठव हिणा, उद्धं पक्कमई विसं | ॥१३॥ |

| | |
|---|------|
| विसाक्षिसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा । | |
| महासुक्का घ दिप्पता, मन्नंता अपुण्णस्य | ॥१४॥ |
| अप्पिया देवकामाण, कामरूपविठप्पिणो । | |
| उह कप्पेसु चिट्ठन्ति, पुब्बा वाससया वहू | ॥१५॥ |
| तत्थ ठिष्ठा अहाठारणं, जक्खा आवक्खए चया । | |
| उवेन्ति मारुसं ओणि, से वसगेऽभिजायई | ॥१६॥ |
| खेत्तं वत्थु हिरण्ण च, पसवो वासपोरुसं । | |
| चत्तारि कामस्स घाणि, तत्थ से उववज्जई | ॥१७॥ |
| मित्तवं जायअ होइ, उच्चानोए य वण्णवं । | |
| अप्पायके महापन्ने, अभिजाए जसोवले | ॥१८॥ |
| भोष्ठा मणुस्सप भोए, अप्पठिरुवे अहाउयं । | |
| पुठ्ठि विसुद्धसद्धम्मे, केवल बोहि बुद्धिक्कया | ॥१९॥ |
| चउरगं दुद्धं नद्धा, संजम पडिषड्डिया । | |
| तवसा धयक्कम्मंसे, सिद्धे हवइ साएए | ॥२०॥ |
| ॥ चि वेमि ॥ इति चाउरंगिण्ण ग्राम तइअं अक्कयणं समत्त ॥३॥ | |

॥ अह चउत्थ असस्सय अजक्कयण ॥

| | |
|--|--|
| असस्सय जीविय मा पमायए, अरोयणीयस्स हु नत्थि वाण । | |
| एव वियाणाहि अणे पमत्ते, फियणु विहिंसा अजया गह्विति ॥१॥ | |
| जे पावक्कम्मेहि घण मणुसा, समाययन्ती अमइ गहाय । | |
| पहाय ते पासपयड्डिप नरे, वराणुवद्धा नरय उय्येति ॥२॥ | |
| तेणे जहा संधिसुद्धे गह्वीप, सक्कम्मुणा फियइ पावकारी । | |
| एय पया पेअ इहं च लोए, कक्काण कम्माण न सुक्क अत्थि ॥३॥ | |
| ससारमावन्न परस्स अट्ठा, साह्वरणं अं च फरेइ कम्म । | |
| कम्मस्स ते वत्स उ येयकाले, न यंधया यंधययं उय्येति ॥४॥ | |

विशेषेण ताण न लभं पमत्त, इमस्मि क्षोण अदुपा परत्था ।
 शीघ्रपण्डित्य अणंतमोद्ध, नयाउयं वट्ठमवट्ठ मय ॥५॥
 मुत्तामु याथी परिपुद्धजीया, न यासये परिहण आमुपत्त ।
 घोरा मुद्धता अयल सरीरं, भारणपत्ती य चरत्तमत्ते ॥६॥
 चर पयाई परिसंकमाणो, ज किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
 लाभत्तर जीविया वट्ठइता, पच्छा परिभाय मत्तापघंसी ॥७॥
 छदं निरोद्धण उपइ मोक्खं, आये जइ सिवित्थययम्मघारी ।
 पुब्बाई यासाई चरत्तमत्ते, तम्हा मुणी म्पिप्पमुयेइ मोक्ख ॥८॥
 स पुब्बमेव न लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासययाइयाणं ।
 विसीयइ सिद्धिल आउयम्मि, कालोयणीय सत्तरस्स भेय ॥९॥
 पिप्पं न सक्केइ विधगमेत्तं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
 समिच्च लोयं समयामहसी आयाणुरक्खी चरत्तमत्तो ॥१०॥
 मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं, अणेगरूवा समयं चरन्तं ।
 फससा फुसन्ति असमंजसं च, न तेसि मिक्खू मणसा पवस्से ॥११॥
 मन्दा य फससा बहुलोद्धणिज्जा, वहण्णगारेसु मयं न कुज्जा ।
 रक्खिज्ज कोह विणएन्ध माण, मायं न सेवेज्ज पदेज्ज क्षोह ॥१२॥
 जे सत्तया तुच्छपरत्तयाई, ते पिज्जवोसाणुगया परम्म ।
 पए अहम्मे त्ति दुगुल्लमाणो, कस्से गुणे जाव सरीरमेव ॥१३॥
 ॥ त्ति वेमि ॥ इति असंख्यं चत्थं अङ्गुत्तराणं समत्तं ॥ ४ ॥

॥ अह अकाममरणिज्जं पञ्चम अज्झयया ॥
 अण्णवसि महोषसि, एगे तिण्णे दुरुत्तरे ।
 तत्थ एगे महाप्पने, इम पण्हमुवाहरे ॥१॥
 सन्तिमे य तुवे ठाणा अक्खाया मरणम्मिया ।
 अकाममरणं पेव, सकाममरणं तद्वा ॥२॥

| | |
|--|------|
| ધાતાણ અકામં તુ, મરણં અસહ્યં ભવે । | |
| પરિહયાણં સકામં તુ ચક્રોસેણ સહ્યં ભવે | ॥૩॥ |
| તપ્થિમં પદમ ઠાણં, મહાવીરેણ વેસિયં । | |
| કામગિદ્ધે જહા ધાલે, મિસં કૂપાઈ કુઠ્ઠવઈ | ॥૪॥ |
| જે ગિદ્ધે કામભોગેસુ, પગે કૂઠાય ગચ્છઈ । | |
| ન મે વિદ્ધે પરે લોપ, ચક્ષુઃપિદ્ધા રૂમા રઈ | ॥૫॥ |
| હસ્થાગ્યા રૂમે કાન્ના, કાલિયા જે અણાગ્યા । | |
| કો અણાઈ પરે લોપ, અત્યિ ધા નત્યિ ધા પુણો | ॥૬॥ |
| અયોણ સદ્ધિ દોષસ્વામિ, રૂઈ ધાલે પગન્મઈ । | |
| કામભોગાણુપણ, કેસં સંપરિવચ્છઈ | ॥૭॥ |
| તખો સે વચ્છ સમારમઈ તસેસુ યાવરેસુ ય । | |
| અદ્વાપ ય અણઠાપ, મૂયગામ વિહિસઈ | ॥૮॥ |
| હિસે ધાલે મુસાધાઈ, માદ્ધલ્લે પિમુણે સહે । | |
| મુંજસાણે સુરં મંસં સેયમેયં તિ મન્નઈ | ॥૯॥ |
| કાયસા વયસા મત્તે, વિત્તે ગિદ્ધે ય રૂત્થિસુ । | |
| દુહખો મહં સવિણઈ, સિમુણાગુ વ્ય મદ્ધિય | ॥૧૦॥ |
| તખો પુદ્ધો આયકેણં, ગિલાણો પરિતપ્પઈ । | |
| પખીઓ પરલોગસ્સ કમ્માણુપ્પેહિ અપ્પણો | ॥૧૧॥ |
| સુયા મે નરપ ઠાણા, અસીલાણ ચ આ ગઈ । | |
| ધાતાણ કૂરુકમ્માણં, પગાઠા અત્ય વેયણા | ॥૧૨॥ |
| વત્યોવધાઈય ઠાણં, જહા મેયમણુસ્સુર્યં । | |
| આદાકમ્મેહિ ગચ્છન્તો, સો પચ્છા પરિતપ્પઈ | ॥૧૩॥ |
| જહા સાગહિઓ આણ, સમં હિચ્છા મહાપઈ । | |
| પિસમ મગ્ગમોદ્ધણો, અન્થે ભમામ્મિ સોયઈ | ॥૧૪॥ |

- ७५ भम्म विउफम्म, अदम्मं पडिगज्जिगा ।
 पान्न मत्तमुद्धं पत्ते, अस्मि भम्मा य सागइ ॥१५॥
 तत्था उ मरणात्तम्मि, पान्न संतसइ भया ।
 अकाम मरण मरइ, भस्से य कल्लिणाजिण ॥१६॥
 ७६ अकाममरण यान्ताण तु पचइयं ।
 पत्ता सकाममरणं, पण्डियाण मुणह म ॥१७॥
 मरणं पि सपुण्णाण, जहा मयमणुस्सुर्यं ।
 विप्पसण्णमणापाय सज्जयाण वुत्तीमच्चो ॥१८॥
 न इमं सव्वसु भिवस्सु, न इमं सव्वसु गारिस्सु ।
 नाणासीलाअगारस्या, विसमसीत्ता य भिक्खुणो ॥१९॥
 सन्ति एगेहिं भिक्खुइहि, गारत्था संअमुत्तरा ।
 गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो सज्जमुत्तरा ॥२०॥
 धीराजिय नगिणिण, अट्ठी संपाडिमुण्डिय ।
 एयाणि वि न ठायन्ति, वुरसीलं परियागयं ॥२१॥
 पिंडोलएठव वुत्सीले, नरगाच्चो न मुक्खइ ।
 भिक्खाए वा गिहत्ये वा सुव्वए कम्मइ विधं ॥२२॥
 अगारिसामाइयंगाणि, सट्ठी काएण फासए ।
 पोसहं दुहआं पवस्सं, एगराय न हायए ॥२३॥
 एव सिक्खासमायने गिहिवासे वि सुक्खए ।
 मुक्खइ अविपट्ठाच्चो गच्छे अक्खसल्लोगयं ॥२४॥
 अह जे संवडे भिक्खू बोणह अन्नयरे सिया ।
 सव्वदुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिहिण ॥२५॥
 उत्तराई विमोहाई, जुईमन्ताणुपुब्बसो ।
 समाइएणाई अक्खेहि आवासाइ जसंसिणो ॥२६॥

| | |
|---|------|
| वीहाय्या इष्टिमन्ता, समिद्धा कामरूविणो । | |
| अद्भुणोववन्नसफासा, मुञ्चो अभिमाक्षिप्पभा | ॥२७॥ |
| तायि ठाणाणि गच्छन्ति, सिक्खित्ता सज्जम तर्ष । | |
| भिक्खाए वा गिहित्थे वा, अं सन्ति परिनिब्बुद्धा | ॥२८॥ |
| तेसिं सोळा सपुज्जाण, सज्जयाण वुत्तीमणो । | |
| न खंतसंवि मरणं ते, सील वत्तो बहुस्सुया | ॥२९॥ |
| तुत्तिया विसेसमावाय, दयाधम्मस्स खन्तिए । | |
| विप्पसीएज्ज मेहावी, तद्वाभूएण अप्पणा | ॥३०॥ |
| तण्णो काले अभिप्पेए, सद्धि तात्तिसमन्धिए । | |
| विणपवज्ज लोमहरिसं, मेयं वेहस्स कंसए | ॥३१॥ |
| अह कालम्मि सपत्ते, आघायाय समुत्सरयं । | |
| सकाममरणं मरई, तिण्हमन्नयरं मुणी | ॥३२॥ |
| ॥ त्ति वेमि ॥ इति अकाममरणिज्ज पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥३३॥ | |

॥ अह सुद्धागनियठिज्ज छट्ठं अज्झयणं ॥

| | |
|--|------|
| आवत्तविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसमवा । | |
| सुप्पन्ति बहुसो मूढा संसारम्मि अयान्तए | ॥३४॥ |
| समिक्ख पण्हए तन्हा, पासजाई पहे दह । | |
| अप्पणा सज्जमेसेज्जा, मेत्ति भूएसु कप्पए | ॥३५॥ |
| माया पिमा ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा । | |
| नात्तं ते मम ताणाए, सुप्पवस्स सकम्मुणा | ॥३६॥ |
| एयमट्ठं सपेक्षाए, पासे समियवंसणे । | |
| छिन्दे गेहिं सिणेहं च, न कंसो पुब्बसंयुयं | ॥३७॥ |
| गवास मणिकुप्पवत्तं, पसवो दासपोरत्तं । | |
| सव्वमेयं चइत्ताणं, कामरूषी भविस्ससि | ॥३८॥ |

| | |
|--|------|
| धायरं जगम भव, धर्तुं धनं उपस्सरं । | |
| पथमाणसा कम्मदि, नाकं दुस्साभा मायणे | ॥१५॥ |
| अग्गमदधं सभ्यओ सभ्यं, दिसस पाणे पियायण । | |
| न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराभा उपरए | ॥१६॥ |
| आयाणं नरय विस्स, नायएउअ तणामवि । | |
| दोगुब्धी अप्पणो पाए, दिनं जुजेअ भोयण | ॥१७॥ |
| इहमेगे उ मज्जन्ति, अप्पयस्सय पायगं । | |
| आयरियं विविचाणं, सभ्यदुक्खाण मुण्हं | ॥१८॥ |
| भणवा अकरन्ता य, यधमोस्सपइणिणो । | |
| घायाविरियमेत्तेण, समासासेन्ति अप्पय | ॥१९॥ |
| न चिच्चा वायए भासा, कुओ यिअणुसासयं । | |
| विसन्ना पायकम्मेहि, याला पंडियमाणियो | ॥२०॥ |
| जे केइ सरारे सत्ता, वणणे खवे य सव्वसो । | |
| मणसा कायवक्केणं सव्वे ते दुक्खससम्भय । | ॥२१॥ |
| आवन्ना दीहमज्जाणं, संसारम्मि अणुत्तए । | |
| तन्हा सव्वविसं पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए | ॥२२॥ |
| वहिया उट्टमावाय नावकंखे कयाइ वि । | |
| पुब्बकम्मक्खयट्ठाए, इमं वेहं समुत्तरे | ॥२३॥ |
| विविक्ख कम्मणो हेउ, काक्षकंखी परिव्वए । | |
| माय पिण्डस्स पाणस्सस, कडं लद्धूण मक्खए | ॥२४॥ |
| सभिहिं च न कुब्बेअ, लेवमायाए संजए । | |
| पक्खीपत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वए | ॥२५॥ |
| एसणासमिओ लब्धू गामे अणियओ चरे । | |
| अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्डवाय गवेसए | ॥२६॥ |

एवं से उवाहु अणुत्तरनाणी, अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसाधरे
अरहा नायपुत्ते, भगवन् वेसालिए पियाहिए ॥

॥ चि वेमि ॥ इति सुद्धागनिर्यठिञ्ज छठ्ठ अज्झयण समत्तं ॥६॥

॥ अह एल्लय सत्तमं अज्झयणं ॥

- जहाएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेञ्ज एल्लय ।
ओयण जयसं वेज्जा, पोसेज्जा वि सयङ्गणे ॥१॥
- तओ से पुढे परिबूढे, आयमेए महोदरे ।
पीणिए विवले वेहे, आपसं परिदंस्सए ॥२॥
- जाव न पइ आपसे, ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तम्मि आपसे, सीसं छेत्तूण सुञ्जई ॥३॥
- जहा से जल्लु वरब्भे, आपसाए समीहिए ।
एयं वाले अहम्मिहे, ईहई नरयाचयं ॥४॥
- हिंसे वाले मुसावाई, अट्ठाणामि विक्खोवए ।
अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे ॥५॥
- इत्थीविसयगिद्धे य, महारंभपरिग्गहे ।
मुज्जमाणे सुरं मंसं, परिबूढे परंदमे ॥६॥
- अयकक्करमोइ य सुविल्ले चियलोहिए ।
आठयं नरए फल्ले, जहाएसं य एल्लए ॥७॥
- आसणं सयणं आणं, पित्तं कामे य भुंजिया ।
तुस्साहडं धणं हिञ्चा, धहु संधिणिया रयं ॥८॥
- तओ कम्मगुरू जंघु, पच्चुप्पन्नपरायणे ।
अय व्व आगयाएसे, मरणंतम्मि सोयई ॥९॥
- तओ आरुपरिक्खीणे, चुया बहविहिसगा ।
आसुरीयं विसं पाला, गच्छन्ति अपसात्तमं ॥१०॥

- जहा कागिणिए हूँ, सहस्र दारण नरा ।
 अथार्थ अम्बगं भाषा, राय रम्ब जु दारण ॥११॥
- पय माणुस्सगा कामा, वयफामाण अन्तिप ।
 सहस्सगणिया जुओ, आउं कामा य दिम्बिया ॥१२॥
- अणोगयासानवया, जा सा पम्बओ ठिई ।
 जाणि जीयन्ति दुम्मेहा, उणयाससयाउए ॥१३॥
- जहा य तिन्नि घाणिया, मूलं पेत्तण निग्गया ।
 ण्णो उत्थ लहइ लाभ, ण्णो मूलेण आगओ ॥१४॥
- ण्णो मूलं पि हारित्ता आगओ तस्य घाणिओ ।
 घवहारे उयमा एसा, एवं धम्मे पियाण्ह ॥१५॥
- माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो वेयगई भवे ।
 मूलच्छेपण जीवाणं, नरगतिरिक्खत्तणं धुर्यं ॥१६॥
- दुहओ गई वालस्स आवइ पइमूलिया ।
 देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिप ओत्तयासडे ॥१७॥
- तओ जिप सइ होइ, दुषिहिं षोगाई गए ।
 दुह्हा तस्स उम्मुग्गा, अट्ठाए, सुधिराएवि ॥१८॥
- एव जिप सपेहाए, तुलिया वालं च पण्डित्यं ।
 मूलिय ते पवेसन्ति, माणुसिं ओण्णिमेन्ति वे ॥१९॥
- वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुखया ।
 सवेन्ति माणुसं ओणिं, कम्मसत्ता तु पाणियो ॥२०॥
- जेसिं तु विरत्ता सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया ।
 सीलवन्ता सविसेसा, अवीणा अन्ति वेवयं ॥२१॥
- एवमवीण्यं भिक्खू, आगारिं च पियाणिया ।
 कइएणु जिणमेत्तिक्खं, जिणमाणे न सविषे ॥२२॥

| | |
|---|------|
| अहा कुसगो उदग, समुद्रेण समं मिणे । | |
| एष माणुसमा कामा, वेवकामाण अतिप | ॥२३॥ |
| कुसगमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धन्मि आउप । | |
| करत हेतं पुराकाच, जोगक्त्वेम न संविदे | ॥२४॥ |
| इह कामाणियदृस्त, अचठ्ठे अयरज्जई । | |
| सोवा नेयावयं ममां, ज मुज्जो परिभस्तइ | ॥२५॥ |
| इह कामाणियदृस्त, अचठ्ठे नायरज्जई । | |
| पूहवेहनिरोहेण, भवे ववे चि मे सुय | ॥२६॥ |
| इही जुई जसो वण्णो, आरं सुहमणुत्तर । | |
| मुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ | ॥२७॥ |
| घालस्त पस्त वालत्त, अहम्म पठिवज्जिया । | |
| चिवा घम्म अहम्मिठ्ठे, नरए उववज्जई | ॥२८॥ |
| धीरस्त पस्त धीरत्त सवधम्माणुवचिणो । | |
| चिवा अधम्म घम्मिठ्ठे, वेवेसु उववज्जई | ॥२९॥ |
| तुलियाण वालभाव, अवाल चेय पडिय । | |
| चइऊण वालभाव, अवाल सेवइ मुणि | ॥३०॥ |

॥ चि वेमि ॥ इति एलय-मयणं समत्त ॥३१॥

॥ अह काचिलीय अठ्ठम अज्जकपणं ॥

| | |
|--|-----|
| अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपत्तराप । | |
| किं नाम होअ सं कम्मयं, जेणाह दुग्गाह न गच्छेग्गा | ॥१॥ |
| धिजहिस्तु पुण्यसज्जोय, न सिणेई कदिचि कुळवग्जा । | |
| असिणेहसिणेहकरहि, दोसपणोसेहि मुषण भिक्खू | ॥२॥ |
| तो नाणवसणसमग्गो, हियनिस्सेमाय सव्वज्जीवाण । | |
| तेसि विमोक्खणद्वाप, भासइ मुणिवरो विगयमोहो | ॥३॥ |

- सम्यं गथं कलहं च, विणज्जदं सदाभिदं भिम्भु ।
 सम्येणु कामजाणु पासमाणा न लिणइ ताइ ॥४॥
- भोगामिसदोमधिसजे, हियनिसोयसयुद्धियोषत्थ ।
 पाले य मन्दिण मूढे, पभइ मण्डिया य गेलम्मि ॥५॥
- दुप्परिषया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।
 अहं सन्ति सुम्पया सादू, जे सरन्ति अतरं यणिया या ॥६॥
- समग्गामुण्णे ययमाणा, पाणयहं मिया अयाणन्ता ।
 मन्दा निरयं गच्छन्ति, यासा पाषियाहिं दिट्ठीहिं ॥७॥
- न हु पाणयहं अणुजाणे, मुषेग्ग कयाइ सम्यदुक्खाण ।
 एषारिणहिं अक्खाय, जेहिं इमो सादुधम्मो पभत्तो ॥८॥
- पाणे य नाइ वापग्गा, से समीइत्ति पुच्चइ ताइ ।
 तम्मो से पावय कम्मं, निग्गाइ उव्वं य थलाओ ॥९॥
- जगनिस्सिणहिं भूणहिं, वसनामेहिं थावरहिं च ।
 नो तेसिमारमे वडं, मणसा वयसा कायसा जेव ॥१०॥
- सुद्धेसणाओ नल्लमाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खु अण्णाण ।
 जान्ताए वासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिंया भिक्खाए ॥११॥
- पन्ताणि जेव सेवेग्गा सीयपिणं पुराणकुम्मासं ।
 अदु वक्कसं पुलागं वा, जवणठ्ठाए निसेवण मंथु ॥१२॥
- जे लक्खणं च सुविणं च, अल्लविग्ग च जे पवजंति ।
 न हु ते समणा पुच्चंति एव आयरिणहिं अक्खाय ॥१३॥
- इहजीवियं अणियमेत्ता, पभट्ठा समाहिजोणहिं ।
 ते काममोगरसगिद्धा, उव्वज्जन्ति आसुरे काय ॥१४॥
- तत्तो वि य उव्वट्ठित्ता संसारं बहु अणुपरियटन्ति ।
 बहुक्कमलेषलिताण, बोही होइ सुदुक्खा तंसि ॥१५॥

- कसिण पि वो इमं लोम, पण्डिपुण्णं वलेज्जं इकस्स ।
 तेणायि से न सत्तुस्से, इह दुप्परए इमे आया ॥१६॥
 अहा लाहो सहा लोहो, लाहा लोहो पवहुई ।
 दोमासकय कब्बं, कोहीए पि न निट्ठिय ॥१७॥
 नो रक्खसीसु गिम्मेज्जा, गंढवच्छासु ऽप्येगचित्तासु ।
 जाओ पुरिसं पत्तोमिच्चा, खेलन्ति जहा व दासेहिं ॥१८॥
 नारीसु नोषगिन्हेज्जा, इत्थी विप्पज्जे अण्णागारे ।
 धम्मं च पेसलं नच्चा, तस्थं ठवेज्जं भिक्खु अप्पाण ॥१९॥
 इह एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
 तरिहिन्ति जे च काहिन्ति, तेहिं आराहिया दुवे लोम ॥२०॥
 ॥ चि वेमि ॥ इति काविलीय अट्ठमं अध्यायणं ॥८॥

॥ अहं शवमं नमिपवज्जा शामज्झयण ॥

- चइज्जं देवलोगाओ, उवयन्नो माणुसम्मि लोगम्मि ।
 उवसन्तमोहणिज्जो, सरहं पोराणियं आइ ॥१॥
 जाइ सरित्तु भयर्थं, सहसयुद्धं अणुत्तरे धम्मे ।
 पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमर्हं नमी राया ॥२॥
 सो देवलोगसरिसे, अन्तेउरयरगाओ वरे भोए ।
 मुज्जित्तु नमी राया, धुद्धो मोगे परिच्छयई ॥३॥
 मिहितं सपुरजणयय, यलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
 चिच्चा अभिनिक्खन्तो, एगन्तमहिब्बित्तो भयथ ॥४॥
 कोलाहलगभूर्यं, आसी मिहिलाए पठययन्तम्मि ।
 सइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमन्तम्मि ॥५॥
 अध्मुट्ठिय रायरिसिं, पवज्जाठाणमुत्तम ।
 सफो महाणस्सेण, इमं पयणमव्वयी ॥६॥

| | |
|---|------|
| सन्त्यं गधं कलहं च, पिणजह वहायिह भिस्म् । | |
| सन्त्येगु कामजाएगु पासमाणा न जियइ छाइ | ॥४॥ |
| भोगामिसदोसयिसत्रे, दियनिस्मेयसगुद्वयोषत्थ । | |
| याले य मन्दिए मूढे, यम्हइ मरिछया य स्नेहम्मि | ॥५॥ |
| दुप्परिषया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं । | |
| अह सन्ति सुखया साहु, जे सरन्ति अतरं वलिया या | ॥६॥ |
| समगामुएगे ययमाणा, पाणयहं मिया अयाणन्ता । | |
| मन्दा निरयं गच्छन्ति, वाला पायियाहिं विट्ठीहिं | ॥७॥ |
| न हु पाणयहं अणुआणे, मुखेगज कयाइ सन्वदुक्खाण । | |
| एवारिएहिं अक्खाय, जेहिं इमो साहुधम्मो पमत्तो | ॥८॥ |
| पाणे य नाइवापग्जा, से समीइत्ति पुच्छइ ताइ । | |
| तओ से पावय कम्मं, निग्जाइ उवगं य धलाओ | ॥९॥ |
| अगनिस्सिएहिं भएहिं, वसनामेहिं थायरहिं च । | |
| नो तेसिमारमे वंछं, मणसा ययसा कायसा जेव | ॥१०॥ |
| सुद्धेसणाओ नक्खाणं, तस्य ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण । | |
| जायाए पासमेसेग्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए | ॥११॥ |
| पन्ताण्णि जेव सेवेग्जा सीयपिंछं पुराणकुम्मासं । | |
| अहु वक्कसं पुलागं वा, जवणठ्ठाए निसेषए मंघु | ॥१२॥ |
| जे लक्खणं च सुवियं च, अज्जविग्ग च जे पत्तजंति । | |
| न हु ते समणा वुत्तंसि एव आयरिएहिं अक्खाय | ॥१३॥ |
| इहजीवियं अणियमेत्ता, पमट्ठा समाहिजोएहिं । | |
| ते कामभोगरसगिद्धा, ववयज्जन्ति आसुरे कए | ॥१४॥ |
| तत्तो वि य उव्वट्ठित्ता संसारं बहु अणुपरियटन्ति । | |
| बहुक्कम्मसेवलिचार्या, जोडी होइ सुबुद्धा तेसिं | ॥१५॥ |

| | |
|---|------|
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमी रायरिसी, देयिन्धं इणमध्यधी | ॥१६॥ |
| सद्धं नगरं किष्वा, तवसवरमगालं । | |
| स्यन्ति निष्णपागारं, तिगुत्त दुप्पघंसय | ॥१७॥ |
| घणुं परक्कम किष्वा, जीव च इरिय सया । | |
| धिइ च केयणं किष्वा, सवेण पत्तिमन्थए | ॥१८॥ |
| तवनारायजुत्तेण, भित्तुण कम्मकंचुयं । | |
| मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुषए | ॥१९॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमध्यधी | ॥२०॥ |
| पासाए कारइत्ताण, वद्धमाणगिहाणि य । | |
| यात्तमापोइयाओ य, तओ गच्छसि सत्तिया | ॥२१॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमध्यधी | ॥२२॥ |
| ससय सल्लु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घर । | |
| जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुवेज्ज सासय | ॥२३॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमध्यधी | ॥२४॥ |
| भामोसे लोमहारे य, गठिभेए य तक्कर । | |
| नगरस्स खेमं काउण, तओ गच्छसि सत्तिया | ॥२५॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमी रायरिसी देविन्दो इणमध्यधी | ॥२६॥ |
| असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दओ पल्लुअइ । | |
| अकारिणोऽस्य च मन्ति, मुषइं कारओ जणो | ॥२७॥ |

पिण्णु भा अज्ज मिहिलाण, कोप्ताहजगम दुत्ता ।

मुन्यन्ति दाहणा महा पासाण्णु गिदम य ॥३॥

एयमट्ठ निसामिप्पा, इउकारणचोइओ ।

तओ नमो रायरिसो, वेयिन्द इणमव्यधी ॥४॥

मिहिलाण चेइण वज्जे, सीयज्जाण मणोरम ।

पत्तपुत्तकल्लोवेण, यमूण बट्टगुणे सया ॥५॥

वाण्ण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरम ।

दुहिया असरणा अत्ता, एए फन्दन्ति भो रग्गा ॥६॥

एयमट्ठ निसामिप्पा, इउकारणचोइओ ।

तओ नमि रायरिसि, वेयिन्दो इणमव्यधी ॥७॥

एस अमी य थाऊ य, एयं डग्गइ मन्दिरं ।

भयव्व अन्तेवरं तेणं कीस ण नामपेक्खह ॥८॥

एयमट्ठ निसामिप्पा, इउकारणचोइओ ।

तओ नमि रायरिसि, वेयिन्द इणमव्यधी ॥९॥

सुह वसामो जीवामो, जेसि मो नस्थि किंवरणं ।

मिहिलाण डग्गमाणीय, न मे डग्गइ किंवरणं ॥१०॥

चत्तपुत्तकलत्तस्स, निब्बावारस्स भिवसुणो ।

पिय न विज्जई किंषि, अप्पियं पि न थज्जइ ॥११॥

वट्ठं खु मुण्णिणो भइ, अण्णगारस्स भिवसुणो ।

सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥१२॥

एयमट्ठ निसामिप्पा, इउकारणचोइओ ।

तओ नमि रायरिसि, वेयिन्दो इणमव्यधी ॥१३॥

पागारं कारइत्ताण गोपुरदालगाणि य ।

उत्सूलगसयग्धीओ, तओ गच्छसि खत्तिमा ॥१४॥

| | |
|---|------|
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमी रायरिसी, देविण्णं इणमण्ववी | ॥४३॥ |
| मासे मासे तु जो वालो, कुसग्गेणं तु मुंजए । | |
| न सो मुयक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोल्लसिं | ॥४४॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमिं रायरिसिं, देविण्णो इणमण्ववी | ॥४५॥ |
| हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं वूसं च वाहरणं । | |
| कोसं घट्ठावइत्ताणं, तओ गच्छसिस्सत्तिया | ॥४६॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमी रायरिसी, देविण्णं इणमण्ववी | ॥४७॥ |
| सुवण्णरुप्पस्स च पण्वया भवे, सिया तु फेत्ताससमा अर्सल्लया । | |
| नरस्स जुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा तु आगाससमा अणन्तिया ॥ | |
| पुढवी साली जया चेव, हिरण्ण पसुभिस्सइ । | |
| पडिपुण्ण नाल्लमेगस्स, इइ विज्जा तव चर | ॥४८॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमिं रायरिसिं, देविण्णो इणमण्ववी | ॥४९॥ |
| अच्छेरगमध्मुदए, मोए अयसि पत्थिवा । | |
| असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि | ॥५०॥ |
| एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ । | |
| तओ नमी रायरिसी, देविण्णं इणमण्ववी | ॥५१॥ |
| सल्लं कामा विस कामा, कामा आसाविसोवमा । | |
| कामे पत्थेमाणा, अफामा जन्ति दोग्गइ | ॥५२॥ |
| अहे ययन्ति कोहेण, माणेण अहमा गइ । | |
| माया गइपडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं | ॥५३॥ |

- પ્રયમટ્ટ નિસામિત્તા, દેઠ્ઠકારણ્ણોશ્ચો ।
 તત્ત્વો નમિં રાયરિસિ, રવિન્દો ઇણમચ્ચવી ॥૩૧॥
- તે પદ્ધિ પત્થિયા તુમ્હે, નાનમન્તિ નરાદિયા ।
 પચે તે ઠાપદિત્તાણ, તત્ત્વો ગચ્છમિ ત્થિયા ॥૩૨॥
- પ્રયમટ્ટ નિસામિત્તા, દેઠ્ઠકારણ્ણોશ્ચો ।
 તત્ત્વો નમી રાયરિસિ, રવિન્દો ઇણમચ્ચવી ॥૩૩॥
- જો સહસ્સં સહસ્સાણં, સગામ વુઙ્ગપ જિણે ।
 એમં જિણેઞ્ચ અપ્પાણં, એસ સે પરમો જમ્મો ॥૩૪॥
- અપ્પણામેવ જુઞ્ઞહિ, કિં તે જુમ્હેણ વચ્છમ્મો ।
 અપ્પણામેવમપ્પાણં, જહ્ણતા મુદ્દમેદ્દપ ॥૩૫॥
- પચિન્દિયાણિ કોહં, માણં માયં તહેન સોહં વ ।
 વુઙ્ગયં વેવ અપ્પાણં, સચ્ચં અપ્પે જિણે જિય ॥૩૬॥
- પ્રયમટ્ટ નિસામિત્તા, દેઠ્ઠકારણ્ણોશ્ચો ।
 તત્ત્વો નમિં રાયરિસિં રેવિન્દો ઇણમચ્ચવી ॥૩૭॥
- જહ્ણતા વિચલ્લે જન, મોહિત્તા સમણમાહુચ્છે ।
 દત્તા મોચ્છા ચ જિટ્ઠા ચ તત્ત્વો ગચ્છસિ સ્વત્થિયા ॥૩૮॥
- પ્રયમટ્ટ નિસામિત્તા, દેઠ્ઠકારણ્ણોશ્ચો ।
 તત્ત્વો નમી રાયરિસી, રેવિન્દો ઇણમચ્ચવી ॥૩૯॥
- જો સહસ્સ સહસ્સાણં માસે માસે ગચ્છ વપ ।
 તસ્સ વિ સંજમો સેમ્મો, અવિન્તસ્સ વિ કિંપણ ॥૪૦॥
- પ્રયમટ્ટ નિસામિત્તા, દેઠ્ઠકારણ્ણોશ્ચો ।
 તત્ત્વો નમિં રાયરિસિં, રવિન્દો ઇણમચ્ચવી ॥૪૧॥
- ધોરાસમ વદિત્તાણ, અન્ન પત્થેસિ આસમં ।
 શ્હેવ પોસહરમ્મો, મનાહિ મણ્ણયાદિવા ॥૪૨॥

- इह ६त्तरियन्मि आचए, जीवियए बहुपवषायए ।
 विदुणाहि रयं पुरे कळं, समय गोयम । मा पमायए ॥३॥
- दुल्लहे सलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
 गाढा य विधाग कम्मणो, समयं गोयम । मा पमायए ॥४॥
- पुवविक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संस्साइय, समयं गोयम । मा पमायए ॥५॥
- आचक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 काल संस्साइय, समयं गोयम । मा पमायए ॥६॥
- तेउक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 काल संस्साइय, समयं गोयम । मा पमायए ॥७॥
- माउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 काल संस्साइय, समय गोयम । मा पमायए ॥८॥
- वणस्सइक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालमणन्तदुरन्तरं, समयं गोयम । मा पमायए ॥९॥
- नेइन्दियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम । मा पमायए ॥१०॥
- तेइन्दियकायमइगओ उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 काल संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम । मा पमायए ॥११॥
- वसरिन्दियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम । मा पमायए ॥१२॥
- पंचिन्दियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 सत्तट्ठभयगाहणे, समयं गोयम । मा पमायए ॥१३॥
- वेवे नेरइए अइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 इक्केफभयगाहण, समय गोयम । मा पमायए ॥१४॥

| | |
|---|------|
| अपउमिऊण माहणुत्थ, विउअयऊण इउथं । | |
| पदइ अभिउणुणता इमाहि मदुरादि यमगुहि | ॥२५॥ |
| अटा न निउअिआ कोदो, अहा माणा पराअिआ । | |
| अहा त निरफिया माया, अहा सोभा यसीअओ | ॥२६॥ |
| अहो त अउप साहु अहो त साहु मदय । | |
| अहो त उत्तमा रउन्ती, अहो त मुत्ति उत्तमा | ॥२७॥ |
| इह सि उत्तमो भन्त, पय्छा होहिंसि उत्तमो । | |
| लोगुत्तमुत्तमं ठाणं सिद्धि गय्छसि नीरओ | ॥२८॥ |
| एव अमिउणुणन्तो रायरिसि उत्तमाए सउआण । | |
| पयाहियां फरेत्तो पुणा पुणो ववइ सणो | ॥२९॥ |
| तो वदिऊण पाए, चणकुसलक्खणे मुणिवरस्स । | |
| आगासेणुपइओ जलियचवलकुंडलविरीछी | ॥३०॥ |
| नमी नमेइ अप्पाण सक्खं सक्केण चोइओ । | |
| चइऊण गेहं च ववही, सामण्ये पक्खुवट्ठिओ | ॥३१॥ |
| एव फरन्ति संबुद्धा पडिया पवियक्खणा । | |
| विणियद्वन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि | ॥३२॥ |
| ॥त्ति वेमि ॥ इति नमिपब्बज्जा नाम नवमं अज्झयण समत्तं ॥३॥ | |

॥ अह दुमपत्तय दसमं अज्झयणं ॥

| | |
|--|-----|
| दुमपत्तय पंडयए जहा, नियउइ राइगणाण कअए । | |
| एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम । मा पमायए | ॥३॥ |
| कुसगो जह ओसविन्दुए, घोष विट्ठइ जम्भमाणाए । | |
| एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३॥ |

| | |
|---|------|
| अरई गण्ड विसूइया, आर्यका विविहा फुसन्ति ते । | |
| विहडइ विदंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम । मा पमायए | ॥२७॥ |
| घोष्छिन्द सिणोहमप्पणो, कुसुय सारइयं व पाणियं । | |
| खे सठवसिणोहवज्जिए, समयं गोयम । मा पमायए | ॥२८॥ |
| चिवाण घरां व भारिय, पठ्वइओ हि सि अणगारिय । | |
| मा घन्तं पुणो वि आविए समयं गोयम । मा पमायए | ॥२९॥ |
| अवसन्मित्त मिच्छावव, विटलं खेव धणोहसंचयं । | |
| मा तं विइयं गवेसए, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३०॥ |
| न हु जिणे अज्ज विस्सई, धहुमए विस्सइ मग्गदेसिए । | |
| संपइ नेयात्तए पहे, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३१॥ |
| अवसोहिय कण्डगापहं, ओइणो सि पेह महालयं । | |
| गच्छसि मग्गं विसोहिया, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३२॥ |
| अवले जइ भारवाहए, मा मग्गे निसमे वगाहिया । | |
| पच्छा पच्छाणुठावए, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३३॥ |
| सियणो हु सि अयणव महं, किं पुण चिट्ठसि वीरमागओ । | |
| अमित्तुर पारं गमित्तए, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३४॥ |
| अक्केयरसेणि वस्सिया, सिद्धिं गोयम तोयं गच्छसि । | |
| त्थेमं व सिव अणुत्तरं, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३५॥ |
| पुठ्ठे परिनिब्बुठ्ठे चरे, गामगए नगरे व सजए । | |
| सन्तीमर्मा व वूहए, समयं गोयम । मा पमायए | ॥३६॥ |
| पुट्ठस्स निसम्भ भासिय, सुकहियमट्ठपओवसोहियं । | |
| रागं दोस व छिन्विया, सिद्धिगई । गए गोयमे | ॥३७॥ |

॥ चि वेमि ॥ इति दुमपत्तयं समर्थ ॥

- पथं भयम्भारे, मसरइ मुशगुहदि कम्मदि ।
जीया पगाययदुत्ता, समयं गोयम । मा पमायप ॥१२६॥
- लद्धण वि माणुसत्तणं, आरिअत्त पुणरवि दुद्ध ।
यहर दसुया मिलप्पमुया, समयं गोयम । मा पमायप ॥१२७॥
- लद्धण वि आरियत्तणं अहीण पचेन्दियया द्दु दुद्ध ।
विगलिन्दियया द्दु दीसइ, समयं गोयम । मा पमायप ॥१२८॥
- अहीणपंचेन्दियसं पि से लहे, उत्तमधम्ममुद द्दु दुद्ध ।
कुत्तित्थिनिसेवप जणो, समयं गोयम । मा पमायप ॥१२९॥
- लद्धण वि उत्तम सुद्ध, सहहणा पुणरवि दुद्ध ।
मिच्छत्तनिसेवप जणो समयं गोयम । मा पमायप ॥१३०॥
- धम्मं पि द्दु सहहन्तया, दुद्धया काएण फसया ।
इह कामगुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम । मा पमायप ॥१३१॥
- परिअरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सोयवले य हायई, समयं गोयम । मा पमायप ॥१३२॥
- परिअरइ तं सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से अक्खवले य हायई, समयं गोयम । मा पमायप ॥१३३॥
- परिअरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से पाणवले य हायई, समयं गोयम । मा पमायप ॥१३४॥
- परिअरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिग्मबले य हायई, समयं गोयम । मा पमायप ॥१३५॥
- परिअरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फसवले य हायई, समयं गोयम । मा पमायप ॥१३६॥
- परिअरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सण्ववले य हायई, समयं गोयम । मा पमायप ॥१३७॥

| | |
|---|------|
| फलाह्वमरवस्त्रिप, बुद्धे अभिजाइप । | |
| हिरिमं पडिसलीयो, सुविणीप सि बुधई | ॥१३॥ |
| यसे गुरुकुलो निच, जोगव सवहाणव । | |
| पियंकरे पियंघाई, से सिक्खं लद्धमरिहई | ॥१४॥ |
| अहा संक्षन्मि पर्यं, निहियं बुहम्मो वि विरायइ । | |
| एव बहुस्सुए भिक्खू, वम्मो किंती तहा सुय | ॥१५॥ |
| अहा से कम्मोयानां, आइणो कन्यए सिया । | |
| आसे अवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥१६॥ |
| अहाइयणसमारुद्धे, सूरे वढपरक्खमे । | |
| उभम्मो नन्दिघोसेणं, एव हवइ बहुस्सुए | ॥१७॥ |
| अहा करेणुपरिक्खिणो, कुंजरे सट्ठिहायणो । | |
| वत्तवन्ते अप्पडिहए, एव हवइ बहुस्सुए | ॥१८॥ |
| अहा से तिक्खसिंणे, जायसंघे विरायई । | |
| वहसे जूहाहिबई, एव हवइ बहुस्सुए | ॥१९॥ |
| अहा से तिक्खवाढे, उवम्मो दुप्पहसए । | |
| सीहे मियाण पयरे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२०॥ |
| अहा से वासुदेवे, संखचक्कगयाधरे । | |
| अप्पडिहयधले जोद्धे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२१॥ |
| अहा से चाउरन्ते, चक्कयट्ठी महिठ्ठिए । | |
| पोदसरयणाहिबई, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२२॥ |
| अहा से सहस्सक्खो, वज्रपाणी पुरन्दरे । | |
| सक्खे देवाहिबई, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२३॥ |
| अहा से तिमिरविट्ठसे, उच्चिट्ठन्ते विद्याधरे । | |
| ज्जन्ते इय तेण्ण, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२४॥ |

॥ અહ વહુસુયગુજ્જ પગારસ મજબુપણ ॥

મંત્રાભા વિળમુક્કસ, અણગારસા મિત્તમણો ।

આયાર પાઝકારસ્સામિ, આણુપુઠિય મુણેહ મ

॥૧૫॥

જે યાવિ હોઈ નિયિગ્ગ, થદે જુદે અણિમાહ ।

અમિકસણ ઝલ્લપદ, અવિણીય અપહુસુપ

॥૧૬॥

અહ પંચહિ ઠાણહિ, એહિ મિકસા ન લગ્ગમદ ।

યમ્મા ફોહા પમાણણં, રોગેણાલસ્સણ ય

॥૧૭॥

અહ અટ્ટહિ ઠાણેહિ સિક્કસાસીલિ ત્તિ પુષ્પહ ।

અહસ્સિર સયા વન્ત, ન ય મમ્મમુદાહરે

॥૧૮॥

નાસીલે ન ઘસીલે, ન સિયા અહલોલુપ ।

અફોહણે સધરણ, સિક્કસાસીલિ ત્તિ પુષ્પહ

॥૧૯॥

અહ ઘોહસહિ ઠાણેહિ, વટ્ટમાણે ર સંજણ ।

અવિણીય દહર્મ સો ર નિવ્વાણ થ ન ગચ્છહ

॥૨૦॥

અમિકસણં ફોહી હવહ, પવન્થ થ પકુઝ્ઘર્મ ।

મેત્તિજ્ઞમાણો મમહ, સુયં લલ્લણ મજ્ઞર્મ

॥૨૧॥

અવિ પાવપરિક્કલેષી અવિ મિત્તેસુ કુપ્પર્મ ।

સુપ્પિયસ્સાવિ મિત્તસ્સ, રહે માસહ પાવર્મ

॥૨૨॥

પહણવાઈ કુહિલે થદે જુદે અણિમાહે ।

અસંવિભાગી અવિયસે અવિણીય ત્તિ પુષ્પર્મ

॥૨૩॥

અહ પમ્મરસહિ ઠાણેહિ, સુવિણીય ત્તિ પુષ્પર્મ ।

નીયવત્તી અવચલે, અમાઈ અકુઝ્ઝલે

॥૨૪॥

અપ્પ થ અહિવિસાવર્મ, પવન્થ થ ન કુઝ્ઘર્મ ।

મેત્તિગ્ગમાણો મયર્મ સુયં લલ્લુ ન મજ્ઞર્મ

॥૨૫॥

ન ય પાવપરિક્કલેષી ન ય મિત્તેસુ કુપ્પર્મ ।

અપ્પિયસ્સાવિ મિત્તસ્સ રહે કલ્લણ માસર્મ

॥૨૬॥

| | |
|---|------|
| कलहहमरवज्जिए, बुद्धे अभिजाइए । | |
| हिरिमं पडिसंस्लीणो, सुविणीए प्ति बुद्धई | ॥१३॥ |
| वसे गुरुकुले निबं, ओगयं ववहाणवं । | |
| पियंकरे पियंवाई, से तिक्खं जट्टुमरिहई | ॥१४॥ |
| अहा संस्समि पयं, निहियं दुदधो पि विरायइ । | |
| एव बहुस्सुए मिक्खू, धम्मो किस्सी तहा सुयं | ॥१५॥ |
| अहा से कम्मोयायां, जाइय्यो कन्यए सिया । | |
| आसे अवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥१६॥ |
| अहाइयणसमात्तुवे, सूरं वडपरक्कमे । | |
| उभयो नन्विपोसेयां, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥१७॥ |
| अहा करेणुपरिक्खिणो, कुंजरे सट्ठिहायणो । | |
| बलवन्ते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥१८॥ |
| जहा से तिक्खसिंगे, जायस्सन्धे विरायई । | |
| वहसे अहाहिवाई, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥१९॥ |
| अहा से तिक्खवाढे, उवमो दुप्पहंसए । | |
| सीहे मियाण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२०॥ |
| अहा से वासुदेवे, संस्सवक्कयायाधरे । | |
| अप्पडिहयवले जोहे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२१॥ |
| अहा से चाउरन्ते, चक्कमट्ठी महिणिए । | |
| पोहसरयणाहिवाई, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥२२॥ |
| अहा से सहस्सन्धे, वज्जपाणी पुरन्धरे । | |
| सम्मे देवाहिवाई, एवं हवई बहुस्सुए | ॥२३॥ |
| अहा से तिमिरविट्ठसे, उव्विठ्ठन्ते विगावरे । | |
| ज्जन्ते इय तेपण, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥२४॥ |

॥ અહ વદુસ્મુયગુજ્ઞ પગારસ અજઞ્યણં ॥

- સંતોભા વિળ્લમુક્સ, અણગારસ ભિન્નમુળો ।
 આચાર પાત્કારસ્તામિ, આણુપુર્ય્ય મુળેદ મે ॥૧॥
 જે યાધિ હોઈ નિયિજ્ઞે, થયે લુદે અણિમાહ ।
 અભિક્ષણ ઝલ્લપદ, અયિણા અવદુસ્મુ ॥૨॥
 અહ પંચહિ ઠાણેહિ, જેહિ સિવસ્યા ન લન્મહ ।
 થમ્મા કોદ્દા પમાણં, રોગેણાલસપણ ય ॥૩॥
 અહ અદુહિ ઠાણેહિ સિવસ્યાસીલિ ત્તિ પુષદ્ ।
 અહસ્સિર સયા વન્ત, ન ય મમ્મમુદાહરે ॥૪॥
 નાસીલે ન ઘસીલે, ન સિયા અશ્લોલુપ ।
 અકોદ્દણે સચરપ, સિવસ્યાસીલિ ત્તિ પુષદ્ ॥૫॥
 અહ ચોદસહિ ઠાણેહિ, વદુમાણે ઇ સંજપ ।
 અવિણીપ દર્શ સો ઇ, નિઘ્માણ વ ન ગચ્છદ્ ॥૬॥
 અભિક્ષણં કોહી દધદ્ પવન્ધ વ પકુઠ્ઠર્શ ।
 મેત્તિજ્ઞમાણો ઘમદ્, સુયં લઘ્ણ મચ્છર્શ ॥૭॥
 અવિ પાવપરિક્ષેવી અવિ મિત્તેસુ કુપ્પર્શ ।
 સુપ્પિયસ્સાવિ મિત્તસ્સ, રહે માસદ્ પાવયં ॥૮॥
 પશ્ચિણ્ણર્શ દુહિલે થયે લુદે અણિમાહે ।
 અસવિમાગી અવિયત્તે અવિણીપ ત્તિ વુચ્છર્શ ॥૯॥
 અહ પન્નરસહિ ઠાણેહિ, સુવિણીપ ત્તિ વુચ્છર્શ ।
 નીયવત્તી અવયલે, અમાર્શ અકુઠ્ઠલે ॥૧૦॥
 સ્વપ્પ વ અહિલ્લિચ્છર્શ, પવન્ધ વ ન કુઠ્ઠર્શ ।
 મેત્તિજ્ઞમાણો મયર્શ, સુયં લઘ્ણ ન મચ્છર્શ ॥૧૧॥
 ન ય પાવપરિક્ષેવી ન ય મિત્તેસુ કુપ્પર્શ ।
 અપ્પિયસ્સાવિ મિત્તસ્સ, રહે કક્ષણ માસર્શ ॥૧૨॥

| | |
|--|------|
| कृताह्वमरवज्रिण, बुद्धे अभिजाइय । | |
| हिरिमं पडिसंलीणो, सुविणीय त्ति पुणई | ॥१३॥ |
| वसे गुरुकुले निबं, जोगर्थं उवहाणर्थं । | |
| पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं ज्ञासमरिहई | ॥१४॥ |
| जहा संक्षम्मि पय, निहियं तुहभो वि विरायइ । | |
| एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो किप्पी उहा सुय | ॥१५॥ |
| जहा से कम्मोयाणं, आइएणो कन्धए सिआ । | |
| आसे अवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥१६॥ |
| जहाइएणसमारुद्धे, सूरु वडपरक्कमे । | |
| उभभो नन्दिओसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥१७॥ |
| जहा करेणुपरिकिण्णो, कुंजरे सट्ठिहायणो । | |
| बलवन्ते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥१८॥ |
| जहा से तिक्खसिंगे, जायसन्धे विरायई । | |
| वहसे जूहाहिबई, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥१९॥ |
| जहा से तिक्खदाढे, उवगो दुप्पहसए । | |
| सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥२०॥ |
| जहा से वासुदेवे, संसजक्कणायाधरे । | |
| अप्पडिहयवले ओहे, एव हवइ बहुस्सुए | ॥२१॥ |
| जहा से पाठरन्ते, अक्खमही महिठिए । | |
| ओइसरयणाहिबई, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥२२॥ |
| जहा से सहस्सक्खे, वज्रपाणी पुरन्दरे । | |
| सक्खे वेवाहिबई, एवं हवई बहुस्सुए | ॥२३॥ |
| जहा से तिमिरविद्धंसे, उबिठन्ते विद्याधरे । | |
| ज्ञाजन्ते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए | ॥२४॥ |

| | |
|--|------|
| जहा से उदयद पद, नारायणपरिवारिण । | |
| पडिपुण्ये पुण्यमासीप, पय हयइ बहुसुप | ॥२५॥ |
| जहा से समाइयाण, फोट्टागार मुरनिरप । | |
| नाणाधनपडिपुण्ये, पय हयइ बहुसुप | ॥२६॥ |
| जहा सा दुमाण पयरा, जम्बू नाम मुदंसणा । | |
| अणादियस्त वेयस्त, पय हयइ बहुसुप | ॥२७॥ |
| जहा सा नईण पयरा, सलिला सागरगमा । | |
| सीया नीलवन्तपवहा, पय हयइ बहुसुप | ॥२८॥ |
| जहा से नगाण पवरे, मुमह मन्दरे गिरी । | |
| नाणोसहिपज्जलिप, पय हयइ बहुसुप | ॥२९॥ |
| जहा से सयभूरमणे, उवही अक्खमोषप । | |
| नाणारयणपडिपुण्ये, पय हयइ बहुसुप | ॥३०॥ |
| समुदगन्भीरसमा दुरासया, अचक्रिया केणइ दुप्पहंसया । | |
| मुयस्त पुयणा विवलास्त वाइणो, कविचु कम्मंगमुत्तम गया ॥३१॥ | |
| तम्हा मुयमहिद्धिआ, उत्तमद्वगवेसप । | |
| जेणप्पाण पर वेव, सिद्धि संपाछणेआसि | ॥३२॥ |
| ॥ ति वेमि ॥ इति बहुसुयपुण्य पगारसं अक्खयणं समत्तं ॥३३॥ | |

॥ अह हरिएसिज्जं बारहं अज्जमयण ॥

| | |
|---------------------------------------|------|
| सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी । | |
| हरिएसपत्तो नाम, आसि भिक्खू विइन्दिओ | ॥३४॥ |
| हरिएसणभासाप, उबारसमिहंसु थ । | |
| जओ आयाणनिक्खेवे, संजओ मुसमाहिओ | ॥३५॥ |
| मणगुत्तो वयगुत्तो कयगुत्तो विइग्गिओ । | |
| भिक्खट्ठा बन्धइज्जमि, जमयावे उवट्ठिओ | |

- तं पासिऊणं एज्जन्त, सवेण परिसोसिय ।
 पन्तोयद्विचवगरणं, सवहसन्ति अणारिया ॥४॥
- आइमयपडिथदा, हिंसगा अनिइविया ।
 अवन्मचारिणो बाला, इमं वयणमन्वधी ॥५॥
- कयरे आगच्छइ विचरुवे, काले विकराले फोक्कनासे ।
 ओमचेक्षए पमुपिसायभूए, संकरबूस परिहरिय कण्ठे ॥६॥
- कयरे तुमं इय अवसणिज्जे, काए व आसा इहमागओ सि ।
 ओमचेक्षया पमुपिसायभूया, गच्छक्खलाहि किमिह ठिओ सि ॥७॥
- जक्खे तहिं तिवुयुरुक्खयासी, अणुकम्पओ तस्स महामुणित्स ।
 पच्छायइत्ता नियगं सरीर इमाइं वयणाइमुवाहरित्था ॥८॥
- समणो अह सजओ वन्मयारी, विरओ धणपयणपरिमाहाओ ।
 परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥९॥
- वियरिज्जइ खज्जइ सुज्जइ, अन्न पमूयं भवयाणमेय ।
 जाणाहि मे जयणजीविणु त्ति, सेसावसेस लभऊ तवस्सी ॥१०॥
- उवक्खबं भोयण माहणाण, अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
 न ऊ वयं परिसमन्नपाण, वाहासु तुक्कं किमिह ठिओ सि ॥११॥
- धत्तेसु बीयाइं ववन्ति कासगा, तहेश निम्नेसु य आससाए ।
 पयाए सद्धाए वत्ताह मक्कं, आराहए पुण्यमिणं सु खित्तं ॥१२॥
- खेत्ताणि अम्ह विइयाणि लोए, जहिं पक्कियणा विरुहन्ति पुण्या ।
 जे माहणा जाइविज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइ सुपेसत्ताइ ॥१३॥
- कोहो य माणो य बहो य जेसिं, मौसं अवत्त व परिमाहं व ।
 ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइं तु खेत्ताइ सुपावयाइ ॥१४॥
- तुम्मेत्य भो भारधरा गिराणं, अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
 वषावयाइं मुण्डिणो चरन्ति, ताइं तु खेत्ताइ सुपेसत्ताइ ॥१५॥

| | |
|---|------|
| अहा से उदुयइ चवे, नयस्सत्तपरिधारिण । | |
| पडिपुण्णे पुण्णमासीण, एव हयइ बहुस्सुण | ॥२५॥ |
| अहा से समाइयाण, फोट्ठागार मुरन्तिण । | |
| नाणाधम्मपडिपुण्णे, एव हयइ बहुस्सुण | ॥२६॥ |
| अहा सा वुमाण पवरा, जम्बू नाम सुर्वसणा । | |
| अण्णावियस्स वेवस्स, एव हयइ बहुस्सुण | ॥२७॥ |
| अहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा । | |
| सीया नीलधन्तपवहा, एव हयइ बहुस्सुण | ॥२८॥ |
| अहा से नगाण पवरे, सुमह मन्वरे गिरी । | |
| नाणोसहिपज्जलिण, एव हयइ बहुस्सुण | ॥२९॥ |
| अहा से सयभूरमणे, उवही अक्खम्मोवण । | |
| नाणारयणपडिपुण्णे, एव हयइ बहुस्सुण | ॥३०॥ |
| समुदगम्भीरसमा वुत्तसया, अण्णकिया केणइ दुप्पहंसया । | |
| सुयस्स पुवणा विज्जत्तस्स ताइयो, अविच्च कम्मगइमुत्तम गया ॥३१॥ | |
| सन्हा सुयमहिट्ठिआ, उत्तमहुगवेसण । | |
| जेणप्पाणं पर नेव सिद्धिं संपाप्पेज्जासि | ॥३२॥ |
| ॥ प्ति नेमि ॥ इति बहुस्सुयपुण्ये एगारसं अक्खम्मणं समत्तं ॥३३॥ | |

॥ अइ हरिणसिज्जं वारहं अज्जमयण ॥

| | |
|--|------|
| सोवाणकुल्लसंभूओ, गुणुत्तरपरो मुणी । | |
| हरिणसवत्तो नाम, आसि मिक्खू जिह्निओ | ॥३४॥ |
| हरिणसणभासाण, उबारसमिहंसु य । | |
| जओ आयाणनिक्खेवे, संजओ सुसमाहिओ | ॥३५॥ |
| मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिह्निओ । | |
| मिक्खट्ठा वन्मइज्जमि, जमवाडे उषट्ठिओ | ॥३६॥ |

सीसेया एयं सरयां उवेह, समागया सव्यजणेया तुम्मे ।
 अह इच्छह जीविय वा घण वा, लोगं पि एसो कुबिणो वहेआ ॥२८॥
 अवहेडिय पिट्टिसवत्तमंगे, पसारिया बाहु अफम्मविट्ठे ।
 निम्भेरियच्छे रुद्धिरं धमन्ते, ठुंमुहे निमायजीहनेत्ते ॥२९॥
 ते पासिया सपिण्य कट्टभूए, विमणो विसरणो अह माहणो सो ।
 इसिं पसाएह समारियाओ, हीलं च निन्द च समाह भन्ते ॥३०॥
 बालेहि मूढेहि अयाणपहि, जं हीलिया तस्स समाह भन्ते ।
 महप्पसाया इसिणो ववन्ति, न हु मुणी कोषपरा ववन्ति ॥३१॥
 पुत्थि च इप्पि च अणागय च, मणप्पवोसो न मे अत्थि कोह ।
 जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति, तन्हा हु एए निहया कुमार ॥३२॥
 अत्थ च धम्मं च वियाणमाणा, तुम्भं न वि कुप्पह भूइपमा ।
 तुम्भं तु पाए सरया उवेमो, समागया सव्यजणेया अन्हे ॥३३॥
 अवेसु ते महाभाग, न ते किंचि न अविमो ।
 मुंजाहि सालिमं कुरं, नाणावनणसंजुय ॥३४॥
 इम च मे अत्थि पमूयमन्नं, तं मुंजसू अन्ह अणुमाहडा ।
 वाढं ति पडिच्छह भत्तपाणं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥
 तहियं गन्धोदयपुप्फवास, विट्था तहिं वसुहाय य बुद्धा ।
 पहयाओ दुम्बुहीओ सुरेहि आगासे अहो वारणं च घुट्टं ॥३६॥
 सक्ख खु वीसह तवोविसेसो, न वीसह जाइयिसेस कोई ।
 सोधागपुत्त हरिपससाहु, जस्सेरिसा इहि महाणुभागा ॥३७॥
 किं माहणा ओइसमारभन्ता, उवणण सोहिं वहिया विमग्गहा ।
 ज मग्गहा वाहिरिय विसोहिं, न तं सुइट्ठं कुसला वयन्ति ॥३८॥
 कुसं च अर्थं तणफट्ठमग्गि, सामं च पायं उदरं कुसन्ता ।
 पाणाइ भूयाइ विहेइयन्ता, भुजो पि मन्दा पकरेह पायं ॥३९॥

अग्न्याययाण पवित्राभासी, पभाससे किं तु सगासि अम्ह ।
 अविपय विणस्सउ अन्नपाण, न य ए दाहामु तुमं नियण्ठा ॥१६॥
 सामिइहि मज्झं सुसमादियस्स, मुत्तीहि गुत्तस्स जिह्णियस्स ।
 जइ मे न दाहित्य अहसण्णउअ, किमज्ज जन्नाण लहित्य लाई ॥१७॥
 के इत्थं सत्ता उयजोइया धा, अग्न्यायया या सह स्वरिडपहि ।
 पय सु दण्डेण फलेण हन्ता, कण्ठम्म घेत्तूण सलेज्ज जी एं ॥१८॥
 अग्न्याययाणं वयण सुणेत्ता, उदाइया सत्य बहू कुमार ।
 दण्डेहि यित्तेहि कसेहि चेय, समागया तं इसि तालयन्ति ॥१९॥
 रत्तो तहिं कोसलियस्स धूया, मइ त्ति नामेण अणिन्दियगी ।
 तं पासिया संजय हम्ममाण कुन्दे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥
 देवाभिओगेण निओइएण, विज्जामु रत्ता मयसा न मया ।
 नरिन्दविन्दभिषन्दिणं, जेयामि ववा इसिणा स एसो ॥२१॥
 एसो हु सो उमात्तवो महप्पा, जित्तिन्विओ संजओ वम्मयारी ।
 ओ मे वया नेण्णइ विज्जमाणि, पिण्णया सयं कोसलीएण रत्ता ॥२२॥
 महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
 मा एय हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे देएय मे निइहेज्जा ॥२३॥
 एयाइ तीसे वयणाइ सोवा, पत्तीइ मइइ सुमासियाइ ।
 इसिस्स वेयावडियहयाए, अक्खा कुमारे विणिचारयन्ति ॥२४॥
 ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खेऽसुरा तहिं वं वय तालयन्ति ।
 ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते, पासिणु मइ इयमाहु सुक्खो ॥२५॥
 गिरिं नहेहि अणह, अयं वन्तेहि आयह ।
 आयत्तेय पापहि हयह, जे भिक्खुं अवमज्ज ॥२६॥
 आसीविसो उमात्तवो मइसी, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
 अगणिं य पक्खन्व प्रयगसेणा, जे भिक्खुं मत्तकासे वहेइ ॥२७॥

- चकवट्टी महिङ्गिओ, वम्मवत्तो महायसो ।
 मायारं बहुमाणेणं, इम वयणमन्वधी ॥४॥
- अस्सीमो भायरा वोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
 अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिप्पसिणो ॥५॥
- वत्सा वसण्णे आसी, मिया कालिंजरे नगे ।
 हंसा मयंगतीरे, सोबागा कसिभूमिण ॥६॥
- वेधा य वेवल्लोगम्मि, आसि अम्हे महिङ्गिया ।
 इमा यो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥७॥
- कम्मा नियाणपगढा, तुमे राय । विविन्तिया ।
 तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥८॥
- सबसोयप्पगढा, कम्मा मए पुरा कढा ।
 ते अज्ज परिमुज्जामो किं नु चित्ते वि से तहा ॥९॥
- सब्ब सुविण्णं सफलं नराण, कढाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
 अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि, आया मम पुण्णफलोववेय ॥१०॥
- जाणाहि सम्मूय महाणुभाग, महिङ्गिय पुण्णफलोववेयं ।
 चित्तं पि ज्ञाणाहि तद्देव राय, इही जुई वत्स वि य प्पमूया ॥११॥
- महत्थस्सुवा वयणप्पमूया, गाहाणुगीया नरसवमम्मे ।
 अं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इह जयन्ते समणो सि आओ ॥१२॥
- उद्योयए महु कक्के य वम्मे, पवेइया आवसहा य रम्मा ।
 इमं गिहं चित्तधणप्पमूय, पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥
- नट्ठेहि गीएहि य वाइएहि, नारीजणाइ परिचारयन्तो ।
 मुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू मम रोयई पब्बज्जा वु दुक्खं ॥१४॥
- तं पुब्बनेहेणोण फयाणुराग, नराइव कामगुणेषु गिहं ।
 पम्मस्सिओ वत्स हिवाणुपेही, भित्तो इम वयणमुवाइरित्था ॥१५॥

फहं चरे भिक्खु वय जयामो, पायाइ कम्माइ पुणोद्धयामो ।
 अफस्साहि ए संपय जक्खपूइया, फहं मुजट्ठं कुसला धयन्ति ॥४०॥
 ब्रज्जीयफाप असमारभन्ता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
 परिग्गह इत्थिओ माण मायं, एय परिभाय चरन्ति वन्ता ॥४१॥
 सुसयुद्धा पंचहिं सयरेहिं, इह जीवियं अणुपफद्धमाणा ।
 दोसठ्ठकाया सुइचत्तवहा, महाजयं जयइ जमसिट्ठं ॥४२॥
 के ते जोई के य ते जोइठाणे, फा ते सुया किं व ते फारिसंग ।
 एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खू, कयरेण होमेण हुणासि जोइ ॥४३॥
 तथो जोई जीवो जोइठाणं जोगा सुया सरीर फारिसंगं ।
 कम्मेहा संजमजोगसन्ती, होमं हुणामि इसिण पसत्थं ॥४४॥
 के ते हरर के य ते सन्तितित्थे, कहिं सिणाओ व रय जहासि ।
 आइक्ख ए संजय जक्खपूइया, इच्छामो नाठं भवओ सग्गसे ॥४५॥
 धम्मे हरए धम्मे सन्तितित्थे, अणाबिले अत्तपसमलेसे ।
 जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइमूओ पजहामि दोसं ॥४६॥
 एयं सिण्णाय कुसलेहि विट्ठं, महासिणायं इसिणं पसत्थं ।
 जहिं सिणाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तम ठायं पत्ते ॥४७॥
 ॥ न्ति वेमि ॥ इति हरिणसिक्खं अक्कमयया समत्त ॥१२॥

॥ अह विचसम्मइज्जं तेरहम अज्झयण ॥

जाइपराजिओ जलु, फासि नियाण तु इत्थिणपुरम्मि ।
 चुसणीए बम्मवत्तो, वववन्नो पत्तमगुम्माओ ॥१॥
 कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमसालम्मि ।
 सेट्ठिकुलम्मि यिसाले, धम्मं सोउत्थ पब्बइओ ॥२॥
 कम्पिल्लम्मि य नगरे, समागया वो वि विचसम्मया ।
 सुइदुक्खफलपिमार्गं, कहेन्ति ते पक्कमेक्खत्त ॥३॥

इत्थिणपुरम्मि चित्ता, वट्ठूणं नरवइ महिद्धीयं ।
 कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुह कव ॥२८॥
 तस्स मे अपडिक्खन्तस्स, इमं एयारिसं फलं ।
 ज्ञाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥
 नागो जहा पक्कजलावसभो, वट्ठं अलं नामिसमेइ तीरं ।
 एव वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥
 अब्बेइ कालो वरन्ति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निष्सा ।
 उविच्च भोगा पुरिसं वयन्ति, दुमं जहा स्सीणफलं व पक्खी ॥३१॥
 जइ त सि भोगे वइच्च असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करहि राय ।
 धम्मे ठिओ सव्वपयाणकम्पी, तो होहिसि देवो इओ विरुव्वी ॥३२॥
 न सुइम्म भोगे वइउत्ता वुद्धी, गिद्धो सि आरम्मपरिमाहेसु ।
 मोहं कओ एत्तच्च दिप्पलावो, गच्छामि राय आमन्तिओ सि ॥३३॥
 पच्चालराया वि य वम्मवत्तो, साहुस्स तस्स वयण अकाच ।
 अणुत्तरे मुज्जिय कामभोगे, अणुत्तर सो नरए पविट्ठो ॥३४॥
 चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो उदमाचारित्तवो महेसी ।
 अणुत्तरं संजम पालइत्ता, अणुत्तर सिद्धिगइं गओ ॥३५॥
 ॥त्ति वेमि ॥ इति चित्तसन्मइज्जं तेरइम्म, अम्मत्तयण समत्त ॥१३॥

॥ अह उसुयारिज्ज ओदइम्म अक्कययण ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि, केइं पुया पगविमाणघासी ।
 पुरे पुराखे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरत्तोगरम्मे ॥१॥
 सक्कम्मसेसेण पुराकएण, कुलोसु वग्गेसु य ते पसूया ।
 निव्वियणसंसारमया जहाय, जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥२॥
 पुमत्तमागम्म कुमार देवी, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
 विसालाक्खि य उहोसुयारे, रायत्त देवी कमलावइं य ॥३॥

सन्धं यिलयियं गीयं, सध्वं नष्टं यिठमिय ।

सन्धे आभरणा भारा सन्धे कामा दुहायहा ॥१६॥

भालाभिरामेसु दुहावइसु, न त सुई कामगुणेषु रायं ।

यिरत्तकामाण वधोभणाण, ज भिप्सुणं सीलगुणे रयाणं ॥१७॥

नरिंद जाई अहमा नराणं, सोबागजाई दुहधो गयाणं ।

जहिं ययं सध्वजणस्त वेस्ता, यसी य सोबागनिवेसणेषु ॥१८॥

सीसे य जाईइ व पावियाप पृथ्वासु सोबागनिवेसणेषु ।

सध्वस्त लोगस्त दुगंछणिजा, इहं तु कम्माइ पुरे कडाई ॥१९॥

सो दाण्णिं सिं राय महाणुमागो, महिहिंभो पुण्यफलोववेभो ।

वइत्तु भोगाइ असासयाई, आवाणइहं अभिणिक्खमाहि ॥२०॥

इह जीविप राय असासयन्मि, धणियं तु पुण्याई अकुब्बमाप्पो ।

से सोयई मणुमुहोवणीप धम्म अकाज्ज परंमि लोप ॥२१॥

लहेइ सीहो व मिय गहाय, मज्ज नरं नेइ हु अन्तकाले ।

न तस्त साया व पिया व भाया कासन्मि तम्मंसहरा भवन्ति ॥२२॥

न तस्त दुक्ख विभयन्ति नाहो, न मित्तवग्गा न सुया न वंघवा ।

एकौ सयं पवण्होइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥२३॥

विवा दुपयं व वज्जपय व, कोत्तं गिहं धय घन व सध्व ।

मकम्मवीभो अवसो पयाइ, परं भवं सुंदर पावगं वा ॥२४॥

नं एक्कगं सुच्छसरीरगं से, जिईगयं व्हिय व पावगेणं ।

व ॥ य पत्ता वि य नायभो वा, दायारमन्न अणुसंकमन्ति ॥२५॥

वर्णा ॥ वरियमपमार्यं, वर्यां जरा इरइ मरस्त रायं ।

।लराया वर्यां सुणाहि, मा कासि कम्माइ महासयाई ॥२६॥

अहं पि आणामि जहेइ साह, ज मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।

भोगा इमे संगकरा हवन्ति, जे दुक्खया भज्जो अम्मारिसेहि ॥२७॥

धण पमूय सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
 तर्धं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व साहीणमिहव तुच्च ॥१६॥
 धणेण किं धम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहिं चेव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी, वहिंविहारा अभिगम्म भिक्ख ॥१७॥
 जहा य अमी अरणी असन्तो, खीरे धयं तेहमहा विनेसु ।
 एमेव जाया सरीरसि सत्ता, समुच्छई नासइ नावचिहे ॥१८॥
 नोइन्दियगोम्म अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निषो ।
 अहमत्थहेउ नितयस्स वधो, संसारहेउ च वयन्ति वन्धं ॥१९॥
 जहा वय धम्म अजाणमाणा, पाष पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरुठममाणा परिरिक्खयन्ता, त नेव मुज्जो वि समायरामो ॥२०॥
 अहमाहयन्मि लोगन्मि, सव्वओ परिवारिए ।
 अमोहाहिं पढन्तीहिं, गिहंसि न रई लमे ॥२१॥
 केण अहमाहओ लोगो, केण वा परिवारिओ ।
 का वा अमोहा वुत्ता, जाया चिन्तावरो हुमे ॥२२॥
 मरुचुणाऽहमाहओ लोगो, जए परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी वुत्ता, एव साय विजाणह ॥२३॥
 जा जा वल्लइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
 अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ ॥२४॥
 जा जा वल्लइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।
 धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राइओ ॥२५॥
 एगओ सवसित्ताण, बुहओ सम्मत्तसज्जुया ।
 पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥
 जस्सत्थि मरुचुणा सक्खं जस्स षड्त्थि पत्तायणं ।
 ओ आणे न मरिस्सामि, सो हु कल्ले सुए सिया ॥२७॥

जाइअरामन्धुभयाभिभूया, षड्विधहाराभिनिषिद्धचित्ता ।
 ससारचक्रस्त विमोक्षणद्वारा, दद्वेष त कामगुणे विरत्ता ॥४॥
 पियपुत्तगा धोमि वि माहणस्त, सक्कम्मसीलस्त पुरोहियस ।
 सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइ, तद्दा सुधिण्णं वय सज्जमं च ॥५॥
 ते कामभोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसु ज यायि विव्वा ।
 मोक्खामिहंसी अभिजायसद्दा, तत्तं उवागम्म इम उदाहु ॥६॥
 असासयं वदु, इमं विहारं, पदुअन्तरायं न य दीहमावं ।
 तन्हा गिहंसि न रइं लभामो, आमन्तयामो चरिस्सामु मोयं ॥७॥
 अह वायगो तत्थ मुणीण तेसिं वयस्स वाघायकर वयासी ।
 इमं वय वेयविभो वयन्ति, जहा न होई असुमाण लोमो ॥८॥
 अहिज्ज वेप परिबिस्स विप्पे, पुत्ते परिदुप्प गिहंसि आया ।
 मोवाण भोप सह इत्थियाहिं, आरण्यगा होइ मुणी पसत्था ॥९॥
 सोयमिणा आयगुणिन्धणेणं, मोहाणिला पखलणाहिण्णं ।
 संतत्तभावं परितप्पमाणं, कालप्पमाणं बहुदा बहुं च ॥१०॥
 पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्तं, निमसयन्तं च सुप धणेणं ।
 लहक्कमं कामगुणेहिं वेय, कुमारगा ते पसमिक्ख वळं ॥११॥
 वेया अहीया न भवन्ति तारणं, मुत्ता विद्या निन्ति वम वमेण ।
 जाया य पुत्ता न इवन्ति तारणं को याम ते अणुमन्नेअ पयं ॥१२॥
 क्षणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
 संसारमोक्खस्त विपक्खभूया आणी अणायण च कामभोगा ॥१३॥
 परिव्वयन्ते अणियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे ।
 अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मण्णु पुरिसे जर च ॥१४॥
 इमं च मे अस्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किण्णमिम अफिक्ख ।
 तमेवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरति ति कइं पमाप ? ॥१५॥

| | |
|--|--|
| मरिहिसि राय जया तया वा, भणोरमे कामगुणे पहाय । | |
| एको हु धम्मो नरदेव साण, न विज्जर्ह अन्नमिहेह किंचि ॥४०॥ | |
| नाहं रमे पक्खिणि पजरे वा, संताणद्धिन्ता चरिस्सामि मोणं । | |
| अकिंचणा उज्झुकढा निरामिसा, परिग्गहारम्मनियत्तवोसा ॥४१॥ | |
| ववमाणा जहा रणणे, ववममाणेसु जन्तुसु । | |
| अन्ते सत्ता पमोयन्ति, रागदोसवसं गया ॥४२॥ | |
| एवमेव वयं मूढा, कामभोगेसु मुच्छिन्त्या । | |
| ववममाणं न वुवममो, रागदोसगिणा जग ॥४३॥ | |
| भोतो भोवा धमिसा य, लहुभयविहारिणो । | |
| आमोयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इव ॥४४॥ | |
| इमे य वद्धा पन्दन्ति, मम हस्थजग्गमाया । | |
| वय च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥ | |
| सामिसं कुल्लं विस्स, ववममाण निरामिसं । | |
| आमिसं सव्वमुग्गिक्खा, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥ | |
| गिद्धोवमे उ नच्चण, कामे संसारवङ्गणे । | |
| उरगो सुवण्णपासे व्व, सकमाणो तणु चरे ॥४७॥ | |
| नागो व्व वचण धिप्ता अण्णो वसहिं यप । | |
| एयं पत्त्यं महाराय, उस्सुयारि ति मे सुय ॥४८॥ | |
| चइत्ता वित्तं रज्ज, कामभोगे य दुच्चप । | |
| निम्बिसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥ | |
| सम्मं धम्मं वियाणिप्ता, पिणा कामगुणे वरे । | |
| तव परिग्गहक्खसार्यं धोरं धोरपरक्कमा ॥५०॥ | |
| एयं ते कमसो मुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा । | |
| जग्गमचमवग्गिमा, दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥५१॥ | |

अज्जेय धम्मं पडिवज्जयामो, उदि पयप्पा न पुण्णभवामो ।
 अण्णागयं नय य अत्थि किंचि, सट्ठासमं एो धिणइत्तु राग ॥२८॥
 पहीणपुत्तरसं दु नत्थि यासो, यासिट्ठि? भियस्सायरियाइ क्तो ।
 साहाहि रुक्खो लहइ समाहि, धिन्नाहि साहाहि समेव छाएण्ण ॥२९॥
 पस्साविहूणो छ्व जहेइ पक्खी, भियविहूणो न्ध एणे नरिन्दो ।
 यियन्नसारो वणिज्जो न्ध पोए, पहीणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥३०॥
 सुसंभिया कामगुणा इमे ते, संपिण्डिया अगारसप्पमूया ।
 मुंजामु ता कामगुणे पगाम, पच्छा गमिरमामु पहाणममा ॥३१॥
 मुत्ता रसा भोइ? जहाइ एो वज्जो, न जीवियट्ठा पज्जहामि भोए ।
 लाभ अल्लभं च सुह च दुक्खं, सच्चिक्खमाएो चरिस्सामि मोए ॥
 मा दु तुम सोयरियाणं सम्मरे, जुण्णो व हसो पडिस्सोत्तगामी ।
 मुज्जाहि भोगाइ मए समाणं, दुक्खं खु भियस्सायरियाविहारो ॥३३॥
 जहा य भोई तण्णव मुयंगो, निम्मोयणि हिं व पत्तेइ मुत्तो ।
 एमेए जाया पयइन्ति भोए, ते इ कह नाणुगमिस्समेक्को ॥३४॥
 धिन्विट्ठु जालं अज्जलं व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
 धोरेयसीला तवसा एवारा धीरा दु भियस्सारिणं चरन्ति ॥३५॥
 नहेव कुंवा समइक्खमता, वयाणि आलाणि वलित्तु हंसा ।
 पत्तेति पुत्ता य पई य मच्छ, ते इ कह नाणुगमिस्समेक्का ॥३६॥
 पुरोहिय स ससुयं सवारं, सोळाऽमिनिक्खमस पहाय भोए ।
 कुट्टमसारं विट्ठुत्तमं च, रायं अमिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥
 वंतासी पुरिसो रायं न सो होइ पसंसिज्जो ।
 माहणेय परिचत्तं, धणं आवाउमिच्छसि ॥३८॥
 सत्थं जगं जइ सुइं, सत्थं यावि धणं मने ।
 सत्थं पि ते अपच्छत्त, नेव साणाय त तव ॥३९॥

क्षत्तियगणसमारायपुत्ता, माहणभोइय विविहा य सिप्पिणो ।
 नो तेसिं भयइ सिलोगपुय, त परिभाय परिब्बए स भिक्खू ॥६॥
 गिहिणो जे पव्वइएण विद्धा, अप्पवइएण व संशुया हविज्जा ।
 तेसिं इहलोइयफ्फाट्ठा, ओ सयध न करेइ स भिक्खू ॥७॥
 सयणासणपाणभोयण, विविहं साइमसाइम परेसिं ।
 अदए पडिसेहिए नियण्ठे, जे तत्थ न पचस्सई स भिक्खू ॥८॥
 अं किंचिं आहारपाणग विविह, साइमसाइमं परेसिं लद्धं ।
 ओ त विविहेण नाणुकम्पे, मणवयकायसुसुबुडे स भिक्खू ॥९॥
 आयामग चेष लवोदणं च, सीर्यं सोवीरजवोदणं च ।
 न हीलए पिण्डं नीरसं तु, पत्तकुल्लार्हं परिब्बए स भिक्खू ॥१०॥
 सहा विविहा भवन्ति लोए, विठ्ठा माणुस्सगा विरिच्छा ।
 मीमा भयमेरवा चरात्ता, ओ सोणा न विहिक्खई स भिक्खू ॥११॥
 धावं विविहं समिच्च सोए, सहिए सेयाणुगए य कोवियप्पा ।
 पन्ने अभिमूय सव्ववसी, उवसन्ते अविहेइए स भिक्खू ॥१२॥
 असिप्पजीवी अगिहे अमिचे, जिह्ण्दिए सव्वओ विप्पसुक्के ।
 अणुकसाइ लहुअप्पभक्खी, चिन्हा गिह एगवरं स भिक्खू ॥१३॥
 ॥ चि वेमि ॥ इति समिक्खुर्यं समत्तं ॥

॥ अहं बन्मचेरसमाहिठाणाणाम्
 सोल्लसम अज्झयण ॥

सुर्यं मे आवसन्तेण भगवया एवमफस्सार्य । इह खलु येरेहिं
 भगवन्तहिं वस बन्मचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोणा
 निसम्भ संजमवहुले संवरवहुले समाहितवहुले गुत्ते गुत्तिविए
 गुत्तयम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा । कयरे खलु ते थरेहिं

સાસણે યિગયમોદ્ધાર્ય, પુશ્ચિય ભાયણભાયિયા ।

અધિરણેય ફાલેણ, દુષ્સસન્તમુયાગયા

॥૧૨॥

રાયા સહ દયીય, માહણો ય પુરોહિષ્મો ।

માહણી ધારગા ખેધ, સઠ્ઠ ત પરિનિવ્યુદે

॥૧૩॥

॥ તિ યેમિ ॥ ઇતિ ઉમુચારિન્નં અઝ્ઞયણ સમર્થ ॥૧૪॥

॥ અહ સમિક્સૂ પચ્ચદ્દહં અઝ્ઞયણ ॥

મોણં ચરિસ્સામિ સમિથ ધમ્મ, સહિય ઉઝ્જુકહે નિયાણહિન્ને ।

સંયથં ઝહિજ્ઞ અકામકામે, અન્નાયપસી પરિવ્વપ સ મિક્સૂ ॥૧॥

રાખોયરયં ચરેજ્ઞ લાહે, વિરપ વેયવિયાયરક્ષિણ 。

પન્ને અમિમૂય સઠ્ઠવર્સી, જે કમ્મિ વિ ન મુચ્છિણ સ મિક્સૂ ॥૨॥

અક્કોસવહં વિહત્તુ ધીરે, મુણી ચરે લાહે નિબ્બાયાગુત્તે ।

અઠ્ઠવગમણે અસંપહિદ્દે, જે કસિણ અહિયાસપ સ મિક્સૂ ॥૩॥

પન્ત સયણાસણ મહ્ધા, સીચણં વિવિહં ચ વંસમસા ।

અઠ્ઠવનામણે અસંપહિદ્દે, જે કસિણ અહિયાસપ સ મિક્સૂ ॥૪॥

નો સક્કહમિચ્છઈ ન પૂયં, નો જિ ય ઘમ્મણં કુખો પસંસં ।

શે સંજપ મુઠ્ઠવપ તથસ્સી સહિય આયગયેસપ સ મિક્સૂ ॥૫॥

લેણ પુણ અહાઈ ઝીવિયં, મોહ વા કસિણં નિયચ્છઈ ।

નરનારિં પજ્ઞહે સયા તથસ્સી ન ય કોઠ્ઠહલં ઉવેહ સ મિક્સૂ ॥૬॥

હિન્નં સરં મોમમન્તલિક્સૂ, મુમિણં જ્ઞક્ષણાવચ્છવત્થુવિચ્છં ।

અગવિયારં સરસ્સ વિજયં જે વિઠ્ઠાહિં ન ઝીવહ સ મિક્સૂ ॥૭॥

મન્તં મૂલં વિવિહં વેઢ્ઢખિન્તં ઘમ્મવિરેયણધુમણેત્તસિણાણં ।

આવરે સરણં તિગિચ્છિયં ચ, ધં પરિભાવ પરિવ્વપ સ મિક્સૂ ॥૮॥

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भवेज्जा । तन्हा खलु नो निगन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जाणप विहरेज्जा ॥ ३ ॥

नो इत्थीणं इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निम्माइत्ता हवइ से निगन्थे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निगन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोप माणस्स निम्मायमाणस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उन्मायं वा पाठणिज्जा दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भवेज्जा । तन्हा खलु नो निगन्थे इत्थीणं इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोपज्जा निम्माएज्जा ॥ ४ ॥

नो इत्थीणं कुञ्जन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसइ वा रुइयसइ वा गीयसइ वा हसियसइ वा थणियसइ वा कन्दियसइ वा विलवियसइ वा सुणेत्ता हवइ से निगन्थे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निगन्थस्स खलु इत्थीणं कुञ्जन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसइ वा रुइयसइ वा गीयसइ वा हसियसइ वा थणियसइ वा कन्दियसइ वा विलवियसइ वा सुणेमाणस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उन्मायं वा पाठणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भवेज्जा । तन्हा खलु नो निगन्थे इत्थीणं कुञ्जन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसइ वा रुइयसइ वा गीयसइ वा हसियसइ वा थणियसइ वा कन्दियसइ वा विलवियसइ वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥ ५ ॥

भगवन्तेहि वस यम्भचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खू से
 एचा निसम्म संजमयहुले सयरयहुले समाहियहुले गुत्ते गुत्ति
 दिए गुत्तयम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरज्जा । इमे खलु ते
 धरहि भगवन्तेहि वस यम्भचेरठाणा पन्नता, जे भिक्खू
 सोच्चा निसम्म संजमयहुले सयरयहुले समाहियहुले गुत्ते गुत्ति
 दिए गुत्तयम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरज्जा ॥ त तद्वा विविचाइ
 सयणासणाइ सेविता हवइ से निगगये । नो इत्थीपसुपएङ्ग
 संसत्ताइ सयणासणाइ सेविता हवइ से निगगये । त कहमिति
 चे । आयरियाह । निगगयस्स खलु इत्थीपसुपएङ्गसंसत्ताइ
 सयणासणाइ सेवमायस्स यम्भयारिस्स यम्भचेरे सक्का वा कंझा
 वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेव वा लभेज्जा, उम्मायं
 वा पाटण्णिज्जा, वीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलि
 पन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तद्वा नो इत्थीपसुपएङ्गसंसत्ताइ
 सयणासणाइ सेविता हवइ से निगगये ॥ १ ॥

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निगगये । त कहमिति
 चे । आयरियाह । निगगयस्स खलु इत्थीणं कहं कहमायस्स
 यम्भयारिस्स यम्भचेरे सक्का वा कंझा वा विइगिच्छा वा
 समुप्पज्जिज्जा भेव वा लभेज्जा उम्मायं वा पाटण्णिज्जा, वीह
 कालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ
 भसेज्जा । तद्वा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥ २ ॥

नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निगगये ।
 तं कहमिति चे । आयरियाह । निगगयस्स खलु इत्थीणं
 सद्धिं सन्निसेज्जागएयस्स यम्भचेरे सक्का वा कंझा वा विइगिच्छा
 वा समुप्पज्जिज्जा, भेव वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाटण्णिज्जा,

माणस्स वन्मचेरे सक्का वा कंसा वा विइगिच्छा वा समुप्प
वेज्जा, मेव वा लमेज्जा, उन्माय वा पाठणिज्जा, वीइकालियं
वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नसाओ धम्माओ भंसेज्जा ।
तन्हा खलु नो निगगन्थे विभूसाणुवादी हविज्जा ॥ ६ ॥

नो सहस्रवरसगन्धफ़साणुवादी हवइ से निमन्थे । तं कइ
मिति चे । आयरियाह । निगन्थस्स खलु सहस्रवरसगन्धफ़साणु
वादिस्स वन्मयारिस्स वन्मचेरे संका वा कंसा वा विइगिच्छा
वा समुप्पविज्जा, मेवं वा लमेज्जा, उन्माय वा पाठणिज्जा,
वीइकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नसाओ धम्माओ
भंसेज्जा । तन्हा खलु नो सहस्रवरसगन्धफ़साणुवादी भवेज्जा से
निगगन्थे । दसमे वन्मचेरसमाहिठाणे हवइ ॥१०॥

हवन्ति इत्थं सिलोगा । त जहा ।

वं विविचमणाइएण, रइयं इत्थिज्जयेण य ।

वन्मचेरस्स रक्खट्ठा, आत्तरं तु निसेषए ॥१॥

मणपत्तहायज्जणी, कामरागविचइणी ।

वन्मचेररओ मिक्खू, योक्कं तु विवज्जए ॥२॥

सम व सयमं धीहिं, सकइ व अभिक्खएण ।

वन्मचेररओ मिक्खू, निवसो परिषज्जए ॥३॥

अंगपअंगसंठाणं, चारुल्लधियपेहियं ।

वन्मचेररओ धीणं, वक्खुगिम्भं विवज्जए ॥४॥

कइय रुइय, गीर्यं, हसियं यणियकन्दियं ।

वन्मचेररओ धीणं, सोयगिम्भं विवज्जए ॥५॥

इस किं रइ दप्पं, सहसायिचासियाणि य ।

वन्मचेररओ धीणं, नाणुचिन्ते कयाइ यि ॥६॥

नो निगन्ध पुण्यरय पुण्यफलियं अणुसरित्ता हवइ स
निमान्ये । तं कहमिति चे । आयरियाह । निगन्धस्स खलु पुण्यरयं
पुण्यफीलियं अणुसरमाणस्स यन्मयारिस्स बन्धचेर संका वा
कंसा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिञ्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मावं
वा पावणिज्जा, दीहफलियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ
धम्माओ भवेज्जा । तन्हा खलु नो निमान्ये पुण्यरयं पुण्य
फीलियं अणुसरेज्जा ॥ ६ ॥

नो पणीयं आहारं आहरित्ता हवइ से निमान्ये । तं
कहमिति चे । आयरियाह । निगन्धस्स खलु पणीयं आहारं
आहारेमाणस्स यन्मयारिस्स बन्धचेरे संका वा कंसा वा
विइगिच्छा वा समुप्पज्जिञ्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मावं वा
पावणिज्जा दीहफलियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ
धम्माओ भवेज्जा । तन्हा खलु नो निमान्ये पणीयं आहारं
आहारेज्जा ॥ ७ ॥

नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निमान्ये ।
तं कहमिति चे । आयरियाह । निगन्धस्स खलु अइमायाए
पाणभोयणं आहारेमाणस्स यन्मयारिस्स बन्धचेरे संका वा
कंसा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिञ्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मावं
वा पावणिज्जा, दीहफलियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ
धम्माओ भवेज्जा । तन्हा खलु नो निमान्ये अइमायाए पाण
भोयणं आहारेज्जा ॥ ८ ॥

नो विभूसाणुषावी हवइ से निमान्ये । तं कहमिति चे ।
आयरियाह । विभूसाणुषावि विभूसियसरीरे इत्थिज्जयस्स
अमित्तसखिज्जे हवइ । तन्नो यं वरस इत्थिज्जयणं अमित्तसखिज्जे

॥ अह पावसमणिज्ज सत्तदह अज्झयमा ॥

- जे केइ च पव्वइए नियण्ठे, धम्म सुणित्ता विणभोववन्ने ।
सुदुद्धं लहिणं बोहिलाभ, विहरेज्ज पच्छा य जहासुह तु ॥१॥
- सेज्जा ददा पावरणम्मि अप्पि, उप्पजई भोत्तु उहेव पासं ।
जाणामि ज वट्ठइ आवसु च्चि, किं नाम काहामि सुएण भन्ते ॥२॥
- जे केइ पव्वइए, निहासीले पगामसो ।
भोवा पेवा सुह सुवइ, पावसमणे च्चि वुवइ ॥३॥
- आयरियउवम्मएहिं, सुयं विणय च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले, पावसमणे च्चि वुवइ ॥४॥
- आयरियउवम्मयाणं सम्मं न पडित्पइ ।
अप्पडिपूयए थये, पावसमणे च्चि वुवइ ॥५॥
- सम्मइमाणे पायाणि, वीयाणि हरियाणि य ।
असज्जए संज्जयमज्जमाणो, पावसमणे च्चि वुवइ ॥६॥
- संयारं फल्लगं पीढं, निसेज्ज पायकम्बल ।
अप्पमब्जियमारुइइ, पावसमणे च्चि वुवइ ॥७॥
- दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खण ।
उल्लंघणे य चयडे, य पावसमणे च्चि वुवइ ॥८॥
- पडिलेहेइ पमत्ते, अवउम्मइ पायकम्बल ।
पडिलेहाअणाउत्ते, पावसमणे च्चि वुवइ ॥९॥
- पडिलेहेइ पमत्ते, से किंप्पि तु निसामिया ।
गुरुपारिभाषए निज्ज, पावसमणे च्चि वुवइ ॥१०॥
- यहुमाइ पमुहरे, थये लुये अणिग्गहे ।
असंयिभागी अवियत्ते, पावसमणे च्चि वुवइ ॥११॥
- विषाढं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपमहा ।
वुग्गइ कलइ रत्ते, पावसमणे च्चि वुवइ ॥१२॥

- पणीय भक्षपाण तु, स्निग्ध मयप्रियदूण ।
 यम्भचेररप्पो भिक्षु, निरुपसो परियज्जण ॥५॥
- धम्मलद्ध मिय फाले, जत्तत्थ पण्हिदाणव ।
 नाश्मत्त तु भुजेज्जा, यम्भचेररप्पो सया ॥६॥
- यिभूस परिषज्जेज्जा, सरीरपरिमण्डण ।
 यम्भचेररप्पो भिक्षु, सिंगारत्थ न धारण ॥७॥
- सहे रुवे य गन्धे य, रसे फासे सहेव य ।
 पचविहे कामगुणे, निरुपसो परियज्जण ॥८॥
- आलप्पो धीज्जणाइरणो, धीफहा य मणोरमा ।
 सधवो चेष नारीण, तासि इन्द्रियदर्शण ॥९॥
- कूइय रुइय गीर्य हासमुत्तासियाणि य ।
 पणीय भक्षपाणं च, अइमायं पाणभोयणं ॥१०॥
- गत्तभूसणमिठ्ठं च कामभोगा य दुज्जया ।
 नरस्सत्तगवेसिस्स चिसं चालउब्बं जहा ॥११॥
- दुज्जय कामभोगे य निरुपसो परियज्जण ।
 सकाठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पण्हिदाणव ॥१२॥
- धम्मारामे चरं भिक्षु, चिइमं धम्मसरं ही ।
 धम्माराभरतं वन्ते यम्भचेरसमाहिण ॥१३॥
- देवदाणयगं धग्वा, जप्पसरक्कससकिमरा ।
 यम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति स ॥१४॥
- एस धम्मे ध्रुवे निज्जे, सासणं मियादेसिय ।
 सिद्धा सिग्गन्ति चाणेण, सिम्भिस्सन्ति वहावरे ॥१५॥
- सिद्धेमि ॥ इति यम्भचेरसमाहिठाणां समाप्ता ॥१६॥

| | |
|--|------|
| हयाणीए गयाणीए, रहाणीए सहज य । | |
| पायत्ताणीए सहया, सन्यओ परिवारिए | ॥२॥ |
| मिए छुहिता हयगओ, कम्पिल्लुब्जाण केसरे । | |
| भीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए | ॥३॥ |
| अह केसरम्मि चब्बाणे, अणगारे तवोधणे । | |
| सम्भयम्भणसंजुत्ते घम्मम्भणं मियायइ | ॥४॥ |
| अण्णोवमण्हवम्मि, मयइ क्खवियासवे । | |
| तत्सागए मिगे पासं, वहेइ से नयहिवे | ॥५॥ |
| अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं । | |
| हए मिए उ पसित्ता, अणगार तत्थ पासई | ॥६॥ |
| अह राया तत्थ संभन्तो, अणगारो मणा हओ । | |
| मए उ मन्दपुण्णेण, रसगिद्वेण पित्तुणा | ॥७॥ |
| आसं विसज्जइत्ताण, अणगारस्स सो निषो । | |
| विणएण वन्दए पाए, भगव पत्थ मे खमे | ॥८॥ |
| अह मोण्णेण सो भगव, अणगारे म्भणमस्सिए । | |
| रायाण न पडिमन्तेइ, तओ राया भयवुओ | ॥९॥ |
| संजओ अहमन्मीति, भगव वाहराहि मे । | |
| कुट्ठे तेएण अणगार उहेअ नरफोहिओ | ॥१०॥ |
| अमओ पत्थिवा तुम्भ, अमयदाया मयाहि य । | |
| अण्णिणे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसी | ॥११॥ |
| जया सध्वं परिअज्ज, गन्तव्वमयसस्स ते । | |
| अण्णिणे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी | ॥१२॥ |
| जायियं चेय रुधं च, विज्जुसंपायध्वं च । | |
| अत्थ तं मुग्गसी राय, पेत्तथ नाववुग्गसे | ॥१३॥ |

- अधिरासणे कुक्कुड, जत्थ तत्थ निसीयइ ।
 आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१३॥
- ससरक्खपाए सुवइ, खेज्ज न पडिलेहइ ।
 संघारए अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१४॥
- दुद्धदहीविगइओ, आहारेइ अभिक्खण ।
 अरए य वषोफम्मे, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१५॥
- अत्यन्तम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खण ।
 वोइओ पडिचोएइ, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१६॥
- आयरियपरिचार्इ, परपासणइसेवए ।
 गाणंगणिए वुब्भए पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१७॥
- सय गेह परिबब्भ, परगेहसि वाधरे ।
 निमित्तेण अ ववहरइ पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१८॥
- सन्नाइपियं जेमेइ, नेब्बइ सामुवाणिय ।
 गिहिनिखेज्ज अ वाहेइ, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१९॥
- एयारिखे पचकुसीलसंबुडे, ख्वंधरे मुणिएवराण हेट्ठिमे ।
 अयसि लोए विसमेव गरहिए, न खे इह नेव परत्थ लोए ॥२०॥
- जे वज्जए एए सया उ वोखे, खे सुब्बए होइ मुणीया सक्खे ।
 अयंसि लोए अमयं व पूहए आराहए लोगमियां सहा पर ॥२१॥
- ॥ त्ति वेमि ॥ इति पावसमणिकणं सत्तवर्हं अम्मत्तयणं समत्तं ॥२२॥

॥ अह सजइज्ज अङ्कारहमं अज्जमयणं ॥

कम्पिस्से नयरे राया, उविण्णयल्लवाहणे ।

समेण संजए नार्म, मिगग्गं उवण्णिमाए

॥२३॥

| | |
|---|------|
| इयाणीए गयाणीए, रहाणीए सहय य । | |
| पायत्ताणीए महया, सव्यओ परिवारिए | ॥२॥ |
| मिए छुहिता हयगओ, कम्पिलुग्जाण केसर । | |
| भीए सन्ते मिए तत्य, बहेइ रसमुच्छिए | ॥३॥ |
| अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तबोधणे । | |
| सग्गयज्जणसंजुत्ते धम्मग्गण मियायइ | ॥४॥ |
| अण्णोवमएद्धम्मि, म्मायइ क्खवियासवे । | |
| तत्तागए मिगे पासं, बहेइ से नराहिवे | ॥५॥ |
| अह आसगओ राया, छिप्पमागम्म सो तहिं । | |
| हए मिए उ पसित्ता, अणगार तत्य पासई | ॥६॥ |
| अह राया तत्य सभन्तो, अणगारो मणा हओ । | |
| मए उ मन्वपुण्णेष, रसगिद्धेष धित्तुणा | ॥७॥ |
| आस यिसज्जइत्ताण, अणगारस्स सो निषो । | |
| विण्णण वन्दए पाए, भगवं एत्थ मे खमे | ॥८॥ |
| अह मोणेष सो भगवं, अणगारे म्माणमस्सिए । | |
| रायाण न पडिमन्तेइ, तओ राया भयवुद्धओ | ॥९॥ |
| संजओ अहमम्मीति, भगवं बाहराहि मे । | |
| कुट्ठे तेएण अणगारे, उहेज्ज नरफोडिओ | ॥१०॥ |
| अमओ पत्तिवा तुब्भं अमवदाया भवाहि य । | |
| अणिबे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसग्गसी | ॥११॥ |
| जया सव्वं परिक्खज्ज, गन्तव्वमवसस्स ते । | |
| अणिबे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसग्गसी | ॥१२॥ |
| जायियं चेष रुक्खं च, यिञ्जुसंपायचल । | |
| जस्य त मुग्गसी राय, पेक्खथ नावमुग्गसे | ॥१३॥ |

| | |
|---|------|
| अधिरासणे कुरुष्व, जत्थ तस्य निसीपद्द । | ॥१३॥ |
| आसणम्मि अणावत्ते, पावसमणे त्ति युच्चइ | ॥१४॥ |
| ससरक्कपाए सुवद्द, खेज्ज न पडिलेहइ । | ॥१५॥ |
| संधारए अणावत्ते, पावसमणे त्ति युच्चइ | ॥१६॥ |
| बुद्धदीपिगाइओ आहारेइ अभिक्खण । | ॥१७॥ |
| अरए य तथोक्कम्मे, पावसमणे त्ति युच्चइ | ॥१८॥ |
| अत्थन्तम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खण । | ॥१९॥ |
| चोइओ पडिचोएइ, पावसमणे त्ति युच्चइ | ॥२०॥ |
| आत्यरियपरिचार्इ, परपासएइसेवए । | ॥२१॥ |
| गार्णंगणिए बुद्धमूए पावसमणे त्ति युच्चइ | ॥२२॥ |
| सयं गेह परिचज्ज, परगेहसि वावरे । | ॥२३॥ |
| निमित्तेण य ववहरइ पावसमणे त्ति युच्चइ | ॥२४॥ |
| सन्नाइपिएइ जेमेइ, नेच्छइ सामुवाणिय । | ॥२५॥ |
| गिहिनिस्सेज्ज य वाइइ, पावसमणे त्ति युच्चइ | ॥२६॥ |
| एयारिस्से पंचकुसीलसंबुद्धे, त्वयधरे सुणिपवराण हेट्ठिमे । | ॥२७॥ |
| अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इइ नेव परत्थ लोए | ॥२८॥ |
| जे बज्जए एए सुया व बोधे, से सुत्थए होइ सुणीय मम्मि । | ॥२९॥ |
| अयंसि लोए अमर्य व पूए आराहए लोगमियां सहा पर | ॥३०॥ |
| ॥ त्ति वेमि ॥ इति पावसमणिज्जं सत्तवद्दं अज्जत्तयणं समत्तं ॥ | ॥३१॥ |

॥ अइ सज्जइज्ज अट्ठारहम अज्जत्तयणं ॥

अम्पिस्ते नयरे राया ऊविस्सणवत्तपाहणे ।

तामेण संजए नामं, मिगन्वं ववणिमाए

| | |
|--|------|
| मायाबुद्ध्यमेयं तु, मुसामासा निरतिथया । | |
| सजममाणोऽपि ब्रह्म, वसामि इरियामि य | ॥२६॥ |
| सन्वेप विद्या मन्त्र, मिच्छाविट्ठी अणारिया । | |
| विञ्जमाणे परे लोप, सम्म जाणामि अप्यय | ॥२७॥ |
| ब्रह्मासि महापाणे, जुष्टं वरिससम्भोवमे । | |
| वा सा पाप्मिमहापाली, विञ्चा वरिससम्भोवमा | ॥२८॥ |
| से वुप वम्भलोगाओ, माणुसं भवमागप । | |
| अप्यणो य परेसि च, आर्ष जाणे जहा तद्वा | ॥२९॥ |
| नाणारुह च छन्द च, परिवञ्जेञ्च सजप । | |
| अणट्ठ जे य सञ्चत्था, इह विज्जामणुसचरे | ॥३०॥ |
| पडिक्कमामि पसिणार्ण, परमतेहि वा पुणो । | |
| अहो वट्ठिए अहोराय, इह विञ्जा तव चरे | ॥३१॥ |
| ज च मे पुच्छसी फाले, सम्म मुद्धेण चेतसा । | |
| ताई पाठकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे | ॥३२॥ |
| किरियं च रोयई धीरे, अकिरियं परिवञ्जप । | |
| विट्ठीए विट्ठीसम्पन्ने, वम्मं चरसु दुच्चर | ॥३३॥ |
| एय पुण्णपर्यं सोष्वा, अत्यधम्मोयसोहिय । | |
| भरहो वि भारह वास, पिप्वा कामाह पन्थए | ॥३४॥ |
| सगरो पि सागर-त, भरहवास नराहियो । | |
| इस्सरिय केवलं हिप्वा वयाइ परिनिव्युद्धे | ॥३५॥ |
| चइत्ता भारह वासं चक्कवट्ठी महत्तिओ । | |
| पठ्वच्चमधुधगओ, मधय नाम महाजसो | ॥३६॥ |
| सण्णुमारो मणुस्सिन्दो, चक्कवट्ठी महत्तिओ । | |
| पुत्तं रज्जे ठवेअण, सो वि राया तर्षं चर | ॥३७॥ |

वाराणि य मुया चेय, मिच्छा य तद् यधया ।

जीवन्तमणुजीयन्ति, मय नाणुव्ययन्ति य ॥१४॥

नीहरन्ति मयं पुत्ता, पितरं परमदुष्किंशया ।

पितरो यि तद्वा पुत्ते, , यधू रायं सध परे ॥१५॥

सज्जो तेणञ्जिए वुब्बे, वरे य परिरक्खिए ।

कीलन्तिऽज्जे नरा रायं, द्दट्ठतुट्ठ मलक्किया ॥१६॥

तेयावि जं कय कम्मं सुह या जइ वा दुह ।

कम्मुणा तेण सजुत्तो, गच्छइ च पर भव ॥१७॥

सोऽज्ज वस्स सो धम्मं, अण्णगारस्स अन्तिए ।

महया संवेगनिब्बेव, समावज्जो नराहिषो ॥१८॥

सज्जज्जो अइउ रज्ज, निक्खस्सन्तो खियासासयो ।

गहभाजिस्स भगवज्जो, अण्णगारस्स अन्तिए ॥१९॥

चिन्ना रट्ठं पण्यइए, सत्तिए परिभासइ ।

जहा ते वीसई रुक्ख पसन्नं ते तद्वा मणो ॥२०॥

किंनामे किंनोत्ते, कस्सट्ठाए य माहणे ।

कइ पडियरसी बुद्धे, कइ विणीए त्ति बुबसी ॥२१॥

सज्जज्जो नाम नामेण, तद्वा गोत्तेण गोयमो ।

गहभाज्जी ममायरिया, बिज्जाअरण्यपारगा ॥२२॥

किरिय अकिरियं विण्णयं, अज्जाण य महामुणी ।

एणहिं अइहिं ठाणोहिं, मेयन्ने किं पमासई ॥२३॥

इइ पाठकरे बुद्धे, नायए परिणिब्भुए ।

बिज्जाअरण्य संपजे, सखे सखपरक्कमे ॥२४॥

पवन्ति नरा घोरे, ओ नरा पावकारिणो ।

दिठ्ठ च गइ गच्छन्ति, परित्ता धम्ममारियं ॥२५॥

| | |
|---|------|
| तरेष विज्जओ राया, अणट्ठाफिप्पि पव्वए । | |
| रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहिंसु महाजसो | ॥८०॥ |
| सहेषुगं सव फिष्ठा, अव्वफिस्सत्तेण चेतसा । | |
| महव्वसो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं | ॥८१॥ |
| कइ धीरो अहेअहिं, उम्मत्तो व महिं चर । | |
| एए थिसेसमादाय, सुरा वटपरक्कमा | ॥८२॥ |
| अबन्तनियाणत्थमा, सथा मे भासिया वइ । | |
| अवरिंसु वरन्तेगे वरिस्सन्वि अणागया | ॥८३॥ |
| कहिं धीरे अहेअहिं, अत्ताण परियायसे । | |
| सव्वसगधिनिम्मुक्खे सिद्धे भवइ नीरण | ॥८४॥ |

॥ छि वेमि ॥ इति संज्ञश्च समस्त ॥१८॥

॥ मियापुत्तीय एगूणधीसइम अज्जकयण ॥

| | |
|--|-----|
| सुमणीवे नयरे रम्मे, कण्णखुज्जाणसोहिए । | |
| राया वलमाइ छि, मिया वस्सगमाहिस्सी | ॥१॥ |
| तेसिं पुत्ते वलसिरी, मियापुत्ते छि थिस्सुए । | |
| अम्मापिअण वइए, जुवराया वमीसर | ॥२॥ |
| नन्दणे सो उ पासाए कीलए सह इत्थिहिं । | |
| वेवे दोगुन्दगे चेत निर्व मुइयमाणसो | ॥३॥ |
| मणिरयणफोट्ठिमवत्ते पासायालोयणट्ठिओ । | |
| आलोएइ नगरस्स, चटफत्थियचच्चर | ॥४॥ |
| अह तत्थ अइअन्त पासाइ समणसज्जय । | |
| उवनियमसंज्जमधरं, सीलकं गुणआगर | ॥५॥ |
| ए देहइ मियापुत्ते विट्ठीए अणिमिसाए उ । | |
| कहिं मनेरिसं रुथं, विट्ठपुब्बं मए पुरा | ॥६॥ |

| | |
|--|------|
| चइत्ता भारहू घासं चफवट्टी महत्तिओ । | |
| सन्ती सन्तिफेर लोप, पत्तो गइमणुत्तरं | ॥१२॥ |
| इक्खारायवसभो, कुन्थु नाम नरीसरो । | |
| विक्खायफिप्पी भगव, पत्तो गइमणुत्तरं | ॥१३॥ |
| सागरत्तं चइत्ताण भरह नरवरीसरो । | |
| अरो य अरय पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर | ॥१४॥ |
| चइत्ता भारहू घासं, चइत्ता यलवाहणं । | |
| चइत्ता उत्तमे भोप, महापत्तमे सयं चर | ॥१५॥ |
| पगच्छत्तं पसाहिप्ता, महिं माणनिसूरणो । | |
| हरिसेणो मणुस्सिन्धो, पत्तो गइमणुत्तरं | ॥१६॥ |
| अभिओ रायसहस्सेहिं, सुपरिचार्हं वमं चर । | |
| अयत्तामो जिणक्खाय, पत्तो गइमणुत्तर | ॥१७॥ |
| वसण्णरक्ख मुविथं चइत्ताणं मुणी चरे । | |
| वसण्णमहो निक्खन्तो, सक्ख सक्खेण चोइओ । | ॥१८॥ |
| नमी नमेइ अप्पणं सक्ख सक्खेण चोइओ । | |
| चइऊण गेहं चइवही, सामण्यो पब्बुवट्ठिओ | ॥१९॥ |
| करकण्हू कलिंगेसु, पन्नालेसु य दुम्भुहो । | |
| नमी राया विदेहसु, गन्धारेसु य नगार्ह | ॥२०॥ |
| एए नरिन्दवसमा निक्खन्ता जिणसासणो । | |
| पुत्ते रत्ते ठवेऊण सामण्यो पब्बुवट्ठिया | ॥२१॥ |
| सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे । | |
| उदायणो पब्बइओ, पत्तो गइमणुत्तरं | ॥२२॥ |
| तहेव कासीराया, सेओसचपरफमे । | |
| कामभोगे परिज्ज, पहणो कम्ममहावण | ॥२३॥ |

| | |
|--|------|
| एष धर्मं अकाङ्क्ष, जो गच्छइ पर्यं भव । | |
| गच्छन्तो सो दुही होइ, याहीरोगेहि पीडिओ | ॥१६॥ |
| अद्याणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवञ्जइ । | |
| गच्छन्तो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवग्जिओ | ॥२०॥ |
| एष धर्मं पि काङ्क्ष, जो गच्छइ परं भव । | |
| गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्यकम्मे अवेयणो | ॥२१॥ |
| अहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पइ । | |
| सारमण्डाणि नीणोइ, असारं अवज्जम्हइ | ॥२२॥ |
| एवं लोप पलित्तम्मि, जराए मरणेण य । | |
| अप्याणं चारइत्तामि, सुठ्ठमेहि अणुमग्गिओ | ॥२३॥ |
| तं विन्तम्मापियरो, सामण्य पुत्त दुक्कर । | |
| गुण्णं तु सहस्साइ, धारेयव्याइ भिक्खुणो | ॥ ४॥ |
| समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा अगे । | |
| पायाइवायविरई, जावज्जावाए दुक्करं | ॥२५॥ |
| निच्चक्कालप्पमत्तेणं, मुसावायविक्कज्जण । | |
| भासियब्ब द्विय सच्चं, निच्चारत्तेण दुक्करं | ॥२६॥ |
| दन्तसोहणमाइस्स, अवत्तस्स विक्कज्जणं । | |
| अणवज्जेसण्णजस्स, गिण्हणा अयि दुक्करं | ॥२७॥ |
| धिरइ अयम्भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा । | |
| उगग सहव्ययं वम्भं, धारेयव्व सुदुक्करं | ॥२८॥ |
| धणधम्मपेसव्वगोसु, परिग्गाहविक्कज्जण । | |
| सव्वारम्भपरिक्खाओ, निम्ममत्त सुदुक्करं | ॥२९॥ |
| पठव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा । | |
| सग्गिहीसंघओ पेव, यज्जेयव्वो सुदुक्कर | ॥३०॥ |

- साहुस्त वरिसणो वस्त, अज्जयसाणम्मि सोहणे ।
 मोह गयस्त सन्धस्त, जाइसरण समुप्पन ॥७॥
- जाइसरणो समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिहिण ।
 सरई पोरणियं जाइ, सामण्यं च पुरा कय ॥८॥
- यिसण्हि अरज्जन्तो, रज्जन्तो संजमम्मि य ।
 अन्मापियरमुवागम्म, इमं वयणमव्ययी ॥९॥
- सुयाणि मे पंचमहव्वयाणि नरणसु दुक्खं च विरिक्खजोषिसु ।
 निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥१०॥
- अन्नं ताय मय भोगा, मुत्ता यिसफलोषमा ।
 पच्छा कहुयविवागा, अणुचन्धवुहावहा ॥११॥
- इमं सरीरं अणिचं, असुई असुइसंभय ।
 असासयावासमियां, दुक्खं केसाण भायण ॥१२॥
- असासप सरीरम्मि, रई नोवज्जभामहं ।
 पच्छा पुरा व चइयव्वे, फणवुव्वुयसन्निभ ॥१३॥
- माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलप ।
 जरामरणचत्थम्मि, खणपि न रमामहं ॥१४॥
- जम्म दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
 अहो दुक्खो दु संसारो, जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥१५॥
- स्वेत्तं वत्थ हिरण्णं च, पुत्तवारं च वचवा ।
 चइत्ताण इमं व्ह, गन्तव्वमयसस्त मे ॥१६॥
- जहा किम्पागकजाण परिणामो न सुम्हरो ।
 एवं भुत्ताण भोगाण, परिणामो न सुम्हरो ॥१७॥
- अद्याणं जो महत्तं सु, अप्पाइओ पवज्जह ।
 गय्जन्तो सो दुही होइ, छुहातण्हाप पीडिओ ॥१८॥

| | |
|---|------|
| मुज माणुस्तप भोगे, पंचलम्ब्याणं तुम । | |
| मुत्तभोगी वञ्चो जाया, पञ्चला धम्म चरिस्ससि | ॥४३॥ |
| सो पित्तऽम्मापियरो, एवमेयं जहा फुट्ठं । | |
| इह लोप निप्पिवास्स, नत्थि किंचिवि दुक्कर | ॥४४॥ |
| सारीरमाणसा चेष वेयणाओ अनन्तसो । | |
| मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्कभयाणि य | ॥४५॥ |
| जयमरणाकान्तारं, चाउरन्ते भयागरे । | |
| मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य | ॥४६॥ |
| जहा इहं अगणो उण्हो, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं । | |
| तरएसु वेयणा उण्हो, अस्साया वेइया मए | ॥४७॥ |
| जहा इमं इहं सीयं, एत्तोऽणन्तगणो तहिं | |
| तरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए | ॥४८॥ |
| फन्वन्तो कंदुकुम्मीसु उट्ठपाओ अहोसितो । | |
| हुयासणे जलन्तम्मि, पक्कपुब्बो अणन्तसो | ॥४९॥ |
| महाववमिसंकासे, मरम्मि वहरवालुए । | |
| फलम्बवालुयाए य, वट्ठपुब्बो अणन्तसो | ॥५०॥ |
| रसन्तो फन्तुकुम्मीसु, उट्ठं वट्ठो अवन्धवो । | |
| करपत्तकरफयाइहिं, छिन्नपुब्बो अणन्तसो | ॥५१॥ |
| अइसिस्सफटंगाण्णो, तुगे सिम्भलिपायवे । | |
| सेमिय पासयत्तेण, कट्ठोफहाहिं दुक्कर | ॥५२॥ |
| महाजन्तेसु उच्छूया, आरसन्तो सुमेरपं । | |
| पीडिओ मि सफम्मेहिं, पावफम्मो अणन्तसो | ॥५३॥ |
| कृपन्तो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य । | |
| माडिओ प्पलिओ छिओ, यिप्पुरन्तो अण्णेगसो | ॥५४॥ |

| | |
|---|------|
| દુહા તથા ય સીડણહ, દંસમસગવેયણા । | |
| અક્ષોસા દુષ્પ્રસેજા ય, તણપ્રસા જહમેય ય | ॥૩૧॥ |
| તાલણા તજ્જણા ચેવ, વહપ વપરીસહા । | |
| દુષ્કર્મં ભિક્ષાચરિયા, આમણા ય અભામયા | ॥૩૨॥ |
| ફાવોયા જા શમા વિષી, કેસલોખો ય વાઠયો । | |
| દુષ્કર્મં ધમ્મઘ્વયં ધોરં, ધારેત્ત ય મહપ્રણો | ॥૩૩॥ |
| સુહોદ્ધો તુમં પુત્તા, સુકુમાલો સુમગ્ગિઓ । | |
| ન દુ સી પમ્ તુમં પુત્તા, સામણમણપાતિયા | ॥૩૪॥ |
| જામજીવમવિસ્સામો, ગુણાણં તુ મહન્નરો । | |
| ગુરુઓ લોહમાઠ ઘ્વ, જો પુત્તા હોદ્દ દુઘ્થહો | ॥૩૫॥ |
| આગાષે ગંગસોઠ ઘ્વ, પલ્લિસોઠ ઘ્વ દુત્તરો । | |
| આદાદિં સાગરો ચેવ, તરિયઓ ગુણોવહી | ॥૩૬॥ |
| ધાતુયાકવલો ચેવ, નિરસ્સાપ ત સજમે । | |
| અસિધારાગમણ ચેવ, દુક્કરં ચરિત્ત તથો | ॥૩૭॥ |
| અહી વેગન્તવિહોપ, ચરિત્તે પુત્ત દુક્કરે । | |
| જવા સોહમયા ચેવ, પાથેયઠ્ઠા સુદુક્કરં | ॥૩૮॥ |
| જહા અનિાસિહા વિત્તા, પાઠ હોદ્દ સુદુક્કરા । | |
| તહા દુક્કર કરેત્તં જે, વાલ્લયો સમણત્તણં | ॥૩૯॥ |
| પહા દુષ્કર્મં ધરેત્તં જે, હોદ્દ વાયસ્સ કોત્તપ્પલો । | |
| તહા દુષ્કર્મં કરેત્તં જે, કીવેણં સમણત્તણ | ॥૪૦॥ |
| જહા તુલાપ તોલેત્તં, દુક્કરો મન્વરો ગિરી । | |
| તહા નિદુયં નીસર્ક, દુક્કરં સમણત્તણ । | ॥૪૧॥ |
| જહા મુયાદિં તરિત્તં, દુક્કરં રમણાયરો । | |
| તહા અણુવસન્તેણં, દુક્કરં વમસાગરો | ॥૪૨॥ |

| | |
|--|------|
| धवेदमुद्रिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पिब । | |
| ताडिओ कुट्टिओ भिओ, चुण्णिओ य अणन्तसो | ॥६७॥ |
| तत्ताई तम्बलोदाई, तसयाई सीसयाणि य । | |
| पाइओ कलकलन्ताई, आरसन्तो सुमेरव | ॥६८॥ |
| तुई पियाइ मंसाई, खण्णडाई, सोल्लगाणि य । | |
| खाओ विसमंसाई, अग्गिषण्णाइइय्योगसो | ॥६९॥ |
| तुइ पिया सुय सीइ, मेरओ य महुणि य । | |
| पाइओ मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य | ॥७०॥ |
| निबं भीएण तत्तेण, दुहिण्ण, वहिण्ण य । | |
| परमा तुहसंघट्ठा, वेयणा वेदिता मए | ॥७१॥ |
| सिक्खवरहप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा । | |
| महवमयाओ भीमाओ, नरणसु वेदिता मए | ॥७२॥ |
| आरिस्ता माणुखे लोप, ताया वीसन्ति वेयणा । | |
| एत्तो अणन्तगुणिमा, नरणसु दुक्खवेयणा | ॥७३॥ |
| सब्बमवेसु अस्ताया, वेयणा वेदिता मए । | |
| निमेसन्तरमित्तं पि, बं सावा नत्थि वेयणा | ॥७४॥ |
| त चिन्तम्मापियरो, जन्वेणं पुत्त पब्बया । | |
| नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिक्कम्मया | ॥७५॥ |
| सो वेइ अम्मापियरो, एवमेव अहा फुडं । | |
| पडिक्कम्मं को कुण्णई, अरण्णे मियपक्खिण | ॥७६॥ |
| एगम्मूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे । | |
| एवं धम्म चरिस्सामि, संजमेण तमेण य | ॥७७॥ |
| अइ मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि आयई । | |
| अचन्तं रुक्खमूलम्मि, को ए तादे सिगिच्छिई | ॥७८॥ |

| | |
|--|------|
| असीहि अयसिथण्णाहिं, भरुलेहिं पट्टिसेहि य । | |
| दिग्गो भिग्गो विभिग्गो य, ओइण्णो पावकम्मुणा | ॥५५॥ |
| अवसो लोहरहे जुत्तो, अलन्ते समिलाजुण । | |
| ओइग्गो ओत्तजुत्तेहिं, रोग्गो वा जह पाडिग्गो | ॥५६॥ |
| हुयासणे जलन्तम्मि, चियासु महिसो विष । | |
| वड्डो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविग्गो | ॥५७॥ |
| वलासंढासतुब्बेहिं, लोहसुण्णेहिं पक्खिहिं । | |
| विलत्तो विलवन्तो हं, ठकगिदेहिं अणन्तसो | ॥५८॥ |
| ठण्हाफिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरिणिं नहिं । | |
| अलं पाहिति चित्तन्तो, सूरधाराहिं विधाइग्गो | ॥५९॥ |
| ऊण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्त महावण । | |
| असिपत्तेहिं पठन्तेहिं जिम्भपुब्बो अण्णोसो | ॥६०॥ |
| मुग्गरहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य । | |
| गया संमनागत्तेहिं, पत्तं वुक्खं अणन्तसो | ॥६१॥ |
| सूरेहिं तिक्खधारेहिं, सूरियाहिं कप्पणीहि य । | |
| कप्पिग्गो फल्लिग्गो जिग्गो वड्ढिन्तो य अण्णोसो | ॥६२॥ |
| पासेहिं कूडालेहिं, मिग्गो वा अवसो अह । | |
| वाहिग्गो वड्डरुद्धो वा, बहू जेव विवाइग्गो | ॥६३॥ |
| गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अह । | |
| वड्ढिग्गो फल्लिग्गो गहिग्गो, मारिग्गो य अण्णन्तसो | ॥६४॥ |
| वीदंसएहिं आलेहिं, लेप्पाहिं सण्णो विष । | |
| गाहिग्गो लमो वड्डो य, मारिग्गो य अण्णन्तसो | ॥६५॥ |
| कुडाडफरसुमाईहिं, वड्डईहिं दुमो विष । | |
| कुट्टिग्गो फल्लिग्गो जिग्गो, वड्ढिग्गो य अण्णन्तसो | ॥६६॥ |

| | |
|--|------|
| गारवेसु कसापसु, वण्डसङ्गमपसु य । | |
| नियत्तो हाससोगाभो, अनियाणो अबन्धणो | ॥६१॥ |
| अणिस्सिओ इहं लोप, परलोप अणिस्सिओ । | |
| वासीचन्दणकप्पो य, असणो अणसणो तहा | ॥६२॥ |
| अप्पसत्थेहिं वारेहिं, सन्वओ पिहियासवे । | |
| अम्मप्पम्मण्यजोगेहिं, पसत्थदमसासणो | ॥६३॥ |
| एव नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य । | |
| भावणाहि य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पय | ॥६४॥ |
| वहुयाणि उ वासाणि, सामण्यमणुपालिया । | |
| मासिपण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं | ॥६५॥ |
| एवं करन्ति संवुद्धा, पण्डिया पवियन्त्तणा । | |
| विणिअहन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहामिसी | ॥६६॥ |
| महापभावस्स महाअसस्स, मियाइ पुत्तस्स निसम्म मासियं । | |
| तवप्पहाण चरियं च उच्चमं, गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुत्तं | ॥६७॥ |
| वियाणिया दुक्खविषद्वण घणं ममत्तवन्धं च महाभयावहं । | |
| सुहावहं घम्मधुर अणुत्तरं, धारेच्च निब्बाणगुणावहं महं | ॥६८॥ |

ति वेमि ॥ इति मयापुत्तीर्य अम्मद्वयं जमत्तं ॥

॥ अह महानियण्ठिज्जं वीसहमं अज्झयण ॥

| | |
|-------------------------------------|-----|
| सिद्धाण नमो फिणा, संजयाण च भावओ । | |
| अत्यधम्मगइ तणं, अणुसद्धिं सुणोइ मे | ॥१॥ |
| पभ्यरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो । | |
| विहारजत्त निज्जाओ, मणिकुण्डिसि चेइए | ॥२॥ |

| | |
|---|------|
| फो वा से ओसह देइ, फो या से पुच्छइ सुह । | |
| फो से भत्त व पाण वा, आहरित्तु पणामप | ॥५॥ |
| जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं । | |
| भत्तपाणस्स अट्ठाप, वल्लराणि सराणि य | ॥६॥ |
| स्वाइत्ता पाणियं पात्तं, वल्लरेहिं सरेहि य । | |
| मिगचारियं चरित्ताण, गच्छइ मिगचारियं | ॥७॥ |
| एव ससुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणोगण । | |
| मिगचारियं चरित्ताण, उट्ठं पक्कमइ दिस | ॥८॥ |
| जहा मिए एग अणोगचारी, अणोगघासे धुवगोयरे य । | |
| एवं सुणी गोयरिथ पविट्ठे, नो हीलप नो वि य स्सिसएग्जा | ॥९॥ |
| मिगचारियं चरिस्सामि, एव पुत्ता जहा सुह । | |
| अम्मापिअहिंऽणुमाओ, जहाइ उवहिं तहा | ॥१०॥ |
| मिगचारिय चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणि । | |
| तुज्जेहिं अन्नमणुमाओ, गच्छ पुत्त जहा सुहं | ॥११॥ |
| एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणिताण वहुविह । | |
| ममत्त छिन्वई ताहे महानागो व्व कंचूथ | ॥१२॥ |
| इहो वित्तं व मित्ते य, पुत्तदार व नायओ । | |
| रेणुयं व पढे जग्गं, निअणिताण निमाओ | ॥१३॥ |
| पंचमहब्बयजुत्तो, पंचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो य । | |
| सम्मिन्तरयाहिरओ, तवोकम्ममि उम्भुओ | ॥१४॥ |
| निम्ममो मिरहंकारो, निस्सगो वत्तगारवो । | |
| समो य सव्वभूएसु, वसेसु थायरेसु य | ॥१५॥ |
| ल्लामात्तामे सुहे दुक्खे, जीयिए मरणे तहा । | |
| समो त्तिन्दापसंसासु, तहा माणायमाणओ | ॥१६॥ |

| | |
|--|------|
| परिसे सम्ययमाम्भि, सन्वकामसमपिप । | |
| कह अणाहो भवइ, मा हु भन्ते मुस वप | ॥१५॥ |
| न तुम जाणे अणाहस्स, अत्थ पेत्य व पत्थिवा । | |
| जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा | ॥१६॥ |
| सुणेइ मे महाराय, अठ्ठक्खित्तेण वेयसा । | |
| जहा अणाहो भवई, जहा मेय पवित्तय | ॥१७॥ |
| कोसम्बी नाम नयरी, पुराण पुरमेयणी । | |
| तत्थ आसी पिया मग्ग, पभूयघणसंवच्चो | ॥१८॥ |
| पढमे वप महाराय, अरत्ता मे अच्छिवेयणा । | |
| अहेत्था विरलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा | ॥१९॥ |
| सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविचरन्तरे । | |
| आवीलिज्ज अरो कुट्ठो, एवं मे अरिच्चवेयणा | ॥२०॥ |
| विय मे अन्तरिक्खं व, उत्तमंग व पीडइ । | |
| इन्दासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा | ॥२१॥ |
| उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छगा । | |
| अवीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया | ॥२२॥ |
| ते मे तिगिच्छ कुब्बन्ति, चाउप्पाय जहाहिय । | |
| न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मग्ग अणाहया | ॥२३॥ |
| पिया मे सव्वसारपि, विज्जाहि मम कारणा । | |
| न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मग्ग अणाहया | ॥२४॥ |
| माया वि मे महाराज, पुत्तसोगदुहट्ठिया । | |
| न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मग्ग अणाहया | ॥२५॥ |
| भायरो मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा । | |
| न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मग्ग अणाहया | ॥२६॥ |

| | |
|---|------|
| नाणादुमलयाइण्ण, नाणापन्निल्लनिसेविय । | |
| नाणाकुसुमसज्जन, वज्जाणं नन्दणोयमं | ॥३॥ |
| तत्थ सो पासई साहुं, सज्जय सुसमादिय । | |
| निसन्न रुक्खमूलम्मि, सुफुमार्त्तं सुहोइय | ॥४॥ |
| तस्स रुक्ख तु पासिप्पा, राइणो तम्मि सज्जय । | |
| अवन्तपरमो आसी, अवल्लो रुक्खयिम्हओ | ॥५॥ |
| अहो वण्णो अहो रुक्खं, अहो अज्जस्स सोमया । | |
| अहो खन्ती अहो मुत्ती, अहो भोगे असगया | ॥६॥ |
| तस्स पाए उ वन्दिप्पा, काउण्ण य पयादिय्णं । | |
| नाइदूरमणासन्ने, पज्जली पडिपुच्छई | ॥७॥ |
| तरुणो सि अज्जो पड्यइओ, भोगकालम्मि संजया । | |
| उवट्ठिओ सि सामण्णो, पयमठ्ठं सुण्णेमि वा | ॥८॥ |
| अणाहो मि महाराय नाहो मग्गं न विज्जई । | |
| अणुकम्पगं सुहि धावि, कंथि नाभिसमेमहं | ॥९॥ |
| तओ सो पइसिओ राया, सेण्णिओ मगाहादिवो । | |
| पथ ते इड्ढिमन्तस्स, कहं नाहो न विज्जई | ॥१०॥ |
| होमि नाहो भयंताणं, भोगे मुंजाहि सजया । | |
| मित्तनाईपरिवुडो, माणुस्सं खु सुयुद्धं | ॥११॥ |
| अप्पणा वि अणाहोऽसि, सेणिया मगाहादिवा । | |
| अप्पणा अणाहो सन्तो, कस्स नाहो भविस्ससि | ॥१२॥ |
| एवं वुत्तो नरिन्दो सो, सुसंभन्तो सुयिम्हओ । | |
| वयणं अरसुयपुड्वं, साहुणा विन्ध्यभिओ | ॥१३॥ |
| अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अन्तउरं प मे । | |
| मुंजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरिय प मे | ॥१४॥ |

जो पण्यइत्ताण महठवयाइ, सम्मं च नो फसयई पमाया ।
 अनिमाहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ धन्धणं से ॥३६॥
 आवत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए ।
 आयाणनिक्खेवदुगुच्छणाए, न वीरजाय अणुजाइ मग्ग ॥४०॥
 चिरं पि से मुण्डरुई भविता, अधिरुषए तव नियमेहिं भट्टे ।
 चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु सपराए ॥४१॥
 पोत्ते व मुट्ठी जइ से असारे, अयन्तिए कूडवहाणणे वा ।
 राढामणी वेळलिअणगासे, अमइण्वए होइ हु जाणएसु ॥४२॥
 कुसीललिङ्ग इह धारइत्ता, इस्सिअकय जीयिय बूइइत्ता ।
 असंजए संजयलपमाणे, विणिग्घायमागच्छइ से विरपि ॥४३॥
 विस तु पीय जइ कालकूळं हणाइ सत्यं जइ कुग्गहीयं ।
 एसो वि धम्मो विसओषवज्जो, हणाइ वयाल इवाधिवज्जो ॥४४॥
 जे लक्खण सुविण पचंजमाणे निमित्तकोउद्धतसपगाढे ।
 कुहेवविज्जासवदारजीवी, न गच्छइ सरणं तम्मि काले ॥४५॥
 तमतमेणेष उ से असीले, सया तुही विण्णरियामुवइ ।
 संघावई नरगतिरिक्खजोणि, मोण विराहेत्तु असाहुरूवे ॥४६॥
 षडेसियं कीयगढं नियगं, न सुंखई किंअ अणेसणिअं ।
 अमी पिवा सन्नभक्खी भविता इत्तो चुर गच्छइ कट्ट पाव ॥४७॥
 न तं अरी कठछेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
 से नाइइ मणुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण वयाधिरूयो ॥४८॥
 निरट्टिया नमावई व तस्स जे उत्तमट्टं विवज्जासमेइ ।
 इमे पि से नत्थि परे पि लोए, दुहओ वि से किअइ तत्थ लोए ॥
 एमेय हा छन्दकुसीलरूवे, मग्गं विराहिन्तु त्रियुत्तमाणं ।
 कुररी पिवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्टसोया परियावमेइ ॥४९॥

- भइणीओ मे महाराय, सगा जेट्टकण्हिदुगा । ॥२७॥
- न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मग्ग अणाहया ॥२८॥
- भारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुठवया । ॥२९॥
- अंसुपुण्णेहि नयणेहि, चरं मे परिसिचइ ॥३०॥
- अन्नं पाणं च ग्हाणं च, गन्धमस्सविलेखणं । ॥३१॥
- मए नायमनायं पा, सा वाक्का नेव मुंजइ ॥३२॥
- स्सणं पि मे महाराय, पासाओ मे न फिट्ठई । ॥३३॥
- न य दुक्खा विमोयइ, एसा मग्ग अणाहया ॥३४॥
- सओ हं एवमाइसु, दुक्खमा दु पुणो पुणो । ॥३५॥
- वेयणा अणुभविउ जे, संसारम्मि अणन्तए ॥३६॥
- सयं च अइ मुबेआ, वेयणा विउला इओ । ॥३७॥
- खन्तो वन्तो निरारम्भो, पन्वए अणगारिय ॥३८॥
- एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा । ॥३९॥
- परीयत्तन्तीए राईए, वेयणा मे स्सयं गया ॥४०॥
- सओ कइत्ते पमायम्मि, आपुच्छिअत्ताण बन्धवे । ॥४१॥
- खन्तो वन्तो निरारम्भो, पन्वइओऽणगारियं ॥४२॥
- तो हं नाहो जाओ, अण्णयो य परस्स य । ॥४३॥
- सब्बेसि चेव भूयाणं, वसाणं धावराण य ॥४४॥
- अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे फूइसामली । ॥४५॥
- अप्पा कामदुहा भेणू, अप्पा मे नन्दणं घण ॥४६॥
- अप्पा कत्ता विक्का य, दुहाण य सुहाण य । ॥४७॥
- अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥४८॥
- इमा दु अभा वि अणाहया निवा, तमेगणित्तो निदुओ सुरोहि । ॥४९॥
- नियएठधम्मं लहियाण बी नहा, सीयन्ति एगे यहुफायरा नरा ॥५०॥

- निमान्ये पावयणे, सावए से वि कोविए ।
 पोएण ववहरन्ते, पिहुएण नगरमागए ॥२॥
- पिहुवे ववहरन्तस्स, वाणिओ देह धयर ।
 त ससत्तं पइगिम्म, सवेसमह पत्थिओ ॥३॥
- अह पालियस्स घरिणी, समुहम्मि पसवई ।
 अह वालए तहिं आए, समुहपालि त्ति नामए ॥४॥
- खेमेण आगए धम्म, सावए वाणिए घरं ।
 संवहुई तस्स घरे वारए से सुहोइए ॥५॥
- वावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए ।
 जोव्वणेण य सपन्ने, सुरुवे पियवंसणे ॥६॥
- तस्स रूपवइ मज्झ, पिया आणेइ रूपिणि ।
 पासाए कीलए रम्मे, देवो वोगुन्वओ जहा ॥७॥
- अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।
 वम्ममएणसोभार्ग, वम्म पासइ वम्मन्ना ॥८॥
- तं पासिज्ज संवेग, समुहपालो इणमन्नवी ।
 अहोऽसुमाण कम्माण, निज्जाण पावग इमं ॥९॥
- सबुद्धो सो तहिं भगव, परमसवेगमागओ ।
 आपुच्छम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥१०॥
- सहित्तु समान्यमहाकिलेसं, महन्तमोह कसिण भयावहं ।
 परियायधम्मं चभिरोयपज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥
- अहिससत्तं च अतेणगं च, तत्तो य वभं अपरिगाहं च ।
 पडिक्खिज्जिया पच महव्वयाणि, चरिज्ज धम्म जिणवेसियं विदू ॥१२॥
- सव्वेहिं भूहिं वयाणुक्कम्पी, खन्तिक्खमे संजयवम्मयारी ।
 सावग्गजोग परिक्खयन्तो, चरिज्ज भिक्खू मुसमाहिइदिण ॥१३॥

सोद्याण मेहायि सुभासियं इमं, अणुसासण नाणगुणोववेय ।
 मम। कुसीलाण जहाय सत्त्वं, महानियठाण वप पहेण ॥१॥
 चरित्तमायारगुणमिप तच्चो, अणुत्तर संजम पालियाण ।
 निरासवे संशयियाण कम्मं, उवेइ ठाण विउलुत्तम धुवं ॥२॥
 एउधुमादन्ते वि महासोधणे, महामुणी महापइजे महायसे ।
 महानियण्ठिज्जमिण महामुय, से कइई महया वित्थरेण ॥३॥
 तुट्ठो य सेण्णिओ राया, इणमुवाहु कर्यजली ।
 अणाइत्त जहामूर्यं सुट्ठु, मे उववसिय ॥४॥
 तुम्ह सुलखा कु मणुस्स जम्म, लामा सुलखा य तुमे महेसी ।
 तुम्हे सणाहा य सवन्धवा य, ज मे ठिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥५॥
 तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया ।
 लामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउ ॥६॥
 पुच्छिअण मप तुम्हं, म्हाणविग्धाओ जो कओ ।
 निमन्तिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥७॥
 एव धुणित्ताण स रायसीहो, अणागारसीह परमाइ भत्तीए ।
 सओरोहो सपरियणो सम्बन्धवो, भन्माणुरसो विमलेण वेवसा ।
 ऊससियरोमकूवो काअण य पयाहिर्य ।
 अभिवन्दिअण सिरसा अइवाओ नराहिवो ॥८॥
 इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगत्तिगुत्तो विदयइविरओ य ।
 विहग इव भिप्पमुद्धो, विहरइ वसुह विगयमोहो ॥९॥
 ति वेमि ॥ महानियण्ठिज्ज योसइमं अज्जययणं समत्तं ॥१०॥

॥ अह समुत्तपालीय एगधीसइमं अज्जययणं ॥

चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि याणिए ।

महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पखो

॥ अह रहनेमिज्ज वाचीसहर्म अज्झयण ॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिठ्ठिए ।

वसुवेवु त्ति नामेण, रायलक्खणसंजुए ॥१॥

तस्स भग्जा दुवे आसी, रोहिणी वेवई तहा ।

वासि दोण्ह दुवे पुत्ता, इद्धा रामकेसवा ॥२॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिठ्ठिए ।

समुहविजए नाम रायलक्खणसंजुए ॥३॥

तस्स भग्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।

भगव अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाइ वमीसरे ॥४॥

सोऽरिट्ठमेमिनामो च लक्खणस्सरसज्जुओ ।

अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छधी ॥५॥

वग्गरिसहसंधयणो, समचउरसो कसोयरो ।

तस्स रायमईकन्नं, भग्जं जायइ केसवो ॥६॥

अह सा रायवरकमा, सुसीला चारुपेहणी ।

सव्वलक्खणसंपमा, विब्बुसोयामणिप्पमा ॥७॥

अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिठ्ठिए ।

इहागच्छउकुमारो, जा से कन्न दवामि हं ॥८॥

सव्वोसहीहिं एहविओ, कयकोत्तयमगलो ।

विब्बजु यलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥९॥

मत्तं च गन्धहत्थिं, वासुदेवस्स जेट्ठग ।

आरुढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥१०॥

अह ऊसिएण ज्जेत्तेण चामराहि य सोहिए ।

वसारसक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥

चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहकमं ।

सुरियाण सन्तिनाएण, विब्बेण गगण पुसे ॥१२॥

कालेण फालं विहरन्त्र रट्ठे, बलावर्त्तं जाणिय अत्थणो म ।
 सीहो प सरेण न सन्तसेज्जा, वयजोग सुधा न असन्ममाहु ॥१४॥
 चवेहमाणो उ परिण्यएज्जा, पियमणियं सन्व सितिकसएज्जा ।
 न सन्व सन्वत्थऽभिरोयएज्जा, न याधि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥
 अणेगच्छन्वामिह माणवेहिं, ओ भावओ सपगरेइ भिक्खू ।
 भयभेरवा उत्थ चान्ति भोमा, विट्ठा माणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥
 परीसहा बुन्धिसहा अणोणे, सोयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
 खे तत्थ पत्ते न वहिञ्ज भिक्खू सगामसीसे हव नागराया ॥१६॥
 सीओसिणा वंसमसा य प्पसा, आयका विविहा फुसन्ति वेइ ।
 अमृज्जुओ उत्थ ऽहियासएज्जा, रयाइ खेवेज्ज पुर कयाइ ॥१७॥
 पहाय रागं च त्थेव बोसं, ओह च भिक्खू सततं विवक्खणो ।
 मेह व्व वाएण अकम्पमाणो, परीसहे आयेगुत्ते सहेज्जा ॥१८॥
 अणुत्तर नावणप महसी, न याधि पूयं गरहं च संजए ।
 स उज्जुभार्ष पडिवज्ज संजए निव्वणममां विरए उवेइ ॥१९॥
 अरइरइसहे पहीणसंभवे विरए आयहिए पहाणवं ।
 परमद्वपण्हिं विट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंषण ॥२०॥
 विविचलयाणाइ भएज्ज ठाई, निरोवलेषाइ असंथडाई ।
 इसीहिं पियणाइ महायसेहिं, काएण पस्सेज्ज परीसहाइ ॥२१॥
 सभाणनाणोवगए महसी, अणुत्तर परितं धम्मसंभयं ।
 अणुत्तर नाणभरे जस्संसी, ओमासई सूरिय वन्तल्लिक्खे ॥२२॥
 पुविह खवेज्जण य पुण्यपाय निरंगणे सव्वओ यिप्पमुक्के ।
 तरित्ता समुह च महाभोयं समुहपाले अपुणागमं गय ॥२३॥
 ॥सि वेमि ॥ इति समुहपाजीयं एगवीसइम अक्कयण समत्तं ॥२४॥

| | |
|--|------|
| वासुदेवो य एवं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्वियं । | |
| इच्छियमणोरइ तुरिय, पावसु तं वमीसरा | ॥२५॥ |
| नाणेणं वंसणेणं च चरित्तेण तद्देव य । | |
| सन्तीए सुत्तीए, वडूमाणो भवाहि य | ॥२६॥ |
| एव ते रामकेसवा, वसारा य वडू जणा । | |
| अरिट्ठनेमिं वन्दिता, अभिगया वारणापुरिं | ॥२७॥ |
| सोअण रायकम्मा, पळवजं सा जिणस्स च । | |
| नीहासा य निराणन्वा, सोगेण च समुत्थिया | ॥२८॥ |
| राईमई विचिन्तेइ, धिरत्थु मम जीविय । | |
| आ इ तेण परिबता, सेयं पळवइत्तं मम | ॥२९॥ |
| अइ सा भमरसम्मिमे, कुब्बफणगपसाहिए । | |
| सयमेव लुचई केसे, धिइमन्ता वयस्सिया | ॥३०॥ |
| वासुदेवो य एवं भणइ, लुत्तकेस जिइन्वियं । | |
| ससारसागर घोर, तर कन्ने जहुं जहुं | ॥३१॥ |
| सा पळवइया सन्ती, पळ्वावेसी तहिं वहु | |
| सयणं परियणं चेष, सीलवन्ता वहुस्सुया | ॥३२॥ |
| गिरिं रवत्तयं अन्ती, वासेणुत्ता च अन्तरा । | |
| वासन्ते अधयारम्मि, अन्तो जयणस्स ठिया | ॥३३॥ |
| धीवराई विसारन्ती, अहा जाय त्ति पासिया । | |
| रइनमी भमाविप्पो, पच्छा विट्ठो य सीइ वि | ॥३४॥ |
| भीया य सा तहिं वट्ठु, एगन्ते संजय तयं । | |
| वाहाहिं फाउ संगोष्फं, वेवमाणी मिसीयई | ॥३५॥ |
| अइ सो पि रायपुत्तो, समुद्विजयगम्भो । | |
| भीयं पवेवियं वट्ठु, इमं वणं उवाहरे | ॥३६॥ |

| | |
|--|------|
| एयारिसाए इहिए, जुत्तीए उत्तमाइ य । | ॥१३॥ |
| नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हपगवो | ॥१४॥ |
| अह सो तत्थ निअन्तो, दिस्स पाणे भयददुए । | ॥१५॥ |
| वाढेहि पजरेहि च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए | ॥१६॥ |
| जीयियन्त तु सम्पत्ते, मसद्धा भन्निअयव्यए । | ॥१७॥ |
| पासिता से महापप्पे, सारहिं इणमच्चयी | ॥१८॥ |
| कस्स अट्ठा इमे पाणा एए सव्वे सुहेसिणो । | ॥१९॥ |
| वाढेहि पंजेरेहि च, सन्निरुद्धा य अच्चहि | ॥२०॥ |
| अह सारही सओ अयई, एए महा उ पाणिणो । | ॥२१॥ |
| तुम्ह विषाहकच्चम्मि भोयावेत्तं वहुं जयं | ॥२२॥ |
| सोऊए तस्स वयए, बहुपाणिविणासए | ॥२३॥ |
| चिन्तेइ स महापप्पे, साणुओसे जिए हिउ | ॥२४॥ |
| जइ सब्ब कारणा एए, हम्मन्ति सुअहू जिया । | ॥२५॥ |
| न मे एयं तु निस्सेसं, परल्लोगे मविस्सई | ॥२६॥ |
| सो दुण्ढालाए जुयल्ल, सुत्तगं च महायसो । | ॥२७॥ |
| आभरणाणि य सव्वणि, सारहिस्स पणामए | ॥२८॥ |
| मणपरिणामो य कम्मो, वया य जहोइयं समोइवणा । | ॥२९॥ |
| सव्वहीइ सपरिसा, निक्खमए तस्स काठ जे | ॥३०॥ |
| देयमणुस्सपरियुओ, सीयारयणं वओ समारओ । | ॥३१॥ |
| निक्खम्मिय पारगाओ रवययम्मि हिओ मय | ॥३२॥ |
| उज्जाणं सपत्तो, ओइएणो उज्जभाउ सीयाओ । | ॥३३॥ |
| साहस्सीइ परिपुओ, अह निक्खमइ उ पिताहिं | ॥३४॥ |
| अह से सुगन्धगन्धीए, तुरियं मिज्जकुप्पिए । | ॥३५॥ |
| सयमय लुचइ कसे, पचमुट्ठाहिं समाहिओ | ॥३६॥ |

एवं करेन्ति सद्युद्धा, पण्डित्या पण्डित्यस्वणा ।

विणियद्वन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो

॥४६॥

चि वेमि ॥ रहनेमिज्जं वावीसइम अज्झयण समत्तं ॥२२॥

॥ अह केसिगोयमिज्ज तेवीसइम अज्झयणं ॥

जिणे पासि चि नामेण, अरहा लोपपूजो ।

संबद्धप्पा य सवन्नु, धम्मवित्थयरे जिण

॥१॥

तस्स लोपपूजस्स, आसि सीसे महायसे ।

केसी कुमारसमणे, विज्जावरणपारणे

॥२॥

ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमावले ।

गामाणुगामं रीयन्ते, सावत्थि पुरमागए

॥३॥

तिन्दुर्यं नाम उज्जाण, तस्मि नगरमण्डले ।

फासुए सिज्जसंधारे, तत्थ वासमुवागए

॥४॥

अह तेणेव फालेण, धम्मवित्थयरे जिणे ।

भगवं वद्धमाणि चि, सव्वलोगस्मि विस्सुए

॥५॥

तस्स लोपपूजस्स, आसि सीसे महायसे ।

भगवं गोयमे नाम, विज्जावरणपारणे ।

॥६॥

धारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमावले ।

गामाणुगामं रीयन्ते, से वि सावत्थिमागए

॥७॥

कोट्टग नाम उज्जाण, तस्मि नगरमण्डले ।

फासुए सिज्जसंधारे, तत्थ वासमुवागए

॥८॥

केसी कुमारसमणे गोयमे य महायसे ।

उभओ पि तत्थ बिहरिंसु अरुणीणा सुसमाहिया

॥९॥

| | |
|--|------|
| रहनेमि अहंभदे, सुखे चारुमासिणी । | |
| मम भयादि सुयणु, न ते पीला भविस्सई | ॥२०॥ |
| एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लह । | |
| मुत्तभोगी तण्णो पच्छा, जिणमग्ग चरिस्सामो | ॥२१॥ |
| वट्ठण रहनेमि तं, भग्गुत्थोयपरानिय । | |
| राईमई असन्मन्ता, अप्पाणं संवरे तहिं | ॥२२॥ |
| अह सा रायवरकमा, सुठ्ठिया नियमन्वप । | |
| जाइ कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वप | ॥२३॥ |
| जइ सि रुवेण वेसमणो लल्लिएण नलकुन्वरो । | |
| तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुद्दरो | ॥२४॥ |
| धिरत्थु तेऽज्जसोकामी, जो व सीविय कारणा । | |
| वन्त इच्छसि आवेवं सेयं ते मरण भवे | ॥२५॥ |
| अहं च भोगरायस्स, तं च सि अन्धगवण्हिणो । | |
| मा कुले गन्धया होमो, संवम निहुओ चर | ॥२६॥ |
| जइ व काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिणो । | |
| वायायिद्धो व्व इहो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि | ॥२७॥ |
| गोवानो भण्डवालो वा, जहा तइव्वणिस्सरो । | |
| एव अणिस्सरो तं पि, सामयणस्स भविस्ससि | ॥२८॥ |
| तीसे सो वयणं सोवा संजयाए सुभासिय । | |
| अकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ | ॥२९॥ |
| मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्विओ । | |
| सामयणं निबलं फ़से, जावजीयं वदव्वओ | ॥३०॥ |
| उमा तवं चरित्तारणं, जाया योगिया पि केयली । | |
| सुब्बं कम्म सविचारणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं | ॥३१॥ |

- पुच्छ भन्ते अहिच्छ ते, केसि गोयमऽव्यवी ।
 तन्नो केसी अणुमाप, गोयमं इणमव्यवी ॥२२॥
- चावज्जामो य ओ धम्मो, ओ इमो पचसिक्खिन्नो ।
 वेसिन्नो वदमाणेण, पासेण य महामुणी ॥२३॥
- एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ।
 धम्मे तुविहे मेहावी, कइं विप्पन्नो न ते ॥२४॥
- तन्नो केसिं वुवन्तं तु, गोयमो इणमव्यवी ।
 पन्ना समिक्खिए धम्म, तत्तं तत्तविणिच्छिय ॥२५॥
- पुरिमा उब्बुज्जहा उ, वंकज्जहा य पच्छिमा ।
 मग्गिमा उब्बुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥२६॥
- पुरिमाणं तुव्विसोग्गो उ, चरिमाणं दुरणुपालो ।
 कप्पो मग्गिमागाणं तु, सुविसोग्गो सुपालो ॥२७॥
- साहु गोयमं । पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्नो इमो ।
 अन्नो वि संसन्नो मग्ग, उ मे कइसु गोयमा ॥२८॥
- अचेल्लो य ओ धम्मो, ओ इमो सन्तवत्तरो ।
 वेसिन्नो वदमाणेण, पासेण य महापसा ॥२९॥
- एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं
 लिंगे तुविहे मेहावी, कइं विप्पन्नो न ते ॥३०॥
- केसिमेयं वुधाणं तु, गोयमो इणमव्यवी ।
 विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥
- पण्यत्थं च लोणस्स, नाणाविहयिगण्णं ।
 अत्तत्थं गहणत्थं च, लोणे लिंगपन्नोयण ॥३२॥
- अहं भवे पइन्ना उ, मोनल्लसन्भयसाहणा ।
 नाणं च वंसणं चोय, चरित्तं चोय निच्छए ॥३३॥

- उभञ्जो सीससपाणं, संजयाणं तस्सिणं ।
 तत्थ विन्ता समुप्पमा, गुणयग्गाण वाइण ॥१७॥
- फेरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो ष फेरिसो ।
 आयारधम्मपणिही, इमा वा सा ष फेरिसो ॥१८॥
- चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिञ्जो ।
 देसिञ्जो षट्ठमाणेण पासेण य महामुणी ॥१९॥
- अचेत्तञ्जो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
 एगकज्जपवप्पमाण, विसेसे किं नु कारण ॥२०॥
- अह ते तत्थ सीसाण, विनाय पवितक्कियं ।
 समागमे कयमई, उभञ्जो केसिगोयमा ॥२१॥
- गोयमे पडिरुवन्नू, सीससंपसमावत्ते ।
 जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुय इणमागञ्जो ॥२२॥
- केसी कुमारसगणो, गोयम विस्समागयं ।
 पडिरुव पडिबत्ति, सम्म संपडिवच्चई ॥२३॥
- पल्लालं प्यसुय तत्थ, पंचमं कुसवणाणि य ।
 गोयमस्स निसेज्जाइ सिण्णं संपणामण ॥२४॥
- केसी कुमारसमणो, गोयमे य महायसे ।
 उभञ्जो निसयणा सोहन्ति चन्वसूरससप्पमा ॥२५॥
- समागया यहु तत्थ, पासंडा कोज्जा मिया ।
 गिहत्थाणं अणोगाञ्जो साहस्सीञ्जो समागया ॥२६॥
- दयदाणघगन्धवा, जम्भररक्खससकिन्नरा ।
 अविस्साणं ष भूयण्यं आसी तत्थ समागमो ॥२७॥
- पुच्छामि ते महाभाग, केसी गोयममव्वयी ।
 उभञ्जो केसि युयन्त नु, गोयमो इणमव्वयी ॥२८॥

- अन्तोहिमयसंभया, लया चिट्टु गोयमा ।
फलोइ विसमक्खीणि, सा व उद्धरिया क्हं ॥४५॥
- त लयं सव्वसो छिप्ता, उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानाय, मुक्को मि विसमक्खण ॥४६॥
- लया य इइ का वुत्ता, केसि गोयममव्वधी ।
केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमव्वधी ॥४७॥
- भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
तमुच्छित्तु जहानाय, विहरामि महामुणी ॥४८॥
- साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मम्मं, त मे क्हसु गोयमा ॥४९॥
- संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्टु गोयमा ।
जे बहन्ति सरीरत्थे, बह विग्गविया तुमे ॥५०॥
- महामेहप्पसूयाओ गिम्म वारि अलुत्तमं ।
सिंघामि सययं वेह, सिप्ता नो बहन्ति मे ॥५१॥
- अग्गी व इइ के वुत्ता, केसी गोयममव्वधी ।
केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमव्वधी ॥५२॥
- कसाया अगिणो वुत्ता, सुयसीलववो जलं ।
पुयघाराभिहया सन्ता, भिन्ता हु न बहन्ति मे ॥५३॥
- साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मम्मं, त मे क्हसु गोयमा ॥५४॥
- अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिघावई ।
असि गोयमआरुओ क्ह तेण न हीरसि ॥५५॥
- पधावन्तं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहिय ।
नमे गच्छइ उम्ममां, मग्गं व पडिषअइ ॥५६॥

- साहु गोयम पन्ना त, छिन्ना मे संसब्बो इमो ।
अन्नो वि संसब्बो मग्गं, तं मे कहसु गोयमा ॥१३४॥
- अणुणाणं सदस्माणं, मग्गं विट्ठसि गोयमा ।
तं मे न अहिगप्पन्ति, कद्दं तं निज्जिया सुमे ॥१३५॥
- एणे निण जिया पंच, पंचजिए जिया दम ।
दमटा उ जिएत्ताणं, सव्वसत्तु जिएमद्दं ॥१३६॥
- सत्तु य इह के पुत्ते, केसी गोयममव्वयी ।
केसिमेयं पयतं तु, गोयमो इणमव्वयी ॥१३७॥
- एण्णा अजिए सत्तु, कसाया इन्दियाणि य ।
तं जिएत्तु अहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥१३८॥
- साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसब्बो इमो ।
अन्नो वि संसब्बो मग्गं, तं मे कहसु गोयमा ॥१३९॥
- दीसन्ति बह्वे लोए, पासवद्धा सरीरियो ।
मुक्कपासो लहुम्मूओ कद्दं तं विहरसी मुणी ॥१४०॥
- ते पासे सव्वसो छिन्ना निहन्तूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुम्मूओ विहरामि अहं मुणी ॥१४१॥
- पासा य इह के पुत्ता केसि गोयममव्वयी ।
केसिमेयं पयतं तु, गोयमो इणमव्वयी ॥१४२॥
- रामोसावओ विट्ठा, नेहपासा भयंकरा ।
ते छिन्दिता अहानायं, विहरामि अहंमं ॥१४३॥
- साहु गोयम पन्ना तं छिन्नो मे संसब्बो इमो ।
अन्नो वि संसब्बो मग्गं, तं मे कहसु गोयमा ॥१४४॥

- अन्तोद्दिश्यसमया, जया चिट्ठइ गोयमा ।
फ्लेइ विसमक्खीणि, सा उ उद्धरिया कइ ॥४५॥
- त जयं सन्धसो छिप्पा, उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानाय, मुक्को मि विसमक्खण ॥४६॥
- जया य इइ का बुत्ता, केसि गोयममन्ववी ।
केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमव्वधी ॥४७॥
- भवत्तहा जया बुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
उमुच्छित्तु जहानायं, विहरामि मझामुणी ॥४८॥
- साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्तो वि संसओ मम्मं, तं मे कहसु गोयमा ॥४९॥
- संपञ्चलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा ।
जे बहन्ति सरीरत्थे, वहं विन्मविया तुमे ॥५०॥
- महामेहप्पसूयाओ, गिम्म वारि जलुत्तमं ।
सिंघामि सययं वेइ, सिप्पा नो बहन्ति मे ॥५१॥
- अग्गी य इइ के बुत्ता, केसी गोयममव्वधी ।
केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमव्वधी ॥५२॥
- कसाया अग्गिणो बुत्ता, सुयसीलव्वो जलं ।
सुयघाराभिइया सन्ता, भिन्ना हु न बहन्ति मे ॥५३॥
- साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्तो वि संसओ मम्मं, तं मे कहसु गोयमा ॥५४॥
- अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिघावई ।
असि गोयमआरुढो कइ तेण न हीरसि ॥५५॥
- पपावन्तं निगिण्हामि, सुयरत्सीसमाहियं ।
नमे गच्छइ उम्मा, मग्ग प पडिबज्जइ ॥५६॥

आय ग इइ के वत्ते, केसी गोयममव्यधी ।

केसिमेष युधत्त तु, गोयमो इणमव्यधी ।

॥१२॥

गणा माहसाओ भाभा, बुद्धमा परिभाषइ ।

तं सम्म गु निगिण्ठाभि, भम्मसिग्गाइ कन्थी ।

॥१३॥

साहु गोयम पन्ना त, दिना म संमच्चा इमो ।

अन्ता वि संसओ मम्म, त म कहसु गोयमा

॥१४॥

कुम्पटा यटयो लोप, जदि नामन्ति उतुणो ।

अट्टाणे कट यटन्त, न न नामसि गोयमा

॥१५॥

जे य ममोण गच्छति, जे य उम्ममापट्टिया ।

ते सब्बे वेइया मम्म सो न नस्तामहं सुणी

॥१६॥

मगो य इइ के वत्ते, केसी गोयममव्यधी ।

केसिमेष युधत्त तु, गोयमो इणमव्यधी

॥१७॥

कुम्पयणपासण्डी, सब्बे सम्ममापट्टिया ।

सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मगो हि उत्तमे

॥१८॥

साहु गोयम पन्ना ते दिना मे संसओ इमो ।

अन्तो वि संसओ मम्म, त मे कहसु गोयमा

॥१९॥

महाउदगवेगेण, बुम्भमाणाण पाणिया ।

सरणं गई पइट्ठा य, दीध कं मन्नसी सुणी

॥२०॥

अत्थि एगो महावीवो, वारिमम्भे महालओ ।

महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न बिज्झई

॥२१॥

दीधे य इइ के वत्ते, केसी गोयममव्यधी ।

केसिमेष युधत्त तु, गोयमो इणमव्यधी

॥२२॥

जरामरणवेगेण, बुम्भमाणाण पाणिया

अम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं

॥२३॥

| | |
|---|------|
| साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसञ्चो इमो । | |
| अन्नो धि संसञ्चो मग्गं, त मे कहसु गोयमा | ॥६६॥ |
| अण्णवसि महोहंसि, नावा विपरिधावइ । | |
| असि गोयममारुढो, कहं पारं गमिस्ससि | ॥७०॥ |
| आ उ अस्ताविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी । | |
| आ निरस्ताविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी | ॥७१॥ |
| नावा य इइ का बुत्ता केसी गोयममव्ववी । | |
| केसिमेधं युवत तु, गोयमो इणमव्ववी | ॥७२॥ |
| सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो बुब्बइ नाविञ्चो । | |
| संसारो अण्णवो बुत्तो, ज तरति महेसियो | ॥७३॥ |
| साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसञ्चो इमो । | |
| अन्नो धि संसञ्चो मग्गं, त मे कहसु गोयमा | ॥७४॥ |
| अधयारे तमे घोरे, निठुन्ति पाणियो वहु । | |
| को करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिणं | ॥७५॥ |
| उग्गञ्चो विमलो भाण, सव्वलोयपमकरो । | |
| सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण | ॥७६॥ |
| भानु य इइ के बुत्ते, केसी गोयममव्ववी । | |
| केसिमेधं युवत तु, गोयमो इणमव्ववी | ॥७७॥ |
| उग्गञ्चो स्सीअसंसारो, सव्वञ्चु जिणमक्खरो । | |
| सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण | ॥७८॥ |
| साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसञ्चो इमो । | |
| अन्नो धि संसञ्चो मग्गं, त मे कहसु गोयमा | ॥७९॥ |
| सारीरमाण्णे दुप्पखे, यग्गमाणाण पाणिण । | |
| खेमं सियमणावाहं, ठाण किं मन्नसी मुणी | ॥८०॥ |

| | |
|---|------|
| अथि एतं भूयं ठाणं लोयमाग्निं दुराहर्हं । | |
| जस्य नत्थि जसमण्यं, पाहिणा इयणं । वदा | ॥२॥ |
| ठाणे य इह पं वृत्तं, कसो गायममस्य ॥ । | |
| केसिमेयं वृत्तं तु, गायमो इणमज्जया | ॥३॥ |
| निज्याणं ति अथाह ति, सिद्धा लोयमामय य । | |
| तेमं सिधं अखायाहं, ज परत्ति महसिणा | ॥४॥ |
| त ठाण सासय पासं, लोयमाग्निं दुराहर्हं । | |
| ज रूपत्ता न सोयत्ति, भयोहन्तवरा मुणी | ॥५॥ |
| साहु गोयम पन्ना त, छिन्नो म संसज्जो इमो । | |
| नमो ते संसयावीत, सज्जसुत्तमहोयही | ॥६॥ |
| एय तु संसए छिन्ने, केसी धोरपरप्पमे । | |
| अभिवन्दिता सिरसा, गोयम तु महायसं | ॥७॥ |
| पचमहज्जयधम्मं, पडिबळइ भायज्जो । | |
| पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गो तस्य सुहायहे | ॥८॥ |
| केसी गोयमज्जो निबं, वम्मि आसि समागमे । | |
| सुयसीलसमुक्कसो, महत्थत्थविणिच्छज्जो | ॥९॥ |
| तोसिया परिसा सज्जा सज्जमग्गं समुपट्ठिया । | |
| सधुया ते पसीयन्तु, भयय केसिगोयमे | ॥१०॥ |
| ॥ ति वेमि ॥ केसिगोयमिच्छं तेवीसइम अज्जमग्गं समत्तं ॥११॥ | |

॥ अह समिइज्जो चउवीसइमं अज्जमग्गं ॥

अह पवयणमायाज्जो, समिइ गुत्ती वहेय य ।
 पंथेय य समिइज्जो तज्जो गुत्तीव आहिणा
 इरियाभासेसणावण्णो, उणारे समिइ इय ।
 मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अहमा

| | |
|---|------|
| एयाओ अट्ट समिईओ, समासेण वियाहिया । | |
| दुषान्तसंगं जिणक्खाय, मायं अत्थ उ पघयण | ॥३॥ |
| आलम्बयेण कालेण, ममोण जयणाय य । | |
| चसकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिण | ॥४॥ |
| तत्थ आलम्बण नाणं, वसणं चरणं तद्वा । | |
| काले य विवसे सुत्ते, ममो उप्पहवत्तिण | ॥५॥ |
| वन्वओ खेत्तओ चेष, कालओ भावओ तद्वा । | |
| जयण। चउत्विहा सुत्ता, उ मे किच्चयओ सुण | ॥६॥ |
| वन्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमिओ च खेत्तओ । | |
| कालओ जाव रीइत्ता, उवउत्ते य भावओ | ॥७॥ |
| इन्दियत्थे विवविज्जा, सम्मय चेष पञ्चहा । | |
| तन्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिण | ॥८॥ |
| कोहे माणे य मायाए, लोमे य उवउत्तया । | |
| हासे भए मोहरिण, यिकहासु तद्वा य | ॥९॥ |
| एयाओ अट्ट ठायाई, परिवविज्जु संजए । | |
| असावज्जं मियं काले, भास भासिज्ज पन्नव | ॥१०॥ |
| गवेसणाए गहणे य, परिमोगेसणा य जा । | |
| आहारोषहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए | ॥११॥ |
| उमसुप्पायणं पढमे, वीए सोहेज्ज एसण । | |
| परिमोयन्मि चउत्त, विसोहेज्ज जय जइ | ॥१२॥ |
| ओहोषहोवगाहियं मएज्ज दुषिह मुणी । | |
| गिण्हन्तो निक्खियन्तो वा, पउंजेज्ज इम विहिं | ॥१३॥ |
| चक्खुसा पबिलेहिता, पमज्जेउज्ज जयं जइ । | |
| आए निक्खियेज्जा वा, दुहओ वि समिण सया | ॥१४॥ |

- उधार पामयत्, मर्त्त मिपाण्ण जाय । ॥१५॥
 आहारं उपदि ददं अन्नं यावि तदादि-
 अणायममन्ताण, अणायण ११ द्वाद सन्ताण । ॥१६॥
 आयाणममन्ताण आयाण पयमन्ताण
 अणायममन्ताण, परस्म सुयणाइए ॥१७॥
 मम अण्णसिरे यावि, अणिरिक्कान्ताण्णमि य
 यिण्णिण्णणे वूरमाणाडे नासअ पिज्जयज्जिए । ॥१८॥
 वसपाण्णधीयरहिण उयाणइणि पोसिरे
 पयाओ पञ्च समिइओ, समासेण यियादिया । ॥१९॥
 पओ य वओ गुप्तीओ योग्गामि अणुपुम्पसो
 सवा तइय मोसा य, सवामोसा तइय य । ॥२०॥
 चउत्थी असवमोसा य, मण्णगुप्तिओ चउत्थिहा
 संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तइय य । ॥२१॥
 मण्ण पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय अइ
 सवा तइय मोसा य, सवमोसा तइय य । ॥२२॥
 चउत्थी असवमोसा य वण्णगुप्ती चउत्थिहा
 संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तइय य । ॥२३॥
 वयं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय अइ
 ठाणे निसीयणे चेव तइय य तुयइणे
 उल्लंघणपल्लंघणे, इण्णियाण य जुजणे ॥२४॥
 संरम्भसमारम्भे आरम्भमि तइय य ।
 काय पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय अइ ॥२५॥
 एमाओ पंच समिइओ, चरणस्त य पवत्तणे ।
 गप्पी नियत्तणे भुत्ता, असुभस्येसु सवसो

एसा पयणमाया, जे सम्म आयरे मुणी ।

सो विष्णु सव्यसंसारा, विष्णुमुषु पण्डित

॥२७॥

॥ चि वेमि ॥ इति समिद्धो चउवीसइम अन्मयण समत्त ॥२८॥

॥ अह जम्भइज्ज पञ्चवीसइम अजम्भयण ॥

माइणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।

आयाइ जमजन्तम्मि, जयघोसि चि नामओ

॥१॥

इन्द्रियगामनिग्गाही, मग्गागामी महासुणी ।

गामाणुन्नाम रीयते, पत्तो वाणारसिं पुरिं

॥२॥

वाणारसीए वहिया, खब्जाणम्मि सणोररे ।

फासुप खेब्जासगारे, तत्थ पासमुषागए

॥३॥

अह तणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माइणे ।

विजयघोसि चि नामेण, जन्नं जयइ वेयथी

॥४॥

अह खे तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।

विजयघोसस्स अम्मि, भिक्खमट्ठा चयट्ठिए ।

॥५॥

समुवट्ठियं वहिं सन्तं, जायगो पडिसेहए ।

न हु वाहामि ते भिक्ख, भिक्खू जायाहि अन्नओ

॥६॥

जे य वेयविऊ विप्पा, अन्नट्ठा य जे इन्दिया ।

ओइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा

॥७॥

जे समत्था समुद्वत्तु, परमप्पाणमेय य ।

तेसिं अन्नमिण वय, भो मिप्पसू सव्वकाभिय

॥८॥

सो तत्थ एष पडिसिद्धो, जायगेण नहामुणी ।

न वि रुद्धो न वि तुद्धो उत्तमट्ठगयेसओ

॥९॥

नन्नट्ठ पाणइउ वा, न वि निव्वाहणाय वा ।

तेसिं भिमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमव्वथी

॥१०॥

| | |
|--|------|
| उषार पामयणं, गेर्ल सिपाणञ्जद्वय । | |
| आहारं उयदि यद्, अन्नं यायि तद्वाचिद् | ॥१५॥ |
| अणायामसन्तोष, अणायान् यव द्वाद संतोष । | |
| आयामसन्तोष आयाण् घेव'सन्तोष | ॥१६॥ |
| अणायामसन्तोष, परस एवपाइए | |
| सम अम्भुसिर यायि, अचिरकालकयम्भि य | ॥१७॥ |
| यिन्दिण्णो वूरमोगाळे नासञ्जे विज्जयञ्जिए । | |
| तसपाणयीयरहिण, उषाराइणि योसिर | ॥१८॥ |
| पयाओ पद्ध समिइओ, समासेण यियाहिया । | |
| एत्तो य तओ गुत्तीओ योच्छामि अणुपुण्यसो | ॥१९॥ |
| सत्ता तद्देव मोसा य सत्तामोसा तद्देव य । | |
| चट्थी असत्तामोसा य, मणुगुत्तिओ चउत्थिहा | ॥२०॥ |
| संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तद्देव य । | |
| मणं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जयं अइ | ॥२१॥ |
| सत्ता तद्देव मोसा य सत्तामोसा तद्देव य । | |
| चट्थी असत्तामोसा य, वइगुत्ती चउत्थिहा | ॥२२॥ |
| संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तद्देव य । | |
| वयं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जयं अइ | ॥२३॥ |
| ठाणे निसीयणं चेव तद्देव य तुयद्दण्णे | |
| उल्लंघणपल्लंघणं, इन्दियाणं य जुज्जणं | ॥२४॥ |
| संरम्भसमारम्भे आरम्भम्भि तद्देव य । | |
| काय पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जयं अइ | ॥२५॥ |
| एयाओ पंच ममिइओ चरणस्म य पवत्तणं । | |
| गत्ती नियत्तणं युत्ता, असुभत्तसु सत्तासा | ॥२६॥ |

एसा पययणमाया, जे सम्म आयरे मुणी ।
 सो खिप्प सव्वसंसार, विप्पमुह पण्हिए ॥२७॥
 ॥ त्ति वेमि ॥ इति समिद्धो चत्थीसइम अज्झयण समत्तं ॥२४॥

॥ अह जम्मइज्ज पञ्चवीसइम अज्झयण ॥

माइणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।
 जायाइ जमजन्तम्मि, जयघोसि त्ति नामओ ॥१॥
 इन्दियगामनिगाही, मगगामी महामुणी ।
 गामाणुगाम रीयते, पत्तो बाणारसिं पुरिं ॥२॥
 बाणारसीए वड्हिया, उज्जाणम्मि मणोरमे ।
 फासुए सेज्जासंधारे, तत्थ पासमुवागए ॥३॥
 अह तेणेष कालेणं, पुरीए तत्थ माइणे ।
 विजयघोसि त्ति नामेण, जन्तं जयइ वयधी ॥४॥
 अह से तत्थ अणुगार, मासक्खमणपारणे ।
 विजयघोसस्स जम्मम्मि, भिक्खमट्ठा चयट्ठिए । ॥५॥
 समुवट्ठिय वहिं सन्तं, जायगो पडिसेहए ।
 न हु दाहामि ते भिक्ख, भिक्खू जायाहि अमओ ॥६॥
 जे य वेयविऊ विप्पा, खनट्ठा य जे इन्दिया ।
 ओइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥
 जे समत्या समुदत्तु, परमप्पाणमेव य ।
 तेसिं अन्नमिण देय, भो भिक्खू सव्वकामिय ॥८॥
 सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
 न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तमट्ठगवेसओ ॥९॥
 नमठ्ठ पाण्हं च या, न वि निव्व्राहणाय या ।
 तसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमज्जनी ॥१०॥

उषार पामपणं, मर्ल सिंघाणजल्लि ।

आहारं उपदि दहं, मनं पापि तदाविदे ॥१५॥

अणायायमसन्नाप, अणायाणं तंय दाइ संज्ञोण ।

आयायमसंज्ञोण आयाण चयसन्नाण ॥१६॥

अणायायमसंज्ञाण, परसस सुवपाइण

सम अज्झुसिर यापि, अपिरकासकयम्मि य ॥१७॥

विन्निद्धणं दूरमागावे नासन्ने विज्जयज्जिण ।

तसपाणयीयरहिण, उषाराइणि योसिर ॥१८॥

पयाओ पच्च समिइओ, समासेण वियादिया ।

एओ य तओ गुत्तीओ धोण्डामि अणुपुम्यसो ॥१९॥

सञ्चा तह्व मोसा य, सञ्चामोसा तह्व य ।

चउस्थी असञ्चमोसा य, मणगुत्तिओ चउब्बिहा ॥२०॥

सरम्मसमारम्भे, आरम्भे य तह्व य ।

मणं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जयं अइ ॥२१॥

सञ्चा तह्व मोसा य सञ्चमोसा तह्व य ।

चउस्थी असञ्चमोसा य, वइगुत्ती चउब्बिहा ॥२२॥

सरम्मसमारम्भे, आरम्भे य तह्व य ।

धयं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२३॥

ठाणो निसीयणो चेष तह्व य तुयइणो

सक्कसणपल्लसणो, इन्वियाण य जुज्जणो ॥२४॥

सरम्मसमारम्भे आरम्भम्मि तह्व य ।

कामं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जयं अइ ॥२५॥

पयाओ पंच समिइओ, चरणस्त य पवत्तणो ।

गत्ती नियत्तणो वुत्ता, असुभत्तेसु सठ्ठसो ॥२६॥

| | |
|--|------|
| ઘસપાણે ધિયાણેતા, સગહેણ ચ યાધરે । | |
| જો ન હિંસઈ તિથિહેણ, ત ઘય ઘૂમ માહણ | ॥૨૩॥ |
| ફોહા યા જહ ધા હાસા, જોહા યા જહ યા મયા । | |
| મુસં ન વયઈ જો ઇ, ત ઘય ઘૂમ માહણ | ॥૨૪॥ |
| ચિત્તમન્તમચિત્ત યા, અપ્પ વા જહ યા ઘઠું । | |
| ન ગિણહઈ અદત્ત ઝે, તં ઘય ઘૂમ માહણ | ॥૨૫॥ |
| ધિવ્વમાણુસતેરિચ્છ, જો ન સેવઈ મેઘુણ । | |
| મણસા કાયવક્કેણ, ત ઘયં ઘૂમ માહણ | ॥૨૬॥ |
| જહા પોમ જલે જાયં નોવલિપ્પહ વારિણા । | |
| એવ અલિત્ત કામેહિં, તં ઘયં ઘૂમ માહણ | ॥૨૭॥ |
| અલોભુયં મુહાજીવિં, અણગાર અકિચર્યા । | |
| અસંસત્ત ગિહત્થેસુ, ત ઘયં ઘૂમ માહણ | ॥૨૮॥ |
| જહિત્તા પુલ્લસંજોગં, નાહસગે ચ ઘ ઘથે । | |
| જો ન સજ્જઈ ભોગેસુ, તં ઘયં ઘૂમ માહણ | ॥૨૯॥ |
| પસુવન્ધા સઘ્વવેયા જઠું ચ પાવપન્મુણા । | |
| ન ત તાયન્તિ દુસ્સીર્ણં, કમ્માણિ થલવન્તિ હિ | ॥૩૦॥ |
| ન ધિ મુલ્લિહપણ સમણો, ન ઓંકારેણ ધમ્મણો । | |
| ન મુણી રણ્ણયાસેણં, કુસખીરણ તાવસો | ॥૩૧॥ |
| સમયાપ સમણો હોઈ, ધમ્મખેરણ ધમ્મણો । | |
| નાણેણ ચ મુણી હોઈ, તવેણ હોઈ તાવસો | ॥૩૨॥ |
| કમ્મુણા ધમ્મણો હોઈ, કમ્મુણા હોઈ સ્વત્તિઓ । | |
| ઘહસો કમ્મુણા હોઈ, સુરો હવઈ કમ્મુણા | ॥૩૩॥ |
| એવ પાતકર ઘઢો ઝેહિં હોઈ સિણાયઓ । | |
| સઘ્વકમ્મવિણિમ્મુર્ખં, તં ઘયં ઘૂમ માહણ | ॥૩૪॥ |

- નયિ જાણાસિ ।યમુદ્ધં, નયિ ઝમાણ ઝ મુદ્ધ । ॥૧૧॥
 નવગજાણ મુદ્ધં ઝ ધ, ઝ ધ ધમાણ ધા મુદ્ધ
 જે સમત્યા સમુદ્ધજી, પરમપ્પાણમેય ય । ॥૧૨॥
 ન તં પુમં વિયાણાસિ, અદ્ધ જાણાસિ સા મણ
 તસ્સપ્પેયદમોયમ્મ તુ, અપયન્તા તદ્ધિ તિઆ । ॥૧૩॥
 સપરિસો પંચલી દ્ધાઠં, પુચ્છદ્ધ ત મહામુણિ
 યયાણ ધ મુદ્ધં ધ્ધિ, ધ્ધિ ઝમાણ ઝ મુદ્ધ । ॥૧૪॥
 નક્કલ્લક્ષણ મુદ્ધં ધ્ધિ, ધ્ધિ ધમાણ ધા મુદ્ધ
 જે સમત્યા સમુદ્ધજી, પરમપ્પાણમેય ય । ॥૧૫॥
 પય મે સસયં સવ્યં, સાદ્ધ કહમ્મ પુચ્છિઓ
 અગ્ગિહુત્તમુદ્ધા વેયા, જમ્મદ્ધો વયસા મુદ્ધ । ॥૧૬॥
 નક્કલ્લક્ષણ મુદ્ધં વન્ધો, ધમાણ કાસપો મુદ્ધ
 જહા વન્ધં ગદ્ધાઈયા, ચિદ્ધન્તી પજ્જલીવઢા । ॥૧૭॥
 ધન્વસાણા નમંસન્તા, રત્તમં મણ્ઠારિણો
 અજાણગા જમ્મવાઈ વિચ્છામાદ્ધણસપયાં । ॥૧૮॥
 મૂઢા સચ્ચાયસયસા, માસચ્છમા દ્ધમાણો
 જો લોપ યમ્મયો બુત્તો અગેય મહિઓ જહા । ॥૧૯॥
 સયા કુસલસંવિદ્ધં તં વયં વૂમ માદ્ધયં
 જો ન સગચ્છ અગન્તું, પલ્લયન્તો ન સોયદ્ધ । ॥૨૦॥
 રમદ્ધ અચ્છવયણમ્મિ, તં વયં વૂમ માદ્ધય
 જાયરૂવ જહામદ્ધં, નિદ્ધન્તમત્તપાવગં । ॥૨૧॥
 રાગદોસમમાઈયં, તં વયં વૂમ માદ્ધય
 તવસ્સિયં ફિસં દ્ધમં અવચિયમસસોણિયં । ॥૨૨॥
 મુદ્ધવયં પત્તનિઆણં, તં વયં વૂમ માદ્ધય

॥ अह सामायारी छन्धीसइम अज्झयण ॥

- सामायारि पवस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणि ।
 अ चरिप्पण निर्गथा, तिण्णा ससारसागरं ॥१॥
- पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निमीहििया ।
 आपुच्छणा यं तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥
- पचमी छन्दणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठमो ।
 सत्तमो मिच्छाकारो उ, तहकारो य अट्ठमो ॥३॥
- अध्मुट्ठाण च नयम, वसमी उवसपदा ।
 एसा वसगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥४॥
- गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहिय ।
 आपुच्छणं सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छण ॥५॥
- छन्दणा वव्वाप्पाणं, इच्छाकारो य सारणे ।
 मिच्छाकारो य निन्दाय, तहकारो पडिस्सुए ॥६॥
- अध्मुट्ठाण गुरुपूया, अच्छणे उवसंपदा ।
 एवं तुपचसंजुत्ता सामायारी पवेइया ॥७॥
- पुव्विहम्मि चउठभाए आइम्मि समुट्ठिए ।
 भएइय पडिलेहिता, वन्दिता य उच्चो गुरु ॥८॥
- पुच्छिज्ज पज्जलिउठो किं कायउय मए इह ।
 इच्छ निओइउ भन्तं, वेयाववे व सन्मए ॥९॥
- वेयाववे निउत्तेण कायव्व अगिलायओ ।
 सग्गए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥१०॥
- दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
 उच्चो उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥
- पढमं पोरिसि सन्मएयं वीयं मएण मियायइ ।
 तइयाप भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सग्गएयं ॥१२॥

- एव गगनमात्रा, ज भवन्ति विजयमा ।
 त ममत्वा समुद्रभू, परमप्राणमेव य ॥३५॥
- एव तु ममत्वा विजय, विजयघोष माह्व ।
 समुद्राय तयं तं गु, जयघोषं महामुणि ॥३६॥
- तुष्टं य विजयघोषे, इणमुद्राद् कयजली ।
 गाह्वस्त नदाभूयं, मुष्टं, म उज्जसिय ॥३७॥
- तुष्टं जज्ञया जघ्नाणं, तुष्टं ययविऊ विऊ ।
 नाइमगविऊ तुष्टं, तुष्टं धम्माण पारगा ॥३८॥
- तुष्टं समत्था समुद्रस्तु, परमप्राणमेव य ।
 तमणुभाहं परहृष्टं, भिक्खुण भिक्खु उत्तमा ॥३९॥
- न कज्ज मम्म भिक्खुण, सिप्प निक्खमसू विया ।
 मा भविहिस्सि भयावहे, घोरे संसारमागर ॥४०॥
- उवल्लो होइ भोगेसु, अभोगी नोयलिप्पइ ।
 भागी भमइ संसार, अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥
- उल्लो सुक्खो य वो बूढा, गोत्तया महियामया ।
 वो वि आवडिया कुट्टे जो उल्लो सोऽस्थ लम्माइ ॥४२॥
- एव लग्गन्ति दुस्सेहा, जं नरा कामलानसा ।
 विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा सुक्खे उ गोत्ताए ॥४३॥
- एव से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।
 अणुगारस्म निक्खन्तो, धम्मं सोषा अणुत्तरं ॥४४॥
- स्यविप्ता पुण्यकम्माइ संजमेण तथेण य ।
 जयघोसविजयघोसा, सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥४५॥
- ॥ ति वेमि ॥ इति अन्नइज्जं पञ्चवीसइम अजगत्तर्यं समत्तं ॥२५॥

| | |
|--|------|
| अणुवाधिय अवलियं, अणुवधिममोसलिं चेय । | |
| छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिधिसोहणं | ॥२५॥ |
| आरमडा सम्मडा, वज्जेयड्या य मोसली उड्या । | |
| पण्णोड्या चउस्थी, विक्खित्ता वेड्या छट्ठी | ॥२६॥ |
| पसिडिलपत्तम्बलोला, एगामोसा अणोगरुवधुणा । | |
| कुण्ड पमाणे पमाणं, संकियगणणोघणं कुआ | ॥२७॥ |
| अणुणाइरित्तपडिलेहा, अविववासा तहेव य । | |
| पढम पय पसत्थं, सेसाणि उ अणसत्थाइ | ॥२८॥ |
| पडिलेहण कुणन्तो, मिहो कहं कुण्ड जणवयकहं वा । | |
| वेइ व पवन्त्ताणं, वाएइ सय पडिच्छइ वा | ॥२९॥ |
| पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ वणस्सइ-ससाण । | |
| पडिलेहणापमत्तो, छण्डं पि विराहणो होइ | ॥३०॥ |
| पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ तसाणं । | |
| पडिलेहणाआउत्तो, छण्डं सरक्खणो होइ | ॥३१॥ |
| उड्याए पोरिसीए, भच्च पाणं गवेसए । | |
| छण्डं अन्नतराए, कारणम्मि समुट्ठिए | ॥३२॥ |
| वेयण वेयावणे, इरियट्ठाए य संजट्ठाए । | |
| उह पाणवत्तियाए, छट्ठ पुण धम्मचिन्ताए | ॥३३॥ |
| निगगन्थो धिइमन्तो, निगगन्थी वि न फरेज्ज छहिं चेय । | |
| ठण्णेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ | ॥३४॥ |
| आयंके उवसगो, तित्तिक्कया वम्मणेरगुत्तीसु । | |
| पाणिदया उवहेउ, सरीरवोच्छेयणाट्ठाए | ॥३५॥ |
| अयसेसं मण्डग गिम्भ, चक्खुसा पडिलेहए । | |
| परमउज्जेयणाओ, विहार विहरण मुणी | ॥३६॥ |

| | |
|---|------|
| आमादे माये उपया, पाये माये चढण्या । | |
| पिप्तासाण्णु मायेमु विणया हयइ पोरिसी | ॥१३॥ |
| अंगुलं सत्तरोणं, पत्तरोणं च दुरगलं । | |
| पट्टप हायप पायि, मायेणं चउरगलं | ॥१४॥ |
| आसाढयट्टल पत्तरो, मइयण कसिण य पोये य । | |
| फगुणयइसाहेमु य, योदय्या ओमरत्ताओ | ॥१५॥ |
| जेट्टामुले आसाढसायणे, इदि अंगुलहि पडिलेहा । | |
| अट्टहि वीयत्तयम्मि, तइय वस अट्टहि चउत्थे | ॥१६॥ |
| रवि पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा पियक्खणो । | |
| तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाणसु चउसु वि | ॥१७॥ |
| पढमं पोरिसि सग्गय्यं, वीय म्मण क्कियायइ । | |
| तइयाप निइमोक्खं तु, चउत्थी मुज्जो वि सग्गय्यं | ॥१८॥ |
| जं नेइ जया रत्ति, नक्खत्तं तम्मि नमचइइमाप । | |
| सपत्ते विरमेज्जा सग्गय्यं पओसकालम्मि | ॥१९॥ |
| तम्मेव य नक्खत्ते गयणचउढभागसावसेसम्मि । | |
| वेरत्तिपं पि क्कलं, पडिलेहिता सुणी कुज्जा | ॥२०॥ |
| पुब्बित्तम्मि चउइमाप, पडिलेहिताण भयत्तयं । | |
| गुरु वन्दिस्तु सग्गय्यं, कुज्जा दुक्खसपिमोक्खणं | ॥२१॥ |
| पोरिसीय चउइमाप वन्दिताण तओ गुरुं । | |
| अपडिक्कमिप्ता कालस्स, माययां पडिलेहप | ॥२२॥ |
| मुहपोत्ति पडिलेहिता, पडिलेहिण गोच्छग । | |
| गोच्छगल्लइयंगुलिओ, वत्थाइ पडिलेहप | ॥२३॥ |
| उट्ट धिरं अतुरियं पुब्बं ता वत्थमेव पडिलेहे । | |
| तो विइयं पण्णेहे, तइय च पुखो पमत्तिज्ज | |

| | |
|---|------|
| पारियकासस्तगो, धन्विताय तथो गुरुं । | |
| राश्यं तु अर्ह्यारं, आलोप्य जहकम्म | ॥४६॥ |
| पडिकमित्तु निस्तप्पो, धन्विताय तथो गुरुं । | |
| कादस्तगं तथो कुब्जा, सठ्ठदुक्खविमोक्खणं | ॥४७॥ |
| किं तव पडिधम्मामि, एवं तत्थ विचिन्तए । | |
| कादस्तगं तु पारित्ता, वन्दई य तथो गुरुं | ॥४८॥ |
| पारियकासस्तगो, धन्विताय तथो गुरुं । | |
| तथं संपडिव जेज्जा, कुब्जा सिद्धाय संथव | ॥४९॥ |
| एसा सामायारी, समासेण वियाहिया । | |
| जं चरित्ता बहू जीवा, तिएणा ससार सागरं | ॥५०॥ |
| त्ति वेमि ॥ इति सामायारी छप्पीसइमं अज्झयण समत्तं ॥२६॥ | |

॥ अह खलुंकिज्ज सत्तवीसइम अज्झयण ॥

| | |
|--|-----|
| थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए । | |
| आइयणे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंघए | ॥१॥ |
| वहणे हवमाणस्स, वन्तारं अइवत्तई । | |
| ओगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई | ॥२॥ |
| खल्लुके ओ उ ओपइ, विहग्माणो फिलिस्सई । | |
| असमाहिं च वेएइ, तोलओ से य भज्जई | ॥३॥ |
| एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विन्धइडभिकखण । | |
| एगो भंजइ समित्तं, एगो उप्पहपट्ठिओ | ॥४॥ |
| एगो पडइ पासेण, निवेसइ निवत्तई । | |
| एकुइइ उप्पिठइ, सठे वालगयी यए | ॥५॥ |
| माई मुद्रेण पडइ, कुद्रे गच्छे पडिप्पहं । | |
| मयलक्खेण विट्ठई, वेगेण य पहावई | ॥६॥ |

| | |
|--|------|
| पत्र भाष पारिधीष, निम्नविष्ठाण भाषण । | |
| सम्भय व तत्रा कुञ्जा, सन्ध्यायविभाषण | ॥३५॥ |
| पारिभाष पत्रभाष, पदित्तण तत्रा गमं । | |
| पदित्तमिष्ठा कालस्स, सेग्गं तु पदित्तण | ॥३६॥ |
| पामयणुषारभूमि च, पदिलेहिज्ज जयं जइ । | |
| काउस्सगं तत्रा कुञ्जा, सन्ध्यायविमोक्खण | ॥३७॥ |
| दयमियं च अइयारं, चित्तिज्जा अणुपुण्यमो । | |
| नाण य दमणे चेष, चरित्तमि तहम य | ॥३८॥ |
| पारियकाउस्समो, पन्विष्ठाण दमो गुरु । | |
| दयमिय तु अइयार आलोएज्ज जहणम्म | ॥३९॥ |
| पदित्तमित्तु निस्सद्धो पन्विष्ठाण तत्रो गुरु । | |
| काउस्सगं तत्रो कुञ्जा सन्ध्यायविमोक्खण | ॥४०॥ |
| पारियकाउस्सगो पन्विष्ठाण तत्रो गुरु । | |
| धुइमगलं च काउण, कालं तु संपदिलेहण | ॥४१॥ |
| पठमं पोरिसि सम्भयं, विइय क्खण म्मियायइ । | |
| तइयाए निइमोक्ख तु, सम्भयं तु चउत्थिण | ॥४२॥ |
| पोरिसीण चउत्थीण, कालं तु पदिलेहिया । | |
| सम्भयं तु तत्रो कुञ्जा, अमोहेन्तो असज्ज | ॥४३॥ |
| पोरिसीण चउत्थीण, पन्विष्ठाण तत्रो गुरु । | |
| पदित्तमित्तु कालस्स, कालं तु पदिलेहण | ॥४४॥ |
| आगए कायवोरसगो, सन्ध्यायविमोक्खण | |
| काउस्सगं तत्रो कुञ्जा, सन्ध्यायविमोक्खण | ॥४५॥ |
| राइयं च अइयारं, चित्तिज्ज अणुपुण्यमो । | |
| नाणमि दंसणमि य, चरित्तमि तथमि य | ॥४६॥ |

॥ अह मोक्स्वमग्गगई अट्ठावीसइमं अज्झयस्य ॥

| | |
|--|------|
| मोक्स्वमग्गगई तथं, सुणेह जिणभासिय । | |
| चचकारणसंजुत्तं, नाणवंसणलक्खणं | ॥१॥ |
| नाण च दसणं वेध, चरित्तं च तथो तहा । | |
| एस मम्मू त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं | ॥२॥ |
| नाण च दसणं वेध, चरित्तं च तथो तहा । | |
| एयंममामणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइ | ॥३॥ |
| तत्थ पंचविहं नार्ण, सुय आमिनिवोहियं । | |
| ओहिनाण तु तइयं, मणनार्णं च केवलं | ॥४॥ |
| एयं पंचविहं नार्ण, दब्बाणं य गुणाणं य । | |
| पज्जवाणं च सव्वेसिं, नाण नाणीहिं वेसिय | ॥५॥ |
| गुणाणमासओ दब्बं, एादब्बस्सिया गुणा । | |
| लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया मवे | ॥६॥ |
| धम्मो अहम्मो आगास, कालो पुग्गल-जन्तवो । | |
| एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं | ॥७॥ |
| धम्मो अहम्मो आगासं, दब्बं इक्किममाहिय । | |
| अणन्ताणि य दब्बाणि कालो पुग्गलजन्तवो | ॥८॥ |
| गइल्लक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणल्लक्खणो । | |
| भायणं सव्वदब्बाणं, नहं ओगाहल्लक्खणो । | ॥९॥ |
| वत्तणाल्लक्खणो कालो, जीवो उवओगल्लक्खणं । | |
| नाणेण च वंसणेणं च, सुहेणं य तुहेणं य | ॥१०॥ |
| नाणं च दसणं वेध, चरित्तं च तथो तहा । | |
| पीरिय उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं | ॥११॥ |
| सइन्धयार-उज्जोओ, पमा छाया तथो इ पा । | |
| वण्णरसगन्धफासा, पुग्गलार्णं तु लक्खणं | ॥१२॥ |

- धिमान्न धिन्द्रइ येहि, दुरन्तो भज्जण जुगं ।
 येवि य मुग्गुयाइत्ता, उज्जहिता पत्ताणए ॥५॥
 म्बलुक्का जारिसा जाज्जा, दुस्सीसा वि द्द वारिसा ।
 जाइया धम्मजाणम्मा, भज्जन्ती धिइदुब्बला ॥६॥
 इत्थीगारविण एगे, एगेऽत्थ रसगारये ।
 सायागारविण एगे, एगे मुचिरफोहणे ॥६॥
 भियस्यालसिए एगे, एगे ओगाणभीरुए ।
 धद्वे एगे अणुसासम्मी, इअहिं कारणेहि य ॥१७॥
 सो वि अन्तरभासिद्धे, दोसमेव पकुन्त्यइ ।
 आयरियाण तु ययणं, पेडिफूलेइऽभिक्खणं ॥११॥
 न सा ममं यियाणाइ, न यि सा मम्म वादिई ।
 निग्गया होहिइ मत्ते, साइ अन्नोत्थ वज्जत ॥१२॥
 पेसिया पत्तिवंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ ।
 रायवेट्ठिं च मज्जन्ता करेन्ति भिठ्ठिं मुहे ॥१३॥
 वाइया संगहिया चेव मत्तपाणेण पेसिया ।
 जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति विसो विसिं ॥१४॥
 अह सारही विचिन्तेइ, खलुंकेहिं समागओ ।
 किं मम्म दुट्ठसीयेहिं, अप्पा मे अबसीयई ॥१५॥
 जारिसा ममसीसाओ वारिसा गलिगइहा ।
 गलिगइहे जहिचार्यं वटं पगिण्णई सव ॥१६॥
 मिदमइवसपणो, गम्भीरो सुसमाहिओ ।
 विहरइ महिं महणा, सीलमूण्य अप्पणा ॥१७॥
 ॥ ति वेमि ॥ खलकिब्बं सत्तवीसइमं अम्मज्जर्यं समत्त ॥१७॥

| | |
|---|------|
| वसणनाणचरित्ते, तवविणप सच्चसमिद्गुत्तीसु । | |
| सो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम | ॥२५॥ |
| अणमिमाहियकुविट्ठी, सखेवरुइ त्ति होइ नायब्बो । | |
| अविसारओ पवयणे, अणमिमाहिओ य सेसेसु | ॥२६॥ |
| सो अत्थिक्कायधम्मं, सुयधम्म खलु चरित्तधम्म च । | |
| सइइइ जिण्णाभिहियं, सो धम्मरुइ त्ति नायब्बो | ॥२७॥ |
| परमत्थसयधो वा, सुविट्ठपरमत्थसेवण वा वि । | |
| वायन्नकुहुंसणवज्झया, य सम्मत्तसइइणा | ॥२८॥ |
| नत्थि चरित्त सम्मत्तविट्ठण वसणे च भइयन्व । | |
| सम्मत्तचरित्ताइं, जुगर्घ पुण्य य सम्मत्त | ॥२९॥ |
| नावंसणित्त नत्थं, नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा । | |
| अगुणित्त नत्थि भोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निब्बाणं | ॥३०॥ |
| निस्संक्रिय-निक्कंत्तिय निम्बिठिगिच्छा अमूढविट्ठी य । | |
| उवबूह यिरीकरणे, वच्छल्लपभाशणे अट्ठ | ॥३१॥ |
| सामाइयत्थ पढमं, छेवोवट्ठावणं भवे वीय । | |
| परिहारविसुद्धीय, सुहुम तह सपराय च | ॥३२॥ |
| अकसायमइक्खाय, छत्तमत्थस्स जिणस्स वा । | |
| एय अचरित्तकर चारित्त होइ आहिय | ॥३३॥ |
| तथो य वुविहो वुत्तो, वाहिरव्वन्तरो तहा । | |
| वाहिरो छम्बिहो वुत्तो, एमेवव्वन्तरो तथो | ॥३४॥ |
| नाणेण जाणई भावे दसणेण य सइइ । | |
| अरित्तेण निगियहोइ, तवेण परिसुम्भाइ | ॥३५॥ |
| सवेत्ता पुण्यफम्माइं, सजमेण तवेण य । | |
| सव्ववुक्खसपहीयाट्ठा, पक्कमन्ति महसियो | ॥३६॥ |

॥ त्ति वेमि ॥ इति मोक्खमग्गाइ समत्ता ॥२८॥

| | |
|---|------|
| एगर्त्तं च पुहर्त्तं च, सखा सठाणमेष य । | |
| संजोगा य पिभागा य, पञ्जवाण तु जप्पसण | ॥११॥ |
| जीवाजीवा य यधो य, पुण्णं पावाऽसधो सहा । | |
| संघरो निग्गरा मोक्खो, सन्तेण सहिया नव | ॥१४॥ |
| तहियाणं तु भाषाणं, सम्भावे उवपसण । | |
| भावेण सहहन्तस्स, सम्मत्तं तं यियाहियं | ॥१५॥ |
| निसग्गुवपसरह, आणारुहं सुत्त-भीयरुहमेव । | |
| अभिगम वित्थारुहं, किरिया संखेय घम्मरुहं | ॥१६॥ |
| भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपाव य । | |
| सह मम्मइयासवसवरो य रोपह उ निस्सग्गो | ॥१७॥ |
| ओ जिणविट्ठे भावे, चवत्थिहे सहहाइसयमेव । | |
| एमेव नन्नह त्ति य ॥ निसग्गारुह त्ति नायव्वो | ॥१८॥ |
| एव चैव उ भावं, उवत्थे ओ परेण सहहं । | |
| उवमत्थेण अयोगेण व उवपसरह त्ति नायव्वो | ॥१९॥ |
| रागो दोसो मोहो, अन्नाण अस्स अषगयं होह । | |
| आणाए रोयतो, सो कसु आणारुहं नाम | ॥२०॥ |
| ओ सुत्तमहिज्जन्तो, सुण्ण ओगाहं उ सम्मत्तं । | |
| अगेण दाहिरण व सो सुत्तरुह त्ति नायव्वो | ॥२१॥ |
| एगेण अयोगाह पयाह जो पसरहं उ सम्मत्तं । | |
| उवप व्व तल्लविन्दु, सो भीयरुह त्ति नायव्वो | ॥२२॥ |
| सा होह अभिगमरुह, सुयनाण जेण अत्थओ विट्ठं । | |
| एक्कारम अगाह, पइण्णग विट्ठिवाओ य | ॥२३॥ |
| दव्वाण मव्वभावा, मव्वपमाणेहि अस्स उवसत्ता । | |
| सव्वाहि नय्यविट्ठि, वित्थारुहं त्ति नायव्वो | ॥२४॥ |

- वसणनाणवरित्ते, तवविणप सच्चसमिद्गुत्तीसु ।
जो फिरियाभावरुई, सो खलु फिरियारुई नाम ॥२५॥
- अणभिमाहियकुविट्ठी, सखेवरुई त्ति होइ नायब्बो ।
अविसारब्बो पघयणे, अणभिमाहिब्बो य सेसेसु ॥२६॥
- जो अत्थिकायधम्मं, सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
सइहइ जिण्णाभिहिय, सो धम्मरुई त्ति नायब्बो ॥२७॥
- परमत्थसयवो वा, सुविट्ठपरमत्थसेवणं वा पि ।
भावन्नकुदुसणवज्जणा, य सम्मत्तसइहणा ॥२८॥
- नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं वसणे उ मइयव्वं ।
सम्मत्तचरित्ताइ, जुगवं पुब्बं य सम्मत्त ॥२९॥
- नावंसणित्तं नाणं, नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणित्तं नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निब्बाण ॥३०॥
- निस्संक्रिय-निकंजिय निम्बिविगिच्छा अमूढविट्ठी य ।
उपवूहं यिरीकरणे, वच्छद्वपमाश्रणे अट्ठ ॥३१॥
- सामाज्यत्थं पठमं, छेदोषट्ठापणं भवे वीय ।
परिहारविसुद्धीय, सुहुमं तह सपरायं च ॥३२॥
- अकसायमइक्खाय, छत्तमत्थस्स जिणस्स वा ।
एयं चयरित्तकर, चारित्तं होइ आहिय ॥३३॥
- तयो य तुविहो यत्तो, बाहिरव्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्वियहो वुत्तो, पमेवव्भन्तरो तयो ॥३४॥
- नाणेण आणइ भावे वसणेण य सइह ।
चरित्तेण निगिण्णाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥३५॥
- खेवेत्ता पुब्बकम्माइ, सज्जमेण तवेण य ।
सम्यदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति मइसिणो ॥३६॥

॥ त्ति पेमि ॥ इति मोक्खममगाइ समत्ता ॥३७॥

॥ अह सम्मत्तपरकम एगूणतीसइम अउमयण ॥

सुय मे आउस-तण भगवया एयमन्हायं । इह लल्लु
सम्मत्तपरकमे नाम अउमयणे समणेण भगवया महावीरस
कासवेणं पवइए, ज सम्मं सहिहत्ता पत्तिइत्ता रायइत्ता
फसिहत्ता पालइत्ता तीरिहत्ता फिहत्ता सोहइत्ता आराहत्ता
आणए अणुपालइत्ता वहवे जीवा सीमन्ति बुमन्ति मुहन्ति
परिनिव्वायन्ति सव्वदुखाणमन्त फरेन्ति । तस्स ए अयमहे
एवन्माहिज्जइ, तं जहा — सवेगे १ निव्वए २ धम्मसद्या ३
गुरुसाहन्मियसुखसुखाया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६
गरिहणया ७ सामाए ८ चउव्वीसत्थवे ९ धन्दण १० पडि-
कमणे ११ काउस्सगे १२ पव्वकसाणे १३ थवयुइमंगले १४
कालपडिलेहणया १५ पायच्छिस्तफरणे १६ क्षमावयणया १७
सक्काए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० पडियट्ठणया
२१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४
एगन्नामयसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ बोवाणे २८
सुहसाए २९ अप्पडिक्कया ३० विविचसयणासणसेवणया ३१
विणियट्ठणया ३२ संभोगपव्वकसाणे ३३ उवहिपव्वकसाणे ३४
आहारपव्वकसाणे ३५ कसायपव्वकसाणे ३६ जोगपव्वकसाणे
३७ सरिरपव्वकसाणे ३८ सहायपव्वकसाणे ३९ मत्तपव्वकसाणे
४० सम्भावपव्वकसाणे ४१ पडिस्खणया ४२ वेयावणे ४३
सव्वगुणसंपुणया ४४ धीयरगया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७
मइवे ४८ अज्जवे ४९ भावसणे ५० फरणसणे ५१ जोगसणे
५२ मणगुत्तया ५३ अयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमा-
धारणया ५६ अयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८
ताणसंपन्नया ५९ वंसणसपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१

यनिमाहे ६२ चक्षिन्वियनिमाहे ६३ घाणिन्वियनिमाहे ६४
जिठिभन्वियनिमाहे ६५ फासिन्वियनिमाहे ६६ कोहविजए ६७
माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जवोस
मिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

संवेगेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । संवेगेण अणुत्तर धम्म
सदं जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हन्वमागच्छइ ।
अणुत्तराणुअधिकोहमाणमायालोमे खवेइ । नव च कम्मं न
वन्थइ । तप्पबइयं च ए मिच्छत्तविसोहिं काऊण वंसणाराहए
भवइ । वंसणविसोहीए य ए विमुद्धाए अत्येगएइ तेणेष
भवमाहणेणं सिक्कई । विसोहीए य ए विमुद्धाए तव पुणो
भवमाहणं नाइक्कमइ ॥१॥

निव्वेएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । निव्वेएणं दिव्वमाणुस
तेरिच्छिणसु कामभोगेसु विव्वेयं हव्वमागच्छइ । सम्भविसणसु
विरज्जइ । सम्भविसणसु विरज्जमाण आरम्भपरिचाय करेइ ।
आरम्भपरिचाय करेमाणे संसारमगं घोच्छिन्वइ, सिद्धिममा
पडिघजे य इवइ ॥२॥

धम्मसद्धाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । धम्मसद्धाए ण
सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ । आगारधम्मं च ए चयइ ।
अणुत्तराए ण जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं ज्ञेयणभेयण
संजोगाईणं घोच्छेयं करेइ अठ्ठावाहं च सुहं निव्वत्तेइ ॥३॥

गुरुसाहम्मियसुसुसणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ ? ।
गुरुसाहम्मियसुसुसणाए ण विणयपडिपत्तिं जणयइ । विणय
पडिघन्ते य ए जीवे अणुत्तरासायणसीले नेरइयसिरिक्खजोणिय-
मणुस्तदेयदुम्माईओ निरुम्भइ । वणसंजणभत्तिघट्टमणायाए

॥ अह सम्मत्तपरफम एगूणतीसइम अउमयण ॥

सुय मे आउस-तण भगयया एवमक्खाय । इह एतु
सम्मत्तपरफमे नाम अउमयणे समणेण भगयया महावीरव
फासवेण पवेइए, ज सम्मं सइहिच्चा पत्तिइच्चा रोयइच्चा
फसिच्चा पालइच्चा तीरिच्चा फिच्चा सोइइच्चा आराइच्चा
आणए अणुपालइच्चा यहवे जीवा सीगमन्ति युज्जमन्ति मुबन्ति
परिनिब्बयायन्ति सन्वदुक्खाणमन्त करेन्ति । तस्स एं अयमद्वे
एवम्माहिज्जइ, तं जहा — सवेगे १ निब्बेए २ धम्मसद्व ३
गुरुसाहम्मियसुस्सुसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६
गरिहणया ७ सामाए ८ अउब्धीसत्थवे ९ धन्वण १० पडि
कमणे ११ काउत्सगो १२ पणक्खाणे १३ यवयुइमंगले १४
कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ समावयणया १७
सक्खाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० पडियट्टणया
२१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४
एगमासणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ बोवाणे २८
सुहसाए २९ अप्पडिवट्टया ३० विविचसयणासणसेक्खणया ३१
विणियट्टणया ३२ संमोगपणक्खाणे ३३ सवहिपणक्खाणे ३४
आहारपणक्खाणे ३५ कसायपणक्खाणे ३६ ओगपणक्खाणे
३७ सरीरपणक्खाणे ३८ सहायपणक्खाणे ३९ मत्तपणक्खाणे
४० सम्भावपणक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावसे ४३
सम्बगुणसंपुणया ४४ वीयरगया ४५ सन्ती ४६ मुत्ती ४७
मइवे ४८ अज्जेवे ४९ भावसणे ५० करणसणे ५१ ओगसणे
५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमा
धारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८
नाणसंपन्नया ५९ वसणसपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दि

पश्चिमण्येषु भन्ते जीवे किं जणयइ ? । प० धयच्चिदाणि
पिहेइ । पिहियवयच्चिहे पुण जीवे निरुद्धासवे असवलचरित्ते
अट्टसु पधयणमायासु उवचत्ते अपुहत्ते सप्पणिहिण विहरइ ॥११॥

कात्तसमोण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । कात्तस्समोण तीयपट्टु
प्पन्न पायच्छित्त विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वु
यहियण ओहरियमरु व्य भारवहे पसत्थग्गणोवगए सुह
सुहेण विहरइ ॥१२॥

पक्कस्साणेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । प० आसवदाराइ
निरुम्भइ । पक्कस्साणेण इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहं गए
य ए जीवे सव्वदब्बेसु विणीयतण्हे सीइमूप विहरइ ॥१३॥

धवयुइमगलेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । य० नाणदंसण
चरित्तवोहित्ताम जणयइ । नाणदंसणचरित्तवोहित्तामसपप्पे य ए
जीवे अन्तकिरिय कप्पविमाणोववत्तिग आराहण आराहेइ ॥१४॥

कालपडिलेहणयाए एं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । का०
नाणावरणिग्गं कम्म सवेइ ॥१५॥

पायच्छित्तकरणेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । पा० पावकम्म
विसोहिं जणयइ । निरइयार वावि भवइ । सम्मं च ए
पायच्छित्त पडिवन्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहइ, आयार
च आयारफलं च आराहइ ॥१६॥

समावणयाए ए भन्त जीवे किं जणयइ ? । स० पत्थायण
भाव जणयइ । पत्थायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयणीयसत्तेसु
मिच्चीभावमुप्पाएइ मिच्चीभावमुवगए यायि जीवे भावविसोहिं
काउए निम्भए भवइ ॥१७॥

सम्भएण भन्त जीवे किं जणयइ ? । स० नाणापरणिग्गं
कम्मं सवेइ ॥१८॥

મણુસ્સવવગદ્ધો નિષ્કથ્થુ સિદ્ધિ સોગ્ગાઈ ચ વિસોદ્ધિ ।
પસત્થાઈ ચ ણં ધિણયમૂલાઈ સઠ્ઠવ્વજ્ઞાઈ સાદ્ધિ । અન્ન ય
યદ્ધવે જીવ ધિણિત્તા મયદ્ધ ॥૮૮॥

આતોયણાપ ણં મન્તે જીવે કિં જણયદ્ધ ? । આતોયણાપ્પ
માયાનિયાણમિચ્છાર્થસણસહ્ણણ મોક્કસમમાવિગ્ધાણ અણ્ઠવસં
સારવન્ધયાણં ઉદ્ધરણં ફરેદ્ધ । રઙ્ગુભાથ ચ જણયદ્ધ । રઙ્ગુ
માથપઢિવન્તે ય ણં જીવે અમાદ્ધ રૂપીવેયનપુસગવેયં ચ ન વન્ધદ્ધ ।
પુચ્છવદ્ધં ચ ણં નિચ્છરેદ્ધ ॥૮૯॥

નિન્દણાપ ણં મન્તે જીવે કિં જણયદ્ધ ? । નિન્દણાપ ણ
પચ્છાણુતાર્થ જણયદ્ધ । પચ્છાણુતાવેણં ધિરઅમાણે કરણગુણસેદ્ધિ
પઢિવન્તેદ્ધ । કરણગુણસેદ્ધિપઢિવ ન ય ણં અણગારે મોહણિચ્છં
કમ્મં અઘાપદ્ધ ॥૯૦॥

ગરહણાપ ણં મન્તે જીવે કિં જણયદ્ધ ? । ગરહણાપ અપુર
ક્કારં જણયદ્ધ । અપુરક્કારગણ ણં જીવે અપ્પસત્થેદ્ધિતો જોગેદ્ધિતો
નિયત્થદ્ધ, પસત્થ ચ પઢિવન્તેદ્ધ । પસત્થજોગપઢિવન્તે ય ણં
અણગારે અણન્તણાઈ પચ્છવે સવેદ્ધ ॥૯૧॥

સામાદ્ધણં મન્તે જીવે કિં જણયદ્ધ ? । સામાદ્ધણં સાવચ્છ-
જોગધિરં જણયદ્ધ ॥૯૨॥

ચરચ્છીસત્થણં મન્તે જીવે કિં જણયદ્ધ ? । ચરચ્છીસત્થણં
દંસણવિસોદ્ધિ જણયદ્ધ ॥૯૩॥

વન્દણણં મન્તે જીવે કિં જણયદ્ધ ? । વન્દણણં નીયાગોય
કમ્મં સવેદ્ધ । રચ્છાગોયં કમ્મ નિષ્કથ્થુ । સોદ્ધર્મ ચ ણં અપદ્ધિ
દ્ધ્યં આણાપ્પલં નિચ્છત્થેદ્ધ । દાહિણમાથ ચ ણં જણયદ્ધ ॥૯૪॥

संजमरणं भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । स० अणुह्यत्तं जग्ययइ ॥२६॥

तवेण भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । तवेण घोषाण जग्ययइ ॥२७॥

घोषाणेण भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । घो० अफिरियं जग्ययइ । अफिरियाए भविता तप्पो पच्छा सिग्गह, युग्गह मुषह परि निठ्वायइ सव्वदुस्साणमन्तं करेइ ॥२८॥

सुहसाएणं भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । सु० अणुसुयत्तं जग्ययइ । अणुसुयाए ण जीवे अणुकम्पए अणुठमहे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं सवेइ ॥२९॥

अप्पड्विद्वयाए णं भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । अ० निस्सगत्तं जग्ययइ । निस्सगत्तेणं जीवे एगे एगमाचित्ते विद्या य राओ य असक्कमाणे अप्पड्विद्वे यावि विहरइ ॥३०॥

विचित्तसयणासययाए ण भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । वि० चरित्तगुत्तिं जग्ययइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विविताहारे वदचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपड्विद्वन्ते अट्ठथिहकम्मगट्ठिं निज्जरेइ ॥३१॥

यिनियट्ठयाए णं भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । वि० पावकम्माणं अकरणयाए अभ्मुट्ठेइ । पुठ्ठयट्ठाणं य निज्जरणयाए स नियत्तेइ । तप्पो पच्छा चाउरन्तं ससारकन्तारं वीइवयइ ॥३२॥

समोगपडक्खाणेण भन्ते जीवे किं जग्ययइ ? । सं० आलम्बणाइ सवेइ । निरालम्बणस्स य आषट्ठिया योगा भवन्ति । सपणं लामेण सतुस्सइ, परलाम नो आसायेइ, परलाम नो तक्केइ, नो पीहइ नो पत्येइ, नो अभिलसइ । परलाम अणुस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्येमाणे अणुभिलसमाणे दुच्चं सुह सेज्ज उषसंपज्जिता ण विहरइ ॥३३॥

पायणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । पा निज्जरं जणयइ ।
 सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्ठप । सुयस्स अणु-
 सज्जणाए अणासायणाए वट्ठमाणे तित्थधम्म अवलम्बइ । तित्थ-
 धम्मं अयलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जयसाणे भयइ ॥१६॥

पडिपुच्छणायाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । प० सुच्छं
 तदुभयाइ विसोइइ । फंसामोहणिज्जं कम्म वोच्छिन्दइ ॥२०॥

परियट्ठणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । प० वज्जणां
 जणयइ, वंजणसद्धिं च उप्पापइ ॥२१॥

अणुप्पेहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । अ० आत्यवज्जाओ
 सत्तकम्मप्पगढीओ धणियवन्धणवज्जाओ सिद्धिलवन्धणवज्जाओ
 पकरेइ । वीइकमल्लट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ । तिव्वा
 णुभावाओ मन्वाणुभावाओ पकरेइ । बहुपपसग्गाओ अप्प
 प्सग्गाओ पकरेइ । आउयं च णं कम्म सिया वन्धइ, सिया
 नो वन्धइ । असायावेयणिज्जं च णं कम्म नो मुज्जो मुज्जो
 उवचिणाइ । अणाइय च णं अणावदमां वीइमद्धं चाउरन्त
 संसारकन्तारं सिप्पावेव वीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । ध० निज्जरं
 जणयइ । धम्मकहाए णं पक्कयणं पभावेइ । पक्कयणपभावेणं
 जीव आगमेसस्स महत्ताए कम्म निवन्धइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणायाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । सु०
 अभाणं खवेइ न य संकिळिस्सइ ॥२४॥

एगमामणसनिवेसणायाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ? । ए०
 चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥

कम्मसे सवेइ, जहा-वेयणिण्ड आठय नाम गोय । तओ पच्छा सिज्जइ वुज्जइ मुच्चइ परिनिब्बायइ सव्वधुक्खणामन्त करेइ ॥४१॥

पडिरुवयाए ए मन्ते जीवे किं जणयइ ? । प० साधवियं जणयइ । लघुभूए ए जीवे अप्पमत्ते पागडलिगे पसत्थलिगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्त सठवपाणभूयजीवसत्तेसु धीस सणिज्जरुवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए यिउलतवसमिइसमन्नागए याधि भवइ ॥४२॥

वेयावसेणं मन्ते जीवे किं जणयइ ? । वे० तित्थयरनामगोत्त कम्म निवधइ ॥४३॥

सव्वगुणसंपन्नायाए ए मन्ते जीवे किं जणयइ ? । स० अपुणरावत्ति जणयइ । अपुणरावत्ति पत्तए य ए जीवे सारीर माणसाण दुक्खाण नो भागी भवइ ॥४४॥

धीयरागयाए ए मन्ते जीवे किं जणयइ ? । धी० नेहाणुवन्ध याणि तण्हाणुवन्धणाणि य वोच्छिन्वइ, मणुभामणुत्तेसु सह धरिसरुवरसगन्धेसु सेय विरज्जइ ॥४५॥

खन्तीए ए मन्ते जीवे किं जणयइ ? । ख० परीसहे जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए ए मन्ते जीवे किं जणयइ । मु० अकिंषणं जणयइ । अकिंषणे य जीवे अत्थलोलाण पुरिसाणं अपत्थणिण्डो भवइ ॥४७॥

अग्गवयाए ए मन्ते जीवे किं जणयइ ? । अ० काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायण जणयइ । अविसंवायण सपन्नायाए ए जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

उपहिपचवस्त्राण्येषां भन्त जीव किं जणयइ ? । उ० अपक्षिमन्त्र
जणयइ । निरुचहिण ए जीवे निरुद्धी उपहिमन्तरण य न
सकिजिस्सइ ॥३४॥

आहारपचवस्त्राण्येषां भन्त जीवे किं जणयइ ? । आ० जीवि
यासंसपपभोगं बोद्धिइइ । जीयियासंसपपभोगं बोद्धिइइ
जीव आहारमन्तरणं न सकिजिस्सइ ॥३५॥

कमायपचवस्त्राण्येषां भन्त जीवे किं जणयइ ? । क० वीयरग-
भावं जणयइ । वीयरगभाषपडिबन्ने वि य ए जीवे समसुइ
दुक्खे भवइ ॥३६॥

जोगपचवस्त्राण्येषां भन्त जीवे किं जणयइ ? । जो० अब्रोगत्त
जणयइ । अब्रोगी ए जीवे नय कम्मं न वचइ, पुम्बवदं
निज्जरेइ ॥३७॥

सरीरपचवस्त्राण्येषां भन्ते जीव किं जणयइ ? । स० सिद्धाइ
सयगुणकिट्ठणं निज्जरेइ । सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य ए जीवे
लोनागमुवगए परमसुखी भवइ ॥३८॥

सहायपचवस्त्राण्येषां भन्त जीव किं जणयइ ? । स० एगीभावं
जणयइ । एगीभाषभूए वि य ए जीवे एगत्वं भावेभाणो अप्प
सदे अप्पमंके अप्पकलाइ अप्पकत्ताए अप्पतुमत्तुमे संजमयत्तुमे
सवरवहुले समाहिण यावि भवइ ॥३९॥

भत्तपचवस्त्राण्येषां भन्ते जीवे किं जणयइ ? । भ० अण्णगाइ
भवसयाइ निरुम्भइ ॥४०॥

सम्भावपचवस्त्राण्येषां भन्त जीव किं जणयइ ? । स० अनि
यट्ठि जणयइ । अनियट्ठिपडिबन्त य अण्णगार अत्तारि केयलि

कायसमाहारण्याप एं भन्ते जीवे किं जणयइ ?। का० चरित्त
पञ्चवे विसोहेइ । चरित्तपञ्चवे विसोहिता अहन्स्त्रायचरित्तं
विसोहेइ । अहवस्त्रायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मसे
एवेइ । तच्चो पच्छा सिग्गइ दुग्गइ मुच्चइ परिनिब्बायइ सव्वदु
क्खाणमन्त करेइ ॥५८॥

नाणसपन्नयाप ए भन्ते जीवे किं जणयइ ?। ना० जीवे
सव्वभावाहिगमं जणयइ । नाणसपन्ने एं जीवे चात्तरन्ते ससार
कन्तारे न विणस्सइ । अहा सूइ ससुत्ता न विणस्स इत्था
जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ । नाणविणयतवचरित्तजोगे
सपात्तणइ, ससमयपरसमयविसारए य असघायणिग्जे भवइ
॥५९॥

वंसणसपन्नयाप एं भन्ते जीवे किं जणयइ ?। वं० भवमि-
च्छत्तल्लेयणं करेइ, पर न विग्गयइ । परं अविग्गमएमाणे
अणुत्तरेण नाणवसणेरं अप्पाणं सजोएमाणे सम्मं भावेमाणे
विहरइ ॥६०॥

चरित्तसंपन्नयाप ए भन्ते जीवे किं जणयइ ?। च० सेले
सीभाष जणयइ । सेलेसि पत्तिवन्ने य अणुगारे चत्तारि केद-
लिकम्मं से एवेइ । तच्चो पच्छा सिग्गइ दुग्गइ मुच्चइ परि-
निब्बायइ सव्वदुक्खाणमन्त करेइ ॥६१॥

सोइन्दियनिगाहेण भन्ते जीवे किं जणयइ ?। सो० मणुभा-
मणुन्नेसु सरेसु रागवोसनिगाह जणयइ । तपयइयं कम्म न
वधइ, पुण्ययत्तं च निग्गरेइ ॥६२॥

महययाण ए भन्ते जीवे किं जणयइ ? । म० अणुस्त्रियत्तं
जणयइ । अणुस्त्रियत्तेण जीव मिउमइवसपत्ते अट्ठ मयट्ठाप्पइ
निट्ठावइ ॥४६॥

भायसत्तेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । भा० भावविसोहिं
जणयइ । भायपिसोहिण वट्ठमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स
धम्मस्स आराहणयाए अच्सुट्ठेइ । अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स
आराहणयाए अच्सुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ॥४७॥

करसत्तेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । क० करसत्ति
जणयइ । करसत्ते वट्ठमाणे जीवे जहा वाई तहा कारी यत्ति
भवइ ॥४८॥

जोगसत्तेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । जो० जोगं विसोहेइ ॥४९॥

मणगुत्तयाए ए भन्ते जीवे किं जणयइ ? । म० जीवे एगमां
जणयइ । एगमाचित्तेण जीवे मणगुत्ते सज्जमारहए भवइ ॥५०॥

वयगुत्तयाए ए भन्ते जीवे किं जणयइ ? । व० निव्वियारं
जणयइ । निव्वियारे ए जीवे वयगुत्ते अम्मत्तपजोगसाहणज्जुत्ते
यावि विहरइ ॥५१॥

कायगुत्तयाए ए भन्ते जीवे किं जणयइ ? । का० संवरं
जणयइ । संवरेण कायगत्ते पुणो पावासननिरोद्धं करेइ ॥५२॥

मणसमाहारणयाए ए भन्ते जीवे किं जणयइ ? । म० एगमां
जणयइ । एगमां अणइत्ता नाणपञ्चवे जणयइ । नाणपञ्चवे
अणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निग्गरेइ ॥५३॥

वयसमाहारणयाए भन्ते जीवे किं जणयइ ? । व० वयसा
हारणवसणपञ्चवे विसोहेइ । वयसाहारणवसणपञ्चवे विसोहिता
सुत्तइवोदियत्तं निव्वत्तेइ, दुत्तइवोदियत्तं निग्गरइ ॥५४॥

धीसङ्गिह मोहणिञ्ज कम्म उघाएइ, पञ्चविह नाणावरणिञ्जं,
नवविहं वसणावरणिञ्जं, पचविह अन्तराहय, एए तिप्पि वि
कम्मसे जुगय खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तर कसिण पडिपुण्णं
निरावरण विमिमिरं विमुद्धं लोगालोगप्पभाव केवल्लवरणा-
वसणं समुप्पावेइ । आष सजोगी भवइ, ताव ईरियावहिय
कम्म निवधइ सुहफरिस दुसमयठिइयं । त पढमसमए वद्ध,
विइयसमए वेइयं तइयसमए निज्जिण्ण, त वद्ध पुठुं उवीरिय
वेइय निज्जिण्ण सेयाले य अकम्म चाविभवइ ॥७१॥

अह आउय पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्यावसेसाप जोगनिरोहं
करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाई सुक्कम्मण म्मायमाणे तप्प
वमयाए मणजोग निरुम्भइ, वइजोगं निरुम्भइ वायजोगं निरु-
म्भइ, आणपाणुनिरोह करेइ इसिपवरहस्सक्खरुवारणट्ठाए
य ए अणुगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कम्माणं म्मियाय
माणे वेयणिञ्ज आउयं नाम गोत्तं च एए चत्तारि कम्मसे
जुगयं खवेइ ॥७२॥

तओ ओरालियतेयकम्माइ सव्वाहिं विप्पज्झणाहिं विप्प-
ज्झित्ता उज्जुसेडिपत्ते अफुसमाणगइ उहु एगसमएणं अयिग
हेण तत्थ गन्तां सागरोवत्ते सिक्कइ पुक्कइ जाय अन्त
करेइ ॥७३॥

एस खलु सम्मत्तपरक्कम्मस्स अगमयणस्स अट्ठे समणेणं
भगवया महावीरण आपविए पन्नविए परुविए वसिए उवदं
सिए ॥७४॥

॥ चि वेमि ॥ इति सम्मत्तं परक्कमे समत्ते ॥२६॥

अपिसान्दियनिग्गहेण भ ते जीवे किं जणयइ ? । प० मणु
 मामणुत्तेसु रुवेसु रागदोसनिग्गह जणयइ । तप्पवइयं कम्मं न
 वधइ, पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणन्दिय निग्गहेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । पा० मणु
 मामणुत्तेसु गंधेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पवइयं कम्मं न
 वधइ, पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥६४॥

जिह्वान्दियनिग्गहेण भन्ते जीवे किं जणयइ । त्रि०
 मणुमामणुत्तेसु रसेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पवइयं कम्मं
 न वधइ, पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥६५॥

फासिन्दियनिग्गहेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । फ० मणु
 मामणुत्तेसु फासेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पवइयं कम्मं
 न वधइ, पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥६६॥

कोह विजणण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । को० खन्ति जणयइ
 कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥६७॥

माणविजणण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । मा० महवं जणयइ,
 माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥६८॥

मायाविजणण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । मा० अज्जवं
 जणयइ । मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥६९॥

लोभविजणण भन्ते जीवे किं जणयइ ? । लो० संतोस
 जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न वधइ पुब्बवट्ठं च निज्जरेइ ॥७०॥

पिञ्जदोसमिच्छादंसणविजणणं भन्ते जीवे किं जणयइ ? ।
 पि० ताणदंसणपरिचाराहणयाप' अम्युहेइ । अट्टयिहस्स कम्म
 स्स कम्मगण्ठविमोयणयाप' तप्पवइयं अहाणुपुब्बीए अट्ट

- अह्वा सपरिक्रमा, अपरिक्रमा य आहिया । ॥१३॥
- नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ वोसु वि ॥१४॥
- ओमोयरणं पंधहा, ममासणे वियाहिय । ॥१५॥
- दध्यओ स्वेत्तफालेणं, भावेणं पञ्चवेहि य ॥१६॥
- ओ अस्स उ आहारो, सत्तो ओमं तु जो करे । ॥१७॥
- अहन्नेणोगसित्थाई, एव दध्येण ऊ भवे ॥१८॥
- गामे नगरे सह रायहाणिनिगमे य आगरे, पल्ली । ॥१९॥
- स्नेहे कब्बवदोणमुहपट्टणमदम्भसंवाह ॥२०॥
- आसमपप विहारे, सन्निवेसे समायघोसे य । ॥२१॥
- यत्तिसेणास्सन्धारे, सत्ये संवट्टकोट्टे य ॥२२॥
- वाहेसु व रत्थासु व, चरेसु वा एवमित्तिर्यं स्वेत्त । ॥२३॥
- कप्पइ उ एवमाइ एव स्वेत्तेण ऊ भवे ॥२४॥
- पेवा य अद्धपेवा गोमुत्तिपर्यंगधीहिया खेय । ॥२५॥
- सन्धुक्कावट्टायग तुपवागया अट्टा ॥२६॥
- विबसस्स पोरुसीणं, चट्ठइ पि उ जत्तिओ भवे कालो । ॥२७॥
- एवं चरमाणो खल्लु, कालोमाणं मुण्येयब्बं ॥२८॥
- अह्वा वइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसन्तो । ॥२९॥
- चऊभागणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥३०॥
- इत्थी वा पुरिसो वा, अल्लकिओ वा नल्लकिओ वाधि । ॥३१॥
- अमयरघयन्थो वा अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥३२॥
- अन्तेण पिसेसेणं, वरणेण भावमणुमुयन्ते उ । ॥३३॥
- एवं चरमाणो खल्लु, मावोमाणं मुण्येयब्बं ॥३४॥
- दव्व स्नेसे काले, मायम्मि य आहिया उ जे भावा । ॥३५॥
- एणइ ओमचरओ, पञ्चवचरओ भवे भिक्खू ॥३६॥

॥ अहं हवमः ' तीस्रमं अजम्भयणं ॥

- जहा ३ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जिय । ॥१॥
 स्ववेइ तवसा भिक्खु, समेगगमणो सुण
 पाणिवहमुसावाया, अवत्तमेहुणपरिमाहा विरब्भो । ॥२॥
 राइभोयणविरब्भो, जीयो भयइ अणासवो
 पंचसमिब्भो तिगुत्तो, अकसाब्भो जिइन्दिब्भो । ॥३॥
 अगारवो य निस्तह्मे, जीयो होइ अणासवो
 पणंसि तु विववासे, रागवोससमज्जिय । ॥४॥
 स्ववेइ ४ जहा भिक्खु समेगगमणो सुण
 जहा महावज्जात्यस्स, सभिरुद्धे जल्लागमे । ॥५॥
 उस्सिचखाए तवणाए, कमेयं सोसणा भवे
 पणं तु संजयस्सावि, पायकम्मनिरासवे । ॥६॥
 भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निक्खरिज्जइ
 सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा । ॥७॥
 बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो
 अण्यसणमूणोयरिया, भिक्खात्यरिया य रसपरिचाब्भो । ॥८॥
 कायक्खिस्सेसो संखीणया य वक्ख्मे तवो होइ
 इत्तरिय मरणाकाला य, अण्यसणा दुविहा भवे । ॥९॥
 इत्तरिय सावकंला, निरवकंला ४ विइज्जिया
 जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो । ॥१०॥
 सेठितवो पमरतवो, पणो य तह होइ वग्गो य
 तत्तो य वमावग्गो, पचमो छट्ठो पइयणतवो । ॥११॥
 मणइच्छियचित्तवो, जायवो होइ इत्तरिब्भो
 जा सा अण्यसणा मरणे, दुविहा सा भियाहिया । ॥१२॥
 सबियारमन्नियारा, कायचिट्ठं पई भवे

एवं तथं दुषिह, जे सम्म आयरे मुणी ।

सो स्तिप्प सन्वसंसारा, विप्पमुहइ पण्डितो

॥३७॥

॥ सि वेमि ॥ इति तत्त्वमगं समप्त ॥३८॥

॥ अह चरणविही एगसीसइम अज्झयण ॥

चरणविहि पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं ।

ज चरित्ता बहु जीवा, तियणा ससारसागर

॥१॥

एगओ विरइ कुब्जा, एगओ य पवत्तणं ।

असज्जमे नियतिं च, संजमे य पवत्तणं

॥२॥

रागदोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे ।

जे भिक्खू संभई निच्चं, से न अच्चइ मण्डले

॥३॥

दडाण गारवाण च, सत्ताण च तियं तियं ।

जे भिक्खू जयइ निच्चं से न अच्चइ मण्डले

॥४॥

विठ्ठं य जे उवसगो, तहा तेरिच्छमाणुसे ।

जे भिक्खू सहइ निच्चं, से न अच्चइ मण्डले

॥५॥

विगहाकसायसन्नाण, म्हाणाय च दुय तहा ।

जे भिक्खू वठइ निच्चं, से न अच्चइ मण्डले

॥६॥

वपसु इन्दियत्थसु, समिइसु किरियासु य ।

जे भिक्खू जयइ निच्चं से न अच्चइ मण्डले

॥७॥

लसासु छसु कापसु, छको आहारफारणे ।

जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्चइ मण्डले

॥८॥

पिएडोगहपडिमासु, भयट्ठाणेषु सत्तसु ।

जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्चइ मण्डले

॥९॥

- અટ્ટપિહગોયરગ્ગં તુ, સહા સત્તંવ પસણા ।
અભિગ્ગહા ય જે અન્ન, મિપ્પસાયરિયમાદિયા ॥૨૫॥
- સ્વીરદ્દિસપ્પિમાદ્, પણીય પાણભોયણ ।
પરિવઞ્ઞણં રસાણં તુ, મણિય રસપિવઞ્ઞણં ॥૨૬॥
- ઠાણા ધીરાસણાશ્યા, ઝીવસ્સ ઓ મુહાયહા ।
ઉમા જહા ખરિગ્ગન્તિ, કાયકિલેસં તમાદિય ॥૨૭॥
- પગન્તમણાયાદ, રૂપીપમુવિવગ્ગિજ્ઞપ ।
સયણાસણસેવણયા, વિવિત્તસયણાસણં ॥૨૮॥
- પમો વાહિરગંતવો, સમાસેણ વિયાદિખો ।
અભિમન્તરં તથં પત્તો, દુલ્લઙ્ગામિ અણુપુન્યસો ॥૨૯॥
- પાયચ્છિન્ન વિણખો વેયાવજ્જં તદેવ સગ્ગખો ।
મ્મણ ચ વિહસસગ્ગો પસો અભિમન્તરો તથો ॥૩૦॥
- આલોચણારિહાર્દિય, પાયચ્છિન્નં તુ વસવિદ્દં
જં મિપ્પસૂં વહ્દં સમ્મં પાયચ્છિન્નં તમાદિયં ॥૩૧॥
- અમ્મુટ્ટાણ અઙ્ગલિકરણં, તદેવાસણવાયર્યં ।
રૂઠમત્તિભાવમુસુસા વિણખો એસ વિયાદિખો ॥૩૨॥
- આયરિયમાદિય, વેયાવજ્જમિ વસવિદ્દે ।
આસેવણં જહાયામ, વેયાવજ્જં તમાદિયં ॥૩૩॥
- વાયણા પુચ્છણા ચેવ, તદ્દેવ પરિયટ્ટણા ।
અણુપ્પેહા ધમ્મકઙ્કા, સગ્ગખો પઙ્ગહા મથે ॥૩૪॥
- અટ્ટઠદાણિ વગ્ગિજ્ઞતા મ્મણ્ણજ્ઞા મુસમાદિય ।
ધમ્મમુક્કાદં મ્મણાર્દં, મ્મણ તં તુ પુહા વપ ॥૩૫॥
- સયણાસણઠાણે વા, જે ઓ મિપ્પસૂં ન વાવરે ।
કાયસ્સ વિહસસમ્મો જઠ્ઠો સો પરિકિત્તિખો ॥૩૬॥

॥ अह पमायढाण वत्तीसइम अउभयण ॥

अबन्तफालस्स समूलगस्स, सब्बस्स दुक्खस्स उ जो पमोस्सो ।
 तं मासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगन्तहिय हियत्थं ॥१॥
 नाणस्स सब्बस्स पगासणाए अभाणमोहस्स विवज्जणाए ।
 रागस्स दोसस्स य सखपण, एगन्तसोक्ख समुवेइ मोक्ख ॥२॥
 तस्सेस ममो गरुविद्वसेषा, विवज्जणा बाल्लजणस्स दूर ।
 सग्गमयएगन्तनिसेषणा य सुत्तत्थसच्चिन्तणया धिइ य ॥३॥
 आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
 निफेयमिच्छेअ विवेगजोगं, समाहिफामे समणे तवस्सी ॥४॥
 न या लमेव्वा निउणं सहाय, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एगो वि पावाइ यियज्जयन्तो विहरअ कामेसु असज्जमाणो ॥५॥
 जहा य अण्हणमवा यलागा, अण्हं यलागणमव जहा य ।
 एमेव मोहाययण कु तण्हा, मोह च तण्हाययण वयन्ति ॥६॥
 रागो य दोसो वि य कम्मवीर्यं, कम्म च मोहणभव वयन्ति ।
 कम्मं च जाइमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाइमरणं वयन्ति ॥७॥
 दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ अस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न फिचणाइं ॥८॥
 राग च दोसं च तइव मोह, उट्ठत्तुकामेण समूलजालं ।
 जे जे उपाया पडिवात्त्रियग्गहा, ते फिचइस्सामि अहाणुपुब्बि ॥९॥
 रसा पगाम न निसेवियग्गहा, पाय रसा दित्तिकरा नराण ।
 विसं च कामा समभिहवन्ति, दुम जहा साउप्पल य पक्खी ॥१०॥

| | |
|--|------|
| મવેસુ વન્મગુત્તીસુ મિત્તસુધન્મમ્મિ વસધિહ । | ॥૧૦॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ, સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૧૧॥ |
| રવાસગાળ પઢિમાસુ, મિત્તસુ પઢિમાસુ ય । | ॥૧૨॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ, સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૧૩॥ |
| કિરિયાસુ મૂયગામેસુ, પરમાહમ્મિયસુ ય । | ॥૧૪॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ, સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૧૫॥ |
| ગાહાસોજ્જસયહિ, તદ્દા અસજ્જમમ્મિ ય । | ॥૧૬॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૧૭॥ |
| વન્મમ્મિ નાયન્મયણેસુ, ઠાણેસુ ય સમાધિય । | ॥૧૮॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ, સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૧૯॥ |
| પગવીસાપ સહલે, વાધીસાપ પડીસહે । | ॥૨૦॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ, સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૨૧॥ |
| તેથીસાઈ સૂયગહે રુવાહિયસુ સુરેસુ ય । | ॥૨૨॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૨૩॥ |
| પણુથીસમાવણાસુ, વહસેસુ વસાઈય । | ॥૨૪॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૨૫॥ |
| અણગારગુણેહિ વ, પગપ્પમ્મિ તદ્દેવ ય । | ॥૨૬॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૨૭॥ |
| પાવસુયપસગેસુ મોહઠાણેસુ ખેવ ય । | ॥૨૮॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૨૯॥ |
| સિદ્ધાઈગુણજોગેસુ તેત્તીસાસાયણાસુ ય । | ॥૩૦॥ |
| જે મિત્તસુ જયઈ નિર્ધ, સે ન અચ્છઈ મયહલે | ॥૩૧॥ |
| શ્ય યયસુ ઠાણેસુ, જે મિત્તસુ જયઈ સયા । | ॥૩૨॥ |
| ક્ષિપ્પ સો સખ્યસસારા ધિપ્પમુષઈ પચિહખો | ॥૩૩॥ |
| ॥ તિ જેમિ ॥ શ્વિતિ ધરણયિહી સમચા ॥૩૪॥ | |

रुधस्स चक्खु गहण वयन्ति, चक्खुस्स रुध गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेतु समणुन्नमाहु, दोसस्स हेतु अमणुन्नमाहु ॥२३॥
 रुवेसु जो गेहेसुवेइ तिठ्ठं, अकालिय पावइ से विणासं ।
 रागावरे से जइ वा पयगे, आलोयलोले समुवेइ मणु ॥२४॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिठ्ठं, तसि क्खणं से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइन्तदोसेण सएण जत्तू, न फिञ्चि रुध अवरम्हई से ॥२५॥
 एगन्तरत्ते वइरसि रुवे अत्तात्तिसे से कुणइ पओस ।
 दुक्खस्स सम्पीलमुवइ याले, न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥२६॥
 रुवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ शेरुध ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तइगुरु फिलिट्ठे ॥२७॥
 रुवाणुवाएण परिमाहेण, उप्पायणो रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कह सुइ से, सम्भोगबाले य असित्तलाभे ॥२८॥
 रुवे अतित्ते य परिग्गहन्मि, सत्तोवसत्तो न दवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही पररस्स लोभायिले आययई अवत्त ॥२९॥
 वण्णामिभूयस्स अवत्तहारिणो रुवे अतिवत्तस्स परिमाइ य ।
 मायामुसं वइइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुचई से ॥३०॥
 मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पयोगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययन्तो, रुवे अतित्तो दुहिणो अणित्तो ॥३१॥
 रुवाणुरत्तस्स नरस्स एव कुत्तो सुहं होअ कयाइ फिञ्चि ।
 तत्थोवभोगे यि फिलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स एएण दुक्ख ॥३२॥
 एमेव रुयन्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहरपरपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य पिणाइ कम्म ज से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥
 रुवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरण ।
 न लिप्पए भयमग्गे यि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणी पत्तासं ॥ ४

जहा दयमा पठरिधणे वणे, समारुणो नोपसर्म उवइ ।
 एधिन्दियमी वि पगामभोइणा, न धम्मया।रस्स हियाय कस्सई ॥११॥
 विगित्तखग्जासणजित्तियाणं, ओमासणाणं दमिइन्दियाणं ।
 न रागसत्त धरिसेइ चित्त, पराइओ वाहिरिवोसइहिं ॥१२॥
 जहा विराजावसहरस मूले, न मूसगाण वसही पसत्था ।
 एमेय इत्थीनिलयस्स मग्गे, न धम्मयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥
 न रुवजावणविलासहासं न जपिय इगियपेहिय वा ।
 इत्थीण चित्तसि निवेसइत्ता, दट्ठं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥
 अवसणं चेव अपत्थणं च, अवित्तण चेव अफित्तण च ।
 इत्थीजणस्सारियग्गाणुजुग्गं हियं सया धम्मवए रयाण ॥१५॥
 काम तु दधीहिं विमूसियाहिं न चाइया खोमइउ तिगुत्ता ।
 तहा वि एगन्तहिय ति नवा विवित्तवासो मुणिए पसत्यो ॥१६॥
 मोक्खामिहंलिस्स उ माणयस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्म ।
 नेयारिमं दुत्तरमत्थि लोए, जइत्थिओ वालमणोहराओ ॥१७॥
 एए य सगे समइकमिथा, सुदुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
 जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥१८॥
 कामाणुगिद्विण्णभयं खु दुक्ख, सव्वस्स लोगस्स सवेधगस्स ।
 वे काइयं माणसियं च किंवि तस्सन्तग गच्छइ धीयरगो ॥१९॥
 जहा य किम्पागफळा मणोरमा रसेण वरणेण य भुञ्जमाणा ।
 तं खवूए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥
 ओ इन्दियाण विसया मणुष्सा, न तसु भाष निस्सिरे पयाइ ।
 न यामणु नेसु मण पि कुज्जा, समाहिक्कामं समणे तवस्सी ॥२१॥
 चस्सुस्स रुव गहण दयन्ति, तं रागइउंनु मणुष्ममाहु ।
 उ दोसइउ अमणुष्ममाहु, समो य ओ तसु स धीयरगो ॥२२॥

सरे धिरैत्तो मणुओ विसोगो दएण दुक्खोइपरपरेण ।
 न लिप्पए मयमग्गे त्रिसन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपत्तास ॥४५॥
 घाणस्स गन्धं गहणं धयन्ति, त रागहेतुं तु मणुममाहु ।
 त दोसहेतुं अमणुममाहु, समो य ओ तेसु स बीयरगो ॥४६॥
 गन्धस्स घाणं गहणं धयन्ति, घाणस्स ग र्धं गहणं धयन्ति ।
 रागस्स हेतुं समणुममाहु, दोसस्स हेतुं अमणुममाहु ॥४७॥
 गन्धेसु ओ गिद्धिमुबेइ तिब्ब, अकालियं पावइ से विणास ।
 रागादरे ओसहगन्धगिद्धे, सप्पे थिलाओ विष निक्खमन्ते ॥४८॥
 जे यावि दोस अमुबेइ तिब्ब, तंसि क्खणे से उ उबेइ दुक्ख ।
 दुइन्तदोसेण सएण जन्त, न किंचि ग र्धं अवरुम्हं से ॥४९॥
 एगन्तरते इइरसि गन्धे, अतालिये से कुणइ पमोस ।
 दुक्खस्स संपीलमुबेइ वाले, न लिप्पइ तेण मुणी विरागो ॥५०॥
 ग घाणुगासाणुगए य जीवे, चरावरे हिंसइउणेगरुबे ।
 पिचेहिं ते परितावेइ वाले, पीलेइ अ तट्टगुरू किलिहे ॥५१॥
 गन्धाणुवाएण परिगहेण सप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कइ सुहं से, सभोगफाले य अतित्तलामे ॥५२॥
 गन्धे अतित्त य परिग्गहम्मि, सत्तोषसत्तो न उवइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाधिले आययइ अवत्तं ॥५३॥
 एएहामिभूयस्स अवत्ताहारिणो, गन्धे अतित्तस्स परिगइ य ।
 मायासुखं वइइ लोमवोसा तत्थावि दुक्खा न विमुचइ से ॥५४॥
 मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पभोगफाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अवत्ताण समावयन्तो ग र्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५५॥
 गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एव कत्तो सुहं होअ कयाकिंचि ।
 तत्तोषभोगे वि किलेसदुक्खं, निब्बत्तइ जस्स कएण दुक्खं ॥५६॥

- सोयस्स सहं गहणं वयन्ति, स रागहर्षं तु मणुभमाहु ।
 तं दोसहेव अमणुभमाहु, समो य जो तेसु स वीयरगो ॥३५॥
- सहस्स सोयं गहणं वयन्ति, सोयस्स सहं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेव समणुभमाहु, दोसस्स हेव अमणुभमाहु ॥३६॥
- सहेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं, अकालियं पावइ से धिणासं ।
 रागावरे हरिणभिगे व मुढे, सहे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥३७॥
- जे यावि दोसं समुवेइ तिब्बं, तंसि कल्लणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइन्तदोसेण सएण जन्तु, न किञ्चि सह अवरुग्गई से ॥३८॥
- एगन्तरत्ते ठहरसि सहे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स सम्पील्लमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरगो ॥३९॥
- सहसुगगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइऽणोगरूढे ।
 बिसेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अवहगुरू किलिढे ॥४०॥
- सहाणुवाएण परिग्गहेण उपायण रक्खणसन्निभोगे ।
 वए विभोगे य कइ सुई से संभोगकाले य अतित्तज्ञाने ॥४१॥
- सहे अतित्ते य परिमाहम्मि, सत्तोषसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अवत्तं ॥४२॥
- तएहामिभूयस्स अवत्तहारियो, सहं अतित्तस्स परिमाहे य ।
 मायामुसं वडूइ लोभवोसा तत्पावि दुक्खान न विमुचईसे ॥४३॥
- मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एयं अवत्ताणि समाययन्तो सहे अतित्तो दुहीओ अणिस्सो ॥४४॥
- सहाणुरत्तस्स नरस्स एयं, कत्तो सुई होग्ग कयाइ किञ्चि ।
 तत्तोषभोगे बि किलेसदुक्खं निव्वपत्तई जरस कएण दुक्खं ॥४५॥
- एमेय सहम्मि गमो पओसं, उवइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुदुषित्तो य धिणाइ कम्मं, न से पुणो होइ दुइ विवागे ॥४६॥

रसाणुरसस्त नरस्त एव, कृत्तो सुष्ठु होञ्ज कयाइ किंचि ।
 तत्थोपभोगे वि किलेसदुक्ख, निव्वसइ जस्स कण्ण दुक्खं ॥७१॥
 एमेव रसम्मि गच्छो पप्पोस, उवेइ दुक्खोहपरंपरा भो ।
 पटुट्टचित्तो य चिण्णइ कम्मं, ज से पुणो होइ दुहं विवागे ॥७२॥
 रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, पण्ण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पइ भवमग्गे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥७३॥
 कयस्स फासं गहणं वयन्ति त रागहं तु मणुजमाहु ।
 व दोसहेउ अमणुजमाहु, समो य जो तेसु स धीयरागो ॥७४॥
 फसस्स कायं गहणं वयन्ति, कायस्स फासं गहणं वयति ।
 रागस्स हेउ समणुजमाहु, दोसस्स हेउ अमणुजमाहु ॥७५॥
 घसेसु जो गिट्ठिमुवइ तिष्ठ, अकालिय पावइ से विण्णासं ।
 रागाउर सीयजलावमन्ने, गाह्मिणीए महिसे विवन्त ॥७६॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिष्ठ, तसि वल्लणे से उ उवइ दुक्खं ।
 दुइन्तदोसेण सण्ण जत्तू, न किंचि फासं अपहरम्मई से ॥७७॥
 पान्तरत्ते इहंसि फासे, अतालसे से कुण्णई पप्पोसं ।
 दुक्खस्स सपीलमुवइ धाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥७८॥
 प्ससाणुगासाणुगए व जीव, चराचरे िसइइण्णेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ धाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिठ्ठे ॥७९॥
 प्ससाणुवाएण परिग्गहण, उप्पायणे रक्खणसन्निभोगो ।
 वए विभोगो य क्हं सुहं से, संभोगकाले य अत्तिचत्तामे ॥८०॥
 घसे अतिचे य परिग्गहम्मि, सत्तोयसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अत्तुट्ठिदोसेण दुहो परस्स, लोभाविले आययई अवत्त ॥८१॥
 तण्हाभिभयस्स अवत्तहारिणो फासे अत्तिचस्स परिग्गह य ।
 मायामुसं येइ लोभदोसा, तत्थायि दुक्खा न विमुचइ से ॥८२॥

એમેઘ ગધમ્મિ ગમ્મો પમ્મોસં, ઉવેહ્ દુક્કસ્યોહપરંપરામ્મો ।
 પવુદ્ધચિત્તો ય ચિચ્છાહ્ કમ્મ, જં સે મુણો હોહ્ દુદ્ધ વિષાગે ॥૬૧॥
 ગધે પિરત્તો મણુમ્મો વિસોગો, ણણ દુક્કસ્યોહપરંપરણ ।
 ન લિપ્પહ્ અયમમ્મે વિ સત્તો, જલણ વા પોક્કસ્યરિણીપલાસં ॥૬૨॥
 જિવ્માણ રસં ગહણં ઘયન્ત, તં રાગહ્વરં તુ મણુન્નમાહુ ।
 ત વોસહ્વરં અમણુન્નમાહુ, સમો ય જો તેસુ સ ધીયરાગો ॥૬૩॥
 રસસ્ત જિવ્મ ગહણં ઘયન્તિ, જિવ્માણ રસં ગહણ ઘયન્તિ ।
 રાગસ્ત હ્વરં સમણુન્નમાહુ, વોસસ્ત હ્વરં અમણુન્નમાહુ ॥૬૪॥
 રસેસુ જો ગિચ્છિમુવેહ્ વિઘ્વ અકાલિય પાવહ્ સે વિણાસં ।
 રાગાચરે ઘચ્છિસંધિમિન્નકાપ, મચ્છે અહા આમિસમોગગિચ્છે ॥૬૫॥
 જ યાવિ વોસં સમુવેહ્ વિઘ્વ, તંસિ વક્કણે સે વ ઉવેહ્ દુક્કસં ।
 તુહન્તવોસેણ સપણ જતૂ ન કિંચિ રસ અવરુક્કસં સે ॥૬૬॥
 પગન્તરત્ત રહ્ રસિ રસે અતાલિસે સે જુણ્ણે પમ્મોસ ।
 દુક્કલુક્ક સંપીલમુષહ્ વાલે ન લિપ્પે તંણ મુણી વિરાગો ॥૬૭॥
 રસાણુગાસાણુગપ ય જીવ, ચરાચરં દિસહ્ ડયેગરુવે ।
 ચિત્તેહિ તે પરિવાવહ્ યાસ પીલહ્ અત્તદ્દુગુરુ કિલકુદ્ધે ॥૬૮॥
 રસાણુવાપ્ણ પરિમાહ્ણ, વપ્પાયણે રક્કણસન્નિધોગે ।
 ઘપ ધિમ્મોગે ય કહં સુદ્ધ સે સંમોગકાલ ય અતિપલ્લાભે ॥૬૯॥
 રસ અતિપ્પે ય પરિમાહ્મિ સત્તોવસત્તો ન ઉવહ્ તુદ્ધિ ।
 અતુદ્ધિવાસેણ તુહી પરસ્સ લોભાદિલે આયયહે અવશ ॥૭૦॥
 તણ્ણાભિમયસ્સ અવશ્સહારિણો રસે અતિપલ્લાસ્સ પરિમાહ્ ય ।
 માયામુસં ઘેહ્ લોભશેસા, વત્થાપિ દુક્કસ્યા ન ધિમુષહ્ સે ॥૭૧॥
 મોસસ્સ પપ્પદ્ધા ય પુરરથમ્મો ય, પમ્મોગકાલ ય તુહી દુરન્ત ।
 પપ્પ અવશ્સાણિ સમાયયન્તો રસે અતિપ્પા રહિયા અન્નિ-

तद्व्याभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतिष्ठस्स परिगाहे य ।
 मायामुस वहुइ लोभदोमा, तत्थावि दुक्खा न विमुचई से ॥६५॥
 मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगफाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययन्तो, भावे अतित्तो दुहिओ अस्थित्तो ॥६६॥
 मायासुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होअ कयाइ किञ्चि ।
 तत्तोवमोणे वि किलेसदुक्खं, निन्दत्तई अस्स कण्ठ दुक्ख ॥६७॥
 एमेव भावन्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य विणाइ फम्मं, ज से पुणो होइ दुर्ह विधाने ॥६८॥
 भाव विरत्तो मणुओ विसोगो, एण्ण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमग्गे यि सन्तो, जलेण वा पोस्सरिणीपलास ॥६९॥
 एविन्दियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउ मणुयस्स रागिणो ।
 ते चेव थोव पि कयाइ दुक्खं, न धीयरागस्स करन्ति किञ्चि ॥७०॥
 न कामभोगा समयं उवेन्ति, न यावि भोगा विगइ उवन्ति ।
 वे तप्पओसी य परिगाही य, सो तेस मोहा विगइ उवेइ ॥७१॥
 कोह च माण च तद्देव माय, लोह दुगच्छ अरई रई च ।
 हास मयं सेगपुमित्थिवेयं, नपुसवयं विधिहे य भाव ॥७२॥
 आषड्जई एयमणेरुवे, एवविह कामगुणेषु सत्तो ।
 अन्ने य एवप्पभवे विसेसे, काम्यणादीणे हिरिम वइस्से ॥७३॥
 कप्प न इच्छिअ सहायलिच्छ पच्छाणुतावे ण उउप्पमार्यं ।
 एव पियारे अमियप्पहारे, आवड्जइ इन्दियओरपस्से ॥७४॥
 तओ से आयन्ति पओयणाइ, निमज्जितं मोहमहण्णयम्मि ।
 सुइसिणो दुक्खविणोयणद्धा तप्पवयं उउज्जमए य रागी ॥७५॥
 पिरज्जमाणस्स य इन्दियत्था, रुहाइया षायइयप्पगारा ।
 न तस्स सग्गे वि मणुमयं वा निज्जययती अमणुमय वा ॥७६॥

मोसस्स पच्छा य पुरस्थओ य, पओगकाले य, दुही दुएन्ते ।
 एय अवत्ताणि समाययन्तो, फसे अतिओ दुहिओ अणिस्सो ॥८५॥
 फसाणुरत्तस्स नरस्स एव, फसो सुहं होअ कयाइ किंचि ।
 तत्थोवभोगेपि किलेसदुक्खं, निब्बत्तइ अस्स कएण दुक्खं ॥८६॥
 एमेव फसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, ज से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८७॥
 फसे बिरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न क्षिप्पई भवमग्गे पि सन्तो, अलेण वा पोक्खरिणीपज्ञासं ॥८८॥
 मणस्स भावं गहण वयन्ति, वं रागहेउ तु मणुभामाहु ।
 तं दोसहसं अमणुभमाहु, समो य ओ तेसु स धीयरओ ॥८९॥
 भावस्स मण गहणं वयन्ति मणस्स भावं गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुभमाहु, दोसस्स हेसं अतणुभमाहु ॥९०॥
 भावेसु ओ गिद्धिमुवइ तिब्बं, अकालियं पावइ से विखासं ।
 रागावरे कामगुणेषु गिद्धे, करेणुमगावहिण गजे वा ॥९१॥
 जे यावि दोसं समुवइ तिब्बं, वसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइन्तवासेण सएण जत्तु, न किंचि भावं अवरुक्खई से ॥९२॥
 एगन्तरत्ते उइरसि भावे, अतालिसे से कुणइ पओस ।
 दुक्खस्स सं नीलमुवइ बालं न लिप्पई तेण सुणी विरागो ॥९३॥
 भावाणुगासाणुण य जीवे परावरे हिसइऽणोगरूपे ।
 चित्तेहि ते परिखावेइ बालं, पीलेइ अत्तगुरू किलिद्धे ॥९४॥
 भावाणुवाएण परिमाहण, उप्पायणे रक्खणसज्जिओगे ।
 वए विभागे य क्हं सुहं से, सभोगकाले य अतिचक्षाभे ॥९५॥
 भावे अतत्ते य परिमाहम्मि, सत्तोयसत्तो न उवेइ मुट्ठि ।
 अतुट्ठिवासेण दुही परस्स, लोभापिल आययइ अदधं ॥९६॥

- चक्षुमचक्षुभोहिस्त, वसणे केवले य आवरणे ।
 एवं तु नवविगप्प, नायकं वंसणावरण ॥६॥
- वेयणीयं पि य दुविहं, सायमसारं च आहिय ।
 स्स उ बहू मेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥
- णिग्गं पि दुविहं, वंसणे चरणे तद्वा ।
 णे तिविहं वुत्त, चरणे दुविहं भवे ॥८॥
- नत्त चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य ।
 ओ तिमि पयसीओ, मोहणिजस्स वंसणे ॥९॥
- त्तमोहण कम्मं, दुविहं तं वियाहियं ।
 गायमोहणिग्गं तु, नोकसारं तद्देव य ॥१०॥
- जसविहभेएणं, कम्म तु कसायज ।
 ण्विह नवविहं वा, कम्म च नोकसायजं ॥११॥
- इयतिरिक्खातं, मणुस्ताउ तद्देव य ।
 त्वयं चत्तयं तु, आरं कम्मं चउठ्विहं ॥१२॥
- मं कम्मं तु दुविहं, सुहमसुह च आहियं ।
 मस्स उ बहू मेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥
- त्य कम्मं दुविहं, उच्चं नीय च आहियं ।
 वं अठुविह होइ, एव नीयं पि आहियं ॥१४॥
- णे ज्ञाभे य भोगे य, उवभोगे धीरिण तद्वा ।
 अविहमन्तराय, समासेण वियाहिय ॥१५॥
- गाओ मूलपयसीओ, उत्तराओ य आहिया ।
 तस्मा स्सेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥१६॥
- सज्जेसि चेव कम्मणं, पपसग्गमणन्तगं ।
 गण्ठयसत्ताईयं अन्तो सिग्गण आहियं ॥१७॥

पथ स संकल्पविकल्पासु, सजायई समयमुचट्टियस्त ।
 अथ असंकल्पयन्तो तन्मां से, पहीयए कामगुणेषु तयहा ॥१०७॥
 म धीयरगो कयसन्धकिणो, खवेइ नाणावरण सण्णेण ।
 तद्वय अं वंसणमावरेइ, अ चन्तराय पकरइ कम्मं ॥१०८॥
 मन्ध तन्मो जाणइ पासए य, अमोहणो होइ निरन्तरए ।
 अणसवे म्हाणसमाट्टिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥
 सो वस्स सक्खस्स दुहस्स मुक्को, अ वाहई सययं वन्तुमेयं ।
 दीढामयं विप्पमुक्को पसत्थो सो होइ अबन्तसुद्धी कयत्थो ॥११०॥
 अणइ कालप्पभवस्स एसो, सक्खस्स दुक्खस्स पमोक्खमसो ।
 वियाहिन्तो अं सुमुविण सत्ता, कमेण अबन्तसुद्धी भवन्ति ॥१११॥
 ॥ त्ति वेमि ॥ इति पमावहाण समत्त ॥३२॥

॥ अह कम्मप्पयत्ती तेत्तीसइम अज्झयणं ॥

अह कम्माई धोच्छामि, आणुपुठ्ठिं जहाकम्मं ।
 जेहिं वड्ढो अयं जीवो, ससार परिवट्ठई ॥१॥
 नाणस्मावरणिअं, वंसणावरणं तहा ।
 वेयणिअ तहा मोहं, आउकम्मं तद्वेय य ॥२॥
 नामकम्मं च गोय च अन्तराय तद्वेय य ।
 एवमेयाइ कम्माई अट्ठेय उ समासन्तो ॥३॥
 नाणावरणं पंचविहं, सुयं आभिणियोहियं ।
 ओहिनारणं च तइयं, मणनारणं च केवलं ॥४॥
 निदा तद्वय पयला, निदानिदा पयलपयला य ।
 तत्तो य धीणगिणी उ, पंचमाहोइ नायम्मा ॥५॥

चक्षुमचक्षुःश्रोहिस्त, वंसणे केवले य आवरणे ।

एष तु नवविगणं, नायठव वंसणावरणं

॥६॥

वेयणीयं पि य दुविहं, सायमसायं च आहिय ।

- स्त उ बहु भेया, एमेव असायस्त वि

॥७॥

णिज्जं पि दुविहं, वंसणे चरणे तथा ।

ए ति विह युत्त, चरणे युविहं भवे

॥८॥

यत्त चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य ।

ओ तिमि पयडीओ, मोहणिज्जस्त वंसणे

॥९॥

त्तमोहरां कम्मं, दुविहं तं वियाहियं ।

गयमोहणिज्जं तु, नोकसायं तहेव च

॥१०॥

त्तसविहभेएणं, कम्मं तु कसायजं ।

सविह नवविहं वा, कम्म च नोकसायज

॥११॥

इयतिरिक्खाव, मणुस्ताव तहेव य ।

वाढयं चउत्थं तु, आरं कम्मं चउत्थिहं

॥१२॥

मं कम्मं तु दुविहं, सुहमसुह च आहियं ।

भस्त उ बहु भेया, एमेव असुहस्त वि

॥१३॥

य कम्मं दुविहं, उवं नीय च आहियं ।

वं अठुविहं होइ, एव नीयं पि आहियं

॥१४॥

ए स्ताभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तथा ।

सविहमन्तरायं, समासेण वियाहिय

॥१५॥

पाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।

रसगं खेत्तफाले य, भायं च उत्तरं सुण

॥१६॥

सब्बेसिं चेय कम्माणां, पएसग्गमणन्तर्ग ।

गण्ठियसच्चार्यं अन्तो सिद्धाण आहियं

॥१७॥

एष स संकल्पयिष्णुणास, सजायई समयमुपट्टियस्स ।
 अत्थ असंकल्पयञ्चो तञ्चो से, पहीयए कामगुणेषु तथहा ॥१००॥
 म धीयरगो कयमन्धकिणो, खवइ नाणावरण खण्णेण ।
 तद्देव जं दसणमावरेइ, ज चन्तराय पकरइ कम्म ॥१०१॥
 मन्ध तञ्चो जाणइ पासए य, अमोहणो होइ निरन्तरए ।
 अणासवे भाणसमाहिजुत्ते, आठक्खए मोक्खमुवेइ मुद्धे ॥१०२॥
 सो तस्स सञ्चस्स दुहस्स मुक्को, जं बाहई समयं जन्तुमेयं ।
 दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो तो होइ अबन्तसुद्धी कयत्थो ॥१०३॥
 अणाइकालप्पभयस्स एसो, सञ्चस्स दुक्खस्स पमोक्खमरगो ।
 वियाहिञ्चो जं समुविण सत्ता, कमेण अबन्तसुद्धी भवन्ति ॥१०४॥
 ॥ ति वेमि ॥ इति पमायहाण समत्तं ॥३२॥

॥ अह कम्मप्पयत्ती तेत्तीसइम अज्झयण ॥

अह कम्माई वोक्खामि, आणुपुत्तिव जहाकम्मं ।
 जेहिं बद्धो अयं अीणो, ससार परिवट्ठई ॥१॥
 नाणस्सावरणिज्जं, वंसणावरणं तहा ।
 वेयणिज्जं तहा मोहं आठकम्मं तद्देव य ॥२॥
 नामकम्म च गोयं च, अतरायं तद्देव य ।
 एधमेयाइ कम्माई, अट्ठेष उ समासञ्चो ॥३॥
 नाणावरणं पंचविहं, सुयं आभिण्णियोहिं ।
 ओहिनाण च तद्देव, मण्णनारं प केवलं ॥४॥
 निहा तद्देव पयला, निहानिहा पयलपयला य ।
 तत्तो य धीणगिद्धी उ, पंचमाहोइ नायम्या ॥५॥

पक्खुमचक्खुओहिस्स, वंसणे केवले य आवरणे ।

एवं तु नवविहणं, नायन्व वंसणावरणं

॥६॥

वेयणीयं पि य दुविहं, सायमसायं च आहिय ।

स्त च बहु भेया, एमेष असायस्स पि

॥७॥

णिब्बं पि दुविहं, वंसणे चरणे तद्वा ।

ये विविहं वुत्त, चरणे दुविहं भवे

॥८॥

नत्त चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य ।

ओ तिन्नि पयणीओ, मोहणिजस्स वंसणे

॥९॥

त्तमोहणं कम्मं, दुविहं सं वियाहियं ।

यमोहणिब्बं तु, नोकसायं तद्देष य

॥१०॥

त्तसविहभेयणं, कम्मं तु कसायजं ।

विह नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं

॥११॥

३ तिग्गिप्पवारं, मणुस्सावं

३ आरं कम्

॥१२॥

एष स सकृत्पयिष्कृष्णासु, संजायई समयमुषट्टियस्त ।
 अत्थ असकृत्पयप्पो तप्पो से, पहीयप कामगुणेषु तथहा ॥१०७॥
 म यीयरारो कयसब्बकिच्चो, खवइ नाणावरणं स्यणेण ।
 तद्देव ज दंसणमावरेइ, ज चन्तरायं पफरेइ कम्मं ॥१०८॥
 मब्बं तप्पो जाणइ पासए य, अमोहणे होइ निरन्तरप ।
 अणासवे म्हाणसमाहिजुत्ते, आठक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥
 सो तत्स सव्वस्त बुद्धस्त मुक्को जं वाहई सययं जन्तुमेयं ।
 दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अबन्तसुद्धी कयत्थो ॥११०॥
 अणाइकालप्पभवस्म एसो, सव्वस्त बुद्धस्त पमोक्खमसो ।
 वियाहिप्पो जं नमुविच्च सत्ता, कमेण अबन्तसुद्धी भवन्ति ॥१११॥
 ॥ ति वेमि ॥ इति पमायट्ठाण समत्त ॥१२॥

॥ अह कम्मप्पयत्ती तेत्तीसइम अज्झयणं ॥

अह कम्माई बोन्धामि, अण्णपुट्ठि जहाकम ।
 जेहि वद्धो अयं जीवो, ससारं परिवट्टई
 नाणस्तावरणिज्जं, दंसणावरणं तहा ।
 वेयणिज्जं तहा मोहं आठक्कम्मं तद्देव य ॥२॥
 नामकम्मं च गोय च, अन्तरायं तद्देव य ।
 एवमेयाइ कम्माई, अट्टेय उ समासप्पो ॥३॥
 नाणावरणं पंचविह, सुयं आभिणिबोद्धियं ।
 ओहिनाणं च तइयं, मणनारणं च केयलं ॥४॥
 निहा तहय पयला, निहानिहा पयलपयला य ।
 तत्तो य थीणगिटी उ, पंचमाहोइ नायय्या ॥५॥

एष स संकल्पविकल्पासु, संजायई समयमुपट्टियस्स ।
 अत्थ असकल्पयञ्चो तञ्चो से, पहीयए कामगुणेषु वयहा ॥१०७॥
 स पीयरगो कयमब्बफिचो, सवेष नाणावरणं क्षणेण ।
 तद्देव जं वसणमावरेइ, ज चन्तरायं पकरइ कम्म ॥१०८॥
 स०वं तञ्चो जणइ पासए य, अमोहणो होइ निरन्तरए ।
 अणासवे भाणसमाट्टिजुत्ते, आठक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥
 सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को जं वाहई सययं जन्तुमेयं ।
 दीहामय विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अबन्तसुद्धी कयत्थो ॥११०॥
 अणाइकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमसो ।
 वियाहिञ्चो जं समुविण सत्ता, कमेण अबन्तसुद्धी भवन्ति ॥१११॥
 ॥ न्ति वेमि ॥ इति पमायहाण समत्त ॥३२॥

॥ अह कम्मप्पयद्धी तेत्तीसइम अज्झयण ॥

अह कम्माई धोन्झामि, आणुपुट्ठि जहाकम ।
 जेहिं वद्धो अयं जीवो, ससारे परिवट्ठई ॥१॥
 नाणस्सावरणिग्गं, वसणावरणं वहा ।
 वेयणिग्गं वहा मोहं आठक्कम्मं वहेव य ॥२॥
 नामक्कम्मं च गोय च अन्तराय तद्देव य ।
 एवमयाइ कम्माई अट्ठेव उ समासञ्चो ॥३॥
 नाणावरणं पंचयिहं, सुयं आभिणिषोहियं ।
 ओहिनाणं च त०यं, मणनाणं च केवलं ॥४॥
 निहा तहव पयस्सा, निहानिहा पयसपयस्सा य ।
 त० य थीणगिद्धी उ, पंचमाहोइ नायग्या ॥५॥

| | |
|--|------|
| किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य । | |
| सुक्कलेसा य छट्ठा य, नामाई तु जहक्कर्म | ॥३॥ |
| जीमूयनिद्धसंकासा, गवत्तरिद्धगसभिमा । | |
| संजजणनयणनिभा, किण्हेलेसा उ वण्णओ | ॥४॥ |
| नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पमा । | |
| वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ | ॥५॥ |
| अयसीपुण्णसंकासा, कोइल्लव्वसभिमा । | |
| पारेवयगीवनिभा काऊलेसा उ वण्णओ | ॥६॥ |
| हिंगुलयधान्संकासा तरुणाइवसभिमा । | |
| सुयतुण्णपरिवनिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ | ॥७॥ |
| हरियालभेयसंकासा, हलिहामेयसमप्पमा । | |
| सणासणकुसुमनिभा, पम्हेलेसा उ वण्णओ | ॥८॥ |
| संलक्कण्वसंकासा, सीरपूरसमप्पमा । | |
| रययहारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ | ॥९॥ |
| अह कडुयतुम्बगरसो, निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो | ॥१०॥ |
| अह तिगडुयस्स य रसो, तिक्कओ अह इत्थिपिप्पलीए वा । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो | ॥११॥ |
| अह सडणम्म्वगरसो, तुषरकथिट्ठस्स वावि जारिसओ । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो | ॥१२॥ |
| अह परिणायम्बगरसो, पक्ककथिट्ठस्स वावि जारिसओ । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ तेऊए नायव्वो | ॥१३॥ |
| वरवाट्ठपीए य रसो, विविहाण य आसवाण जारिसओ । | |
| महुमेरगस्स य रसो, एत्तो पम्हाए परण | ॥१४॥ |

| | |
|---|------|
| सव्यजीवाण कम्म तु, सगहे छद्दिसागरं । | |
| सव्वेसु वि पपसेसु, सव्वं सव्वेण पदगं | ॥१८॥ |
| उव्वहीसरिसनामाण, तीसइ कोडिकोडीओ । | |
| उक्कोसिया ठिई होइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥१९॥ |
| आवरणिआण दुण्हं पि, वेयणिअजे यहेष य । | |
| अन्तराप य कम्मम्मि, ठिई पसा वियाहिया | ॥२०॥ |
| उव्वहीसरिसनामाण, सत्तरि कोडिकोडीओ । | |
| मोहणिअस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥२१॥ |
| तेत्तीससागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| ठिई उ आत्तकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥२२॥ |
| उव्वहीसरिसनामाण, बीसई कोडिकोडीओ । | |
| नामगोत्तणं उक्कोसा, अट्ठं मुहुत्ता जहन्निया | ॥२३॥ |
| सिद्धाण्यण्वभागो य अणुभागा इवन्ति उ । | |
| सव्वेसु वि पपसगं, सव्वजीवे अइच्छियं | ॥२४॥ |
| सम्हा एण्णिं कम्मण्णं, अणुभागा वियाणिया । | |
| एण्णिं संवरे चेव, अण्णो य जप बुद्धो | ॥२५॥ |

॥ चि वेमि ॥ इति कम्मप्पयडी समप्ता ॥३३॥

॥ अह लेसज्जकयण याम वोत्तीसइमं अज्जकयण ॥

| | |
|--|-----|
| लेसज्जकयण पयक्कयामि, अणुपुम्पि जहन्नमं । | |
| अण्हं पि कम्मलेसाण, अणुभाण सुण्हं म | ॥१॥ |
| नामाई पण्णरसगम्यपसपरिणामककण्णं । | |
| टाणं ठिई गई आउं, तसाणं तु सुण्हं म | ॥२॥ |

| | |
|---|------|
| नीयाविप्ती अचवले, अमाई अकुअहले । | |
| विणीयविणए वन्ते, जोगर्ब उवहाणर्ब | ॥२७॥ |
| पियधम्मे वढधम्मेऽववज्जमीरु हिणसए । | |
| एयजोगसमाउत्तो, तेअलेसं तु परिणमे | ॥२८॥ |
| पयणुकोहमाणे य, मायाकोमे य पयणुए । | |
| पसन्तविप्ते वन्तप्पा, जोगर्ब उवहाणर्ब | ॥२९॥ |
| तहा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए । | |
| एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेस तु परिणमे | ॥३०॥ |
| अहुत्ताणि धब्जिप्ता, धम्ममुक्काणि म्मायए । | |
| पसन्तविप्ते वन्तप्पा, समिप गुत्ते य गुत्तिसु | ॥३१॥ |
| सरणो धीयरारो वा, उवसन्ते जिइन्दिए । | |
| एयजोगसमाउत्तो, मुक्कलेसं तु परिणमे | ॥३२॥ |
| असंखिब्जाणोसप्पिणीण, एस्सप्पिणीण जे समया । | |
| संखाईया लोगा, लेसाण हवन्ति ठाणाई | ॥३३॥ |
| मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया । | |
| उक्कोसा होइ ठिई, नायब्बा किण्हलेसाए | ॥३४॥ |
| मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, वस उवही पल्लियमसंखभागमन्भहिया । | |
| उक्कोसा होइ ठिई, नायब्बा नीललेसाए | ॥३५॥ |
| मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णवही पल्लियमसंखभागमन्भहिया । | |
| उक्कोसा होइ ठिई, नायब्बा काठलेसाए | ॥३६॥ |
| मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णवही पल्लियमसंखभागमन्भहिया । | |
| उक्कोसा होइ ठिई, नायब्बा तेरलेसाए | ॥३७॥ |
| मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, वस होमिं य सागरा मुहुत्तहिया । | |
| उक्कोसा होइ ठिई, नायब्बा पम्हलेसाए | ॥३८॥ |

| | |
|---|------|
| सज्जरमुद्दियरसो, स्त्रीररसो स्रग्दसफररसो वा । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, रमो च सुफाप नायव्यो | ॥१५॥ |
| अह गोमदस्स गन्धो, सुणगमदस्स व अहा अहिमदस्स । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, लेसाणं अप्सत्थाणं | ॥१६॥ |
| अह सुरहिकुसुमगन्धो, गन्धवासाण पिस्समाणाण । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि | ॥१७॥ |
| अह करगवस्स फसो, गोखिन्भाए य सागपत्ताण । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, लेसाणं अप्सत्थाण | ॥१८॥ |
| अह वूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं । | |
| एत्तो वि अणन्तगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि | ॥१९॥ |
| तिविहो व नवविहो वा सत्तावीसइविहोक्कसीओ वा । | |
| दुसओ तेयालो वा लेसाणं होइ परिणामो | ॥२०॥ |
| पवासवप्पवत्तो तीहि अगुत्तो असु अबिरओ य । | |
| तिब्बारम्भपरिणओ सुहो साहसिओ नरो | ॥२१॥ |
| निद्वधसपरिणामो निस्संसो अज्झिइन्विओ । | |
| एयजोगसमाउत्तो, क्किएह्लेसं तु परिणमे | ॥२२॥ |
| इरसा अमरिस अत्तओ, अविज्जमाया अहीरिया । | |
| गेही पओसे य सडे, पमत्ते रसलोलुए | ॥२३॥ |
| सायगवेसए य आरम्भाओ अबिरओ सुहो साहसिओ नरो । | |
| एयजोगसमाउत्तो, नील्लेसं तु परिणमे | ॥२४॥ |
| वंक वफसमायार नियडिन्ले अणुअणुए । | |
| पलिउचगओवहिए, मिच्छविट्ठी अणारिए | ॥२५॥ |
| मुप्फालगदुट्ठुवाइ य, तेणे यायि य मच्छरी । | |
| एयजोगसमाउत्तो, फाउलेसं तु परिणमे | ॥२६॥ |

| | |
|---|------|
| तेषु परं वोच्छ्रामि, तेज्जोसा जहा सुरगार्णं । | |
| भवणवद्वाणमन्तरजोऽसवेमाणियार्णं च | ॥५१॥ |
| पलिभोवमं जहन्नं, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिआ । | |
| पलियमसत्थेब्बेण, होइ भागेण तेज्ज | ॥५२॥ |
| वसवाससहस्साहं, तेउए ठिई जहभिया होइ । | |
| दुनुवही पलिभोवममसंखभार्णं च उक्कोसा | ॥५३॥ |
| आ तेज्ज ठिई खल्लु, उक्कोसा सा उ समयमग्गमहिया । | |
| जहनेणं पम्हाए, वस उ मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा | ॥५४॥ |
| आ पम्हाए ठिई खल्लु, उक्कोसा सा उ समयमग्गमहिया । | |
| जहन्नेखं सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्तमग्गमहिया | ॥५५॥ |
| किय्वा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ । | |
| एयाहि तिहिवि जीवो, तुग्गइ उवज्जई | ॥५६॥ |
| तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ । | |
| एयाहि तिहिवि जीवो, तुग्गइ उवज्जई | ॥५७॥ |
| लेसाहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु । | |
| न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स | ॥५८॥ |
| लेसाहिं सव्वाहिं चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु । | |
| न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स | ॥५९॥ |
| अन्तमुहुत्तम्मि गप, अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेष । | |
| लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोयं | ॥६०॥ |
| वम्हा एयासि लेसाण आणुभावे वियाणिया । | |
| अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिद्विए सुणि | ॥६१॥ |

त्ति वेमि ॥ इति लेसग्गयण समर्थं ॥३४॥

- मुहुत्तदं तु जहन्ना तेत्तीस सागरा मुहुत्तद्विया ।
 चकोसा होइ ठिइ, नायव्या मुक्कलेसाए ॥३६॥
- एसा खलु लेसाए, ओहेण ठिई वरिणया होइ ।
 चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाए ठिई तु वोच्छामि ॥४०॥
- वस वासस्तहस्ताइ, काउए ठिइ जहन्निया होइ ।
 तिएणवही पलिओवम, असस्रभागं च चकोसा ॥४१॥
- तिएणवही पलिओवम, असस्रभागो जहन्नेण नीसठिई ।
 वसउवही पलिओवम, असस्रभागं च चकोसा ॥४२॥
- वसउवही पलिओवम असस्रभागं सहन्निया होइ ।
 तेत्तीससागराउ चकोसा, होइ कियहाए लेसाए ॥४३॥
- एसा नेरइयाण, लेसाए ठिई उ वरिणया होइ ।
 तेण पर वोच्छामि, तिरियमणुस्ताण देवाणं ॥४४॥
- अन्तोमुहुत्तमदं, लेसाए ठिई अहिं अहिं आव ।
 तिरियाण नराणं वा वग्गिप्ता केवलं लेसं ॥४५॥
- मुहुत्तदं तु जहन्ना चकोसा होइ पुग्गकोसीओ ।
 नवहि वरिसेहि उया, नायव्या मुक्कलेसाए ॥४६॥
- एसा तिरियनराणं, लेसाए ठिइ उ वरिणया होइ ।
 तेण पर वोच्छामि, लेसाए ठिइ उ देवाण ॥४७॥
- वस वाससहरसाइ, कियहाए ठिइ जहन्निया होइ ।
 पलियमसंखिउज्जइओ, उओसो होइ कियहाए ॥४८॥
- आ कियहाए ठिइ खलु, चकोसा सा उ समयमग्गद्विया ।
 जहन्नणं नीसाए, पलियमसंखं च उओसा ॥४९॥
- आ नीताए ठिइ खल, उओसा सा उ समयमग्गद्विया ।
 जहन्नेण काउए, पलियमसंखं च उओसा ॥५०॥

| | |
|---|------|
| अलघ्ननिस्सिया जीवा, पुढधीकट्टुनिस्सिया । | |
| हम्मन्ति भत्तपाणेसु, सम्हा भिक्खू न पयावप | ॥११॥ |
| विसत्थे सव्वभो घारे, वहुपाणिषिणासणे । | |
| नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइ न दीवप | ॥१२॥ |
| हिरणं जायस्स च, मणसा वि न पत्थप । | |
| समत्तेठ्ठुकंषणे भिक्खू, विरप कयविक्कप | ॥१३॥ |
| क्किणन्तो कइओ होइ, विक्किणन्तो य घाणिओ । | |
| कयविक्कयन्मि घट्टन्तो, भिक्खू न भवइ वारिसो | ॥१४॥ |
| भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खुवत्तिष्सा । | |
| कयविक्कओ महावोसो, भिक्खवत्ती सुहावहा | ॥१५॥ |
| समुयाणं उद्धमेसिज्जा, जहासुत्तमणिन्विय । | |
| त्ताभालामम्मि संतुट्ठे, पिण्डवायं चरे मुणी | ॥१६॥ |
| अलोलो न रसे गिद्धे, जिज्मावन्ते अमुच्छप । | |
| न रसट्ठाप मुज्जिज्जा, जघणट्ठाप महामुणी | ॥१७॥ |
| अण्ण रयणं चेव वन्वण पूयणं तहा । | |
| इहीसक्कारसम्भाण, मणसा वि न पत्थप | ॥१८॥ |
| सुक्कम्मणं म्भियापज्जा, अणियाणे अक्किचणे । | |
| वोसट्ठकाप विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ | ॥१९॥ |
| निज्जहिज्जा आहारं, कालघम्मे उयट्ठिए । | |
| जहिज्जा माणुसं वोन्वि, पट्ट दुप्पस्सा विमुचइ | ॥२०॥ |
| निमम्मे निरहकारे, वीयरगो अणासवो । | |
| संपत्तो केवल्ल नाणं, सासय परिणिव्वुप | ॥२१॥ |

॥त्ति वमि ॥ इति अण्णगारम्मयणं समत्तं ॥३५॥

॥ अह अणगारजभयण गाम पचतीसइम अज्जभयण ॥

- सुणेह मे एगगमणा, ममां दुद्धेहि वसियं ।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्ख्वाणन्तकरे भवे ॥१॥
- गिहघासं परिवज्ज, पवज्जामस्सिए भुणी ।
इमे संगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥२॥
- तदेव हिंसं अक्षिणं, चोच्चं अवम्मसेवणं ।
इच्छा कामं च सोमं च, सत्तुज्जो परिवज्जए ॥३॥
- मणोहरं चित्तपरं, मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाढं पयबुरुल्लेखं, मणसावि न पत्थए ॥४॥
- इन्दियाणि उ भिक्खुसस, तारिसम्मि उवस्सए ।
दुद्धराई निवारणं, कामरागविवद्ध्यो ॥५॥
- सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगज्जो ।
पइरिक्के परकडे वा, घासं तत्थाभिरोयए ॥६॥
- फसुयम्मि अणावाहे, इत्थीहिं अणमिहए ।
तत्थ संकप्पए घासं, भिक्खू परमसज्जए ॥७॥
- न सयं गिहाई कुप्पिज्जा, एव अन्नेहिं फारए ।
गिहकम्मसमारम्भे, भूयाणं विस्सए यहो ॥८॥
- तसाणं यायराण च, सुद्धमाण यादराण च ।
सम्हा गिमसमारम्भं संजज्जो परिवज्जण ॥९॥
- तइव भत्तपाणेसु पयणे पयापणेसु च ।
पाणभयदयद्वाए, न पए न पयापए ॥१०॥

| | |
|---|------|
| सुहृमा सन्वत्तोगम्भि, लोगदेसे य वायरा । | |
| इषो कालविभाग तु, तेसिं युच्छ चचम्बिह | ॥१२॥ |
| संषइ पय्य तेऽणार्ई, अपवज्जवसिया वि य । | |
| ठिई पडुष सार्ईया, सपज्जवसिया वि य | ॥१३॥ |
| असंस्कात्तमुक्कोसं, एक्को समयो जहभयं । | |
| अवीवाण य रूवीण, ठिई पसा वियाहिया | ॥१४॥ |
| अणन्तकात्तमुक्कोसं, एक्कं समय जहभयं । | |
| अवीवाण य रूवीणं, अन्तरेय वियाहियं | ॥१५॥ |
| वण्णओ गन्धओ चेव, रसओ फसओ तहा । | |
| संठाणओ य विजेओ, परिणामो तेसि पंचहा | ॥१६॥ |
| वण्णओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्कितिया । | |
| फिण्हा नीळा य लोहिया, हलिहा सुक्किता तहा | ॥१७॥ |
| गन्धओ परिणया जे उ, दुबिहा ते वियाहिया । | |
| सुग्भिगन्धपरिणामा, दुग्भिगन्धा तद्देव य | ॥१८॥ |
| रसओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्कितिया । | |
| वित्तकडुयकसाया, अन्विता महुरा तहा | ॥१९॥ |
| फसओ परिणया जे उ, अट्टहा ते पक्कितिया । | |
| कक्खहा मउआ चेय, गरुया लहुया तहा | ॥२०॥ |
| सीया ण्णहा य निद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया । | |
| इय फसपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया | ॥२१॥ |
| संठाणओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्कितिया । | |
| परिमण्डला य षट्ठा य, तसा चउरंसमायया | ॥२२॥ |
| वण्णओ जे भवे फिण्ह, भइए से उ गन्धओ । | |
| रसओ फसओ चेय, भइए संठाणओवि य | ॥२३॥ |

॥ અહ જીવાજીવવિભત્તી ચામ છત્તીસશ્મં
અજમ્મયણ ॥

- જીવાજીવવિભત્તિ, સુણેહ મે પગમણા રૂઓ ।
 ઝં જાણિઠ્ઠણ મિલ્લુ, સમ્મં જયદ્ સંજમે ॥૧॥
- જીવા એવ અજીવા ય, એસ તોપ વિયાહિય ।
 અજીવવેસમાગાસે, અલોભો સે વિયાહિય ॥૨॥
- વલ્લઓ સ્વેત્તઓ એવ કાલઓ માવઓ તદ્દા ।
 પરુવણા તંસિં મહે, સ્ત્રીવાણમસ્ત્રીવણ ય ॥૩॥
- રૂવિણો એવરૂપી ય, અજીવા તુવિહા મહે ।
 અરૂપી વસહા વુત્તા, રૂવિણો ય વસઘ્ઘિહા ॥૪॥
- ધમ્મત્થિકાપ તદેસે તપ્પપસે ય આહિય ।
 અહન્મે તસ્સ દેસે ય, તપ્પપસે ય આહિય ॥૫॥
- આગાસે તસ્સ વસે ય, તપ્પપસે ય આહિય ।
 અદ્ધાસમપ એવ, અરૂપી વસહા મહે ॥૬॥
- ધમ્માધમ્મે ય વો એવ, સોગમિત્તા વિયાહિયા ।
 સોગાલોગે ય આગાસે, સમપ સમયસ્થેત્થિપ ॥૭॥
- ધમ્માધમ્માગાસા તિન્નિ વિ પપ અણાહિયા ।
 અપજ્ઞયસિયા એવ, સમ્યદ્ધં તુ વિયાહિયા ॥૮॥
- સમપ યિ સન્તરૂં પપ્પ પયમય વિયાહિય ।
 આપસં પપ્પ સાદ્દણ, સપજ્ઞયસિય યિ ય ॥૯॥
- સન્ધા ય સ્વપદેસા ય, તપ્પપસા તદ્દવ ય ।
 પરમાણુઓ ય ઘોઘ્ઘ્યા, સ્વિણા ય અઝ્ઞિહા ॥૧૦॥
- પગપ્પેણ પુહ્પેણ, મ્થા ય પરમાણુય ।
 સોગેગદ્ધે સોપ ય, મજ્ઞયન્વા ત ડ સ્થેત્થા ॥૧૧॥

| | |
|--|------|
| પ્રસન્નો મત્ત્વ જે ર, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સંઠાણ્ણો વિ ય | ॥૩૬॥ |
| પ્રસન્નો ગુરુવ જે ર, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સંઠાણ્ણો વિ ય | ॥૩૭॥ |
| પ્રસન્નો ત્રુદ્વ જે ર, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સંઠાણ્ણો વિ ય | ॥૩૮॥ |
| પ્રસન્નો સીયવ જે ર, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સંઠાણ્ણો વિ ય | ॥૩૯॥ |
| પ્રસન્નો હ્લ્લ્લ્લ જે ર, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સંઠાણ્ણો વિ ય | ॥૪૦॥ |
| પ્રસન્નો નિદ્વ જે ર, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સંઠાણ્ણો વિ ય | ॥૪૧॥ |
| પ્રસન્નો જુલ્લ્લ જે ર, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સંઠાણ્ણો વિ ય | ॥૪૨॥ |
| પરિમહ્લસંઠાણ્ણો, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ મદ્વ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૩॥ |
| સંઠાણ્ણો મવે વદ્દે, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૪॥ |
| સંઠાણ્ણો મવે ત્ત્ત્ત્ત, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૫॥ |
| સંઠાણ્ણો જે વવર્ત્ત્ત, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૬॥ |
| સે વ્વાયવસંઠાણ્ણો, મદ્વ સે ર ઘણ્ણો । | |
| ગન્ધ્નો રસન્નો વેવ, મદ્વ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૭॥ |

| | |
|--|------|
| ઘણાઓ જે મધે નીલે, મદ્ય સે ઇ ગન્ધાઓ । | ॥૨૪॥ |
| રસાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૨૫॥ |
| ઘણાઓ લોહિય જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ગન્ધાઓ । | ॥૨૬॥ |
| રસાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૨૭॥ |
| ઘણાઓ પીયણ સે ઇ, મદ્ય સે ઇ ગન્ધાઓ । | ॥૨૮॥ |
| રસાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૨૯॥ |
| ઘણાઓ મુઝિલે જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ગન્ધાઓ । | ॥૩૦॥ |
| રસાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૧॥ |
| ગન્ધાઓ જે મધે સુન્ધી, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૩૨॥ |
| રસાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૩॥ |
| ગન્ધાઓ જે મધે દુઢી, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૩૪॥ |
| રસાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૫॥ |
| રસાઓ વિષાળ જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૩૬॥ |
| ગન્ધાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૭॥ |
| રસાઓ કઠુપ જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૩૮॥ |
| ગન્ધાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૯॥ |
| રસાઓ કમાળ જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૪૦॥ |
| ગન્ધાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૧॥ |
| રસાઓ અત્યંત જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૪૨॥ |
| ગન્ધાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૩॥ |
| રસાઓ કમાળ જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૪૪॥ |
| ગન્ધાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૫॥ |
| રસાઓ કમાળ જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૪૬॥ |
| ગન્ધાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૭॥ |
| રસાઓ કમાળ જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૪૮॥ |
| ગન્ધાઓ ફાસાઓ પેષ, મદ્ય સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૯॥ |
| રસાઓ કમાળ જે ઇ, મદ્ય સે ઇ ઘણાઓ । | ॥૫૦॥ |

| | |
|--|------|
| પ્રસન્નો મરુપ જે ર, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગંધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૬॥ |
| પ્રસન્નો ગુરુપ જે ર, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૭॥ |
| પ્રસન્નો લઘુપ જે ર, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૮॥ |
| પ્રસન્નો સીયપ જે ર, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૩૯॥ |
| પ્રસન્નો ઘણુપ જે ર, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૦॥ |
| પ્રસન્નો નિઘ્રુપ જે ર, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગંધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૧॥ |
| પ્રસન્નો લુક્ષ્મણ જે ર, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સંઠાણાઓ વિ ય | ॥૪૨॥ |
| પરિમહાસંઠાણો, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ મરુપ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૩॥ |
| સંઠાણાઓ મને વટ્ટે, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગંધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૪॥ |
| સંઠાણાઓ મને તંત્રે, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૫॥ |
| સંઠાણાઓ જે અવરંત્રે, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગન્ધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૬॥ |
| જે આયસંઠાણો, મરુપ સે ર ઘણાઓ । | |
| ગંધાઓ રસાઓ જેવ, મરુપ સે પ્રસન્નો વિ ય | ॥૪૭॥ |

| | |
|--|------|
| एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया । | |
| इत्तो जीवविभत्ति, युच्छामि अणुपुन्यसो | ॥४८॥ |
| संसारत्था य सिद्धा य, दुयिहा जीवा वियाहिया । | |
| सिद्धा ऐगविहा युत्ता तं म च्छियमो मुण | ॥४९॥ |
| इत्थो पुरीससिद्धा य, त्थेव य नपसगा । | |
| सल्लिगे अन्नल्लिगे य, गिहिल्लिगे त्थेव य | ॥५०॥ |
| उक्कोसोगाहणाप य, अहम्ममम्मिमाइ य । | |
| उइ अहे य तिरियं च, समुहम्मि जलम्मि य | ॥५१॥ |
| वस य नपुसपसु, वीस इत्थियासु य । | |
| पुरिसेसु य अट्ठसयं समपयोगेण सिम्महिं | ॥५२॥ |
| चत्तारि य गिहिल्लिगे, अन्नल्लिगे वसेव य । | |
| सल्लिगेण अट्ठसयं, समपयोगेण सिम्महिं | ॥५३॥ |
| उक्कोसोगाहणाप य, सिम्मन्ते जुगमं दुवे । | |
| चत्तारि अहमाप, मम्मो अट्ठत्तरं सयं | ॥५४॥ |
| चउरुल्लोप य दुवे समुदे, तन्नो जले वीसमहे त्थेव य । | |
| सयं च अट्ठत्तरं तिरियल्लोप, समपयोगेण सिम्महिं धुय | ॥५५॥ |
| कहिं पडिहया सिद्धा कहिं सिद्धा पइट्ठिया । | |
| कहिं वोन्दि चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिम्महिं | ॥५६॥ |
| अलोप पडिहया सिद्धा ज्ञेयमो य पइट्ठिया । | |
| इह वोन्दि चइत्ताणं, तत्थ गन्तूण सिम्महिं | ॥५७॥ |
| वारसहिं ज्ञेयणेहिं, सत्थद्वस्सुवरिं भवे । | |
| ईसिपक्कमारनामा उ पडवी ज्ञत्तसंठिया | ॥५८॥ |
| पण्णयात्तसयसहस्सा, ण्यण्णं तु आयया । | |
| तावइयं जेव भित्थियणा, तिगुणो वस्सेव परिरब्धो | |

| | |
|--|------|
| महजोयणवाहुला, सा मग्गम्मि वियाहिया । | |
| परिहायन्ती चरिमन्ते, पच्छिपप्पाठ तण्णयरी | ॥६०॥ |
| अब्जुणमुक्खणगमइ, सा पुढवी निम्मत्ता सहावेण । | |
| उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य, भणिया जिणवरेहिं | ॥६१॥ |
| संसंक्कुदसंकासा पण्डरा निम्मत्ता सुहा । | |
| सीयाए जोयणे तत्तो, जोयन्तो उ वियाहिंओ | ॥६२॥ |
| जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे । | |
| तस्स कोसस्स छग्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे | ॥६३॥ |
| तत्थ सिद्धा महाभागा, लोभगग्गम्मि पइद्विया । | |
| भवपपंचओ मुक्का, सिद्धिं वरगइ गया | ॥६४॥ |
| उस्सेहो जेसिं जो होइ, मग्गम्मि चरिमम्मि उ । | |
| विभत्ताहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे | ॥६५॥ |
| एगत्तेय साईया अपब्जवसिया वि य । | |
| पुहत्तेय अणाइया अपब्जवसिया वि य | ॥६६॥ |
| अत्थविणो जीववणा, नाणवसणसन्निया । | |
| अट्ठं सुह संपप्पा, उवमा अस्स नत्थि उ | ॥६७॥ |
| लोभेगवेसे ते सम्भे, नाणवसणसन्निया । | |
| ससारपारनित्थिणणा, सिद्धिं वरगइ गया | ॥६८॥ |
| ससारत्था उ जे जीवा पुविहा ते वियाहिया । | |
| तसा य थावरा जेव, थावरा तिविहा तहिं | ॥६९॥ |
| पुढवी आउजीया य उहेव य वणस्सई । | |
| इथेए थावरा तिविहा, तेसिं मेए सुणेह मे | ॥७०॥ |
| दुविहा पुढवीजीया य, सुहुमा थावरा उहा । | |
| पग्गत्तमपग्गत्ता, एवमेय पुहा पुणो | ॥७१॥ |

| | |
|--|------|
| एषसि वरणञ्चो चेध, गन्धञ्चो रसफासञ्चो । | |
| संठाणवेसञ्चो वाधि, विहाणाइ सहस्ससो | ॥८४॥ |
| दुविहा आऊजीवा उ, सुहुमा वायरा तहा | |
| पञ्चत्तमपञ्चत्ता, एषमेए दुहा पुणो | ॥८५॥ |
| वायरा जे उ पञ्चत्ता, पचहा ते पफित्तिया । | |
| सुदोएए य उस्से, हरतणु महिया हिमे | ॥८६॥ |
| एगविहमणाएत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया । | |
| सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोणवेस्से य वायरा | ॥८७॥ |
| सन्तई पप्प णाईया, अपञ्चवसिया वि य । | |
| ठिई पडुव सार्इया, सपञ्चवसिया वि य | ॥८८॥ |
| सत्तेव सहस्साई, वासाणुक्कोसिया भवे । | |
| आवठिई आऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥८९॥ |
| असंखफालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं । | |
| कायठिई आऊणं, तं काय तु अमुंचञ्चो | ॥९०॥ |
| अयन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं । | |
| यिज्जडम्मि सए काए, आऊजीवाए अन्तर | ॥९१॥ |
| एषसि वरणञ्चो चेध, गन्धञ्चो रसफासञ्चो । | |
| संठाणवेसञ्चो वाधि, विहाणाई सहस्ससो | ॥९२॥ |
| दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा वायरा तहा । | |
| पञ्चत्तमपञ्चत्ता, एषमेए दुहा पुणो | ॥९३॥ |
| वायरा जे उ पञ्चत्ता, दुविहा ते वियाहिया । | |
| साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेय य | ॥९४॥ |
| पत्तेगसरीराओऽणोगहा ते पफित्तिया । | |
| रक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली सणा तहा | ॥९५॥ |

| | |
|--|------|
| चलय पन्थगा कुट्टया, जलरुहा ओसही तहा | ॥६६॥ |
| हरियकाया योद्धव्या, पत्तेगाइ वियाहिया | ॥६७॥ |
| सहारणसरीराओऽणोगहा ते पफित्तिया । | ॥६८॥ |
| आलए मूलए चेय, सिंगयेरे तहेय य | ॥६९॥ |
| हरिली सिरिली सस्तिरिली, जावई फेयफन्दली । | ॥७०॥ |
| फलएहुलसणफन्दे य, फन्दली य फहुषए | ॥७१॥ |
| लोहिणीहूय धीहू य, कुहगा य तहेय य । | ॥७२॥ |
| कण्हे य वज्रफन्दे य, फन्दे सूरणपसहा | ॥७३॥ |
| अस्सकण्णी म बोद्धव्या, सीहफण्णी तहेय य । | ॥७४॥ |
| मुसुएडी य हलिहा य, योगहा एवमायओ | ॥७५॥ |
| पराविहमणायत्ता, सुहुमा सत्य वियाहिया । | ॥७६॥ |
| सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगवेस्से य वायरा | ॥७७॥ |
| संसई पप्प गार्हिया, अपज्जवसिया वि य । | ॥७८॥ |
| ठिइ पढुव सार्हिया, सपज्जवसिया वि य | ॥७९॥ |
| वस चेव सहस्साई, वासाण्णोसिया भये । | ॥८०॥ |
| वणस्सईण आरं तु, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥८१॥ |
| अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नियं । | ॥८२॥ |
| कामठिई पण्णागार्ह्यं, तं कार्यं तु अमुं वओ | ॥८३॥ |
| असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नियं । | ॥८४॥ |
| विज्जडम्मि सए काए, पण्णागजीवाण अन्तरं | ॥८५॥ |
| एएसि वइणओ चेव, गन्धओ रसघासओ । | ॥८६॥ |
| संठण्णदेसओ वाभि, विहाण्णार्हं सहस्ससो | ॥८७॥ |
| इण्णेष यावर तिविहा, समासेण वियाहिया । | ॥८८॥ |
| इत्तो उ वसे तिविहे, युप्पामि अणुपुण्यसो | ॥८९॥ |

| | |
|---|-------|
| तेऊ वाऊ य वोखठ्ठा, सराला य वसा तहा । | |
| इच्छेए तसा विधिहा, तेसिं मेए सुणेइ मे | ॥१०८॥ |
| दुविहा तेऊजीया उ, सुहुमा वायरा तहा । | |
| पञ्चत्तमपञ्चत्ता, एवमेए दुहा पुणो | ॥१०९॥ |
| वायरा जे उ पञ्चत्ता, योगहा ते धियाहिया । | |
| इगाले मुम्मुरे अगणी, अविजाला तहेच य | ॥११०॥ |
| उक्काविञ्जु य वोघठ्ठा, योगहा एवमायओ । | |
| एगविहमणायत्ता सुहुमा ते धियाहिया | ॥१११॥ |
| सुहुमा सव्वसोगम्मि, लोगदेसे य वायरा । | |
| इत्तो कालविभाग तु, तेसिं धुच्छ चरम्बिहं | ॥११२॥ |
| संतइं पप्प णाईया, अपञ्चवसिया वि य । | |
| ठिइ पढुव साईया, सपञ्चवसिया वि य | ॥११३॥ |
| वियणेव अहोरत्ता, उक्कोसेण विवाहिया | |
| आठिई तेऊण, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥११४॥ |
| असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं । | |
| कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुक्को | ॥११५॥ |
| अण्णत्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं । | |
| विजठम्मि सए काए, तेऊजीयाण अन्तर | ॥११६॥ |
| एणसिं वण्णओ खेव, गण्णओ रसफासओ । | |
| संठाणवेसओ याधि, विहाणाईं सहस्ससो | ॥११७॥ |
| दुविहा वाउजीया उ, सुहुमा वायरा तहा । | |
| पञ्चत्तमपञ्चत्ता एवमेए दुहा पुणो | ॥११८॥ |
| वायरा जे उ पञ्चत्ता पञ्चहा ते पकित्तिया । | |
| उक्कल्लिया मण्णल्लिया घणगुह्मा सुद्धवाया य | ॥११९॥ |

| | |
|---|-------|
| संवदृगयाया य, एगेहा एवमायधो । | |
| एगयिहमणाणत्ता, सुदुमा तस्थ विआहिआ | ॥१२०॥ |
| सुदुमा सव्वलोगम्मि, एगदसे य यायरा । | |
| इत्तो कालयिभाग तु तेसिं दुच्छ चवन्विहं | ॥१२१॥ |
| मन्तइ पप्पणाइया, अपज्जयसियायि य । | |
| ठिइ पडुव साइया सपज्जयसियायि य | ॥१२२॥ |
| तिरणेय सहस्साई वासाणुक्कोसिया भव । | |
| आवठिई वाऊणं, अन्तोमुदुत्त जहन्निया | ॥१२३॥ |
| असंलफालमुक्कोसं, अन्तोमुदुत्त जहन्नयं । | |
| कायठिई वाऊणं, व कायं तु अमुंपओ | ॥१२४॥ |
| अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुदुत्त जहन्नय । | |
| विजडम्मि नए काए, वाऊजीवाण अन्त | ॥१२५॥ |
| एएसिं वइयाओ चेव गअओ रसप्यसओ । | |
| मठाएवसओ वाधि, विहाण्याई सहस्ससो | ॥१२६॥ |
| उरात्ता तसा जे उ अइहा ते पकित्तिया । | |
| वेइन्विय-तेइन्विय, चवरो पंचिन्विया चेव | ॥१२७॥ |
| वेइन्विया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया । | |
| पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं मेए सुणोह म | ॥१२८॥ |
| किमिणो सोमगळा चेव अल्लसा माइवाइया । | |
| धासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखयगा तहा | ॥१२९॥ |
| पट्टेयाणुत्तया चेव, तहेव य वराडगा । | |
| जलूगा आलगा चेव, अन्वया य तहेव य | ॥१३०॥ |
| इइ वेइन्विया एएऽणोगहा एवमायधो । | |
| लोगेगदेसे ते सठ्ठे, न सव्वस्थ यियाइया | ॥१३१॥ |

| | |
|--|-------|
| संतइ पण्ण णाईया, अपज्जवसिया वि य । | |
| ठिई पडुष साईया, सपज्जवसिया वि य | ॥१३२॥ |
| घासाइ धारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| वेइन्दियआठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया । | ॥१३३॥ |
| संस्सिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय । | |
| वेइन्दियकायठिइ, तं कायं तु अमुपओ | ॥१३४॥ |
| अणान्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय । | |
| वेइन्दियजीषाणं, अन्तरं च वियाहियं | ॥१३५॥ |
| एएसिं षण्णओ चेव, गन्धओ रसफरुओ । | |
| संठाणवेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो | ॥१३६॥ |
| तेइन्दिया उ ओ जीषा, दुविहा ते पकितिया । | |
| पज्जसमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेइ मे | ॥१३७॥ |
| कुन्धुपिपीलिउइसा, उक्कलुइइया तहा । | |
| तण्हारफट्टहारा य, मालूगा पत्तहारगा | ॥१३८॥ |
| फण्णासठुम्मि जायन्ति, वुगा तवसमिज्जगा । | |
| सदावरी य गुम्मी य, वोद्वग्गा इन्दगाइया | ॥१३९॥ |
| इन्दगोयगमाइया, एगेहा एयमायओ । | |
| लोगेगदसे ते सव्वे, न सम्बस्थ वियाहिया | ॥१४०॥ |
| संतइ पण्ण णाईया, अपज्जवसिया वि य । | |
| ठिई पडुष साइया, सपज्जवसिया वि य | ॥१४१॥ |
| एण्णपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| तेइन्दियआठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥१४२॥ |
| संस्सिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय । | |
| तेइन्दियकायठिइ, तं कायं तु अमुपओ | ॥१४३॥ |

| | |
|--|-------|
| अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तो मुहुत्त जहन्नय । | |
| तेऽन्वियजीवाणं, अंतर च वियाहिया | ॥१४४॥ |
| एणसि एणओ चेव गच्छओ रसफसओ । | |
| संठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्सतो | ॥१४५॥ |
| चचरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पफितिया । | |
| पव्वज्जमपव्वज्जा, तेसि मेए सुणेइ मे | ॥१४६॥ |
| अन्धिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा रहा । | |
| भमर कीडपयगे य ठिक्कुणे कंफणे तहा | ॥१४७॥ |
| कुक्कुडे सिंगिरीही य, नन्दावत्ते य विच्छुए । | |
| होले सिंगिरीय, विरली अच्छिवहए | ॥१४८॥ |
| अच्छिले माहए अच्छिरोहए विचित्ते जित्तपत्तए । | |
| वहिंजलिया जलकारी य, नीया संतवगाइया | ॥१४९॥ |
| इम चचरिन्दिया एए, ऽयोगहा एवमायओ । | |
| लोगस्स एगदेसमि ते सव्वे परिकित्तिआ | ॥१५०॥ |
| संतइ पप्प णाईया अपव्वज्जवसिया वि य । | |
| ठिइ पडुव सार्इया, सपव्वज्जवसिया वि य | ॥१५१॥ |
| छक्केव य मासाउ वक्कोसेण वियाहिया । | |
| चचरिन्दियआठठिइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥१५२॥ |
| समिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं । | |
| चचरिन्दियकायठिइ तं कायं तु अमुंपओ | ॥१५३॥ |
| अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं । | |
| विज्जम्मि सए काए अन्तरं च वियाहियं | ॥१५४॥ |
| एणसि वरणओ चेव, गन्धवो रसफसओ । | |
| संठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्सतो | ॥१५५॥ |

| | |
|--|-------|
| पश्चिन्दिया च जे जीवा, चक्षुषिहा ते वियाहिया । | |
| नेरइया तिरिक्त्ता य, मण्डुया वेवा य आहिया | ॥१५६॥ |
| नेरइया सत्तविहा, पुढीसु सत्तसु भवे । | |
| रयणाम सक्करामा, बालुयामा य आहिया | ॥१५७॥ |
| पकाभा घूमाभा, तमा तमतमा तहा । | |
| इइ नेरइया ए सत्तहा परिकित्तिया | ॥१५८॥ |
| लोगत्स एगवेसम्मि, ते सळ्वे च वियाहिया । | |
| एत्तो फाल्लविभाग तु, तेहिं थोच्छं चक्षुषिहं | ॥१५९॥ |
| संतई पप्प णाहिया, अपञ्चवसिया वि य । | |
| ठिइं पढुव साहिया, सपञ्चवसिया वि य | ॥१६०॥ |
| सागरोवममेग तु, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| पढमाए जहन्नेणं, वसवाससइस्सिया | ॥१६१॥ |
| तिक्खेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| दोषाए जहन्नेण, एग तु सागरोवमं | ॥१६२॥ |
| सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| वइयाए जहन्नेणं, तिक्खेव सागरोवमा | ॥१६३॥ |
| वससागरोवमाऊ, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| चक्यीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा | ॥१६४॥ |
| सत्तरससागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| पंधमाए जहन्नेणं, वस पेय सागरोवमा | ॥१६५॥ |
| वाधीससागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| छट्ठीए जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा | ॥१६६॥ |
| तप्तीससागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| सत्तमाए जहन्नेण, वाधीस सागरोवमा | ॥१६७॥ |

| | |
|---|-------|
| जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं धियाहिया । | |
| सा तेसिं फायठिई जहन्नुक्कोसिया भव | ॥१६८॥ |
| अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं । | |
| धिजडम्मि सए काए, नेरइयाणं तु अन्तरं | ॥१६९॥ |
| एणंसिं वएणओ चेव गघओ रसधसओ । | |
| संठाणदसओ बाधि, धिहाणाई सहस्ससो | ॥१७०॥ |
| पच्चिन्वियतिरिक्खाओ, दुधिहा ते धियाहिया । | |
| समुच्छिमतिरिक्खाओ, गम्भवकन्तिया तहा | ॥१७१॥ |
| दुधिहा ते भव तिधिहा, अलयर यलयर तहा । | |
| नहयर य वोद्धन्ना, तेसिं भेए सुणेह मे | ॥१७२॥ |
| मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा । | |
| सु सुमारा य बोधव्वा, पंचहा अलयरहिया | ॥१७३॥ |
| लोएगवेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ धियाहिया । | |
| पत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउच्चिई | ॥१७४॥ |
| संतई पप्प णाईया अपच्चवसिया धि य । | |
| ठिई पबुब साईया सपच्चवसिया धि ध | ॥१७५॥ |
| एगा य पुठवकोडी उक्कोसेण धियाहिया । | |
| आउठिई अलयरणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥१७६॥ |
| पुठवकोडिपुहत्तं तु, उक्कोसेण धियाहिया । | |
| कार्याठिई अलयरणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं | ॥१७७॥ |
| अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं । | |
| धिजडम्मि सए काए अलयरयण अन्तरं | ॥१७८॥ |
| चउपया य परिसप्पा दुधिहा धलयर भव । | |
| चउपया चउविहा, ते मे फिप्पयओ मुण | ॥१७९॥ |

| | |
|--|-------|
| पगसुरा दुसुरा चेष, गयसीपयसणहप्पया । | |
| हयमाइ गोणमाइ, गयमाइ सीहमाइणो | ॥१८०॥ |
| मुओत्तरग परिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे । | |
| गोहाई अहिमाई य, एकेका योगहा भवे | ॥१८१॥ |
| लोपगवेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया । | |
| एत्तो कालविमगं तु, वोच्छं तेसिं चउम्बिहं | ॥१८२॥ |
| संतइं पप्प णाईया, अपत्तवसिया वि य । | |
| ठिइ पडुव साईया सपत्तवसिया वि य | ॥१८३॥ |
| पत्तिओवमाइ तिण्ण उ उक्कोसेण वियाहिया । | |
| आउठिई थलयराणं, अन्तो मुहुत्तं वियाहिया | ॥१८४॥ |
| पुब्बकोढिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया । | |
| कायठिई थलयराणं, अन्तर तेसिम भवे | ॥१८५॥ |
| कालमणन्तमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय । | |
| विज्जवन्मि सए काप, थलयराण तु अन्तर | ॥१८६॥ |
| चन्मे उ लोमपक्खी य, उइया समुग्गपविसया । | |
| विययपक्खी य बोधव्वा पविसणो य चउम्बिहा | ॥१८७॥ |
| लोगेगवेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया । | |
| इत्तो कालविमगं तु, तेसिं वोच्छं चउम्बिह | ॥१८८॥ |
| संतइं पप्प णाईया, अपत्तवसिया वि य । | |
| ठिइ पडुव साईया, सपत्तवसिया वि य | ॥१८९॥ |
| पत्तिओवमस्स भागो, असंखेज्जइमो भवे । | |
| आउठिई खइयराण, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥१९०॥ |
| असंखभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया । | |
| पुब्बकोढिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय | ॥१९१॥ |

| | |
|---|-------|
| कायठिइ स्रहयराणं अन्तरं तेसिम भवे । | |
| अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं | ॥१६२॥ |
| एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफसओ । | |
| संठाणदेसओ पायि, विहाणाइं सहस्ससो | ॥१६३॥ |
| मणुया दुविह भेया व, ते मे कित्तयओ सुण । | |
| संमुब्धिमा य मणुया, गळभयफन्तिया तहा | ॥१६४॥ |
| गळभयफन्तिया जे व, तिविहा ते वियाहिया । | |
| कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरदीवया तहा | ॥१६५॥ |
| पन्नरस तीसविहा, भेया अट्ठवीसई । | |
| संखा व कम्मसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया | ॥१६६॥ |
| समुब्धिमाण एसेव, मेओ होइ वियाहिओ । | |
| लोगस्म एगदेसम्मि, ते सब्बे वि वियाहिया | ॥१६७॥ |
| सतइ पण्य याईया, अप्पस्सवसिया वि य । | |
| ठिइ पढुव साईया, सपस्सवसिया वि य | ॥१६८॥ |
| पलिओयमाव तिन्निवि चक्कोसेण विआहिया । | |
| आठिइ मणुयाण, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥१६९॥ |
| पलिओयमाइ तिण्ण व चक्कोसण वियाहिया । | |
| पुठवकोइपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया | ॥२००॥ |
| कायठिइ मणुयाण अन्तरं तेसिमं भवे । | |
| अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं | ॥२०१॥ |
| एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ । | |
| सठाणवसओ पायि, विहाणाइ सहस्ससो | ॥२०२॥ |
| वृवा वप्पिया वृत्ता त मे कित्तयओ सुण । | |
| भोमिअपाणमन्तरजोइसवमाणिया तहा | ॥२०३॥ |

| | |
|---|-------|
| दसहा च भवणवासी, अट्टहा वणचारिणो । | |
| पंचविहा ओइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा | ॥२०४॥ |
| असुरा नागसुषण्णा, विज्ज अग्गी वियाहिया । | |
| वीवोदहिविसा वाया यणिया भवणवासिणो | ॥२०५॥ |
| पिसायमया जक्खा य रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा । | |
| महोरगा य गन्धव्या, अट्टविहा वाणमन्तरा | ॥२०६॥ |
| चन्दा सुरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा । | |
| ठिया विचारिणो चेव, पचहा ओइसालिया | ॥२०७॥ |
| वेमाणिया उ जे वेषा, दुविहा ते वियाहिया । | |
| कप्पोवगा य वोघव्वा, कप्पाइया तद्देव य | ॥२०८॥ |
| कप्पोवगा धारसहा, सोहन्मीसायणा तहा । | |
| सण्णकुमारमाहिन्दा, बन्मलोगा य सन्तगा | ॥२०९॥ |
| महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा । | |
| आरणा अण्डुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा | ॥२१०॥ |
| कप्पाइया उ जे वेषा, दुविहा ते वियाहिया । | |
| गेविज्जाणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहि | ॥२११॥ |
| हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमामग्गिमा तहा । | |
| इट्ठिमाउवरिमा चेव, मग्गिमाहेट्ठिमा तहा | ॥२१२॥ |
| मग्गिमामग्गिमा चेव, मग्गिमाउवरिमा तहा । | |
| उयरिमाहेट्ठिमा चेव, उवरिमामग्गिमा तहा | ॥२१३॥ |
| उयरिमाउवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा । | |
| विज्जया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया | ॥२१४॥ |
| सव्यत्यसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा । | |
| इय वेमाणिया एएऽणोगहा एधमायणो | ॥२१५॥ |

| | |
|---|-------|
| लोगस्म एगदेसम्मि, ते सठ्ठे वि वियाहिया । | |
| इत्तो कान्तिविभागं तु, तेसिं वुन्छ पठव्यिहं | ॥२१६॥ |
| सतई पप्प खाइया, अपस्वपसिया वि य । | |
| ठिई पदुध साइया सपअवसिया वि य | ॥२१७॥ |
| साहीय सागर एकं, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| भोमेज्जाण जहनेण वसवाससहरिसिया | ॥२१८॥ |
| पलिओवममेग तु, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| वन्तराय, जहन्नेण, वसवाससहरिसिया | ॥२१९॥ |
| पलिओवममेग तु, वासलक्खेण साहिय । | |
| पलिओवमठुभागो जोइसेसु जहमिया | ॥२२०॥ |
| पो चेष सागराई, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| सोहन्मम्मि जहनेण एगं च पलिओवमं | ॥२२१॥ |
| सागरा साहिया बुझि, उक्कोसेण वियाहिया । | |
| ईसाणम्मि जहन्नेण साहियं पलिओवमं | ॥२२२॥ |
| सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेणं ठिई भवे । | |
| सयांकुमारि जहन्नेण, बुझि ऊ सागरोवमा | ॥२२३॥ |
| साहिया सागरो सत्त, उक्कोसेणं ठिई भवे । | |
| माहिन्दम्मि जहनेण, साहिया बुझि सागरा | ॥२२४॥ |
| वस चेष सागराई, उक्कोसेणं ठिई भवे । | |
| वन्मलाए जहनेण, सत्त ऊ सागरोवमा | ॥२२५॥ |
| चठवम सागराई उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| लन्तगम्मि जहन्नेण, वस च सागरोवमा | ॥२२६॥ |
| सत्तरस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| महासुक्के जहन्नेण, पोइस, सागरायमा | ॥२२७॥ |

| | |
|---------------------------------------|-------|
| अट्टारस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| सहस्रारम्भि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा | ॥२२८॥ |
| सागरा अण्णवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| आणयम्भि जहन्नेण, अट्टारस सागरोवमा | ॥२२९॥ |
| वीसं तु सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| पाणयम्भि जहन्नेण, सागरा अण्णवीसई | ॥२३०॥ |
| सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| आरणम्भि जहन्नेण वीसई सागरोवमा | ॥२३१॥ |
| वावीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| अण्णुयम्भि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई | ॥२३२॥ |
| तेवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| पढमम्भि जहन्नेण, वावीसं सागरोवमा | ॥२३३॥ |
| चउवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| विइयम्भि जहन्नेण तेवीसं सागरोवमा | ॥२३४॥ |
| पण्णवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| तइयम्भि जहन्नेण, चउवीसं सागरोवमा | ॥२३५॥ |
| छवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| वक्त्यम्भि जहन्नेण, सागरा पण्णवीसई | ॥२३६॥ |
| सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| पञ्चमम्भि जहन्नेण, सागरा च छवीसई | ॥२३७॥ |
| सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| छट्ठम्भि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई | ॥२३८॥ |
| सागरा अण्णवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| सत्तमम्भि जहन्नेण, सागरा अट्ठवीसई | ॥२३९॥ |

| | |
|---|-------|
| तीस तु सागराई उक्कोसेण ठिई भव । | |
| अट्टमम्मि जहन्नणं, सागरा अठणतीसइ | ॥२४०॥ |
| सागरा इक्कतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । | |
| नवमम्मि जहन्नणं, तीसइ सागरोवमा | ॥२४१॥ |
| तेत्तीसा सागराई, उक्कोसेण ठिई भव । | |
| चउसुपि यिजयाइसु, जहन्नेणेक्कतीसइ | ॥२४२॥ |
| अजहन्नमणुक्कोसा तेत्तीसं सागरोवमा । | |
| महाविमाणे सन्धठ्ठे ठिई एसा वियाहिया | ॥२४३॥ |
| आ चेव उ आठठिई, देवाणं तु वियाहिया । | |
| सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे | ॥२४४॥ |
| अणुत्तकाळमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं । | |
| विजडम्मि सप काए, देवाणु भुज्ज अन्तरं | ॥२४५॥ |
| अणुत्तकाळमुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नयं । | |
| आणयाईण कप्पाण गेविज्जाणं तु अन्तरं | ॥२४६॥ |
| संस्सिज्जसागरक्कोसं वासपुहुत्तं जहन्नयं । | |
| अणुत्तराय य देवाणं, अन्तरं तु वियाहिया | ॥२४७॥ |
| एएसिं बण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । | |
| संठाणदंसओ वावि विहायाई सहस्ससो | ॥२४८॥ |
| मसारत्था य सिद्धा य इय जीवा वियाहिया । | |
| रुविणो चेवत्थी य, अजीया मुविहायि य | ॥२४९॥ |
| इय जीवमजीव य, सोष्ठा सहहिउण य । | |
| सठ्ठनयाणमणुमए रमेज्ज संजमे मुणी | ॥२५०॥ |
| वओ बहूणि वासाणि सामयणमणुपलिया । | |
| इमेण फम्मजोगेण, अप्पाणं संतिइ मुणी | ॥२५१॥ |

| | |
|---|-------|
| वारसेव व वासाई, सलेहुक्कोसिया भवे । | |
| संवच्छरमग्निमिया, छम्मासा य जह्नमिया | ॥२५२॥ |
| पढमे वासचसक्कम्मि विगई-निग्गह्ण करे । | |
| विइए वासचसक्कम्मि, विविस्त तु तव चरे | ॥२५३॥ |
| एगन्तरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे । | |
| तम्पो सवच्छरदं तु नाइविगिट्ठं तव चरे | ॥२५४॥ |
| तम्पो सवच्छरदं, तु, विगिट्ठं तु तव चर । | |
| परिमिय चेष आयामं, तन्मि संवच्छरे करे | ॥२५५॥ |
| कोढीसहियमायाम, कट्ट संवच्छरे मुण्णो । | |
| मासदमासिपणं तु, आहारेण तव चरे | ॥२५६॥ |
| कन्दप्पमाभिओगं च, किष्वासियं मोहमासुरुत्त च । | |
| एयाव दुगाईओ, मरणन्मि विराहिया होन्ति | ॥२५७॥ |
| मिच्छावसणरत्ता, सनियाणा व हिंसगा । | |
| इय जे मरन्ति जीवा, तेसि पुण दुक्खहा वोही | ॥२५८॥ |
| सम्मईसणरत्ता, अनियाणा मुक्कलेसमोगाढा । | |
| इय जे मरन्ति जीवा, तेसि मुलहा भवे वोही | ॥२५९॥ |
| मिच्छावसणरत्ता, सनियाणा कय्हलेसमोगाढा । | |
| इय जे मरन्ति जीवा, तेसि पुण दुक्खहा वोही | ॥२६०॥ |
| जिणययणो अणुरत्ता, जिणययण जे करेन्ति भावेण । | |
| अमला असङ्गिजिह्वा, ते होन्ति परिस्तर्ससारी | ॥२६१॥ |
| वालमरणाणि बहुसो, अफाममरणाणि चेष य वह्णि । | |
| मरिहन्ति ते वराया, जिणययणं जे न जाणन्ति | ॥२६२॥ |
| बहुभागमविभाणा, समाहितप्पायगा य गुणगाही । | |
| एएणं कारयेण, अरिहा आलोयण सोच | ॥२६३॥ |

कन्दर्पकुक्ष्याई तह, सीलसहायहसणविगहाई ।

विम्हावन्तो य पर, कन्दर्प भावण कुणइ ॥२६४॥

मन्ताजोग कासं, भूर्भुवः पञ्च जे पंचवन्ति ।

साय रस-इह्मिहेतं, अभिभोग भावण कुणइ ॥२६५॥

नायस्त केवलीणं, धन्मायरियस्त संघसाहूया ।

माई अवणणवाई, किन्विसिय भावण कुणइ ॥२६६॥

अणुवद्धरोसपसरो तह ॥ निमित्तम्भि होइ पडिसेवी ।

एएहिं कारयोहिं, आसुरियं भावण कुणइ ॥२६७॥

सत्यगहणं विसमभक्खणं च, जलणं च जलपवेसो य ।

अणायारमदहसेवी, जम्मणमरणाणि वचन्ति ॥२६८॥

इय पाठकरे बुद्धे, नायए परिनिब्बुए ।

छत्तीस उत्तरगम्यए, भवसिद्धीयसंमए ॥२६९॥

ति वेमि ॥ जीवाजीवविमत्ती समत्तं ॥२७॥

॥ इति उत्तरज्जयणं—सुत्त समत्त ॥



श्रीमद्विपाकसूत्रम्

ॐ नमः

होत्या ।

समोसडे ।

ॐ भगवया

ते । सुह

ण के अडे

एव वयासि

ॐ सपत्तेणं

, भदनवी

महज्वले,

एव सपत्तेणं

ति । अग्नि-

एव सपत्तेणं

एगार एव

हृत्पिप्पलीसे

एव ययरे होत्या । रिद्धित्यमित्यसमिधे । तत्पण हृत्पिप्पलीसे
एयरस्स वदिया उत्तर पुरत्थिमे त्रिसीभाए पत्यण पुष्पकरडए याम
उम्भणो होत्या । सम्यउ य पुष्पफलसमिधे, रम्भे, नंदणयणप्प
गासे पासाए ४ । तत्पणं कयवणमात्तपियस्स अक्खस्स अक्खाय-
वणे होत्या विव्वे ।

तत्पणं हृत्पिप्पलीसे ययरे अवीणमत्तु नाम राया होत्या । महया
इमपति रायवयणाउ । तत्सणं अवीणसत्तुस्स रायणो धारिणी

पामोक्खं देवी सहस्सं उरोहेया वि होस्था । तएण सा धारिणी
 देवी अन्नया फयाईं तंसि तारिसर्गसि वास भवणसि सीहं सुमिसे
 जहा मेहजम्मणं तहा भाणियब्बं । एवमं सुबाहुकुमारे जाव अन्न
 भोगसमत्ये यावि आणंति २ ता अन्मापियरो पंच पासायवडि
 सगसयाईं करेति अम्भुगयमुसियपहसाएवि भवणं ।

एव जहा महच्चलस्स रणणो । एवमं पुण्णचूला पामोक्खणं
 पंचयह रायवरकवणा सयाणं एग विचसेण पाणिं गेयहावेइ ठेव
 पंचसहाइ दाउ जाव उप्पिपासाय वरगते फुट्टमाणं जाव विहरवि ।
 तेण कालेण तेणं समणं समणो भगवत्त महावीरं समोसडे ।
 परिसा निगया अदीणसत्त जहा कोणिए निगए । सुबाहुकुमार
 वि जहा अमाली तहा रणेणं निगए । जाव धम्मो कहिउ राव
 परिसा पडिगया ।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवत्त महावीरस्स अतिप
 धम्मं सोच्छा निसम्मं हट्ट तुट्टे ५ ठठाए पठेइ जाव एवं वयासि
 सहहामि णं भंते । निर्मार्थ पावयणं जाव जहणं देवाणुप्पियाणं
 अतिप बहवे राईसर सत्थवाह पमइव मुंढे भविता आगारा
 अणुगारियं पठवइया । नो खलु अहं, तहा संचाएमि मुंढे भविता
 आगाराव अणुगारियं पठवइतए अहं णं देवाणुप्पियाणं अतिप
 पंचाणुब्बयाईं सत्तसिक्खावयाईं दुवालसयिईं गिहधम्मं पडिब्बवि
 स्सामि । अहा सुयं देवाणुप्पिया मा पडिबंघं करेइ ।

तए ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवत्त महावीरस्स अतिप
 पंचाणुब्बयाईं सत्तसिक्खावयाईं पडिब्बजइ २ ता तामेव रई
 दुइइ २ ता जामेव विसं पाउभूए तामेव विसं पडिगए । तेण
 कालेण तए समणं समणस्स भगवत्त महावीरस्स जेहे अतिवासी
 इवमई एण अणुगार जाव प

अहो एणं मन्ते ! सुवाहुकुमार इहे इह रुवे १ फंते फंतरुवे
२ पिये पियरुवे ३ मणुन्ने मणुन्नरुवे ४ मणामे मणामरुवे ५
सोमे सुभगे पियवंसणे सुरुवे धनुजयस्स वियणं भंते ! सुवाहु
कुमार इहे इहरुवे ५ सोमे जाव सुरुवे । साहुपणस्स वियणं भंते !
सुवाहुकुमारे इहे इहरुवे ५ जाव सुरुवे । सुवाहुणं भंते ! कुमारेण
इमे एया रुवा उराला माणुस्स रिद्धी कियणा लद्धा कियणा पत्ता
कियणा अभिसमयणागया । को वा एस आसी जाव किं नामए वा
किं गोसए वा किं वा वृषा किं वा भोषा किं वा समायरित्ता ।
कस्स वा उहा रुवस्स समणस्स वा अतिए एगमधि आयरिय
धम्मिय सुवयण सोषा जेण इमे इया रुवा माणुस्स रिद्धी लद्धा
पत्ता अभिसमयणागया ।

एवं खलु गोयम । तेण कालेण तेणं समणं इहेव अवुहीवे
ग्रीव भारइ वासे इत्थिणाठरे याम एयरे रिद्धित्थिमियसमिद्धे
वणणठ । तत्थण इत्थिणाठरं एयर सुमुह यामं गाहावई परिवसइ
अवुडे दित्ते जाव अपरिमूए । तेण कालेण तेणं समणं धम्म
घोसं याम घेर जाइसंपन्न जाव पंचहिं समणसपहिं सद्धिं संपरि
इहे पुब्बाणुपत्तिव चरमाणे गामाणुगामं दूइअमाणे जेणोव
इत्थिणाठरं एयरे जेणोव सहस्सवयणे उअम्भणे तंणोव उवताच्छइ
चा अहा पडिरुव उगाह उगिणइ २ चा संजमेण तवसा
अण्णण भावेमाणे विहरइ ।

तेण कालेण तेणं समणं धम्मपासाण थेराणं अंतेवासी
सुदत्ते यामं अण्णगार उराले जाव तंउलेसे मास मासेण अम
माणे विहरइ । तणं सुदत्ते अण्णगार मासअमणपारणगंसि
पठमाए पोरिसीए सम्मय करइ । उहा गोयमे उहेय धम्मघोसं
यरं आपच्छइ जाव अउमाणे समहस्स गाहावइस्स गिहं अणपधिहे

तण्ण से सुमुह गाहावइ सुवत्त अण्णगारं एज्जमाणं पासइ २ च
 हट्ट तुट्ठे आसणाव अध्भुटेइ २ ता पायपीडाव पबोत्तइ २ ता
 पाउयाव उमुयत्ति २ ता एगसाखियं उत्तरासर्गं करेइ २ ता सुवत्तं
 अण्णगारं सत्तट्ठपयाई पधुगच्छइ २ ता तिसुत्तो आयाहिणं पभा-
 हिण करइ २ ता खंखइ गमसइ २ ता जेणोव भत्तघर तेणोव
 न्वागच्छइ २ ता सयहत्थण विठलं असण पाण स्वाइम साइमं
 पडिक्काभिस्सामि तिक्कट्टु, तुट्ठे पडिक्काभेमाणे वि तुट्ठे पडिक्काभिप-
 त्ति तुट्ठे ।

तण्ण ए तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेण्ण दब्ब सुट्ठेण दावग सुट्ठेण
 पडिगाह य सुट्ठेण विविहेण विकरण सुट्ठेण सुवत्ते अण्णगारे पडि-
 क्कामिप समाणे संसारे परिच्छीकप, मणुस्साऊय निवद्धे गिहंसि य स
 इमाई पच विठयाई पाठभूयाई । त अहा—अमुहारा बुद्धा १ दसद-
 वरणे कुसुम निषाहए २ चेलुक्खेयकप ३ आहयाऊ दववुत्तुही उ ४
 अतरा वियण आगार्ससि अहो वाणं घुटे य ४ । तण्ण ए इत्थिणा-
 उर गयरे सिंघाडग आय पहेसु बहुजणो अयणमयणस्स एव
 माइन्वइ ४ धन्नेणं देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई जाव तं धन्नेण
 देवाणुप्पिया सुमुह गाहावई ।

तण्ण ए से सुमुहे गाहावई यहुई वासाइ आउय पालेइ २ ता
 कालमासे कालं किञ्चा इहेव इत्थिसीसे गयरे अवीणसत्तरण्णे
 धारिणीए देवीए कुप्पिण्णसि पुचत्ताए उल्लयण्णे । तण्ण ए सा धारिणी
 देवी सयण्णिज्जसि सुत्तजागराव्हीरमाणी २ तहेव सीह पासइ ।
 सेसं तं चेव उप्पिगपासाए विहरइ । त एव खलु गोयमा !
 सुयाहुणा कुमारणं इम यया मया माणुस्सरिद्धी उखा पचा अमि
 समयणागया । पभूणं भंत ! सुयाहु कुमार देवाणुप्पियाणं अंतिप
 मुंहे भविता आगाराउ अण्णगारियं पठ्ठइत्तए ? इता पभ तइयां ।

से भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ एमसइ २ ता संजमेण ववसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।

तएण से समणे भगव महावीर अण्णया कयाइ हत्थिसीसाठ
णयरउ पुण्फकरंइयाठ सज्जाणाठ कयवणमासणिमस्स जप्पस्स
जप्पस्सायतणाठ पडिनिक्खमइ २ ता वडिया जणवयविहार विहरइ ।
तएण से सुवाहुकुमारे समणोघासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव
पडिलामेमाणे विहरइ । तएण से सुवाहुकुमारे अण्णया कयाइ
चउवसइमुविट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसइसाला तेणेव उवा
गच्छइ २ ता पोसइसाला पमुज्जइ २ ता उच्चारपासवण मूर्मि
पडिलेइ २ ता वन्मसधारग संघरेइ २ ता वन्मसधारग दुस्सइ २
ता अट्ठम भत्त पगिण्णइ २ ता पोसइसालाय पोसहिए अट्ठम-
भत्तिए पोसइ पडिजागरमाणेविहरइ ।

तएण तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स पुनरत्तावरत्तकाले धम्म
जागरिय जागरमाणस्स इमे एया रुवे अज्जत्थिए ५ धएणाण ते
गामागरणगरस्स जाव सन्निवेसा अत्थणं समणे भगव महावीर
विहरइ । धन्नाणं ते राईसरं जाव सत्थवाह पमइउ जेण समणस्स
भगवउ महावीरस्स अत्तिए मुंढे भविष्सा आगाराउ अण्णगारियं
पवइयंति धवणाणं ते राईसरं जाव सत्थवाह पमइउ जेण समणस्स
भगवउ महावीरस्स अत्तिए धम्म पडिसुणंति त अइ ए समणे
भगव महावीरे पुब्बाणुपुण्णि चरमाणे गामाणुगामं वूइज्जमाणे
इहमागच्छेज्जा जाव विररज्जा । तए णं अहं समणस्स भगवउ
महावीरस्स अत्तिए मुंढे भविष्सा जाव पठवएज्जा ।

तए णं समणे भगव महावीर सुवाहुस्स कुमारस्स इम एया
रुव अज्जत्थिय जाव धियाणिता पब्बाणुपुण्णि चरमाणे गामाणु
गाम वूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयर जेणेव पुण्फकरंइ

उभयत्र जेणेव कयवणमालापियस्स जक्खस्स अक्खामवणे तेखेव
उवागच्छइ २ ता अहा पडिस्सुं उग्गह उगिण्हत्ता सज्जेणं उवसा
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिता, राया निग्गया । तएणं वस्स
सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा निग्गह । धम्मो
कहिउ परिता राया पडिगया ।

तएण स सुवाहुकुमारे समणस्स भगवउ महावीरस्स अतिए
धम्म सोव्वा निस्सम्मं हट्ठ तुट्ठे । जहा मेहो तहा अम्मापियरो
आपुण्णइ निस्समयाभिसेउ तहेव जाव अणगारे जाए । इरिमा
समिए जाव गुत्तवभयारी । तए णं से सुवाहु अणगारे समणस्स
भगवउ महावीरस्स तहा रुवाण येराणं अतिए सामाइयमाइयाइ
एकारस्स अंगाइ अहिक्कइ २ ता वहुई वासाई सामणण परियाणं
पाठयित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं मूसित्ता सट्ठिं भत्ताइ
अणसणाइ छेवित्ता आलोइयं पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे
काल किक्का सोहम्मे कप्पे ववत्ताए उव्वयणे ।

से णं ताउ ववलोगाउ आण्णसएणं भवक्खयेणं ठिइक्खएण
अणतरं यय चइत्ता माणुस्स भिग्गह सभिहिइ २ ता केवल वोहिं
वुग्गहिइ २ ता तहा रुवाणं येराणं अतिए मुंढे भवित्ता जाव
पव्वइस्सइ । स णं तय वहुइ वासाई सामणणपरियाण पाठयि
हिइ २ ता आलोइय पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं
किक्का सणकुमार कप्पे वेवत्ताए उव्वयणे । से णं ववलोगाउ
माणुस्स जाव पव्वज्जा यभलोए । माणुस्सं महासुक्के । माणुस्सं
आणए । माणुस्स आरणे । माणुस्सं सव्वदुसिद्धे ।

से णं माउ अणतरं यय चइत्ता महाविइ वासे अट्टे जाव
एवपइमे सिग्गहिइ वुग्गहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वहिइ
सव्वदुक्खमंत करहिइ । ७५ एतु उय । समणेणं भगवया

महावीर्यं जाव सपत्नेयं सुहृदिषागाण पढमस्स अज्झमयणस्स
अयमद्वे पयणत्ते त्तिवेमि । इह सुहृदिषागस्स पढमं अज्झमयण
सम्मत ।

द्वितीयोऽध्यायः

वित्तियस्स उक्खलेवत् । एव खलु जंबू । तेण कालेण तेण
समणं उत्तमपुरे गामं गयरे थूमकरङ्ग उक्खण । घण्णो
ज्झसो । घण्णहो राया सरस्सई देवी । सुमिणधसणं कइणा जम्म
वालत्तण कलाउय ओवणे पाणिगइण वाउ पासावय भोगाय जहा
सुवाहुस्स गयरं भइनवी कुमारे । सिरी देवी पामोक्खण पंच
सया । सामिस्स समोसरणं सावगधम्मं पडिबब्जे पुब्बभवं
पुब्बा महाविदेह वासे पुडरिगिणि नगरीए विज्जए कुमारे जग
वाहू तित्थयरे पडिलाभिण मणुस्साउए निषद्वे इहं उव्वण्ये ।
सेस जहा सुवाहुस्स जाव महाविदेहवासे सिग्गिहिति धम्मिहिति
मुच्चिहिति परिनिब्बाहिति सब्बदुक्खाणमंस करहिति । एवं
खलु जंबू । समण्येयं भगवया महावीरेण जाव सपत्नेयं सुहृदि
षागाण वित्तियस्स अज्झमयणस्स अयमद्वे पयणत्ते त्तिवेमि । इह
सुहृदिषागस्स वीय अज्झमयणं सम्मत ।

तृतीयोऽध्यायः

सइयस्स उक्खलेवत् वीरपुरे गामं गयरे । मणोरमे उक्खण्ये
वीरकण्हमित्ते राया सिरी देवी सुजाए कुमारे । वल्लसिरी पामो
क्खण पंचसया सामी समोसरिण । पुठवभब्बं पुब्बा । उसुयार
गयरे उसुभवत्ते गाहावइ पुप्फवत्त अण्णगारे पडिलाभिण मणुस्सा-
उए निषद्वे इहं उव्वण्ये जाव महाविदेह वासे सिग्गिहिति ५ ।
इह सुहृदिषागस्स सइय अज्झमयणं सम्मत ।

श्री भक्तामरसुत्रम् ।

धर्मावतल्लकायुक्तम्

भक्तामरप्रणवमौलिमणिप्रभाणा-मुद्योतकं दक्षितपापतमोविधा-
नम् । सम्यक् प्रणम्य जिनपावयुगं युगादा, बालम्बनं भवजले
पततां जनानाम् ॥१॥ य संस्तुत सकलबाह्मयतत्त्वबोधा-बुद्धम्
तवाद्यपदुभि सुरलोकनाथै । स्तोत्रैर्जगत्त्रितयधित्तहरैरुदारै, स्तोत्र्य
फिलाहमपि त प्रथम जिनेन्द्रम् ॥२॥ बुद्धया विनापि विबुधाधिष्-
पादपीठे स्तोतु समुद्यतमतिर्विगतत्रयोऽहम् । बालं विहाय जलसं
स्थितमिदुर्विम्ब-मन्य क इच्छति जन सहस्राग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तु
गुणान् गुणसमुद्रशराङ्ककान्तान, कस्ते क्षम सुरगुरुप्रतिमोऽपि
बुद्धया । कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रधर्कं, कोवा तरीतुमलमम्बनिधिं
मुञ्चाभ्याम् ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशात्सुनीश । कर्तुं स्वयं
विगतशक्तिरपि प्रवृत्त । प्रीत्यात्मधीर्यमविचार्य मगो सुगेन्द्रं
नाऽभ्यति किं निजशिशो परिपालनार्थम् ॥५॥ अल्पभुत भुतवतां
परिहासधाम, त्यज्जकिरेष मुखरीकुरुते बला-माम् । यत्कोकिल
किल मधौ मधरं विरौति तथाहवाप्रकलिकानिकरैकहेतु ॥६॥
त्वत्मस्त्वदेन भवसंततिसन्निधयद्, पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीरमा
जाम् । आक्रांतलाकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्योद्यमिभमिवशार्धर
मध्यकारम् ॥७॥ मस्वर्तिनाथ तव संस्तवनं मयव-भारयते तनुधि
यापि तव प्रभाषाम् । धृतो हरिष्यति सतां नलिनीवल्लपु मुष्ठाफ-
लघुतिमुपैति ननूःषिदुः ॥८॥ आस्तां तव स्वबनमस्वममस्तदापं,
त्यत्मकयापि जगतां दुरासानि हन्ति । दूर सहस्राक्षरं दुरुत प्रभेय
पद्माक्षरेषु जज्ञजानि शिकाराभाञ्जि ॥९॥ नास्पदमुदं गुपनभूषण
भतनाथ । भूतैर्गुणमुपि भवन्तमभिपदुष्यत । गुह्या भवन्ति ॥

ननु तेन किं वा, भूत्याभित, य इह नात्मसम करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा
 भवन्तमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोपमुपयाति जनस्य चक्षु ।
 पीत्वा पय शशिकरशुतिबुधसिंधो, क्षारं जलं जलनिघेरसितु
 क इच्छेत् ॥११॥ यै शशिरागरुचिभि परमाणुभिस्त्य, निर्मापि
 तस्त्रिमुवनैकललामभूत् । सार्वत एव क्षलु तेप्यणुषः पृथिव्या यत्ते
 समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्ष्ये क ते सुरनरोरगनेत्र-
 हारि, नि शोपनिर्जितजगत्त्रितयोपमानलङ्घुम् । धिम्बं कमलिन क
 निराकरस्य, यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णं
 मङ्गल शशांककलाकलाप शुभा गुणास्त्रिमुवन तव लंघयति ।
 ये संमितास्त्रिजगदीश्वर नाथ मेकं, कस्ताभिवाचयति संचरतो
 यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, नीलं
 मनागपि मनो न विकारमार्गम् । कल्पातकालमरुता चलिता
 चलेन, किं भवद्वाद्रिशिखर चलित कवाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव
 त्तिरपवर्जितवैलपूरः, कृत्स्न जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोपि । गम्यो न
 जातु मरुता चलिताचलानां, क्षीपोऽपरस्त्वमसि नाथ । जगत्प्रकाश
 ॥१६॥ नास्तु कवाचिदुपयासि न राहुगम्य, स्पष्टीकरोपि सहसा
 युगपज्जगांत । नाम्मोघरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव सूर्यातिशायिमहि
 माऽसि मुनीन्द्रलोके ॥१७॥ नित्योदय वलितमोहमहाधकारं गम्यं
 न राहुधदनस्य न वारिवानाम् । त्रिभाजते तव, मुख्राब्जमनस्य
 कांति विशोतयज्जगद्दर्शशशिविवम् ॥१८॥ किं शशरीपु शशि
 नाडाह पिपस्थता वा, यज्जन्मुखोदुवलितेषु तमस्तु नाथ । निष्पन्न
 शालिधनशालिनि जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैजलमारनयै ॥१९॥
 ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृपावकाश नैवं तथा हरिहरविपु नाथ
 केपु । तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काशराफल
 किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्य दत्त हरिहरावय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु
 हृदय त्वयि तोपमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता मुवि यन नान्य

कश्चिन्मनो हरति नाथ । भषातरेपि ॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शकरो
 जनयति पुत्रान्, नान्या सुत त्यदुप जननी प्रसूता । सर्वा विशो
 दधति भानि सहस्ररश्मि, प्राक्येष विग्नजनयति स्फुरदशुजातम्
 ॥२२॥ त्वामामनंसि मुनय परमं पुमांस-मादित्यवर्णममल तमस
 पुरस्तात् त्वामेष सम्यगुपलभ्य जयति मृत्यु, नान्य शिव शिव
 पदस्य मुनीन्द्र । पंचा ॥२३॥ स्वामध्यस्थं दिभुमर्चित्यमसंख्यमाण,
 ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनगकेतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
 ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदति संत ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधान्वितबु-
 द्धिबोधात्, त्वं शकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् । धातासि धीर । शिव
 मार्गविधेर्बिधानात् व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं
 नमः कमु नार्तिहरायनाथ । तुभ्यं नमः शिवितल्लामलभूषणाय । तुभ्यं
 नमः शिवाय परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भषोदधिशोपण्याय
 ॥२॥ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशोपै-रुष संभितो निरघ
 कारतया मुनीश । वीरैरपात्तविविधाभयजातगर्वैः, स्वप्रांतरेऽपि न
 कदाचिदपीक्षिताऽमि ॥२७॥ तच्चैरशाकसदसभितमुन्मयस्वसामाधि
 रूपममल भयतो नितान्तम् । स्पष्टोऽनतिक्रियामस्त्वतमोवितान, बिम्ब
 रवेरिव पयाघरपारवर्षति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूस्तशिक्षाधि-
 धिप्रे भिभ्राजते तव यप कनकावदातम् बिम्बं धियद्विजसर्वशुलता
 वितानं तुंगादयाद्रिशिरसीय सहस्ररश्मे ॥२९॥ कुशावदातचल
 चामरधारारामं, धिभ्राजते तव यप कलधीतकांतम् । उद्यच्छराफ
 शुचिनिर्झरधारिधार-मुचैस्तट सुरगिररिव शातफौजम् ॥ ३० ॥
 ह्यत्रत्रयं तव विभाति शशाककांतमुचै स्थितं स्थगितभानुकर
 प्रतापम् । मुक्ताफलप्रकरजालविशुद्धराभ, प्रसूपापयत् त्रिजगत
 परमश्रुत्वम् ॥ ३१ ॥ गंभीरतारयपूरितशिग्विभाग-स्यैलोक्य
 लोकशुभसंगमभूतिषु । सद्यर्मराजजयघोषणघोषक सन्,

स्नेदुदुभिर्धनति ते यशस प्रवादी ॥ ३० ॥ मंदारमुदरनमेरुमुपा
 रिजात, संतानकादिकुसुमोत्करषृष्टिरुद्धा । गधोदयिदुशुभमंदमरु
 त्पता, दिव्या दिव पतति ते वचसा ततिर्षा ॥ ३१ ॥ शुभत्रभा
 वक्ष्यमूरिदिभा विभोस्ते, लोफत्रयशुतिमता द्युतिमाक्षिपन्ती ।
 प्रोद्यद्दिश्रुकरनिरंतरभूरिसंख्या, धीप्या जमत्यपि निशामपि सोम-
 सौम्या ॥ ३४ ॥ स्वगापवर्गगममार्गविमार्गणोष्ट, सद्धर्मतत्त्वकथनैक-
 पटुस्त्रिलोक्या । दिव्यध्वनिर्मवति ते विशदार्थसर्व भापास्यभाष
 परिणामगुण प्रयोक्त्य ॥ ३५ ॥ उभिद्रहेमनषपक्षजपुजकावी
 पर्युत्तमक्षमयूक्षशित्यामिरामौ । पावौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ।
 घत्तः, पद्मानि तत्र विव्रधा परिहृत्पर्यति ॥ ३६ ॥ इत्थ यथातथ
 विभूतिरमूर्जिनेन्द्र, धर्मापवेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक्प्रभा
 विनकृत प्रह्लादकारा, तादृक्कुतो प्रहगणस्य विह्वारिनोपि
 ॥ ३७ ॥ रुच्योतन्मदाविल्लविलोलकपोलमूल मत्तभ्रमदभ्रमर
 नादविपद्यकोपम् । पेरावतामभिभमुद्धतमापतन्त, दृष्ट्या भय
 भवति नो भवदाभितानाम् ॥ ३८ ॥ भिन्नेभकुभगलदुज्वलशो
 णिताक्त—मुक्ताफलप्रकरभूपितभूमिभाग । यत्नक्रम क्रमगत
 हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगावलसम्भित ते ॥ ३९ ॥ कल्पं
 तकालपवनोद्धतवह्निफल्य, वायानलं ब्यलितमुत्स्फलिंग मुग्धवल
 विश्वं जिघत्सुमिव समुलमापतत, त्वन्नामकीचनजल शमयस्य
 शोपम् ॥ ४० ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलफंठनील, कोधोद्धत फणिन
 मुरगणमापततम् । आक्रामति क्रमयुगेन, निरस्तराक-स्त्वन्नामना
 गदमनी इवि यस्य पुस ॥ ४१ ॥ बलगुरगगजगर्जितभीमनाद,
 मात्रां यत्नं वक्ष्यतामपि भूपतीनाम् । वयद्विवाकरगयूक्षशित्वाप
 विद्धं, त्वरकीर्त्तनात्तम श्याशु मिषासुपैति ॥ ४२ ॥ कुंतामभिभगजशो
 णितधारियाद्-वगापतारसरणातुरयोधभीमे । युद्धे जय विजिघत्सुर्ज

यजेयपद्मास्त्यत्पादपङ्कजयनाभयिणो लभते ॥ ४३ ॥ अम्भोनिषं
 क्षुभितभीषण नम्रचक्र-पाठोन्नपीठभयदोष्यणवाङ्मनौ । रंगस
 रंगशिखरस्यितयानपात्रास्त्रास विहाय भयतःस्मरणाद्वृषति ॥ ४४ ॥
 चद्रभूतभीषणजलोदरभारमुग्ना , शोच्यादशामुपगताश्च्युतजीवि
 ताशा । स्वत्पादपङ्कजजोऽमवधिग्धदेहा मर्त्या भवति मकरध्वज
 तुल्यरूपा ॥ ४५ ॥ आपादकंठमुकृष्टसल्लवेष्टिवांगा गाढ बृहन्निग
 ङकोटिनिघट्टजंघा । त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्य
 स्वय विगतबधमया भवति ॥ ४६ ॥ मच्छिप्रेत्रमुग्राजद्वानत्ताहि
 संग्रामधारिधिमहोदरबधनोत्थम् । तस्याद्युनारामुपयाति मयं । भवे
 त्, यस्तावकं स्ववमिम मसिमानधीते ॥ ४७ ॥ स्तोत्रस्त्रजं तव
 जिनेत्रगुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् । प्रते
 जनो य इह कंठगतमजस्रं, सं मानतुंगमकरा समुपैविलक्ष्मी ॥ ४८ ॥



